बिहार की विद्यालयीय शिक्षा
हेतु
नवीन पाठ्यक्रम

उच्च प्राथमिक (VI-VIII)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
महेन्द्रू, पटना – 800006

Scanned with CamScanner

ाज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

द्वारा विकसित एवं

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार

द्वारा अनुमोदित

नवीन पाठ्यक्रम

कक्षा - VI से VIII

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
महेन्द्रू; पटना – 800006

Scanned with CamScanner

- पाठ्यक्रम विकास एवं प्रकाशन :
  राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
  (एस.सी.ई.आर.टी.), महेन्द्रू, पटना-800006

- सौजन्य :
  बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्
  बेल्ट्रॉन भवन, बेली रोड, पटना-800001

- नवीन पाठ्यक्रम : कक्षा - VI से VIII

- कम्पोजिंग, इनर डिजाइनिंग एवं कवर डिजाइनिंग :
  अरशद
  प्रोसेसर, 4/2 तुलसी पथ, आनंदपुरी, बोरिंग रोड, पटना-1

- प्रथम संस्करण : मार्च, 2009

- मुद्रण सौजन्य : बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक निगम, पटना

- मुद्रित प्रतियाँ : 6,000

- मुद्रक : पटना ऑफसेट प्रेस, नया टोला, पटना

Scanned with CamScanner

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार द्वारा राज्य की स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर नवीन पाठ्यक्रम लागू किया गया है। निर्देशानुसार, पाठ्यक्रम विकास का कार्य राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा किया गया। ज्ञातव्य है कि बिहार राज्य में पहली बार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के आलोक में बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 का विकास परिषद् द्वारा किया गया। इस पाठ्यचर्या के आधार पर कक्षा I से XII तक का पाठ्यक्रम नवीन शिक्षाशास्त्रीय मान्यताओं के आलोक में विकसित किया गया।

हमारे प्रदेश की पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं नवीन पाठ्यक्रम में कई नवीनताएँ एवं कई विशेषताएँ हैं, यथा–

पहले हम मानते थे	**आज हमारा मानना है**
1. शिक्षार्थियों को क्या पढ़ाएंगे?	बच्चे/किशोर क्या सीखेंगे?
2. रटने पर बल	अधिगम पर बल
3. शिक्षक केन्द्रित	शिक्षार्थी केन्द्रित,
4. ज्ञान ठूसने की प्रवृत्ति	ज्ञान की स्वतंत्र रचना
5. विद्यालयः ज्ञान की दुकान	ज्ञान : हमारे चारों ओर
6. आंचलिकता की उपेक्षा	आंचलिकता : प्रमुख संसाधन
7. भाषागत रूढ़ियाँ	बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में प्रयोग

उक्त मान्यताओं के आधार पर यह माना जा सकता है कि पुरानी अवधारणा जहाँ हम यह तय करते थे कि बच्चा खाली स्लेट की तरह होता है उसपर शिक्षक जो चाहें दर्ज कर लें से प्रस्थान का समय है। बच्चा या किशोर/किशोरी स्कूल आने के पूर्व अपने जीवन के विविध अनुभवों से लैस होकर आते हैं, जिन अनुभवों का शिक्षण अधिगम में भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए। लिहाजा यह नया पाठ्यक्रम स्कूली बच्चों को सीखने का एक माहौल प्रदान करने का पक्षधर है जिसमें हर बच्चे को प्रश्न पूछने और ज्ञान सृजन की पूरी छूट होगी। शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे नई दृष्टि के साथ इस पाठ्यक्रम को आत्मसात करेंगे एवं सार्थक तथा प्रभावी ढ़ंग से कक्षा में इसे रूपायित करेंगे।

पाठ्यक्रम विकास की प्रकिया एक साझी समझ पर आधारित रही है। परिषद् की यह कोशिश थी कि अधिकाधिक स्कूल शिक्षकों के सहयोग से इसका विकास किया जाए और ऐसा हुआ भी। कई कार्यशालाओं में शिक्षकों ने अपनी लगातार उपस्थिति दर्ज कर इस पाठ्यक्रम को यह स्वरुप प्रदान किया है। उनकी लम्बी सूची यहाँ दे पाना संभव नहीं है अतः परिषद् उन सभी सम्मानित विषय विशेषज्ञों, विद्यालय एवं उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षकों, परिषद् के संकाय सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता है। राज्य की स्कूली शिक्षा को सार्थक और सशक्त बनाने का निर्णय शासन ने लिया है और उसका प्रतिफल है राज्य की नई पाठ्यचर्या, नवीन पाठ्यक्रम और इस पर आधारित नई पाठ्यपुस्तकें। हम उन सभी के आभारी हैं जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग इस पाठ्यक्रम विकास में रहा है। संशोधन–परिमार्जन शिक्षित मानव समुदाय का अनिवार्य कार्य होता है अतः आपके सुझावों की हमें प्रतीक्षा है।

हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)

Scanned with CamScanner

पाठ्यक्रम का शिक्षाशास्त्रीय

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008 पर आधारित यह नवीन पाठ्यक्रम 'शिक्षा' के बारे में एक विशिष्ट दृष्टिकोण पर आधारित है। इसके अनुसार "शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का जिन्दा होने का सही-सही अर्थ समझ सकें। अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें। अपने जीवन का मकसद तय कर सके और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें। साथ ही इस बात को भी समझ सके कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।" यह संपूर्ण पाठ्यक्रम जिन महत्वपूर्ण शिक्षाशास्त्रीय मान्यताओं पर आधारित है उन्हें बिन्दुवार नीचे दिया जा रहा है:-

- बिहार के विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से आये शिक्षार्थियों में जिनकी संख्या आज स्कूलों में ज्यादा है, समानता की अवधारण को पुख्ता करना।
- प्रतिस्पर्द्धा पर केन्द्रित जीवन मूल्यों से बाहर निकाल कर शांति, सहिष्णुता एवं मानवता आधारित मूल्यों के विकास पर बल।
- स्वयं को दूसरे के माध्यम से अनुभव करने पर बल।
- कोई भी व्यक्ति बिल्कुल स्वतंत्र नहीं होता, बल्कि दूसरे व्यक्ति के जीवन पर उसकी परस्पर निर्भरता रहती है। इस बात को शिक्षार्थियों के जेहन में उतारना।
- सूचना ही ज्ञान नहीं है। ज्ञान, सूचना से बड़ी अवधारण है । ज्ञान कोई तैयार माल नहीं होता है, बल्कि सदैव निर्मित होते रहता है।
- शिक्षार्थी ज्ञान के ग्रहणकर्त्ता मात्र नहीं है, बल्कि ज्ञान के निर्माण करने की भी उनमें अद्‌भुत क्षमता है।
- पाठ्यपुस्तक ही सीखने का साधन एवं परीक्षा के आधार हैं, यह बात सही नहीं है। शिक्षार्थियों के अपने पूर्व के अनुभव एवं अन्य सामग्री ज्ञान के सृजन में प्रमुख भूमिका अदा करती हैं।
- शिक्षार्थियों को 'सिखाने' के बदले उनमें स्वतंत्र रूप से 'सीखने' की प्रवृत्ति विकसित करना श्रेयस्कर है।
- शिक्षक ज्ञान बांटने वाला व्यक्ति नहीं बल्कि शिक्षार्थियों द्वारा ज्ञान के सृजन में एक सहायक व्यक्ति मात्र है।
- शिक्षार्थियों द्वारा रटने से अधिक समझाने पर बल।
- शिक्षार्थियों में अवलोकन, विश्लेषण, तर्कपूर्ण चुनाव, नवाचार, कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, समस्या समाधान की प्रवृत्ति, निर्णय लेने की क्षमता आदि का विकास करना, न कि कुछ सूचनाओं का हस्तांतरण।
- ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।
- परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचील बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।
- शिक्षार्थियों में आत्मसम्मान एवं नैतिकता का विकास ।
- ज्ञात से अज्ञात की ओर तथा मूर्त्त से अमूर्त्त की ओर एवं स्थानीय से वैश्विक की ओर।
- उत्पादक कार्य - शिक्षण का माध्यम।
- इसके अन्तर्गत कक्षा-ज्ञान को जीवन-अनुभव से जोड़ना। इससे हाशिए के समाज के शिक्षार्थियों को, जिनमें काम से जुड़े कौशल का ज्ञान होता है, को शिक्षार्थियों से सम्मान मिल सकेगा।
- पर्यावरण के प्रति शिक्षार्थियों में संवेदनशीलता बढ़ाना।
- अशांत प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण मानव संबंधों में तनाव लाता है, जिससे असहिष्णुता व संघर्ष पैदा होता है। शांति की संस्कृति का निर्माण करना शिक्षा का निर्विवाद उद्देश्य है। शिक्षार्थी शांति को जीवन शैली के रूप में चुन सके। संघर्ष को सुलझाने की क्षमता रखे न कि उसका एक मूक दर्शक बने।

Scanned with CamScanner

- एकीकृत पाठ्यक्रम - इसमें सहायक होगा।
- प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा / बोली में सीखने पर बल।
- पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम लचीला - विद्यार्थी एवं विद्यार्थी समूहों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुकूल।
- सीखना - अर्थ निर्माण करना है।
- सीखना - पैटर्न को समझने की प्रक्रिया है।
- सीखना - निष्कर्ष निकालने की प्रक्रिया है।
- अर्थ निर्माण - व्यक्तिगत एवं सामाजिक तौर, दोनों पर संभव है।
- एक ही तरह के प्रश्न पूछने एवं उत्तर देने के बजाय शिक्षार्थियों को अपने शब्दों में जवाब देने एवं अपने अनुभव को बताने के लिए प्रोत्साहित करना।
- 'बुद्धिमान अनुमान' लगाने तथा प्रश्न पूछने के लिए शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करना।
- शिक्षार्थी जो जानते हैं और जो लगभग जानते हैं - उसके बीच के क्षेत्र में नये ज्ञान का सृजन होता है।
- ऐसा ज्ञान, कौशल का रूप लेता है जो स्कूल के बाहर घर अथवा समुदाय में परिष्कृत होता है।
- पढ़ाई में पूछताछ, अन्वेषण, प्रश्न पूछना, वाद-विवाद, व्यावहारिक प्रयोग व चिंतन जिससे सिद्धान्त बन सके और विचार स्थितियों की रचना हो सके पर बल।
- सीखने के लिए घूमना, खोजना, अकेले काम करना या अपने दोस्तों या वयस्कों के साथ काम करना, भाषा पढ़ना, अभिव्यक्त करना, पूछने और सुनने के लिए प्रयोग करना आदि कुछ ऐसी महत्वपूर्ण क्रियायें हैं, जिनसे अधिगम होता है।
- शिक्षक 'ज्ञान' हस्तान्तरित करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि एक सहलकर्त्ता है जो विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति के लिए और ज्ञान के सृजन के क्रम में व्याख्या और विश्लेषण के लिए प्रोत्साहित करें।
- अधिगम प्रतिफल की तुलना मे अधिगम उद्देश्यों पर बल।
- मूल्यांकन में सूचना के साथ-साथ अवधारणा के विकास एवं उसकी प्रक्रिया के मूल्यांकन पर बल।
- कक्षा का समावेशी स्वरूप।
- स्वमूल्यांकन।
- पाठ योजना, गतिविधि आदि में पर्याप्त लचीलापन हो। हर शिक्षार्थी के हिसाब से उपयोगी हो।
- 'निदान' वाली कक्षायें सिर्फ दोहराने वाली कक्षा न हो बल्कि शिक्षार्थियों के हिसाब से सोचने-विचारने वाली कक्षा हो।
- विवादास्पद मुद्दों से बचने के बजाय उस पर बहस एवं चर्चा कर सही निर्णय तक पहुँचने का प्रयास।
- शिक्षार्थियों के सामने 'द्वन्द्व' की स्थिति पैदा कर उन्हें द्वन्द्व से निबटने के लिए तैयार करना।
- वर्तमान पाठ्यक्रम थीम पर आधारित है।

उक्त मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए हमें अपने कक्षाई स्वरूप को बनाना होगा तथा बच्चे एवं किशोर/किशोरियों के जीवन अनुभव को कक्षा के भीतर भी सम्मान देना होगा। नई शिक्षाई दृष्टि यह अपेक्षा करती है कि हम शिक्षाई माहौल का इस तरह पुनः निर्माण करें कि लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा और बढ़ोतरी में हमारी नई पीढ़ी अपना सार्थक योगदान दे सके। मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता इस पाठ्यक्रम का केन्द्रबिन्दु है- इसे ध्यान में रखना चाहिए।

ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी
अकादमिक संयोजक
पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति

डॉ॰ सैयद अब्दुल मोईन
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एस.सी.ई.आर.टी., पटना

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

कक्षा VI से VIII

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मातृभाषा	01 - 11
1.1	हिन्दी (द्वितीय भाषा सहित)	12 - 18
1.2	उर्दू	19 - 30
1.3	बांग्ला	31 - 38
1.4	मैथिली	
2.	द्वितीय भाषा	
2.1	अंग्रेजी	39 - 57
2.2	संस्कृत	58 - 78
2.3	अरबी	79 - 88
2.4	फारसी	89 - 94
2.5	भोजपुरी	95 - 108
3.	गणित	109 - 122
4.	विज्ञान	123 - 166
5.	समाज-विज्ञान	167 - 217
6.	योग एवं शारीरिक शिक्षा	218 - 227
7.	संगीत	228 - 235
8.	परिशिष्ट	236 - 242
	मूल्यांकन की अवधारणा एवं स्वरूप	

Scanned with CamScanner

भाषा वर्ग-VI-VIII

हिन्दी

प्रस्तावना

भाषा के बिना यह जीवन-जगत् एक अर्थ में अंधकारमय है । इसे हम देखकर भी जान-समझ नहीं पाते, अनुभव नहीं कर पाते, भाषा एक महती शक्ति और प्रकाश है । वह साधन और माध्यम है जिसके द्वारा हम जीवन-जगत् को जान-समझ पाते हैं, अनुभव कर पाते हैं तथा प्राप्त अनुभव और ज्ञान को व्यक्त कर पाते हैं । भाषा के द्वारा ही हम विचार करते हैं और अपने विचारों और अनुभवों को प्रकट कर पाते हैं । इसके सहारे ही हम अपने अनुभव, विचार, संवेदन, इच्छाएँ और मनोभाव दूसरों तक संप्रेषित कर पाते हैं । यह संप्रेषण का एकमात्र विश्वसनीय आधारभूत माध्यम है । भाषा-क्षमता अर्जित करते हुए ही हम मानसिक-बौद्धिक विकास को प्राप्त करते हैं जो अन्य प्रकार की प्रगति और विकास का मूल है । इस रूप में भाषा की शिक्षा अन्य तमाम विषयों की शिक्षा का आधार और सहयोगी है । स्वभावतः शिक्षण की लम्बी प्रक्रिया में भाषा-शिक्षण और भाषा-परिष्कार का कार्य निरंतरता की अपेक्षा रखता है।

भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हिन्दी व्यापक जन की भाषा है। एक हजार वर्षों से भी अधिक समय से विकसित होती आयी हिन्दी भाषा और उसका वैविध्यपूर्ण व्यापक एवं विस्तृत साहित्य विविध भाषा-भाषियों, अनेक जातियों, धर्मों-सम्प्रदायों, लोकसंस्कृतियों और विचारधाराओं द्वारा सेवित-संवहित होता आया है । इसमें हजार वर्षों से व्यापक भारतीय जनता की आशा-आकांक्षा, हर्ष-विषाद, संकल्प-विकल्प और स्वप्न-यथार्थ की अबाध अभिव्यक्ति होती आई है । हिन्दी भाषा-साहित्य के सुदीर्घ इतिहास में अनेकानेक प्रवृत्तियाँ और परम्पराएँ बनीं और विलीन हुईं । वे कभी दिखीं तो कभी अंतर्धान होकर आगे पुनः परिवर्त्तित रूपों में प्रकट हुईं । हिन्दी भाषा और साहित्य को पुराने युगों में कभी राजसत्ता और धर्म जैसी प्रभावशाली शक्ति का संरक्षण मिला हो अथवा नहीं, लोकसंरक्षण इसे सदैव प्राप्त रहा । इसी लोकसंरक्षण के बल पर वह अपनी शक्ति, प्रभाव, क्षमता और विचार को आगे बढ़ाते हुए स्वाधीनता संघर्ष का, अहिन्दी भाषियों द्वारा भी सहर्ष स्वीकृत, प्रमुख माध्यम बनी । इसकी क्षमताओं और लोकप्रियता को ही दृष्टिपथ में रखकर संविधान निर्माताओं ने इसे राजभाषा के रूप में सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठित किया । आज यह भाषा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और वैश्विक परिदृश्य में भारत राष्ट्र के महान गौरव के अनुरूप अपनी पहचान और प्रतिष्ठा अर्जित कर रही है । यह सरकारी-गैरसरकारी गतिविधियों, सरोकारों और व्यवहारों में बहुविध रूपों और छवियों में अपनाई जाकर अपनी प्रगति और विकास के नये आयामों को तय करती दिखाई पड़ रही है । यह आधुनिक जीवन और वैश्विक व्यवहारों-सरोकारों में, उद्योग-धंधे, व्यापार-वाणिज्य, राजनीति-अर्थनीति, युद्ध और शान्ति, ज्ञान-विज्ञान-प्रौद्योगिकी, दण्ड-न्याय, शिक्षा-संस्कृति-कला-शिल्प-साहित्य-धर्म आदि तमाम धरातलों पर कुशलतापूर्वक वर्धमान और विकसनशील है । इन व्यापक व्यवहारों और बहुव्याप्तियों के अनुरूप हिन्दी भाषा में आज नई-नई प्रयुक्तियाँ प्रकट हो रही हैं, नये-नये पारिभाषिक शब्द निर्मित हो रहे हैं और तद्नुरूप व्याकरण में भी नये परिवर्त्तन दिखाई पड़ रहे हैं ।

हिन्दी प्रदेश-विशेष की भाषा नहीं है। उसके नाम और स्वरूप में ही राष्ट्रीय व्याप्ति की आकांक्षा और शक्ति अंतर्निहित है । यह बात न्यूनाधिक रूप में उसके ऐतिहासिक विकास से भी प्रमाणित होती है । हिन्दी

Scanned with CamScanner

प्रदेशों में अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ हैं जिनमें से कई तो साहित्यिक भाषा के रूप में ऐतिहासिक प्रतिष्ठा पहले ही अर्जित कर चुकी हैं । बिहार भी मूलत: एक ऐसा हिन्दी भाषी प्रदेश है जिसमें अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ बोली जाती हैं । इनमें मैथिली का तो पुराना साहित्यिक इतिहास भी है। मैथिली के साथ ही भोजपुरी, मगही, अंगिका, बज्जिका आदि में भी अपना स्वतंत्र साहित्य है और वह लगातार लिखा जा रहा है । इनके अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू और बंगला भाषाएँ भी बिहार में अपने भाषी जनों और साहित्य के साथ बनी हुई हैं । ये आधुनिक बिहार की शिक्षा में भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं । इस तरह बिहार के बहुभाषिक परिवेश में हिन्दी एक ओर मातृभाषा/प्रथम भाषा के रूप में और दूसरी ओर राजभाषा और शिक्षा की माध्यम भाषा के रूप में भी उपस्थित और समादृत है।

बिहार में हिन्दी-शिक्षण की अनेक समस्याएँ और चुनौतियाँ हैं जो विशेष रूप से यहाँ की विभाषाओं या बोलियों की ओर से आती हैं । प्राय: शिक्षार्थी इन क्षेत्रीय भाषाओं के परिवेश में ही जन्म लेते हैं और उनका आरंभिक पालन-पोषण होता है । वे इन्हें ही मातृभाषा के रूप में प्राय: प्राप्त करते हैं । स्वभावत: उनके हाव-भाव, उच्चारण और अभिव्यक्तियों पर इनका गहरा रंग और प्रभाव होता है । प्रारंभिक वर्गों में हिन्दी-शिक्षण का यह तकाजा है कि शिक्षार्थी की हिन्दी उत्तरोतर उच्चारण, वर्त्तनी, वाक्य-रचना और अभिव्यक्ति में मानकीकरण की ओर उन्मुख होती जाए जिससे शिक्षार्थी एक वृहत्तर समुदाय के साथ जुड़ते हुए प्रभावी हिन्दी का प्रयोग कर सकें ।

1. ज्ञान-विस्तार

स्वभावत: विद्यालयीय शिक्षण में हिन्दी भाषा-साहित्य के शिक्षण के लिए विशेष सजगता, सावधानी और गंभीरता की आवश्यकता है । विद्यालयीय शिक्षा पूरी होने तक शिक्षार्थी का भाषा और साहित्य विषयक बोध इतना विकसित हो जाना चाहिए कि उसमें गद्य-पद्य की किसी रचना के संबंध में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास उत्पन्न हो सके । वह निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त किसी रचना को पढ़कर उसके बारे में अपनी भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया दे सके । वह विविध विषय-क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा तथा भिन्न संदर्भ और जरूरतों के अनुसार अलग-अलग शैली रूपों से परिचित हो सके। शिक्षार्थी को हिन्दी भाषा की विशेषता, सूक्ष्मता और सौन्दर्य की पहचान और परख हो सके । भाषा के माध्यम से शिक्षार्थी अपने यथार्थ जगत् को समझ सके और कल्पना के संसार की रचना कर सके । भाषा के द्वारा उसके ज्ञान क्षेत्र का इतना विस्तार हो कि वह अखबारों में आनेवाले व्यक्ति, परिवेश, समाज, संस्कृति आदि की जानकारी रख सके और इस जानकारी में कहाँ-क्या बढ़ोत्तरी वांछित है, इसकी पहचान कर सके ।

2. कौशल-विस्तार

स्कूली शिक्षा के दौरान हिन्दी भाषा में अपनी ऐसी दक्षता और पकड़ शिक्षार्थी बना सकें कि वह पाठक, श्रोता, वक्ता, लेखक और विश्लेषक के रूप में आत्मविश्वास अनुभव कर सके । आवश्यकता पड़ने पर वह अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकों आदि से सामग्री एकत्र कर उसका सटीक उपयोग कर सके । भाषा में दक्षता और कौशल के बल पर वह श्रव्य-दृश्य संचार माध्यमों पर प्रसारित परिचर्चाओं-वार्त्ताओं-भाषणों आदि को सहजता से सुनकर समझ सके । शिक्षार्थी अपनी अर्जित भाषिक दक्षता और कौशल के बल पर वाद-विवाद, चर्चाओं, भाषणों आदि में समर्थ प्रतिभागिता का प्रमाण दे सके तथा व्यवस्थित एवं असरदार तरीके से अपने विचारों-भावों और संवेदनों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त कर सके। भाषा उसमें जरूरी मानसिक-बौद्धिक गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को सम्पन्न बनाये।

Scanned with CamScanner

3. रुचि और रुझाान

भाषा का शिक्षण ऐसा होना चाहिए कि शिक्षार्थी में बिहार की क्षेत्रीय भाषाओं की विविधता के प्रति स्वीकृति और सद्भाव-सम्मान का भाव बने तथा हिन्दी के सहारे अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं और उनके साहित्य के प्रति उत्सुकता और जिज्ञासा का भाव भी विकसित हो । हिन्दी भाषा और साहित्य के शिक्षण द्वारा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को जान-समझकर उनकी अच्छाइयों को आत्मसात् कर सकने की मनोवृत्ति जन्म ले। जातिवाद, वर्गवाद, ऊँच-नीच के संकीर्ण मनोभाव, धर्म-सम्प्रदाय को लेकर मन में गाँठ बना लेने वाली कट्टरता, लिंग-भेद आदि विगलित हों और मन में सहिष्णुता, सद्भाव, उदारता और सहज अपनापन के भाव जन्में और बद्धमूल हों, तभी हिन्दी भाषा और साहित्य का शिक्षण सार्थकता प्राप्त कर सकता है।

4. पाठ्य-पुस्तक

विद्यालयीय शिक्षार्थियों में उपर्युक्त योग्यता, दक्षता और सामर्थ्य विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि पाठ्य-पुस्तकों, विशेषत: हिन्दी भाषा-साहित्य की पाठ्य-पुस्तकों में ऊपर चर्चित विशेषताओं का सन्निवेश हो । यह सच है कि पाठ्य-पुस्तकें ही भाषा-साहित्य के शिक्षण का एकमात्र स्रोत नहीं होतीं, किन्तु वे प्राथमिक रूप से अधिकृत रूप में एक मार्ग, एक दिशा देती हैं और संबद्ध विषय में शिक्षार्थी के मानसिक-बौद्धिक अभिनिवेश में तत्काल सहायक होती हैं । इसलिए उनमें संकलित रचनाएँ और अभ्यास योग्य एवं उत्तरदायी व्यक्तियों द्वारा अत्यंत सावधानी और गंभीरता से तैयार किए जाएँ ताकि शिक्षार्थियों में वांछित ज्ञान, समझ, दृष्टिकोण, अभिरुचि, संस्कार और कौशल को बनाने-सँवारने और बढ़ाने में प्रधानतापूर्वक सहायक हों । पाठ्यपुस्तकें साधन और माध्यम के रूप में शिक्षार्थियों में कक्षा-दर-कक्षा भाषा-सामर्थ्य को पैनी, दृढ़तर और बहुमुखी बनाती चलें तथा उनमें साहित्य की प्रकृति, स्वरूप, प्रयोजन और उद्देश्य की समाज-संबद्ध, जिम्मेदार व संवादी चेतना अधिकाधिक गहरी होती चले ।

इन पुस्तकों में कौतूहलपरक, जिज्ञासावर्धक तथा जीवन-जगत् के अनेकानेक सरोकारोंवाली विविधतापूर्ण रचनाएँ शामिल हों और उनसे जुड़े हुए ऐसे अभ्यास हों कि शिक्षार्थी उन्हें तनावमुक्त सहजता से आत्मसात् करते हुए उनपर भावात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सकें । रचनाओं के चयन, क्रम-व्यवस्था, विषय-वस्तु और स्वरूप में यह ध्यान रखा जाय कि छात्र रचना पढ़ते समय अन्य विषयों की अवधारणाओं से उसे जोड़ पाएँ और दोनों के अंतर्संबंध देख सकें ।

पाठ्य-पुस्तकों में विषय-वस्तु के फलक इतने विस्तृत होने चाहिए कि आधुनिक समाज के विविध सरोकारों की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हो, जैसे पर्यावरण, परिवेश, संवैधानिक दायित्व, लोकसंस्कृति, व्यापार-वाणिज्य और विविध व्यवसाय, बाजार, सिनेमा, खेल-जगत्, नाटक, नृत्य, संगीत, उद्योग-धंधे, कृषि, मीडिया, विज्ञान-जगत्, पर्वत-समुद्र-अंतरिक्ष, राजनीति, धर्म आदि । इन विषय-वस्तुओं के द्वारा भाषा के विविध प्रयोगों, सन्दर्भों, उनकी शब्दावलियों और अवधारणाओं से छात्रों का परिचय हो और जीवन-जगत् के विविध रूपों को वे आत्मसात् कर सकें ।

पाठ्य-पुस्तकों द्वारा मानसिक वातावरण निर्मित होता है और उससे संबद्ध अभ्यास प्रश्नों द्वारा शिक्षार्थी विषय-वस्तु को परखने, उनसे गहराई के साथ जुड़ने के साथ उनके विश्लेषण का कौशल विकसित करते हैं । अभ्यास प्रश्नों द्वारा रचना के बिन्दुवार परख-विश्लेषण, अवबोध तथा विषय के विविध पहलुओं को देखने और आँक सकने की अंतर्दृष्टि भी विकसित होती है।

Scanned with CamScanner

5. व्याकरण और रचना

प्राय: यह तथ्य सर्वस्वीकृत है कि शिक्षार्थी में अपनी मातृभाषा के जरिये व्याकरण और रचना की एक आधारभूत सहज और अंत:स्फूर्त समझ होती है, सिर्फ उसे सचेत रूप से स्पष्ट करने, दिशा और विस्तार देने तथा समुचित अभ्यास द्वारा उसकी एक जागरूक समझ बनाने की आवश्यकता होती है । इसके लिए अलग से व्याकरण और रचना के नियमों की सैद्धांतिक समझ के लिए पाठ्य-पुस्तक से बाहर का प्रयत्न छोड़कर उनके विविध पाठों पर ही आधारित अभ्यासों द्वारा व्यावहारिक समझ शिक्षार्थियों में विकसित की जानी चाहिए । व्याकरण और रचना का ज्ञान अभ्याससाध्य होना चाहिए और कोशिश की जानी चाहिए कि यह ज्ञान और अभ्यास अरुचिकर या उबाऊ न हो । व्याकरण सहजसाध्य बन सके, इसके लिए शिक्षार्थी को आपस में अथवा स्कूल से बाहर के लोगों के साथ वार्तालाप में भी सीखे हुए या अर्जित व्याकरण ज्ञान के सहज अनुपालन हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए ।

वर्ग VI-VIII

1. पाठ्यक्रम

उद्देश्य

- निजी अनुभवों के आधार पर भाषा का सृजनशील इस्तेमाल।
- दूसरों के अनुभव से जुड़ पाना और उनके परिप्रेक्ष्य से चीजों, स्थितियों तथा घटनाओं को समझने की क्षमता का विकास।
- बाल-साहित्य, दूरदर्शन, नाटक, सिनेमा, पत्र-पत्रिका, कक्षा, सभा और रेडियो पर प्रसारित रचनाओं को आनन्द, सूचना और प्रेरणा के लिए सुनकर, समझकर, स्वतंत्र तथा मौलिक रूप में मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- शिक्षार्थी में भाषा और साहित्य के माध्यम से समाज-प्रेम, देश-प्रेम तथा राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना तथा उनमें सद्वृत्तियों को जगाना।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं और ज्ञान से संबंधित अन्य विषयों की समझ का विकास तथा उससे आनंद उठाने की क्षमता का विकास।
- अर्जित शब्द-भंडार में उत्तरोत्तर वृद्धि करना तथा मानक एवं प्रभावपूर्ण भाषा के प्रयोग की क्षमता का विकास करना।
- शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों और कहावतों का सुविचारित प्रयोग करने की प्रवृत्ति का विकास।
- भाषा की नियमबद्ध प्रकृति को पहचानना और विश्लेषण करना।
- भाषा की बारीकी और सौंदर्य-बोध को उसके सही परिप्रेक्ष्य में समझने की क्षमताओं को विकसित करना।
- पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त विभिन्न कला-रूपों एवं व्यावहारिक प्रयोगों, यथा-अभिनय, गीत, संवाद, परिचर्चा, अंत्याक्षरी, काव्य-पाठ, घटना-वर्णन, प्रश्नोत्तरी, भाषण, खेल-कूद एवं सहपाठगामी क्रिया-कलापों के आधार पर भाषा और साहित्य को समझना ।

Scanned with CamScanner

शिक्षण-युक्तियाँ

- परिवेशगत सम-सामयिक मुद्दों एवं शिक्षार्थी के संज्ञानात्मक स्तर के मुद्दों पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित की जा सकती है।
- पाठ्य-पुस्तकों की कहानियों का नाट्य रूपांतरण एवं समूह में उनके अभिनय का आयोजन किया जा सकता है ।
- शिक्षार्थी से रचनाओं पर प्रतिक्रिया लेते हुए उन्हें मौखिक प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है ।
- समाचार-पत्र में छपे विभिन्न तरह के चित्रों तथा विशेष प्रकार के समाचारों पर उनकी अभिव्यक्ति ली जा सकती है ।
- विज्ञापनों, पोस्टरों, साइनबोर्डों एवं पत्रिकाओं में छपी सामग्री की भाषा का विश्लेषण कक्षा-शिक्षण में किया जा सकता है ।
- शब्द-युग्मों की बारीकी एवं उनके प्रयोग का अभ्यास कक्षा में कराया जा सकता है।
- शिक्षार्थी को बोलचाल की भाषा में मुहावरों का प्रयोग करने को उत्प्रेरित किया जा सकता है ।

व्याकरण के बिंदु

- वाक्य-रचना से लिंग-व्यवस्था संबंधी अभ्यास।
- काल और क्रिया संबंधी अभ्यास।
- कारकों की वाक्यों में पहचान : संबद्ध अभ्यास।
- विशेषण और क्रिया विशेषण : अभ्यास।

वर्ग -VI

पाठ्य-पुस्तक

छठे वर्ग के लिए एक पाठ्य-पुस्तक होगी जिसकी रूपरेखा इस प्रकार होगी :

गद्य

- सांस्कृतिक पर्व-त्योहार पर एक पाठ ।
- सामाजिक सद्भाव पर एक पाठ ।
- प्राकृतिक पर्यटन-स्थल की यात्रा विषयक पाठ ।
- भारतरत्न भीमराव अम्बेदकर पर एक जीवनीमूलक पाठ ।
- भारतीय खेलों पर एक पाठ ।

Scanned with CamScanner

- बिहार पर एक पाठ जिसमें बिहार का नया भौगोलिक चित्र हो, उसकी क्षेत्रीय एवं भाषाई संरचना के साथ ही पड़ोसी राज्यों का संक्षिप्त परिचय हो।
- रिश्ते-नातों के महत्त्व का बोध कराने वाला एक पाठ ।
- सासाराम स्थित शेरशाह के मकबरे की सैर विषयक पाठ जिसमें शेरशाह और उनके ऐतिहासिक कार्यों का सामान्य परिचय हो ।
- नदियों के प्रदूषण से संबंधित एक पाठ ।
- लोक कथा ।

पद्य

- वंदना / प्रेरणा-गीत ।
- विश्व बन्धुत्व से संबंधित कविता ।
- पहेलियाँ ।
- बाल-लीला ।
- उद्‌बोधनात्मक/वीरता से संबंधित कविता ।
- जीव-जन्तुओं के प्रति सद्‌भावपरक एक कविता ।
- प्रकृतिपरक कविता ।
- नागरिकबोध पर आधारित कविता ।
- भारतीय भाषा - एक कविता ।
- विश्व भाषा- एक कविता ।

अभ्यास

सभी पाठों के अंत में अभ्यासार्थ प्रश्न होंगे जिनके उत्तर शिक्षार्थी अपनी भाषा में देंगे। उत्तर लिखने के लिए शिक्षार्थी पाठ में अनकही अन्तर्निहित अर्थात् अप्रत्यक्षत: सम्प्रेषित तथ्यों को पकड़ने की कोशिश करेंगे।

व्याकरण के बिन्दु

- संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण के भेदों की विस्तृत पहचान एवं प्रयोग।
- 'ने' चिह्न का प्रयोग।
- मुहावरों का वाक्य में प्रयोग
- विराम-चिह्नों की पहचान ।

Scanned with CamScanner

पूरक पाठ्य-पुस्तक

- बिहार के बाल-साहित्य के हिन्दी-लेखकों के संक्षिप्त जीवन-परिचय के साथ-साथ उन रचनाकारों की कुछ चुनी हुई रचनाओं के स्वतंत्र संकलन के रूप में एक पुस्तिका होगी ।

वर्ग - VII

इस वर्ग की पाठ्य-पुस्तक की संरचना इस प्रकार होगी

गद्य

- किसी प्रसिद्ध औद्योगिक स्थल की यात्रा विषयक पाठ ।
- पर्यावरण से सम्बंधित पाठ ।
- जीवन-मूल्यों पर आधारित पाठ ।
- 1857 ई० के किसी एक बिहारी नायक का जीवन-परिचय ।
- आर्यभट्ट पर एक पाठ ।
- पारिवारिक रिश्ते-नातों पर आधारित एक पाठ ।
- राष्ट्रीय एकता पर एक पाठ ।
- बिहार की विलुप्तप्राय: मिठाइयों पर एक पाठ ।
- साम्प्रदायिक सौहार्द पर एक पाठ ।
- सिनेमा (दादा साहब फाल्के) पर एक पाठ ।

पद्य

- भक्ति विषयक पद ।
- साखियाँ ।
- उद्‌बोधनात्मक कविता ।
- ऋतु-संबंधी एक कविता ।
- नारी विषयक एक कविता ।
- विभिन्न आधुनिक भावबोध की तीन अलग-अलग कवियों की कविताएँ ।
- भारतीय भाषा से एक कविता ।
- विश्व भाषा से एक कविता ।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

सभी पाठों के अंत में अभ्यासार्थ प्रश्न होंगे जिनके उत्तर शिक्षार्थी अपनी भाषा में देंगे। उत्तर लिखने के लिए शिक्षार्थी पाठ में अनकही अंतर्निहित अर्थात् अप्रत्यक्षतः संप्रेषित तथ्यों को पकड़ने की कोशिश करेंगे।

व्याकरण के बिन्दु

1. कर्म की दृष्टि से क्रिया के भेदों की पहचान एवं प्रयोग । 'ने' चिह्न के प्रयोग से संबंधित अभ्यास ।
2. मुहावरों-लोकोक्तियों का वाक्य-प्रयोग ।
3. शब्द-युग्मों से संबंधित अभ्यास ।
4. पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान : अभ्यास ।

पूरक पाठ्यपुस्तक

बिहार के सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र के महापुरुषों की चरितमूलक जीवनी, प्रसिद्ध राजाओं या शासकों के व्यक्तित्व एवं कार्यों के बारे में प्रामाणिक आरेखन, धार्मिक-सामाजिक क्षेत्र के संतों या महापुरुषों की जीवनी इन विषयों पर एक पुस्तिका होगी ।

वर्ग - VIII

इस वर्ग की पाठ्य-पुस्तक की संरचना इस प्रकार होगी

गद्य

- बाल-मनोविज्ञान पर आधारित एक पाठ ।
- निबंध-लेखन पर एक पाठ ।
- बिहार की सांस्कृतिक धरोहरों को प्रतिबिम्बित करने वाले ऐतिहासिक विषय पर पाठ।
- सामाजिक सद्भाव/बाल-श्रम के विरुद्ध एक पाठ ।
- पड़ोसी पर्वतीय देश की यात्रा के संस्मरण ।
- किसी युग प्रवर्त्तक साहित्यकार पर संस्मरण ।
- बिहार की नदियों पर एक पाठ ।
- बिहार की जनजातियों पर एक पाठ।
- सामाजिक कुरीतियों के कुप्रभावों को दर्शाने वाला एक पाठ।
- हास्य-व्यंग्य मूलक एक पाठ ।
- डायरी

Scanned with CamScanner

पद्य

- राष्ट्रीय भावबोध से संबंधित एक कविता ।
- भक्तिकाल से दो कविताएँ ।
- रीतिकालीन किसी एक कवि की कविता ।
- द्विवेदीयुग से एक कविता ।
- प्रकृति विषयक छायावादी कविता ।
- समकालीन कवियों की आधुनिक भावबोध की दो कविताएँ ।
- भारतीय भाषा से एक कविता ।
- विश्व भाषा से एक कविता ।

अभ्यास

सभी पाठों के अंत में अभ्यासार्थ प्रश्न होंगे जिनके उत्तर शिक्षार्थी अपनी भाषा में देंगे। उत्तर लिखने के लिए शिक्षार्थी पाठ में अनकही अंतर्निहित अर्थात् अप्रत्यक्षत: संप्रेषित तथ्यों को पकड़ने की कोशिश करेंगे।

व्याकरण के बिंदु

- वाक्य के प्रकार सरल, संयुक्त एवं मिश्र : अभ्यास ।
- वाक्यों में अर्थ की दृष्टि से पुनरुक्ति-भेद एवं पहचान : अभ्यास ।
- संधि का सामान्य परिचय : अभ्यास।
- समास : सामान्य परिचय : अभ्यास ।
- पर्याय, विलोम, श्रुतिसमभिन्नार्थक, अनेकार्थक तथा अनेक शब्दों के बदले एक शब्द आदि : अभ्यास।

पूरक पाठ्य-पुस्तक

बिहार की स्थानीय बोलियों/भाषाओं के रचनाकारों के संक्षिप्त जीवन-परिचय के साथ उन रचनाकारों की कुछ चुनी हुई रचनाओं के स्वतंत्र संकलन के रूप में एक पुस्तिका होगी ।

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन

वर्ग VI-VIII

षष्ठ से अष्ठम् वर्ग का मूल्यांकन सतत एवं औपचारिक दोनों प्रकार का होना चाहिए। सतत मूल्यांकन की आवश्यकता इस उम्र के लिए इसलिए अनिवार्य होती है कि उनकी प्रगति या गतिविधि पर लगातार नजर रखी जाये। इस उम्र में शिक्षार्थी अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। वे अपने आप को समाज का मुख्य अंग मानने लगते हैं। इसलिए समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता, कला एवं भाषा में सौंदर्यपरकता आदि का मूल्यांकन आवश्यक होगा। अत: अभिव्यक्ति की स्तरीयता परखने के लिए मौखिक परीक्षा के साथ लिखित परीक्षा में बहुवैकल्पिक एवं वर्णनात्मक प्रश्न भी होने चाहिए। वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर से शिक्षार्थी की भाषा से संबंधित कौशल का मूल्यांकन भी हो सकेगा।

परीक्षा

परीक्षा को भयरहित एवं तनावमुक्त करने के लिए तीन परीक्षाएँ आयोजित होनी चाहिए । प्रथम सावधिक परीक्षा, द्वितीय सावधिक परीक्षा एवं वार्षिक परीक्षा । इससे सभी पाठों का तनाव शिक्षार्थी पर कम होगा । पाठांशों पर परीक्षा के आधारित होने से शिक्षार्थी तैयारी भी अच्छी कर सकेंगे एवं चिन्तन कर अपने को पाठ के अनुरूप तैयार कर सकेंगे । पहली सावधिक परीक्षा की उपलब्धि के अनुसार शिक्षार्थी (संबंधित) को सुझाव देने का अवसर मिलेगा । परीक्षाफल ग्रेड पर आधारित हो। इससे सही मूल्यांकन होता है तथा शिक्षार्थी को कुंठाग्रस्त होने से बचाया जा सकता है । परीक्षा की व्यवस्था विद्यालय स्तर पर होनी चाहिए जिसमें मौखिक परीक्षा को भी स्थान मिलना चाहिए।

वर्ग VI से VIII

वर्ग VI से VIII के शिक्षार्थी का मूल्यांकन अप्रत्यक्ष एवं अनौपचारिक होगा एवं इसकी प्रक्रिया सतत जारी रहेगी । शिक्षक प्रत्येक शिक्षार्थी की प्रगति का अभिलेख रखेंगे । दो सावधिक एवं वार्षिक परीक्षा ली जायेगी । इसका विवरण निम्नानुसार होगा:

वर्ग	प्रथम सावधिक (100 अंक)	द्वितीय सावधिक (100 अंक)	वार्षिक (100 अंक)
VI	आंतरिक मूल्यांकन -60 लिखित परीक्षा -40	आंतरिक मूल्यांकन -60 लिखित परीक्षा -40	आंतरिक मूल्यांकन -60 लिखित परीक्षा -40
VII	आंतरिक मूल्यांकन -50 लिखित परीक्षा -50	आंतरिक मूल्यांकन -50 लिखित परीक्षा -50	आंतरिक मूल्यांकन -50 लिखित परीक्षा -50
VIII	आंतरिक मूल्यांकन -40 लिखित परीक्षा -60	आंतरिक मूल्यांकन -40 लिखित परीक्षा -60	आंतरिक मूल्यांकन -40 लिखित परीक्षा -60

प्रथम सावधिक के पाठ्यक्रम से 30 प्रतिशत प्रश्न द्वितीय सावधिक परीक्षा में पूछे जायेंगे एवं वार्षिक परीक्षा में प्रथम सावधिक के पाठ्यक्रम से 10 प्रतिशत एवं द्वितीय सावधिक के पाठ्यक्रम से 20 प्रतिशत प्रश्न पूछे जायेंगे । शेष 70 प्रतिशत प्रश्न अन्तिम चार महीनों के पाठ्यक्रम से पूछे जायेंगे ।

Scanned with CamScanner

8. अपेक्षित अधिगम : वर्ग VI-VIII

वर्ग VI से VIII तक का यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों की भाषायी दक्षता के संदर्भ में प्रगतिमूलक और विकासमूलक है । अबतक के ज्ञान, शिक्षण, समझ, पहचान और कौशल का इन वर्गों के पाठ्यक्रम में संवर्धन एवं परिष्कार तो परिकल्पित है ही, साथ ही व्यक्ति और समाज, घर और बाहर, परिवेश और पर्यावरण, देश और दुनिया से संबंधित नई-नई बातें और तथ्य शिक्षार्थी के सामने आएँगे । वे दिलचस्प और तनावहीन तरीके से अपने ज्ञान, समझ और कौशल के क्षितिज का विस्तार कर सकेंगे। चूँकि इन वर्गों के शिक्षार्थी मानसिक रूप से अपेक्षाकृत अधिक ग्रहणशील और धारणशील हो जाते हैं, अतः मनोवैज्ञानिक रूप से इस तथ्य को दृष्टि में रखकर ही अपेक्षाकृत गंभीर और प्रामाणिक पाठों का संकलन पाठ्य-पुस्तकों में प्रस्तावित है। इनके चयन और संकलन में मनोरंजन के साथ-साथ अधिक गंभीर उद्देश्यों का ध्यान रखा गया है।

इन वर्गों के पाठयक्रम द्वारा शिक्षार्थी भाषा की शक्ति और क्षमता को अपने भीतर अनुभव करने लगेंगे। वे दूसरों के साथ अपने अनुभव, भाव, विचार और प्रतिक्रियाओं का विनिमय कर सकने की क्षमता अर्जित कर लेंगे। इस चरण में शिक्षार्थी में अपने घर-परिवार, गाँव-समाज, प्रांत और देश के बारे में तथा परिवेश की जटिल संरचनाओं की भी समझ विकसित होगी। वे अपने चारों तरफ के परिवेश, उपकरणों और हलचलों को अधिक दक्षता के साथ समझ सकेंगे और उनके बीच व्यवहार एवं रचना की इकाई के रूप में खुद को बाँट सकेंगे। भाषा और साहित्य के माध्यम से उनमें व्यापक सामाजिक संबंधों का बोध एवं पहचान की चेतना जगेगी। समाज-प्रेम, देश-प्रेम, राष्ट्रीयता, भाई-चारा, सहयोग आदि के सकारात्मक भाव जगेंगे। उनके शब्द-भंडार में पर्याप्त बढ़ोत्तरी होगी और भाषा के कौशल का बहुविध विकास होगा। उनकी भाषा में प्रयोग की दृष्टि से लिखित-वाचिक आदि तमाम स्तरों पर शुद्धता, संयतता और उपयुक्तता आएगी । मुहावरों एवं लोकोक्तियों का बोध एवं व्यवहार बढ़ेगा । गद्य एवं पद्य में विविध रंग-रूपों की रचनाओं के प्रभेद स्पष्ट होंगे। इस तरह संकलित रचनाएँ और उनसे सबद्ध अभ्यास उनके भीतर सृजनात्मकता का विकास करेंगे। प्रकृति और मानवकृत सभ्यता से जुड़ी हुई समस्याएँ अपने महत्त्वबोध के साथ उनके सामने सार्थक रूपों में खुलेंगी। वर्ग आठ तक आते-आते शिक्षार्थी में अपने समाज के यथार्थ से जुड़ी अनेक समस्याओं, चिंताओं और सरोकारों की समझ बढ़ेगी। वे प्राप्त भाषाज्ञान और रुचि-विचार आदि के परिष्कार के सहारे दूसरे विषयों द्वारा प्राप्त ज्ञान और कौशल को इस चरण में समेकित कर सकेंगे। इस चरण में व्याकरण एवं भाषा के रचनात्मक रूपों के ज्ञान का दायरा भी विस्तृत और गहरा होगा।

न्यूनतम संवाद-अवधि : 125 से 130 घंटे

घंटियों का आवंटन : वर्ग VI से VIII (साप्ताहिक) - 6 घंटी

Scanned with CamScanner

Syllabus of Urdu Language for Middle School Education Classes VI - VIII

تعلیم کی ضرورت اور مقاصد :

اردو ہندستان کی مختلف زبانوں کے درمیان اپنی علاحدہ شناخت رکھتی ہے۔ اس زبان کے بولنے اور سمجھنے والے صرف ہندستان ہی نہیں دنیا کے متعدد ملکوں میں پائے جاتے ہیں۔ اس کا ادب ابتدا سے ہی مقبول اور قابل قدر اہمیت کا حامل رہا ہے۔ اس کا بیش قیمتی اور وقیع ادبی سرمایہ دنیا کی کسی بھی ترقی یافتہ زبان کے مقابلے میں اعتماد و افتخار کے ساتھ پیش کیا جا سکتا ہے۔ چوں کہ یہ زبان عربی، فارسی، ترکی، فرانسیسی اور دوسری ہندستانی زبانوں کے رزم و سبک الفاظ کی آمیزش سے بنی ہے، اس لیے اس کی شیرینی اور کشش دوبالا ہوگئی ہے۔ اس کے لب و لہجے میں وہ گھلاوٹ اور مٹھاس ہے جس کی دنیا معترف ہے۔ یہی سبب ہے کہ دوسری زبانوں کے لوگ بھی اس سے متاثر ہوئے بغیر نہیں رہ سکتے۔ اردو ہماری مشترکہ تہذیب و تمدن کی پیداوار ہے۔ اس زبان نے ابتدا سے ہی ہم آہنگی، حب الوطنی، باہمی یگانگت اور اخوت کا پیغام عام کیا ہے۔ ماہرین لسانیات کے مطابق اس کا خمیر کھڑی بولی سے تیار ہوا ہے لیکن اس کی تعمیر و تشکیل میں جیسا کہ عرض کیا گیا عربی، فارسی، سنسکرت اور ترکی کے علاوہ دوسری بہترے زبانوں کے الفاظ کا بہت اہم رول رہا ہے۔ مذکورہ بالا خصوصیات کی بنا پر اس زبان کی تدریس اور اس کی تشہیر سے قومی یک جہتی کو فروغ حاصل ہوگا اور ملک کی بہبود اور سالمیت کو استحکام حاصل ہوگا۔

دنیا کے تمام ماہرینِ تعلیم اس بات پر متفق ہیں کہ طلبہ کی ذہنی نشو و نما اور ان کی شخصیت کی تعمیر میں مادری زبان ہی سب سے زیادہ معاون ثابت ہوتی ہے۔ یہ ایک فطری بات ہے کہ طلبہ اپنی مادری زبان کو جس طور پر سمجھتے ہیں، شاید ہی کسی دوسری زبان کو سمجھ سکیں۔ استثنا کی بات اور ہے۔ اس لیے طالب علم جب اپنی مادری زبان میں کسی موضوع کو پڑھتا ہے تو بہت تیزی اور آسانی سے اس کی تفہیم ہوتی ہے۔ بچے جب اسکول میں داخلہ لیتے ہیں تو ابتدا میں ان کی ذہنی سطح پختہ نہیں ہوتی۔ شروع میں مادری زبان کی سطح پر بھی وہ ابتدائی منزلیں طے کر رہے ہوتے ہیں۔ لہذا زبان کی تدریس کا سب سے پہلا اور اہم مقصد یہ ہوتا ہے کہ طلبہ اپنی عمر اور جماعت کے مطابق صحیح پڑھنا، صحیح بولنا اور درست املا لکھنا سیکھ لیں، ساتھ ہی ان کے سوچنے سمجھنے اور درست ادراک کو پرکھنے کی صلاحیت بھی بڑھتی جائے۔ اور وہ بہ آسانی کسی بات کو سن کر اسے سمجھ لیں اور روزمرہ کے تجربات و مشاہدات کو اپنی زبان میں ربط کے ساتھ بیان کرنے اور انھیں تحریری شکل دینے میں بہت حد تک کامیاب ہو جائیں۔ زبان سیکھنے کے ساتھ طلبہ اپنے ماحول، گرد و پیش اور دوسرے کو ائف سے بھی واقف ہوتے ہیں۔ اس کے ساتھ وہ سماجی و تہذیبی قدروں سے بھی بحسن و خوبی آشنا ہو جاتے ہیں۔ ابتدائی مرحلے کے بعد طلبہ کی ذہنی وسعت میں اضافہ کے لیے انھیں صوبائی اور ملکی حالات سے باخبر کرانا لازمی ہوتا ہے۔ تدریس کے اہم مقاصد میں ایک اہم مقصد یہ بھی ہے کہ طلبہ رفتہ رفتہ اپنے ملک کے مختلف حصّوں، خطوں میں بسنے والے مختلف فرقوں، طبقوں اور قبیلوں کی بابت معلومات حاصل کریں۔ ان کے رہن سہن، ان کی طرز رہائش اور طور طریقے کی جانکاری حاصل کریں اور سبھوں کے جذبات و احساسات اور عقائد کا احترام کرنا سیکھیں۔ تعلیم کا ایک بنیادی مقصد یہ بھی ہے کہ باہمی میل جول اور بھائی چارہ کے ماحول کو فروغ دیا جائے اور امن و آشتی کی فضا سازگار بنائی جائے۔ ان کے جذبۂ حب الوطنی کو تحریک دی جائے۔ آئین کے ذریعے دیے گئے حقوق، فرائض اور اختیارات سے آگاہ کیا جائے۔

ہمارا ملک طویل جنگ آزادی کے بعد انگریزوں کے چنگل سے آزاد ہوا ہے۔ ملک عزیز کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرانے کے لیے ہمارے بزرگوں نے اپنی جانیں قربان کی ہیں۔ تب جا کر ہم آزاد ملک کے باشندہ کہلانے کے لائق ہوئے۔ اس لیے طلبہ میں آزادی کا احترام اور اس کے تحفظ کا جذبہ پیدا کرنا اور ملک کی آئین کے تئیں انھیں باخبر کرنا لازمی ہے۔ حقوق کی شناخت کے ساتھ ان میں فرائض کی ادائیگی کا چلن بھی راہ پائے اس کے لیے مناسب ذہن سازی ہونی چاہیے۔ ساتھ ہی ساتھ طلبہ کی تعلیم و تربیت اس نہج پر ہو کہ ان کا مزاج حقیقت پسندانہ، سائنسی اور منطقی ہو سکے۔

Scanned with CamScanner

طریقۂ تدریس :

درس و تدریس کا کام بہت ہی محنت، توجہ اور ہنرمندی کا متقاضی ہے۔ ابتدا میں بچے فطرت سے زیادہ قریب ہوتے ہیں۔ ان کے اذہان نئی چیزوں کو سیکھنے کے لیے پوری طرح تیار ہوتے ہیں۔ ساتھ ہی ان کے اندر بے پناہ تجسس بھرا ہوتا ہے۔ جھجک، گھبراہٹ اور شرمیلا پن بھی موجود ہوتا ہے۔ اس لیے استاد کو چاہیے کہ بچوں کے درمیان وہ اس طرح خود کو پیش کرے کہ بچے اسے اپنا دوست سمجھیں۔ استاد سے وہ مزید جڑاؤ محسوس کریں تاکہ وہ حوصلے اور امنگ کے ساتھ سیکھنے کے مرحلے سے گزرتے رہیں۔ استاد کو ان کی ذہنی سطح کو ہمہ وقت پیش نظر رکھنا چاہیے اور یہ مان کر چلنا چاہیے کہ ان سے قدم قدم پر غلطیاں سرزد ہوں گی۔ وہ غلطیاں پڑھنے لکھنے میں ہوں یا عادات و اطوار میں، بچوں کے ذریعے کچھ بھی ممکن ہو سکتا ہے۔ خیال رہے کہ بچے غلطیوں سے ہی سیکھتے ہیں۔ غلطی ان کے فطری حقوق کا اہم ترین حصہ ہے۔ بچوں کو پیار اور ہمدردی سے مخاطب کرنا، ان کے ساتھ ہنسنا بولنا ان کے حق میں بہت مفید ہوگا اور وہ بخوشی استاد کی بات سننے سمجھنے اور پھر اس پر عمل کرنے میں دلچسپی لیں گے۔ درجے میں اس طرح کا خوشگوار ماحول بنانا از حد لازمی ہے تاکہ طلبہ کھل کر اپنے استاد سے سوالات کر سکیں، ان سے نئی باتوں کی بابت پوچھ سکیں، توجہ اور انہماک کے ساتھ استاد کی باتیں سنیں اور خوشی خوشی سیکھتے ہوئے آگے بڑھیں۔

طلبا میں سیکھنے کا شوق اور خود اعتمادی پیدا کرنے کے لیے ان کی حوصلہ افزائی کی جائے۔ ان کے کام کی وقتاً فوقتاً تعریف کی جائے۔ بچے مناسب شاباشی سے تحریک پاتے ہیں اور ان کے اندر مزید سیکھنے کا جذبہ پیدا ہوتا ہے۔ ایک کامیاب استاد وہی ہے جو طالب علموں کو اپنے سحر میں رکھے۔ ان کے دلوں میں اپنے لیے احترام پیدا کرے۔ طلبہ کے اندر تجسس کو ابھارے۔ انھیں محنت کرنے پر آمادہ کرے۔

جماعت میں جو طلبہ ہوتے ہیں وہ مختلف طبقات سے تعلق رکھتے ہیں۔ ان کے مذہب، رنگ نسل اور عقائد میں فرق بھی ہو سکتا ہے۔ اس لیے ان کی ذہنی سطح اور پس منظر ایک جیسے نہیں ہوتے۔ استاد کا فریضہ یہ ہے کہ اول تو وہ ہر طبقہ کے بچوں کے مزاج کے مطابق ان کی تربیت کرے ساتھ ہی وہ کمزور بچے پر خصوصی توجہ دے تاکہ وہ بھی رفتہ رفتہ اپنے ہم جماعتوں کی برابری میں آ سکے۔

استاد کو کلاس روم میں ایک مشفق معاون کا رول ادا کرنا چاہیے۔ کبھی ہنسنا، کبھی بولنا، کبھی لطیفے، اور کبھی کہانیاں سنانا بھی ضروری ہوتا ہے تاکہ بچے کی تفریح بھی ہو اور اسی بہانے وہ سیکھتا بھی رہے۔ استاد کو چاہیے کہ وہ درس کے دوران طلبہ سے سوالات کرے اور انھیں بولنے پر اکسائے، اس طرح اُن کی گویائی کی صلاحیت میں اضافہ ہوگا۔ استاد مشکل کو آسان بنانے کے لیے ہے نہ کہ آسان کو مشکل بنانے کے لیے۔ اس لیے لازمی ہے کہ استاد جس موضوع کو پڑھا یا سمجھا رہا ہو اس کی جزئیات پر بھی اس کی گہری نظر ہو۔ جیسا کہ عرض کیا گیا وہ پوری جماعت پر نظر تو رکھے ہی ساتھ ہی انفرادی طور پر بھی کمزور بچوں پر توجہ دے۔ زبان کو پر اثر ڈھنگ سے سکھانے کے عمل میں بعض سرگرمیاں بے حد معاون ہو سکتی ہیں جیسے مکالمہ آرائی، ڈرامہ کھیلنا، نظم گوئی، قصہ گوئی، اپکشن گیت، کوئز، تحریری مقابلے، کہانی لکھنا، نظمیں گڑھنا، بیت بازی، خوش نویسی وغیرہ۔

Scanned with CamScanner

Stage III Class VI - VIII

درجہ ششم تا ہشتم

تمہید :

مختلف زبان، تہذیب اور ثقافت کے حامل افراد کے درمیان جب تبادلۂ خیال کا مسئلہ درپیش ہوا تو اس کے حل کے طور پر جو زبان وجود میں آئی، وہ ''اردو'' ہے۔ گویا اردو کا خمیر ہی ایسے عناصر سے تیار ہوا جو مشترکہ تہذیب و تمدن کی نمایندگی کر رہے تھے۔ اس لیے یہ ضروری ہے کہ طلبا کو اردو زبان سے جوڑنے کے مرحلے میں یہ ذہن میں دینا چاہیے کہ اردو کے ذخیرۂ الفاظ میں مختلف زبانوں کے لفظوں کا ہونا، اس کی انفرادی خصوصیت ہے۔ چوں کہ مختلف قوموں میں زندگی کرنے کے طور طریقے کے ساتھ ساتھ ان کے جذبات و احساسات بھی جداگانہ ہوتے ہیں اور الفاظ انھی عوامل کے علائم کی حیثیت رکھتے ہیں، لہٰذا قوموں اور تہذیبوں کی گوناگونی کو پیرایۂ اظہار عطا کرنا اردو کی فطری صلاحیت ہے۔ اس نکتے کی روشناسی طلبہ میں زبان سے دل چسپی کے ساتھ ساتھ یہ احساس بھی پیدا کرے گی کہ وہ جس زبان کے طالب علم ہیں، اس کی اپنی قومی اور ملی اہمیت مسلّم ہے۔

مقاصد :

۱۔ طلبہ کی لسانی صلاحیتوں یعنی سننے، بولنے، پڑھنے، لکھنے اور غور و فکر کی صلاحیتوں کو مزید پختہ کرانا۔

۲۔ طلبہ میں یہ ذوق پیدا کرنا کہ انھوں نے جو کچھ پڑھا، سنا یا دیکھا ہے، انھیں اپنی زبان میں پیش کر سکیں۔

۳۔ طلبہ کو اردو کی اہم اصناف سے روشناس کرانا۔

۴۔ زبان کے عملی پہلوؤں کے تعلق سے اس کی اہمیت کا احساس دلانا۔

۵۔ نصابی کتابوں کے علاوہ دیگر مفید مضامین و کتب کے خاموش اور با آواز مطالعے پر زور دینا۔

۶۔ آزادانہ اظہار خیال کے مواقع فراہم کرانا۔ مثلاً تحریری و تقریری مقابلے، بیت بازی اور غزل سرائی وغیرہ۔

۷۔ ذخیرۂ الفاظ میں اضافے کے ساتھ لفظوں کے صحیح تلفظ پر زور دینا۔

۸۔ مرکب الفاظ کی پہچان کرانا اور ہم صوت لفظوں کے معنی و املے کی مشق کرانا۔

۹۔ سبق کے مرکزی خیال پر ذہن مرکوز کرانا۔

۱۰۔ درسی اور غیر درسی مضامین و عبارات پر مشتمل سوالوں کے جواب دینے کی صلاحیت پیدا کرنا۔

طریقۂ تدریس :

ان درجات کے طلبہ میں بحث و مباحثہ اور غور و فکر کی صلاحیت پیدا ہو جاتی ہے۔ اساتذہ کو دوران تدریس یہ کوشش کرنی چاہیے کہ طلبہ کے ذہن میں سوالات ابھرنے لگیں۔ اس طرح Interactive کلاس کا ماحول پیدا ہوگا اور طلبہ زیادہ سے زیادہ عملی طور پر درسی امور میں شریک ہو سکیں گے۔

اساتذہ کو کلاس سے باہر کی سرگرمیوں پر بھی توجہ دینی چاہیے۔ چونکہ ایسی سرگرمیوں کا تعلق نصابی کتابوں سے براہ راست نہیں ہوتا اور طلبہ کلاس روم کی اکتاہٹ سے بھی نجات محسوس کرتے ہیں۔ لہٰذا نفسیاتی نقطۂ نظر سے یہ فائدہ ہوتا ہے کہ ذہنی تناؤ کے بغیر طلبہ تعلیم سے ہم کنار ہو جاتے ہیں۔ اس کے علاوہ ان سرگرمیوں میں شرکت سے طلبہ کو آزادانہ اظہار خیال کے مواقع بھی فراہم ہو جاتے ہیں۔

Scanned with CamScanner

نصابی کتابوں کے خاکے

کلاس VI

کہانیاں (تین ـــــ سبق آموز یا معلومات افزا)

دو دوسری زبانوں کی کہانیاں (ایک ملکی اور غیر ملکی)

ایک مشہور شخصیت کی سوانح

تاریخی عمارات اور تفریحی مقامات سے متعلق ایک ایک مضمون (مثلاً وادی کشمیر، جنتر منتر، لال قلعہ، تاج محل وغیرہ)

ایک انشائیہ

کمپیوٹر سے متعلق ایک مضمون (ابتدائی معلومات پر مبنی)

غزلیں ۴ (سہل زبان، رواں بحر، اخلاقی اور تعمیری موضوعات)

نظمیں ۴

مخمس ۱

بہار کے کسی مجاہد آزادی سے متعلق ایک مضمون (سوانح / شجاعت / حب الوطنی سے متعلق)

مذہبی شخصیتوں سے متعلق ایک مضمون (سوانح، کردار، مذہبی رواداری وغیرہ)

ایک مضمون انسانی / اخلاقی اقدار سے متعلق (معذوروں اور جانوروں سے حسنِ سلوک اور انسانی اور اخلاقی اقدار کی تدریس

ماحولیات سے متعلق مضمون (ندی / جھرنا)

معاون درسی کتاب

برائے درجہ ششم ـــــ اردو کے اہم ظرافت نگاروں کے مضامین کا ایک مختصر مجموعہ بچوں کی ادبی تربیت کے لئے شامل کیا جائے گا۔

کلاس VII

کہانیاں (تین ـــــ سبق آموز اور معلومات افزا)

دو دوسری زبانوں کی کہانیاں (ملکی / غیر ملکی)

یادنگاری ۔ ۱

رپورتاژ ۔ ۱ (ادبی اور اسکول کے پروگرام پر مشتمل)

جنگ آزادی کے ہیرو ۔ ۱

سائنس داں ۔ ۱ (بچپن / تعلیمی زندگی)

فلسفی ۔ ۱ (سوانح / بنیادی افکار)

جغرافیہ اور سیاست سے متعلق ۱ + ۱

تعمیرات ۔ قطب مینار کیسے بنا

Scanned with CamScanner

مذہبی شخصیتوں سے متعلق سوانح ۔ ۱
اخلاقی اقدار سے متعلق ۔ ۱ (دوسروں کے جذبات کا احترام، بنیادی انسانی حقوق کی پاسداری وغیرہ)
ماحولیات سے متعلق ۔ ۱ (جنگل، بارش، سمندر وغیرہ)
غزلیں ۔ ۴
نظمیں ۔ ۵
مسدس ۔ ۱ (تین سے چار بند)

معاون درسی کتاب

برائے درجہ ہفتم ـــــ بہار کے اہم افسانہ نگاروں کے پندرہ افسانوں کا انتخاب بچوں کے ادبی ذوق کی تربیت کی غرض سے معاون درسی کتاب کے طور سے ساتویں درجے میں شامل کیا جائے گا۔

کلاس VIII

کہانیاں (تین ۔ سبق آموز اور معلومات افزا)
دو دوسری زبانوں کی کہانیاں
ایک خاکہ (کسی ادیب یا شاعر کا)
ایک مختصر تنقیدی مضمون
جنگ آزادی کے ہیرو ۔ ۱ (سوانح، ایثار، رلائحہ)
سائنس داں ۔ ۱ (زندگی کا اہم مور، انہماک)
فلسفی ۔ ۱
قومی رہنما ۔ ۱
مذہبی شخصیت ۔ ۱
اخلاقیات ۔ ۱
ماحولیات سے متعلق ۔ ۱
غزلیں ۔ ۴ (رواں بحریں، آسان تراکیب، مثبت فکر سے متعلق)
نظمیں ۔ ۴ (آسان، مختصر اور رواں)
مثلث ۔ ۱
منقبت ۔ ۱
فاصلاتی نظامِ تعلیم پر ایک مختصر مضمون

معاون درسی کتاب

برائے درجہ ہشتم ـــــ بہار کے اہم شعرا کی منتخب غزلوں کا ایک انتخاب آٹھویں درجے میں بچوں کے شیریں ذوق کی تربیت کے لئے شامل کیا جائے گا۔

Scanned with CamScanner

انسانی اقدار اور دیگر موضوعات

VI, VII & VIII

صفدروں سے اچھا برتاؤ شخصیت کو اخلاقی اور انسانی اقدار سے مزین کرنا، پانی کی اہمیت، گفتگو کے آداب، ہندوستان کی ملی جلی تہذیب، ملک کے مختلف حصوں کے بچوں کی زندگی، ضبط و تحمل، موسیقی، مختلف مذاہب کا احترام، قومی شناخت، سائنسی ایجادات، فاصلاتی نظامِ تعلیم، خواتین کے تئیں مساویانہ تصور۔

قواعد کی تدریس

اسکولی تعلیم کے تیسرے مرحلے کے تینوں درجوں میں درسی کتب میں قواعد کے لیے ایک مستقل باب شامل کیا جائے گا۔ درجہ ششم میں ترتیب کے ساتھ درجہ اوّل سے درجہ پنجم تک طالب علم نے قواعد کے سلسلے سے جتنی معلومات حاصل کر لی ہیں، انھیں یکجا پیش کر دیا جائے گا۔ درجہ ہفتم میں ابتدائی قواعد کا ایک مکمل خاکہ دس صفحات میں شامل کیا جائے گا اور درجہ ہشتم میں قواعد کے باقی ماندہ حصے، محاورات اور ضرب الامثال کے شاملِ نصاب ہونے سے طلبہ قواعد کی ابتدائی معلومات سے بہرہ ور ہو جائیں گے۔ چوتھے مرحلے کے دونوں درجوں کے لیے مشترکہ طور پر ایک جونیر اسکول قواعد کی کتاب شامل ہوگی۔ اسی طرح اسکولی تعلیم کے آخری مرحلے میں ایک سینیر اسکول قواعد کی کتاب الگ سے شاملِ نصاب ہوگی۔ جونیر قواعد تقریباً ۶۰ صفحات اور سینیر اسکول قواعد تقریباً ۸۰ صفحات پر مشتمل ہو۔

قواعد کے اجزا

درجہ ششم :

درجہ اوّل سے درجہ پنجم تک قواعد کے سلسلے میں جو کچھ بتایا جا چکا ہے، انھیں ایک سبق کی صورت میں یکجا کر دیا جائے گا۔

درجہ ہفتم :

(ابتدائی قواعد کا ایک مکمل خاکہ دس صفحات میں)

اسم : اسم خاص (معرفہ)، اسم عام (نکرہ)، اسم آلہ، اسم ظرف، اسم کیفیت، اسم تصغیر

ضمیر : ضمیر شخصی، ضمیر متکلم، ضمیر مخاطب، ضمیر غائب، ضمیر اشارہ

صفت : صفت ذاتی، صفت نسبتی، صفت عددی

فعل : فعل معروف، فعل مجہول، فعل لازم، فعل متعدی

حروف : الف ممدودہ، الف مقصورہ، واو ممدودہ، نون غنہ، یای معروف، یای مجہول

درجہ ہشتم :

صرف ونحو کی تعریف

اسم اور اس کی قسمیں (جامد، مصدر، مشتق)

عَلَم کی قسمیں

ضمیر اور اس کی اہم قسمیں

صفت : ذاتی، نسبتی، عددی، مقداری

فعل : فعل معروف، مجہول، لازم، متعدی، متعلقاتِ فعل

حالت : حالتِ فاعلی، حالت مفعولی

مفرد اور مرکب جملے، سابقے اور لاحقے، ظرف زمان ومکان

حروف : حروفِ ربط، حروفِ عطف، حروف فجائیہ، حروفِ تخصیص، روزمرہ، محاورہ اور کہاوت کی تعریف

اہم محاوروں اور کہاوتوں کی فہرست اور ان کا جملوں میں استعمال

اضداد، واحد جمع، تذکیر وتانیث، ہم صوت الفاظ

Scanned with CamScanner

শ্রেণি – VI – VIII

ভূমিকা (Introduction)

প্রাথমিক শ্রেণির বেড়া ডিঙিয়ে শি(ার্থী এবার এগিয়ে এসেছে ওপরের দিকে । শৈশব থেকে কৈশোরে পদার্পণ করেছে । ফলে স্বাভাবিক ভাবেই এবার সে মানসিক দিক দিয়ে কিছুটা পরিণতও হয়েছে । শুনে বলা, বলার পর পড়া তারপর লেখার মধ্য থেকে তার শিশুমন এবার নিঃসন্দেহে কিছুটা পরিপক্ক হয়েছে । বয়ঃসন্ধি(ণে কিশোরদের মন অত্যন্ত সংবেদনশীল হয়। পারিপার্শ্বিক কুরীতি যেমন নিম্নরুচির সিনেমা, নেশার বস্তু ইত্যাদির দ্বারা তারা অতি সহজেই প্রভাবিত হতে পারে । তাদের মনে এই সময়ে নানা ধরনের প্রশ্নেরও উদয় হয় । নৈতিক, সামাজিক, রাজনৈতিক জটিলতার আবর্ত থেকে শি(করা তাদের উত্তরণের পথ দেখাবেন । তাদের সৌন্দর্যবোধের উন্মেষ ও বিকাশের এটাই প্রারম্ভিক স্তর । এই স্তরে শি(ককে তাদের বন্ধুর মতো আচরণ করতে হবে ।

শি(ার্থী আগের ক্লাসে মোটামুটি বুঝে পড়তে পারার দ(তা অর্জন করেছে । পড়ার সময় কোন বিশেষ রচনার ভাব গ্রহণ করে সেই ধরনের পাঠ্য - বহির্ভূত অন্যান্য বই পড়ার ইচ্ছা মনে জাগে । সংবাদপত্র পাঠ করে শি(ার্থীর ধীরে ধীরে আত্মবিশ্বাস গড়ে ওঠে এবং ভাষার মাধ্যমে পরিবেশ ও পরিস্থিতির বিশ্ল-ষণ করার যোগ্যতা অর্জন করে ।

নতুন পাঠ্যত্র(ম অনুসারে শি(ার মাধ্যম কেবলমাত্র পাঠ্যপুস্তক পড়া ও পড়ানোই নয়, সম্মিলিত আলোচনা (Group discussion), Audio Cassette, C.D. এবং শ্রেণিকৃ(বাদ-বিবাদ প্রতিযোগিতা, নাচ, গান, নাটক, ও আবৃত্তি ইত্যাদি হতে পারে । এই মাধ্যমগুলির সাহায্যে শি(ার্থী অতি সহজেই পাঠ্য বিষয়গুলি গ্রহণ করতে স(ম হবে ।

উদ্দেশ্য (Objectives)

শোনার যোগ্যতা ঃ — মনোযোগ সহকারে যে কোন বিষয় শোনা, শিশুকাল থেকে উচ্চারণের শুদ্ধতা শেখানো, অন্যের বক্তব্যের অর্থ বুঝতে পারা এবং তার মূল্যায়ন করতে পারার যোগ্যতা অর্জন করা, অন্যের মতামত শোনা ও সহিষ্ণুতার গুণ অর্জন করা ।

বলার যোগ্যতা ঃ— যে কোন বক্তব্য বিশুদ্ধ উচ্চারণে, সাবলীল গতিতে, জড়তাহীনভাবে, যুক্তি(সহকারে প্রকাশ করা, আলোচনায় অংশ গ্রহণ করা, শব্দ ব্যবহারে আঞ্চলিক ভাষার প্রভাবে বাংলা ভাষাকে বিকৃত না করা, গল্প বলা ও আবৃত্তি করা ।

পড়ার যোগ্যতাঃ—বিশুদ্ধ উচ্চারণে, সাবলীল গতিতে সঠিক ভঙ্গিমায় গদ্য-পদ্য, নাটক প্রভৃতি

Scanned with CamScanner

পাঠ করা, মৌন পাঠের যোগ্যতা অর্জন করা, শব্দকোষ বা অভিধান ব্যবহার করা, বাংলা ভাষার উন্নতি কল্পে পাঠ্য বিষয় বহির্ভূত আধুনিক গ্রন্থ সংবাদপত্র ইত্যাদি পাঠ করা ।

লেখার যোগ্যতা ঃ— লিপি শুদ্ধ হওয়া উচিত । বানানে শুদ্ধতা ও সাবলীলতা থাকা দরকার। অন্যান্য ভাষার প্রভাব থেকে নিজের ভাষার স্বাতন্ত্র্য র(া করা, নিজের অভিজ্ঞতাকে লিপিবদ্ধ করা, পত্র লেখা, ভাব সম্প্রসারণ, ছবি দেখে গল্প লেখা ইত্যাদি বিভিন্ন প্রকারের লেখায় অভ্যস্থ হওয়া ।

Scanned with CamScanner

শ্রেণি – VI

পাঠ্যপুস্তক

একটি পাঠ্যপুস্তক থাকবে । 22 টি পাঠের মধ্যে 10 টি কবিতা থাকবে । আধুনিক লেখক ও কবিদের রচনা অন্তর্ভুক্ত(করতে হবে । লেখক ও কবি পরিচিতি সংযে(পে অবশ্যই থাকবে । সাধু ভাষার একটি পাঠ ও প্রতিটি পাঠের শেষে বস্তুনিষ্ঠ ও নিবন্ধধর্মী সকল প্রকার পর্যাপ্ত অনুশীলনী থাকবে । পাঠ অনুযায়ী চিত্র থাকবে ।

বিষয়

* স্মরণীয় মনীষীদের জীবনকাহিনী
* জাতীয় সংহতি
* ভারতের আদিবাসীদের জীবন-শৈলী
* ভারতের বিজ্ঞানীদের জীবনের উপর আধারিত কাহিনী
* স্বদেশ-প্রেম
* পশু-পাখির উপর আধারিত গল্প
* হাস্যরসাত্মক গল্প
* নাটিকা বা নাটকের অংশ
* প্রকৃতি বিষয়ক পাঠ
* কল্প বিজ্ঞান
* দেয়াল পত্রিকা (হাতে লেখা দেয়াল পত্রিকা)

উপরোক্ত(বিষয়গুলি অবলম্বনে গদ্য (গল্প, নাটক, প্রবন্ধ, ইত্যাদি) ও পদ্য থাকবে । বিষয় নির্বাচনে ভারতীয় সংস্কৃতি, বিশেষ করে বাংলার সংস্কৃতি ও আঞ্চলিক পরিবেশের উপর ল(্য রাখতে হবে ।

ব্যাকরণ ও নির্মিতি (Composition) ঃ—

* সন্ধি (ব্যঞ্জন ও বিসর্গ)
* লিঙ্গ পরিবর্তন
* কারক বিভক্তি((কারক কাকে বলে ? কয় প্রকার ?)

Scanned with CamScanner

* সাধু ও চলিত রীতি
* এক কথায় প্রকাশ
* অনুচ্ছেদ লেখন

মৌখিক

* আবৃত্তি
* ক্যুইজ (Quiz)
* ছোট গল্প বা কোন ঘটনা বলা
* নাটকের সংলাপ বলা
* পাঠ্য বা পাঠ্যবিষয় বহির্ভূত সাধারণ জ্ঞান

(পাঠ্যত্র(ম অনুযায়ী শ্রেণি VI – VIII এর জন্য ব্যাকরণ বই প্রকাশিত হওয়া আবশ্যক)

Scanned with CamScanner

শ্রেণি - VI
পাঠ্য বিষয়ের মাসিক বিবরণ তালিকা

এপিল	মে	জুন	জুলাই	আগষ্ট	সেপ্টেম্বর
আগের ক্লাসে পঠিত ব্যাকরণের অনুশীলন। কবিতা আবৃত্তি কোন ঘটনা শুনে বা দেখে বলা। পাঠ - পদ্য - 1টি গদ্য - 1টি	পঠিত পাঠের অনুশীলন। অনুশীলনী অনুযায়ী ব্যাকরণ পাঠ - পদ্য - 2টি গদ্য - 2টি ক্যুইজ	ছুটি	পঠিত পাঠের লিখিত ও মৌখিক অনুশীলন। কবিতা আবৃত্তি পাঠ্য বহির্ভূত বিষয়ের সাধারণ জ্ঞানের প্রশ্নোত্তর। পাঠ - পদ্য - 1টি গদ্য - 1টি	পঠিত পাঠের অনুশীলনী পাঠ - পদ্য - 2টি গদ্য - 1টি	পঠিত পাঠের অনুশীলন নাটকের সংলাপ বলা পাঠ - পদ্য - 1 গদ্য - 1
অক্টোবর	**নভেম্বর**	**ডীসেম্বর**	**জানুয়ারী**	**ফেব্রুয়ারী**	**মার্চ**
পঠিত পাঠের অনুশীলন। নাটকের সংলাপ বা অংশ বিশেষ অভিনয় করে বলা। পাঠ - পদ্য - 1টি গদ্য - 1টি	পঠিত পাঠের অনুশীলনী অনুযায়ী অনুশীলন কবিতা আবৃত্তি। পাঠ - পদ্য 1 গদ্য - 1	পঠিত পাঠের লিখিত ও মৌখিক অনুশীলন পাঠ্য ও পাঠ্য বহির্ভূত সাধারণ জ্ঞানের প্রশ্নোত্তর। পাঠ - পদ্য - 1 গদ্য - 1 ক্যুইজ	পূর্ব পাঠের অনুশীলন, কবিতা আবৃত্তি। পাঠ - পদ্য - 1	পঠিত সমগ্র পাঠের লিখিত ও মৌখিক অনুশীলন। সাধারণ জ্ঞানের মৌখিক প্রশ্নোত্তর।	পরী(। ক

কথপোকথনের নূন্যতম সময় (Minimum Dialogue Time) দিন — 180, পিরিয়ড — 105, সময় – প্রতি পিরিয়ড় 35 মিনিট

Scanned with CamScanner

শ্রেণি - VII

পাঠ্যপুস্তক

চিত্রসহ একটি পাঠ্যপুস্তক থাকবে। পুস্তকে 22 টি পাঠের মধ্যে 10 টি কবিতা থাকবে। আধুনিক কবি ও লেখকদের রচনা অন্তর্ভুক্ত করতে হবে। গদ্যের বিভিন্ন রূপ যেমন - ছোট গল্প, রম্য রচনা, একাঙ্কী নাটক ইত্যাদি থাকবে। পদ্যাংশের জন্য বিভিন্ন ছন্দ ও ভাবের কবিতা সংকলন করতে হবে। প্রতিটি পাঠের শেষে লিখিত ও মৌখিক প্রশ্নোত্তরের জন্য পর্যাপ্ত অনুশীলনী থাকবে। সংক্ষিপ্ত লেখক ও কবি পরিচিতি দিতে হবে।

পাঠ্য বিষয়

* ভারতের সাংস্কৃতিক ঐতিহ্য
* বর্তমান যুগের বিজ্ঞান
* প্রকৃতি ও পরিবেশ চেতনা
* বন্যপ্রাণী সংরক্ষণ
* ভ্রমণ কাহিনী
* মহৎ জীবনকথা
* গল্প ও উপাখ্যান
* স্বাধীনতা-সংগ্রামীদের জীবনবৃত্তান্ত ও সংগ্রামের কথা।
* দেয়াল পত্রিকা (হাতে লেখা দেয়াল পত্রিকা)

ব্যাকরণ ও নির্মিতি (Composition)

* সমাস কাকে বলে ? (6 টি সমাসের মধ্যে কেবলমাত্র দুটি সমাস, দ্বন্দ্ব ও দিগু)
* সন্ধি, কারক ও বিভক্তি
* পদ পরিবর্তন
* বাক্‌ধারা
* এক কথায় প্রকাশ
* পত্র লেখন
* অনুচ্ছেদ লেখন (Paragraph writing)

মৌখিক

* আবৃত্তি
* ক্যুইজ (Quiz)
* বক্তৃতা বা ভাষণ (পাঠ্য বা পাঠ্য বহির্ভূত বিষয়)
* পাঠ্য বা পাঠ্য বহির্ভূত বিষয়ের সাধারণ জ্ঞান

Scanned with CamScanner

শ্রেণি - VII
পাঠ্য বিষয়ের মাসিক বিবরণ তালিকা

এপিল	মে	জুন	জুলাই	আগষ্ট	সেপ্টেম্বর
কবিতা আবৃত্তি, কোনো পঠিত নাটকের সংলাপ বা অংশ বিশেষ অভিনয় করা । আগের ক্লাসের পঠিত ব্যাকরণের অনুশীলন । পাঠ - পদ্য - 1টি গদ্য - 1টি	পঠিত পাঠের অনুশীলন কবিতা আবৃত্তি । অনুশীলনী অনুযায়ী ব্যাকরণ । পাঠ - পদ্য - 2টি গদ্য - 2টি	ছুটি	পঠিত পাঠের অনুশীলনী অনুযায়ী মৌখিক লিখিত অনুশীলন । সাধারণ জ্ঞানের মৌখিক প্রশ্নোত্তর । পাঠ - পদ্য - 1টি গদ্য - 1টি ক্যুইজ	পঠিত পাঠের অনুশীলন । কবিতা আবৃত্তি । পাঠ - পদ্য - 2টি গদ্য - 1টি	পঠিত পাঠের অনুশীলন । অনুশীলনী অনুযায়ী ব্যাকরন । পাঠ - পদ্য - 1 গদ্য - 1
অক্টোবর	**নভেম্বর**	**ডিসেম্বর**	**জানুয়ারী**	**ফেব্রুয়ারী**	**মার্চ**
পঠিত পাঠের অনুশীলন। পাঠ্য ও পাঠ্য বহির্ভূত সাধারণ জ্ঞানের মৌখিক প্রশ্নোত্তর পাঠ - পদ্য - 1টি গদ্য - 1টি	পাঠের অনুশীলনী । অনুযায়ী অনুশীলন কবিতা আবৃত্তি । পাঠ - পদ্য 1 গদ্য - 1 ক্যুইজ	পাঠের অনুশীলনী অনুযায়ী অনুশীলন । কোন বিশেষ ঘটনা বা হাসির ছোট গল্প শুনে বা পড়ে ক্লাসে বলা । পাঠ — পদ্য - 1 গদ্য - 1	পঠিত পাঠের অনুশীলনী অনুযায়ী লিখিত বা মৌখিক অনুশীলন । পাঠ - গদ্য - 1	সমগ্র পাঠের লিখিত ও মৌখিক অনুশীলন । সাধারণ জ্ঞানের মৌখিক প্রশ্নোত্তর ।	পরীক্ষা

Scanned with CamScanner

শ্রেণি - VIII

পাঠ্যপুস্তক

চিত্রসহ একটি পাঠ্যপুস্তক থাকবে । পাঠ্যপুস্তকটিতে 22টি পাঠের মধ্যে 10 টি কবিতা থাকবে । সংি(প্ত লেখক ও কবি পরিচিতি এবং আধুনিক কবি ও লেখকদের রচনা অন্তর্ভুক্ত(করতে হবে । সাধুভাষার দুটি পাঠ থাকবে । গদ্যের বিভিন্ন রূপ যেমন— ছোট গল্প, রম্যরচনা, একাঙ্কী নাটক ইত্যাদি থাকবে । পদ্যাংশের জন্য বিভিন্ন ছন্দ ও ভাবের কবিতা সংকলন করতে হবে । প্রতিটি পাঠের শেষে লিখিত ও মৌখিক প্রশ্নোত্তরের জন্য পর্যাপ্ত অনুশীলনী থাকবে ।

পাঠ্যবিষয়

* জীবনী ও আত্মজীবনী
* শ্রমের মর্যাদা
* সময়ের মূল্য
* বিজ্ঞান ও প্রযুক্তি(বিষয়ক
* অভিযানের কাহিনী
* নিসর্গ বর্ণনামূলক পাঠ
* পরিবেশ চেতনা
* অনুবাদ কাহিনী
* দেয়াল পত্রিকা (হাতে লেখা দেয়াল পত্রিকা)
* খেলাধূলা
* আকাশতত্ত্ব বিষয়ক পাঠ

ব্যাকরণ ও নির্মিতি (Composition)

* কারক ও বিভক্তি(
* সমাস
* সন্ধি

Scanned with CamScanner

* প্রবাদ বাক্য
* এক কথায় প্রকাশ
* সাধু ভাষা থেকে চলিত ভাষায় বাক্য গঠন ও অশুদ্ধি সংশোধন
* যুগ্ম শব্দ
* পত্ররচনা (ব্যক্তি(গত পত্র, আমন্ত্রণ পত্র, আবেদন পত্র)
* অনুচ্ছেদ লেখন (সমসাময়িক গু(ত্বপূর্ণ ঘটনা, পরিচিত বিষয়, ব্যক্তি(গত অভিজ্ঞতা ইত্যাদি বিষয়ক)

মৌখিক

* সংবাদ পাঠ (সংবাদপত্র থেকে)
* আবৃত্তি
* ক্যুইজ (Quiz)
* পাঠ্য ও পাঠ্য বহির্ভূত বিষয়ের জ্ঞান
* ছোটগল্প বলা বা কোন দেখা বা শোনা ঘটনার বর্ণনা

Scanned with CamScanner

শ্রেণি - VIII

পাঠ্য বিষয়ের মাসিক বিবরণ তালিকা

এপিল	মে	জুন	জুলাই	আগষ্ট	সেপ্টেম্বর
কবিতা আবৃত্তি, সাধারণ জ্ঞানের মৌখিক প্রশ্নোত্তর । পূর্ব ক্লাসের ব্যাকরণের অনুশীলন । পাঠ - পদ্য - 1টি গদ্য - 1টি ক্যুইজ	পঠিত পাঠের মৌখিক ও লিখিত অনুশীলন । অনুশীলনী অনুযায়ী ব্যাকরণ । পাঠ - পদ্য - 2টি গদ্য - 2টি	ছুটি	পঠিত পাঠ ও ব্যাকরণের অনুশীলন, কবিতা আবৃত্তি, সংবাদ পত্র হতে সংবাদ পাঠ । পাঠ - পদ্য - 1টি গদ্য - 1টি	পঠিত পাঠ ও ব্যাকরণের অনুশীলনী অনুযায়ী অনুশীলন । পাঠ - পদ্য - 2টি গদ্য - 1টি	পাঠের অনুশীলন, ব্যাকরণ অনুশীলন পাঠ্য বা পাঠ বহির্ভূত সাধারণ জ্ঞানের মৌখিক প্রশ্নোত্তর পাঠ - পদ্য - 1 গদ্য - 1
অক্টোবর	**নভেম্বর**	**ডিসেম্বর**	**জানুয়ারী**	**ফেব্রুয়ারী**	**মার্চ**
পঠিত পাঠ ও ব্যাকরণের অনুশীলন, কবিতা আবৃত্তি, সংবাদ পত্র হতে সংবাদ পাঠ । পাঠ - পদ্য - 1টি গদ্য - 1টি	পাঠের অনুশীলন ব্যাকরণ সহিত। কোন ঘটনা বা ছোট গল্প পড়ে বা শুনে ক্লাসে বলা। পাঠ - পদ্য 1 গদ্য - 1 ক্যুইজ	পঠিত পাঠের অনুশীলন, সাধারণ মৌখিক প্রশ্নোত্তর। পাঠ — পদ্য - 1 গদ্য - 1	পূর্ব পাঠের অনুশীলন । কবিতা আবৃত্তি পাঠ - গদ্য - 1	পঠিত সমগ্র পাঠের লিখিত ও মৌখিক অনুশীলন, সাধারণ জ্ঞানের মৌখিক প্রশ্নোত্তর ।	পরী(1

Scanned with CamScanner

শি(কের নিকট প্রত্যাশা (Expectation from Teachers)

শি(ক শি(কার আদর্শের আলোয় শি(াথী উদ্ভাসিত হয় । শি(াথী শি(কের কাছ থেকে অনেক কিছুই প্রত্যাশা করে । মা বাবার পরে শি(কই হচ্ছেন প্রকৃত অভিভাবক । শি(ককে সর্বপ্রথম শি(াথীর আগ্রহ অনাগ্রহের বিষয়বস্তুকে জানতে হবে । যে বিষয়ে শি(াথীর আগ্রহ নেই সেই বিষয়ের প্রতি নিজের বাচনভঙ্গি এবং বুদ্ধিমত্তার দ্বারা সুকৌশলে শি(াথীর দৃষ্টি আকর্ষণ করতে হবে । শি(াথীর মনে বিষয়টি সম্বন্ধে আগ্রহের সৃষ্টি করতে হবে, এরজন্য শি(ক যে কোন অত্যাধুনিক বিধির প্রয়োগ করতে পারেন । যেমন ছোট ছোট গল্পের সাহায্যে, সাধারণ কোনো উদাহরণের সাহায্যে অথবা প্রয়োজনে দৃশ্য, শ্রাব্য অনুসঙ্গের সাহায্য নিতে পারেন । শি(ক পাঠের শেষে অবশ্যই গৃহকার্য দেবেন ও প্রত্যহ এই গৃহকার্যের সংশোধন করবেন । শি(ক প্রয়োজনে কঠোর ও কোমল হয়ে শি(াথীর কল্যাণে মায়ের ভূমিকা নেবেন । শি(কের শি(কতার মূল উদ্দেশ্য হবে শি(াথীকে আদর্শ নাগরিক হিসাবে গড়ে তোলা । শি(ক নিজে অবশ্যই আত্মবিশ্বাসী হবেন । তবেই তিনি শি(াথীর মধ্যে আত্মবিশ্বাস জাগাতে পারবেন । শি(ক সাংস্কৃতিক এবং মনোরঞ্জক কার্যত্র(ম সুষ্ঠু এবং সুন্দর ভাবে সুসম্পন্ন করবার যোগ্য হবেন।

পাঠ্যত্র(ম অনুযায়ী শি(াথীর কাছে প্রত্যাশা (Expectation from Students)

এই শি(াস্তরের শেষে শি(াথীরা নিম্নলিখিত যোগ্যতা লাভ করবে বলে আশা করা যায় —

(i) বাচনশৈলীতে দ(তা অর্জন করা ।

(ii) বন্ধুবান্ধব, পারিবারিক সদস্য এবং পারিপার্শ্বিক লোকজনের সঙ্গে কথা বলার ও ভাব বিনিময় করার যোগ্যতা অর্জন করা ।

(iii) যুক্তি(সঙ্গতভাবে নিজের বক্ত(ব্য রাখার দ(তা অর্জন করা ।

(iv) কোনো ঘটনাকে নিজের কল্পনা শক্তি(র সাহায্যে সহজ ভাষায় লিখতে পারা।

(v) পাঠ্যপুস্তক ছাড়াও বাংলা পত্রিকা ও গল্পের বই পড়ায় আগ্রহী হতে হবে ।

(vi) সাংস্কৃতিক কার্যকলাপে অংশগ্রহণ করা ও কার্যত্র(ম পরিচালনা করার দ(তা অর্জন করতে পারা ।

Scanned with CamScanner

শ্রেণি - VI - VII - VIII

মূল্যায়ন (Evaluation)

সময় – 3 ঘন্টা

শ্রেণি - VI - VII - VIII

সামগ্রিক মূল্যায়নের জন্য লিখিত ও মৌখিক মিলিয়ে মোট 100 নম্বরের পরী(া নিতে হবে।

লিখিত — 60

মৌখিক (Internal Evaluation) — 40

লিখিত অংশ —

(ক) গদ্য — 20

(খ) পদ্য — 20

(গ) ব্যাকরণ — 10

(ঘ) অনুচ্ছেদ লেখন — 5

(ঘ) পত্র লেখন — 5

গদ্য, পদ্য ও ব্যাকরণ থেকে অতি সংি(প্ত, সংি(প্ত, বস্তুনিষ্ঠ ও রচনাধর্মী প্র(ো থাকবে।

মৌখিক মূল্যায়ন

(ক) আবৃত্তি

(খ) বক্তৃতা

(গ) পাঠ্য ও পাঠ বহির্ভূত বিষয়ের জ্ঞান

(ঘ) সংবাদ পত্র পাঠ

(পাঠ্যত্র(ম অনুযায়ী শ্রেণি VI - VIII এর জন্য একটি ব্যাকরণ বই প্রকাশিত হওয়া আবশ্যক)

Scanned with CamScanner

मातृभाषा मैथिली

वर्ग VI-VIII

१. प्रस्तावना

भाषा संवादक माध्यम अछि । मनुष्य अपन अनुभव, बात-विचार, भावना, संवेदनाकेँ सबसँ नीक जकाँ भाषाक माध्यमसँ संप्रेषित करैत अछि । भाषाक बिना जीवनक कल्पना नहि कयल जा सकैछ । जाहि ठामक संस्कृति जतेक चेतना सम्पन्न रहतैक, ज्ञान जतेक प्रबुद्ध हेतैक ततबे समृद्ध ओहिठामक भाषा सहो हेतैक । भाषाक माध्यमे क्षेत्रीय संस्कृति, सुख-दुख, ज्ञान-विज्ञान आदि अभिव्यक्ति भऽ पबैत अछि । तेँ भाषाक अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ तँ महत्त्वपूर्ण अछिए, ज्ञान-विज्ञानक विकासक लेल सेहो अनिवार्य साधन अछि ।

मैथिली भाषा बड़ पुरान अछि । वाचिक रूपमे मैथिलीक प्रयोग कहियासँ शुरू भेल तकर निश्चित तिथि कहब कठिन अछि । प्रारम्भिक कालमे अप्रभंश बोलचालक भाषा छल तकरा देशी भाषा कहल जाइत छल । एहि भाषामे सेहो साहित्यक निर्माण भेल । सलहेस, लोरिक, नैका बनिजारा आदि वाचिक परम्पराक लोक साहित्य अछि । एहिना गामघरमे पावनि-तिहारक अवसर पर कथा कहल जाइत छल । सपता-बिपता, बरसाइत आदि पावनिक अवसर पर कथा कहबाक जे परिपाटी अछि ओ मैथिलीक मौखिक परम्पराक साहित्य कहल जाइछ । लिखित रूपमे आठम एवं नवम शताब्दी सँ मैथिली साहित्य उपलब्ध होइत अछि । बौद्ध धर्मक साधु लोकनिक लिखल गीत आ दोहा, डाक एवं घाघक वचन आदि मैथिलीक आदिकालक लिखित साहित्यक रूपमे मान्य अछि । मुदा मैथिली साहित्यक पहिल पोथी चौदहम शताब्दीमे लिखित ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर' आ मैथिली नाटक 'धूर्त्तसमागम' अछि । मैथिलीमे एहिसँ पुरान पोथी एखन धरि प्राप्त नहि भेल अछि । एकरा बाद विद्यापति मैथिलीमे गीत लिखलनि ओ अपन गीतक भाषा देसिल बयनाकेँ बनओलनि विद्यापतिक इएह देसिल बयना अर्थात् देशी बोली आइ मैथिली कहबैत अछि । विद्यापतिक बाद मैथिलीमे साहित्य लिखबाक जे साहित्यक परम्परा शुरू भेल ओ क्रमशः विस्तृत होइत गेल ।

भारतीय भाषा परिवारमे मैथिलीक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । पूर्वाञ्चल भारतक पहिल साहित्यिक कृतिक रूपमे वर्णरत्नाकर क आदर भारतमे भेल अछि । विद्यापति मैथिलीक एहन कवि भेलाह अछि जनिक गीत भारतेटामे नहि, सम्पूर्ण विश्वक साहित्यक संसारमे मान्य अछि । इएह कारण थिक जे विद्यापतिक गीतक अंग्रेजी अनुवाद यूनेस्कोक सौजन्यसँ प्रकाशित भेल अछि । भारत सरकारक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी मैथिलीकेँ गत शताब्दीक सातम दशकमे स्वीकृत कयलक । निश्चित रूपेँ मैथिली भाषा साहित्य एहिसँ मर्यादित भेल । साहित्य लेखनक दीर्घ परम्परा आ उत्कृष्ट साहित्यिक मानक रूपमे प्रस्तुत करबाक कारणेँ **मैथिलीकेँ भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित** कयल गेल । एहिसँ मैथिली भाषा साहित्यक विकासक गति मे तीव्रता आयल अछि । मैथिलीक पढ़ौनी बाल वर्ग सँ विश्वविद्यालयक उच्चतम शिक्षा धरिमे पहिले सँ होइत छल, किन्तु संविधानक आठम अनुसूची मे मैथिलीक समावेशक बाद शिक्षाक विविध क्षेत्रमे सेहो एकर विकासक मार्ग बेशी प्रशस्त भेलैक अछि । मैथिली आब इंटरनेटक भाषा बनि चुकल अछि । विश्वक भाषिक विकासक दौड़मे मैथिली अपन अभिव्यक्ति-क्षमता अर्थात् शब्द सम्पदा, कथन-भंगिमा तथा सार्वदेशिकताक कारणेँ महत्त्वपूर्ण भाषामे परिगणित होइत अछि। भारते टामे नहि, विदेशमे सेहो मैथिली रेडियो आ टेलीविजन पर प्रसारणक भाषाक माध्यमक रूपमे स्वीकृत आ प्रशंसित भेल अछि । मैथिली पत्रिका भारत आ नेपालसँ नहि अमेरिका धरिसँ प्रकाशित भऽ रहल अछि ।

Scanned with CamScanner

मैथिली भाषा साहित्यक इएह समृद्धि आ समयक संग चलबाक शक्ति ओकरा महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि । शिक्षण संस्थानमे ओकर पाठ्यक्रममे एहि समृद्धिक झाँकी प्रस्तुत करब सर्वथा आवश्यक आ समीचीन अछि ।

२. पृष्ठभूमि :

प्रारंभिक कक्षा (VI-VIII) क शैक्षिक प्रयाण शिक्षार्थीक जीवनक ओहन आधारभूत सोपान थक जाहि ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व ओ भविष्य अवलम्बित रहैत अछि । एहि अन्तरालमे प्राप्त ज्ञान, अनुभव, जीवनक प्र संवेदनशीलता ओ सौन्दर्य बोध, ओकर भविष्यक असीम सम्भावनासँ सम्बद्ध रहैत अछि । इएह कारणे शैक्षणि दृष्टि सँ एहि अवधिक उपयोग सतर्कतापूर्वक करबाक प्रयोजन अछि । पाठ्यपुस्तक निर्माणक क्रम पाठ्य सामग्री प्रभावोत्पादक, शिक्षाप्रद, आकर्षक ओ रोचक बनयबाक सावधानी राखब आवश्यक । एहि अवधि मे प्रदत्त मौलि ज्ञानक प्रभाव बड़ दूरगामी ओ दीर्घकालिक होइत अछि । संगहि एहि वयसक शिक्षार्थीमे स्वयं निर्णय लेब सामर्थ्यक क्रमशः वृद्धि होमय लगैत छैक, तेँ तार्किक, क्रमबद्ध, शुद्ध ओ तथ्योन्मुख मनोरंजक सामग्रीमे मौ विषयवस्तुक चयन आवश्यक । रोचकताक अभावमे छात्रमे अपेक्षित रुझान नहि भऽ पाओत ।

एकर अतिरिक्त एक तथ्य आओरो ध्यातव्य जे पाठ्य सामग्रीक क्रमानुक्रम शृंखलाबद्ध होयब आवश्यक कहबाक अभिप्राय जे शिक्षार्थी जेना-जेना अग्रिम वर्गमे उत्क्रमित होइत जयताह हुनका अपन नव वर्गक पा सामग्रीमे अपन पछिला वर्गक पाठ्यपुस्तकसँ उद्भूत ओ सम्बद्ध बुझि पड़नि । दुनू वर्गक पाठ्यपुस्तकमे बेसी अ (Gap) नहि बुझि पड़नि, परञ्च तारतम्यता बनल रहबाक चाही ।

३. उद्देश्यः

1. सुनबाक आ पढ़बाक योग्यताक विकास ।
2. मौखिक आ लिखित अभिव्यक्ति योग्यताक विकास ।
3. शब्द-सामर्थ्य, तार्किक तथाचिन्तन शक्ति बढ़ायब
4. राष्ट्रीय लक्ष्यक बोध आ ताहि दिस चेतना जगायब ।
5. भाषामे ओ विशेषतः उच्चारणमे शुद्धता आ प्रभावकारिता आनब ।
6. छात्रक मानसिक क्षितिजक विस्तार करब आ ओकर अनुभूतिकेँ तीव्र बनायब ।
7. सौन्दर्यग्राह्यता, मौलिकता आ सर्जनशीलताक विकास करब ।
8. छात्रक मनोभावकेँ उदात्त बनायब आ सद्वृत्तिक विकास करब ।
9. मैथिलीक सरल वाक्यक हिन्दी, संस्कृत ओ अंग्रेजीमे अनुवादक क्षमताक विकास करब ।
10. तिरहुतामे वाक्य-रचनाक सामर्थ्य विकसित करब।

उपर्युक्त उद्देश्यक पूर्त्यर्थ निम्नलिखित विषय आ नैतिक मूल्य पर बल देल जायत ।

(क) **विषय-वस्तुः** समाज ओ संस्कृति, विविध देशक लोकजीवन भारतक स्वतंत्रता-संग्राम, भा संविधान, राष्ट्रीय एकता एवं समेकित सांस्कृतिक परम्परा, समता, जनतंत्र, धर्मनिरपेक्षता आ सर्वधर्मसम स्त्री-पुरुषमे स्वच्छता एवं स्वास्थ्य, खेलकूद, शिष्टाचार, साहस, उद्योग, वैज्ञानिक प्रगति , अर्थव्यवथा, वाणिज्य-व ओ सूचना क्रान्ति ।

(ख) **नैतिकमूल्यः** श्रमनिष्ठा, सत्यता, ईमानदारी, सहयोग, समता, मातृत्व, सहानुभूति, धार्मिक सहिष्णुता, जनत मनोवृत्ति, अनुशासन, नेतृत्व, उत्तरदायित्वक भावना, जागरूकता, समयनिष्ठा, त्याग, धैर्य, क्षमाशीलता आदि ।

Scanned with CamScanner

४. गतिविधि :

(क) छात्रक मानसिक ओ बौद्धिक विकासक हेतु सुनबाक, बजबाक, लिखबाक, बुझबाक, सोचबाक शक्ति बढ़यबाक प्रयास कयल जायत । वर्ग में बाल-सभा वा सांस्कृतिक गोष्ठी में सुनबाक अभ्यास करायब, कार्य वा घटित घटनाक विवरण करायब, कथा, कविता आदिक पाठ करायब आ प्रभावशाली उच्चारण करायब , सारांश कहायब, अंत्याक्षरीक आयोजन करायब आदि गतिविधि अपनाओल जा सकैत अछि । एहि हेतु रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटरक सहायता लेल जा सकैछ ।

(ख) **लिखबाक** पटुताक हेतु पाठ्य पुस्तकसँ श्रुतिलेखन कराओल जाय । शुद्धताक संग सुपाठ्यता, सुन्दरता ओ गति पर जोर देल जाय, अनुच्छेद, पदच्छेद आ विरामादि चिह्नक नियम बुझाओल जाय ।

(ग) **पढ़बाक** अभ्यासार्थ मुखर पाठन कराओल जाय जाहिमे उच्चारण बलाघात, अनुतान आदि पर ध्यान राखल जाय, पद, पद-बन्ध, उपवाक्य आदि इकाई पर समुचित गतिक संग वाक्यक उच्चारण कराओल जाय ।

(घ) **बुझबाक आ सोचबाक** हेतु पाठ्यसामग्रीक मौन पाठ कराओल जाय ओ प्रश्नोत्तर द्वारा छात्रक बुझबाक ओ सोचबाक शक्ति बढ़ाओल जाय ।

५. **शिक्षण-युक्ति:**

मध्य कक्षामे (वर्ग 6-8 धरि) अध्यापनक भूमिका उचित वातावरणमे सहायक होयबाक चाही । भाषा-साहित्यक अध्यापन मे निम्नलिखित तथ्य पर ध्यान देबाक आवश्यकता अछि ।

विद्यार्थी द्वारा कयल गेल गलतीकेँ स्वाभाविक मानि विकासक अनिवार्य चरणक रूपमे स्वीकार कयल जाय जाहिसँ विद्यार्थी विना कोनो दिक्कतिक अनुभव करैत अवाध रूपेँ लिखित ओ मौखिक अभिव्यक्ति करबामे उत्साहक अनुभव करथि । हुनका सभकेँ भाषाक रचनात्मक रूपसँ एहि तरहेँ परिचित करायब उचित अछि जे स्वयं सहज रूपेँ भाषाक सृजन कऽ सकथि ।

ज्ञात सँ अज्ञात दिश लऽ जयबाक प्रयास कयल जाय जाहिसँ विद्यार्थी स्वतंत्र ओ अवाध रूपसँ लिखित, ओ मौखिक अभिव्यक्तिमे प्रवीण भऽ सकथि 'अध्यापककेँ सेहो अपन अध्यापन शैली पर निरन्तर चिन्तन करब आवश्यक ।

एहन शिक्षण बिन्दु पर ध्यान देल जाय जाहिसँ कक्षामे छात्रक निरन्तर सक्रिय-भागीदारी भऽ सकय आ शिक्षक ओहिमे सहायक भूमिकाक निर्वाह करथि ।

प्रत्येक भाषाक अपन प्रकृति ओ स्वरूप तथा नियम एवं व्याकरण होइत अछि । भाषाक एहि प्रकृतिक जानकारीक लेल परिवेशगत ओ पाठगत सन्दर्भक प्रयोग होयबाक चाही । ई सम्पूर्ण प्रक्रिया एहन होयबाक चाही जाहि मे छात्र अपनाकेँ शोधकर्त्ता बुझथि आ शिक्षक मार्गदर्शकक काज करथि ।

मैथिलीक क्षेत्रीय प्रयोगसँ विद्यार्थी परिचित होथि आ विभिन्न मौलिक महत्त्वकेँ बुझाबथि । क्षेत्र विशेषक बोलीमे अन्तर स्वाभाविक अछि ।

विभिन्न दृष्टिएँ कमजोर विद्यार्थीक लेल उपयुक्त शिक्षण-सामग्री उपयोग कयल जाय आ अन्य विद्यार्थीसँ ओ अपनाकेँ हीन नहि बुझथि एहन प्रयास करबाक चाही ।

कक्षा में अध्यापककेँ लिंग, जाति, धर्म, वर्ग आदिक प्रति सकारात्मक ओ संवेदनशील वातावरणक निर्माण करबाक चाही ।

विद्यापति कविक भाषा-मर्म ओ रससँ विद्यार्थीकेँ अवगत करयबाक हेतु संगीतबद्ध प्रस्तुतिक ऑडियो -वीडिओ

Scanned with CamScanner

कैसेट तैयार कयल जाय ।

विद्यार्थीकेँ शब्दक उचित प्रयोगक ज्ञान करायब शिक्षक लेल आवश्यक ।

६. पाठ्यसामग्रीक चयन हेतु सुझाव :

6 सँ 8 कक्षामे पाठ्यपुस्तकक एक सम्भावित स्वरूप निम्न रूपें अनुशंसित कयल जाइछ :-

- पाठ्यक्रमक अनुकूल पाठ्यसामग्री, स्रोत सामग्री आदिक संकलन ।
- एहि निमित्त मिथिला मिहिर, वैदेही, विभूति आदि पुरना पत्रिका तथा समय साल, देशकोश, कर्णामृत, घर-बाहर,
- अंतिका, मिथिला महान आदि समसामयिक पत्रिका सभक अवलोकन कयल जायत । मैथिली विषयक पोथी सभसँ
- समन्वित समृद्ध पुस्तकालय सभसँ सम्पर्क ओ संवाद स्थापित कयल जाय ।
- प्रभावोत्पादक चित्रादिक संकलन ओ आवश्यकतानुसार पाठ्य-पुस्तकमे यथास्थान ओकर उपयोगक योजना ।
- दृश्य-श्रव्य संसाधनक वर्गानुकूल संकलन ।
- वर्ग-लिंग-जातिक भावनासँ ऊपर उठि साहित्यकार ओ हुनक रचनाक संकलन कयल जाय ।
- मथिलाक सांस्कृतिक परम्परा (जेना, लोकगीत, लोक-नाट्य, लोक-नृत्य, लोकचित्र आदि सहित) पावनि-तिहार, धार्मिक स्थल, महापुरुष, आदिसँ सम्बन्धित अभिलेख, चित्रादिक संकलन ।
- पाठ्यक्रमक अनुकूल जँ पाठ्य-सामग्री उपलब्ध नहि हो तँ तत्कालहि सक्षम माध्यमे आवश्यकता अनुरूप नवीन ओ
- मौलिक सृजन करबाओल जाय ।
- मिथिलाञ्चलक प्राकृतिक पर्यावरणमे उपलब्ध संसाधनक समुचित उपयोग पाठ्य-पुस्तक मे कयल जायत ।
- ओना तँ चित्रादिक व्यवहारसँ पाठ्य-पुस्तक स्वाभाविक रूपेँ सुसज्जित भऽ जाइछ मुदा 6 सँ 8 धरिक पाठ्यपुस्तक बहुरंगी रहत तथा चित्र / चार्ट / टेबुल / विवरणी आदि द्वारा छात्रक संप्रेषण-क्षमता विकसित करबाक प्रयास कयल जायत ।
- पाठान्तमे विकसित अभ्यासक स्वरूप एहन बनाओल जायत जाहिसँ शिक्षार्थीक बौद्धिक, तार्किक एवं विश्लेषणात्मक क्षमताक विकास होयत । अभ्यासमे एहि प्रकारक प्रश्न/गतिविधि/निर्देशक समावेश रहत जे ओकर परिवेशक संग तादात्म्य स्थापित कऽ सकय ।
- बिहार मे प्रचलित विभिन्न भाषामे परस्पर बौद्धिक ओ संप्रेषणजन्य समन्वय स्थापित करबाक लेल छात्रक वयस ओ वर्गक अनुकूल अन्य भाषासँ अनूदित सामग्रीक उपयोग कयल जायत ।

७. पाठ्यपुस्तकक सम्भावित स्वरूप

वर्ग VI

1. एहि वर्गक पुस्तकमे 12 गोट पाठ रहत जाहिमे 5 गोट पद्य रहत । विषय वय: क्रमक अनुरूप राखल जाय

Scanned with CamScanner

2 (क) मैथिली बजबाक अवगति पूर्व वर्गमे कराओल जाय चुकल अछि, अत: एहि वर्गमे मैथिलीक चलित ओ मानक रूपक परिचय आरम्भ कराओल जाय आओर लेख ओ उच्चारणमे अवश्यम्भावी अन्तर आदि विषयक समावेश रहत ।

गद्य पाठ

1. मिथिलाक पावनि तिहार मे कोनो एकटा पावनिक वर्णन
2. मिथिला प्रेम अथवा राष्ट्रप्रेम सँ सम्बन्धित पाठ
3. सामाजिक सद्भाव पर एक पाठ
4. खेल-कूद पर एक पाठ
5. पारिवारिक (संयुक्त परिवार) जीवनक महत्त्व पर एक पाठ
6. कोनो हास्य रससँ ओतप्रोत मनोरंजक रचना
7. कोनो लोक चित्र अथवा लोकगाथा परक रचना

पद्य पाठ

1. मिथिलाक प्रकृति वर्णन
2. उद्बोधन गीत
3. भक्तिमूलक कविता
4. कृषक समुदाय सँ समबिन्धत
5. राष्ट्रप्रेम पर कविता

व्याकरण ओ रचना :

1. क्रिया-विशेषण, अव्यय
2. मुहावरा ओ लोकोक्ति

वर्ग-VII

1. एहि वर्गक पाठ्य-पुस्तक मे 15 पाठ रहत जाहिमें 7 गोट पद्य रहत ।
2. (क) मैथिली शब्दक विभिन्न रूपक परिचय कराओल जायत ।

(ख) विशेषण-गुणवाचक, संख्यावाचक, मात्रावाचक आ स्थान वाचक, विभिन्न कालक दृष्टिसँ क्रियापदक रूपमे अन्तर बुझाओल जाय ।

(ग) मुहावरा ओ लोकोक्ति, विपरीतार्थक शब्द ।

गद्य पाठ

1. मिथिलाक भौगोलिक वर्णन
2. पर्यावरण
3. मिथिलाक नदी

Scanned with CamScanner

5. मिथिलाक तीर्थ-स्थान
6. राष्ट्रीय एकता
7. लोक साहित्यक (सलहेस, लोरिक आदि मे) सँ एकटा कथा
8. विविध

पद्य

पद्य पाठ

1. मिथिलाक देन
2. सांप्रदायिक एकता
3. अकाल सम्बन्धी पद
4. हास्य रस प्रधान पद
5. प्रकृति सम्बन्धी
6. राष्ट्र सम्बन्धी
7. गामक प्रति आकर्षण

वर्ग-VIII

1. एहि वर्गक पुस्तक में 20 गोट पाठ रहत जाहिमे 10 पद्य रहत ।

2 (क) मातृभाषा शिक्षण एहि स्तर पर समाप्त होइत अछि । अत: एहिमे पूर्व वर्ग मे समाविष्ट व्याकरण क सभ अंगक पुनरभ्यास कराओल जायत । ओकर अतिरिक्त तत्सम, तद्भव, देशज विदेशी शब्दक परिचय, आदि पढ़ाओल जायत ।

(ख) व्याकरणक संग मैथिलीक विभिन्न अभिव्यक्ति शैली सँ परीचित कराओल जायत ।

गद्य पाठ

1. पुरुष परीक्षाक एकटा कथाक मैथिली अनुवाद
2. भारतीय संविधानसँ सम्बन्धित
3. मानवाधिकारसँ सम्बन्धित
4. मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहर
5. भारतीय स्वतंत्रता सेनानी (मिथिलाक)
6. राष्ट्रीय भावना
7. पुरस्कृत मधुबनी चित्रकला
8. मिथिला विभूति (प्राचीन काल)

Scanned with CamScanner

9. कृषक सँ संबंधित

10. तकनीकी/वैज्ञानिक प्रगति पर

पद्य पाठ

1. प्राचीन गीत
2. मध्यकालीन रचना
3. आधुनिक कालीन कविता
4. कृषि सम्बन्धी
5. पर्यावरण चेतना
6. चारित्रिक विकास
7. स्वतंत्रता सम्बन्धी
8. सामाजिक समस्या
9. समसामयिक रचना
10. मातृभूमि प्रेम

3. द्रुत पाठक हेतु एकटा पूरक पुस्तक रहत जाहिमे मिथिलामे भारतीय स्वतंत्रता संग्रामक कथा सभ रहत ।

अभ्यास

सभ पाठक अन्तमे अभ्यासार्थ प्रश्न होयत ।

८. अंक विभाजन

	वर्ग VI-VII
पाठ्य-पुस्तक	30
पुस्तकेतर/पूरक पुस्तक	15
व्यावहारिक व्याकरण	20
पत्र-लेखन	05
निबन्ध	10
मौखिक आन्तरिक मूल्यांकन	20
	100

९. शिक्षक सँ अपेक्षा

1. शिक्षकक सहयोगात्मक भाव अपेक्षित ।
2. विद्यार्थीक सक्रियतामे सहयोग
3. विद्यार्थी बीच सद्भावक संचार

Scanned with CamScanner

4. भय रहित वातावरणक निर्माण

5. विद्यार्थीक संग मैत्री पूर्ण व्यवहार जाहिसँ ओ अपन आन्तरिक भावकेँ निर्भीकता पूर्वक व्यक्त कय सकथि ।

मूल्यांकन एवं परीक्षा

कक्षा 6 सँ 8 धरि शिक्षार्थीक मातृभाषा 'मैथिली' क मूल्यांकन सतत एवं व्यापक दुनू प्रकारक होयबाक चाही । सतत मूल्यांकन 20% अर्थात् 20 अंकक तथा औपचारिक मूल्यांकन अर्थात् सत्रान्त परीक्षा 80% यानी 80 अंकक होयत । सतत मूल्याकंनक आवश्यकता एहि उम्रक शिक्षार्थीक प्रगति पर सतत ध्यान रखबाक दृष्टिसँ अछि । परीक्षा तनावमुक्त एवं भय रहित होएबाक चाही । वर्ष भरिमे दूटा सावधिक परीक्षा होमक चाही ।

प्रथम सावधिक एवं दोसर सावधिक में 50-50 प्रतिशत क्रमशः मौखिक एवं लिखित परीक्षाक लेल रहत । प्रथम-दोसर सावधिक सँ 10-10 प्रतिशत तथा शेष 80 प्रतिशत वार्षिक परीक्षाक अंक जोड़ल जायत ।

ग्रेड देबा में सेहो मूल्यांकन आधार इएह रहत ।

अध्यापक विभिन्न इकाई/पाठक आधार पर सेहो परीक्षा लऽ सकैत छथि ।

लिखित परीक्षा (वर्षान्त) 80 अंकक होयत जाहि में प्रथम सावधिकसँ 20% दोसर सावधिक सँ 20% तथा तेसर सावधिक परीक्षा सँ 20% तथा शेष 40% समग्र पाठ्यक्रम सँ प्रश्न पूछल जायत ।

घंटीक आवंटन : प्रति सप्ताह 5 घंटी (वर्ष भरि में न्यूनतम 120 घंटी)

स्तरान्त अधिगम क्षमता

1. शुद्ध उच्चारणक संग मौखिक अभिव्यक्त कऽ सकैत छथि ।
2. शुद्ध-शुद्ध लिखित अभिव्यक्ति कऽ सकैत छथि ।
3. उदात्त मनोभावक संग सृजनशील भऽ सकैत छथि ।
4. गीत, कविताक प्रति सौन्दर्यबोध विकसित हैतैन्ह ।
5. साहित्यक विभिन्न विधाक परिचय प्राप्त कऽ सकैत छथि ।
6. मैथिलीसँ हिन्दी, संस्कृत ओ अंग्रेजीमे अनुवाद कय सकैत छथि।
7. पूर्व किशोरावस्था वयक अनुसारँ संगी साथीक संगहि सामंजस्य स्थापित कऽ सकैत छथि ।

Scanned with CamScanner

Upper Primary Stage (Classes VI -VIII)

English Language and Literature

General Overview

1. Introduction:

Language, the chief function of which is communication, is the most distinctive trait of human society The very acquisition of knowledge depends on language. Language is a marker of our identity and is closely associated with power in society. We can hardly do without language in any walk of life.

The knowledge of English is especially very important in the age of globalisation we are living in. The richness of this language and the existing stock of wide knowledge in English make it immensely useful. It is a window on the world and an access to the growing store of knowledge in science, technology and humanities.

We have to acknowledge, whether we like it or not, that English plays an important role in the domains of education, administration, business and political relations, judiciary, industry etc. and is, therefore, a passport to social mobility, higher education and better job opportunities.

The mushroom growth of the so called 'English medium' or public schools in every nook and corner of the state and the people's preference to such schools is a testimony to the growing importance and need of English which needs to be addressed in the curriculum /syllabus of the state. The very principle of equality entails that English should not remain associated only with the rich, elite or the upper middle class. Even a rural child of the underprivileged has an equal right to gain a sufficiently good level of proficiency in it so that he should not suffer discrimination for lack of it.

With the changes in the aims and objectives of education, redesigning curricular framework and thereof revision of syllabus becomes a compulsion. This compulsion is the positive strength of a live education system. Unfortunately, this has not been the case with the education system in Bihar. The last revision took place about 13 years ago and hardly any significant attempt was made in these years to update the syllabus according to the needs and requirements of the learners or the society.

Even the last revision that took place 13 years ago lacked in a very essential element, i.e. socio-economic, cultural political context or what can be termed as 'Bihari input'. It was exclusively based on the recommendations of the NEP 1986.

The neglect of 'Bihari input' in the syllabus has very unhappy consequences. The learners failed to find any substantial link between the life around them and what was being taught in the classroom. Rote learning thus got hold over understanding.

The guidelines of NCF 2005 framed in the light of the well known report 'Learning Without Burden' has shifted the focus from the teachers to the learners, confining the former to the role of facilitator only. The NCF 2005 recognises learners as the constructor of knowledge and sees multilingualism as strength in the classroom. It prescribes five guiding principles. These include/imply:

- Connecting knowledge to life outside the school
- Ensuring that learning be shifted away from rote methods
- Enriching the curriculum to provide for over all development of the child rather than remain textbook-centric, and
- Making examination more flexible and integrated with classroom life
- Nurturing identity of the learners within democratic polity

The change in attitude to teaching and learning necessitates the revision of the State Curriculum Framework and thereof the syllabus of English language. It is high time we recognised the importance of creating socio-cultural contexts that would encourage children to participate actively in understanding and create appropriate communicative practices. The Bihar inputs and the appropriate use of mother tongue in the

Scanned with CamScanner

classroom will accelerate the pace of learning and thus can help the learners overcome their fear of English. It's time we removed the notion that English is difficult to learn.

The present syllabus owes much to the NCF 2005 and the NCERT syllabus developed in the light of NCF 2005. The attempt has been to accommodate the NCERT syllabus as far as practicable in the context of Bihar. This has entailed, to some extent, the omission, modification and even shifting of many of the objectives, learning strategies and learning outcomes to another class.

It is important to state that, unlike the NCERT syllabus which is only stage wise, the proposed state syllabus is developed both stage-wise and class-wise.

Special emphasis has been laid on oral drilling and building vocabulary of the learners at the primary stage. It appears necessary as the children in the state are mostly of rural background and they lack the exposure to English language or English vocabulary at the initial stage. The children who follow the NCERT syllabus are mostly from urban background and hence they have exposure to English or at least they pick up a fairly large number of English words even before they come to schools. Hence, the NCERT syllabi for Class I and II can expect their children to develop ability to 'enact small plays /skits' and 'talk about themselves, members of the family and the people in their surroundings' but this will be too ambitious an objective for the children with rural background and with little or no exposure to English language and its vocabulary.

Methods and techniques of teaching have been dealt with in details for classes I-II. However, for the rest of the classes this has been done stage-wise rather than class-wise. Attempts have also been made to correlate learning outcomes with the learning objectives at every stage. The NCERT syllabus has been of great help in this connection.

Attention has also been paid to integrate contemporary issues with the core components, prescribed in the National Education Policy and academically accommodate them in the light of the local needs and specialities. This aims at improving the state syllabus knowledge-wise and objective-wise.

The proposed syllabus also recognises the availability of actual time for the classes as an important component of syllabus designing. This has an important bearing on the selection of content materials quantitatively so that the syllabus does not exert any unnecessary pressure on the learners.

The learning of grammar has been visualised as the process of discovery of English usages. Hence, more emphasis has been given on the learning of the functions of the words than on their grammatical terminology. It is hoped that this will enable the learners use structures and vocabulary appropriately in different contexts and social situations both orally and in writing.

A very significant feature of the proposed syllabus is that the continuity of linkage has been maintained at each successive level of learning from class I to class XII. The emphasis has been to ensure the integrated communicative competence by the time the learner passes the +2 level. It is for this reason that the syllabus recommends measures to assess and evaluate the oral proficiency as well.

2 Linguistic, Social and Cultural Features of Bihar

Bihar presents a complex picture in terms of socio - political and multilingual educational conditions. The urban population, here, is barely 10% of the total population. The remaining 90% have rural background. Agriculture continues to be the mainstay of the state's economy, though there is a note of emphasis on shifting to industries to enrich the existing economy with a view to getting rid of educational backwardness.

However, notwithstanding the illiteracy and socially underdeveloped condition of the people of Bihar, English is widely in demand as a subject of learning in schools. The mushroom growth of so-called English medium schools even in the remote corners of the state is a testimony to the growing demand for English which the state must address to.

Linguistically, Bihar is a rich composite of several local dialects/ languages that serve as mother tongue in different regions. These dialects/ languages include Bhojpuri, Maithili, Bajjika, Bengali, Magahi, Angika and Urdu besides Hindi which is the medium of instruction in the government schools. The linguistic regions of Bihar are like distinctive cultural regions. Bihar is very rich in the stories and verses that have no recorded version as yet, but they are living on the tongues of the people. Along with these stories and verses the folk art

Scanned with CamScanner

forms are both culture preserving and culture transmitting. The cross currents of various cultures transmitted through various languages are very strong and together they make the rich cultural heritage of the state.

3. The status of English in India

English in India is the most powerful medium of official proceedings and files. It serves as the link language in the multi –lingual context of the Indian society and the medium of instruction in the higher education and even in the primary and secondary education as far as public schools are concerned. The status of English as a medium of instruction can be understood from the fact that the English version of the NCERT books on any subjects are more in demand than their Hindi version or for that matter their editions in any other Indian languages.

English is the exclusive choice in the library related works. The cataloguing and all other activities related to libraries are done in English. In other words, English is the medium of accessibility to libraries.

English enjoys a very respectable place in the business circle. Accountancy and auditing depend heavily on this language. In fact, it is the language of international relations, management, commerce, trade and industry as well. Internet, that has become so popular today and has shrunk the entire universe into a small unit, uses English as its medium of operation. The operation of Internet, or for that matter computer, is very difficult without the knowledge of English.

Moreover, Indian novelists, critics, and intellectuals belonging to various fields are creating valuable literature in English. The English knowing sections of the Indian society not only have power and prestige but have also become the opinion makers at the socio - political and cultural levels. There is a great need to learn and teach English to our younger generations because apart from its various usage, English also functions as an integrating force at the intellectual level.

4. The status of English in Bihar

English had been the language of education and administration in Bihar during the British days. After Independence, even though it was made a non-compulsory subject at school level, English did not lose its importance. It continued to enjoy prestige and power at the social and administrative levels. However, a bias against English also prevailed among the average students especially with rural background that 'English is a tough subject'. The decision did help the students pass examinations without English but they felt handicapped when they went for higher or technical education.

It is high time we corrected the 'mistake' and incorporated English in the State syllabus as a compulsory subject. This will be an incentive to the learning of this language. Teaching of English in Bihar has also to keep in mind that **English for an average Bihari is L_3, Hindi or Urdu is L_2 and language like Bhojpuri, Maithili, Bengali, Magahi, Angika, and Bajjika etc. are L_1**. This multilingualism is both strength and a hindrance. It helps the learning of English but it also brings some specific problems with regards to pronunciation of certain words and the use of certain structures. Attempts have been made in the proposed syllabus to redress the hindrances and use multilingualism as a positive help.

5. Language and language learning objectives

Language is used for a variety of purposes ranging from daily discourse to the acquisition of knowledge and power. Even the introspection that helps us define and refine our thoughts depends chiefly on language. How else can we clarify our thoughts if we do not learn to talk to ourselves? In a nutshell, we need language for our qualitative existence.

The ever-expanding horizon of knowledge and the globalisation of society necessitated the need of a language that can be used as a link language globally. Needless to say that in the present context English is the only language that serves this purpose. English serves as a link language also in the multilingual Indian society. In other words, **English brings unity in diversity.**

Scanned with CamScanner

Learning of language, here English, however, is different from learning subjects like History, Geography or Physics etc. Unlike the content subjects, skill-subjects like English deserve different treatment. Here, **the objective is not to impart information or knowledge but to develop effective communicative competence that again depends on the development of four skills namely listening, speaking, reading and writing.**

The learners must also be equipped with such politeness and powers of persuasion that they are able to negotiate all communicative situations with tolerance and dignity. The development of linguistic proficiency in the learner is needed for the spontaneous and appropriate use of language in different situations. Such a development of linguistic proficiency depends heavily on fostering certain skills as mentioned under the sub-head **"The skills to be stressed upon and taught".**

6. English language learning problems

The first and the foremost problem that comes in the way of English language learning is the preconceived bias that English is very difficult to learn and even more difficult is to secure pass-marks in it. This bias against English is very common even among the teachers for the simple reason that the majority of teachers themselves are not very competent to handle English language classes. This adversely affects the learning process.

To overcome the learner's 'fear' of English language it is important to produce textbooks that are contextually rich and provide incentive to the innate curiosity and creativity of the learners. Textbooks of English should be designed in such a way that they enhance children's awareness of their immediate surroundings. The use of the languages of the learners may turn out to be most productive for teaching English. **Attempts should be made to exploit multilingualism as a teaching strategy in the classroom.** Urdu, Hindi, Bhojpuri, Maithili, Magahi, Angika, Bajjika, Bengali etc. could be rich teaching resources. This will help them arrive at linguistically significant generalizations and overcome their 'fear' of the language.

A practical solution to the teacher's unpreparedness to the task of teaching could be the **preparation of teacher's handbook or manual, spelling out methods and techniques to teach specific teaching items.** The appropriate notes for teachers in the textbook itself would also be of great practical value.

The learners with rural background are not very familiar with English words. Their vocabulary is very poor even at the Secondary and the Intermediate levels. Hence, special attention has to be given to build their vocabulary from the very beginning.

It is futile to teach isolated grammatical items to students as this isolated teaching does not generate interest among the learners; it rather appals them. Hence, attempts should be made to ensure that the knowledge of Grammar emerges from an active engagement in communicative practices: the examples of different structures should be given at each stage in a graded order in order to help them develop mechanism to digest and practise it.

7. Attitudes to be nurtured

Language learning depends heavily on the attitudes and motivation of learners and teachers. To ensure the positive motivation and involvement of the learners in the teaching-learning processes, it is important that the teacher is positively inclined towards pupils of diverse linguistic, ethnic and socio- cultural backgrounds. It is high time the teachers appreciated the fact that **all languages represented in their multilingual classrooms are equally scientific and should receive equal respect from the teacher and the taught. Besides, languages flourish in each other's company.** The global standing of English owes much to the extensive borrowings it has made from and the intensive interactions it has had with almost all the languages in the world.

The use of multilingual classroom as a resource can also help in reducing the anxiety levels of learners. It can also help in raising their awareness levels of self- respect, self discipline, respect and care for

Scanned with CamScanner

others, interdependence and co-operation. Last but not least is the basic attitude to teach and learn so that both the teachers and the learners can grow together. That will also help in promoting admiration for all cultures and all languages. Such an attitude will certainly have an impact on the personality of the teachers and the learners so that they can grow together to make all expressions in language not only cultured but also humane.

8. Content and Material

The proposed syllabus emphasises on the integration of the ten core components identified in the National Policy of Education. Since all contemporary concerns and issues cannot be included in the syllabus of a single class, attempts should be made to select and grade these content and materials keeping in view the age and level of the learners. Some emerging concerns like environmental issues, conservation of resources, population concerns, disaster management, forestry, animals and plants, human rights, safety norms and sustainable development need to be suitably incorporated in the course content. There is also a felt need of incorporating the issues emanating from them. They are detailed hereunder:

- Self, family, home, friends and pets
- Neighbourhood and community at large
- The nation-diversity (socio-cultural, religious and ethnic as well as linguistics), heritage (myths, legends/ folk tales)
- The world: India's neighbours and other countries (their cultures, literature and customs)
- Adventure and imagination
- Sports
- Issues relating adolescence
- Science and technology
- Peace and harmony
- Travel and tourism:
- Mass media: print media, electronic media
- Art and culture: local heritage, folk literature, folk arts, local history
- Health and reproductive health

The syllabus also emphasises the use of appropriate language for different purposes and functions; for example, greetings, classroom situations, home situation, street scene, bazaar, marketing, shopping, business, sports, games etc. which can be expressed through simple dialogues. All structures, patterns, immediate contexts, situations and vocabulary to be used for them need to be selected and graded in view of the age group, level, simplicity and frequency. They should be established through examples and reinforced through drill, practice as well as repetitions. **Care has to be taken not to mention any structure or grammatical item in particular while teaching the young learners so that the learning may be experience-oriented.**

9. Continuity for linkage at different levels

Continuity for linkage at different levels reflects the vision of the teaching plan. It gives a definite direction to teaching learning process in the light of the objectives laid down in the curriculum framework. Continuity helps the learners achieve basic linguistic proficiency without exerting any extra pressure on them. Their progression is guided and purposive. Needless to say that the lack of continuity proves very taxing on the learners who find themselves groping in want of a graded and guided progression.

Scanned with CamScanner

It would be in the interest of the learners if the syllabi from class I to class XII are prepared with the continuity for linkage from one stage to another.

10. The skills to be stressed upon and taught

Listening, Speaking, Reading and Writing are interrelated. One skill cannot be developed without developing the other. One cannot read correctly unless one knows how to speak well. **Speech is the language**. So, pronunciation should be given priority. It can be taught by a teacher by pronouncing correctly. Some sounds of English don't exist in Hindi or regional languages or mother tongues. Those areas of weaknesses and difficulties have to be kept in mind by teacher while encouraging classroom interactions and participation.

The development of linguistic proficiency in the learner is needed for the spontaneous and appropriate use of language in different situations. Such a development of linguistic proficiency depends heavily on fostering certain skills as mentioned below:

- The learner should acquire the ability to listen and understand, and should be able to employ non-verbal clues (signs, gestures etc) to make connections and draw inferences.
- The learner should develop the habit of reading for information and pleasure; draw inferences and relate texts to previous knowledge; read critically and develop the confidence to ask and answer questions.
- The learner should be able to employ her communicative skills, with a range of styles, and engage in a discussion in an analytical and creative manner.
- The learner should be able to identify a topic, organise and structure thoughts, and write with a sense of purpose and an awareness of audience.
- The learner should be able to understand and use a variety of 'Registers' associated with domains such as music, sports, films, gardening, construction work, etc.
- The learner should be able to use a dictionary and other materials available in the library and elsewhere, access and collect information through making and taking down notes, etc.
- The learner should be able to use language creatively and imaginatively in text transaction and performance of activities.
- The learner should be able to develop sensitivity towards their culture and heritage, aspects of contemporary life and languages in and around the classroom.
- The learner should be able to refine his literary sensibility and enrich his aesthetic life through different literary genres.
- The learner should be able to appreciate similarities and differences across languages in a multilingual classroom and society.
- It is important for the learner to notice that different languages and language varieties are associated with different domains and communicative encounters.
- The learner should become sensitive to the inherent variability that characterises language and notice that languages keep changing all the time. It is possible for a student to notice the differences between her own speech and the speech of her, say, grandparents.

11. The role of a teacher: What to be taught and how?

The role of a teacher is to reduce his indispensability to the minimum and motivate self-learning by provoking students into putting questions, discussing, role playing and concretisation of abstract ideas through a real life situation and audio- visual aids. Hearing takes place effectively if two or more senses are simultaneously employed; one hears, sees, understands and internalises through inference, judgement drawing conclusion, and making comparison and contrast.

What is to be taught is the language used in daily life-like situation. It is not divorced from life. One way to ensure this is to select themes/sub-themes in conformity with the learners' immediate environment

Scanned with CamScanner

physical, social and cultural. These should lead to an understanding and practice of the values enshrined in the constitution of India, including the Fundamental Rights and Duties.

Language learning is best facilitated in input–rich communicational environments. Inputs include textbooks, learner-chosen texts, class libraries, parallel books and materials in more than one language, media support (learner magazines/newspapers column, radio/audio cassettes), and authentic materials. The importance of textbooks remains indubitable. However, in addition to textual materials, various other inputs such as cards, charts, advertisements, texts produced by children, brochures, pamphlets, radio, T.V. news, etc should also be brought into the language classroom.

English spelling is not always based on its sounds; it is not spoken as it is written. But Hindi is spoken as it is written. So, English sounds have to be taught repeatedly.

The structure of Question is more difficult than that of a statement. Articles 'a', 'an', 'the' are more difficult than other determiners - 'my, 'your', 'his', 'one'. So first begin with such determiners and then come to Articles 'a', 'an' and 'the'. First 'a', then 'an', and then 'the'. A teacher must keep in mind what structure and pattern of English has no equivalence in the students' mother tongues. Such structures should be taught through repeated exposure. **Exposure should be given through drill and practice**.

12. Stages of learning

To ensure proper progression of learning, four stages of learning have been envisaged. These stages are: Primary, Upper Primary, Secondary and Intermediate or +2. The syllabus has been developed both stage-wise and class-wise. The objectives and learning outcomes are given stage- wise but teaching units with specific objectives have been given class-wise.

Upper Primary Stage (Classes VI –VIII)

After five years of exposure to the language through various activities and materials specially designed to promote language growth in the early years, the learner is supposed to have achieved the level of proficiency that is essential for launching activities that promote appreciation and understanding of a wide range of texts. The main goals of teaching/learning at the Upper Primary stage are vocabulary development through reading extensively with comprehension and interest along with writing activities of a higher order than developed hitherto.

Learning Objectives:

The general **objectives** at this stage are:

- To understand, enjoy and appreciate a wide range of texts representing different cultures, ways of living.
- To communicate individual /personal responses effectively.
- To use language and vocabulary appropriately in different contexts and social situations.
- To organise and structure thoughts in speech/ writing.
- To develop production skills (fluency and accuracy in speaking and writing).
- To use dictionary suitable to their needs.
- To translate sentences/passages from mother tongue into English.
- To develop in learners a desire to learn more and more

Scanned with CamScanner

Language Items

Knowledge of grammar remains a process of discovery even at the Upper Primary Stage. However, at this stage, it is combined with a conscious effort to explicitly understand and name grammatical items.

Attempts will be made first to consolidate the items learnt earlier. The following will be given special emphasis and recycled through the Upper Primary stage:

- Determiners
- Linking words
- Adjectives (comparative and superlative forms)
- Adverbs (place and types)
- Modal auxiliaries
- Tense forms
- Word order in sentence types
- Clauses
- Reported speech
- Voice

Learning Strategies

The Classroom transaction would ensure optimum participation of the learners, instilling in them an urge to use language both in speech and writing. The discretion of the teacher with regards to actual classroom procedure will be final. However, here are some recommendations that may help the teacher in the effective transaction in the classroom:

- Role play
- Dramatisation
- Reading aloud
- Recitation of rhymes, poems and making observations on a given topic/ theme
- Telling and retelling stories, anecdotes, and jokes
- Discussion, debate
- Simple projects
- Interpreting pictures, sketches, cartoons
- Activities, tasks and language games
- Pair work, group work, and short assignments both individual and group
- Using electronic media

Learning Outcomes:

At the end of this stage, learners will be able to:

- Use his/her critical thinking faculty
- Understand the central idea and locate details in the text (prescribed and non-prescribed)
- Use his/her proficiency in English to explore and study other areas of knowledge through print and non-print media
- Narrate simple experiences, describe objects and people, and report events
- Speak accurately with appropriate pauses and clear words/sentence stress to be intelligible in familiar social contexts
- Write simple messages, invitations, short paragraphs, letters (formal and informal) applications, simple narrative and descriptive pieces, etc.
- To undertake small projects on a regular basis
- To translate from one's mother tongue into English

Scanned with CamScanner

Required teaching competence

- The teacher should have fluency and accuracy in speaking and writing.
- The teacher should be able to appreciate the valid individual responses.
- The teacher should be able to encourage critical thinking on the part of the learners.
- The teacher should have the competence to create meaningful situations to elicit oral and written responses from the learners.
- The teacher should have the ability to initiate learners to group activities and role play.
- The teacher should be good at role play, dramatisation, discussion, debate etc.
- The teacher should have the competence to handle audio-visual aids.
- The teacher should have the clarity of concepts regarding the basic process of writing.
- The teacher should have a good knowledge of functional grammar.
- The teacher should have the competence to devise suitable language games.
- The teacher should have the competence to hold drilling exercises for a long time.
- The teacher should have the ability to plan and devise his teaching methods according to the need of the learners.

Suggestions for the selection of textual materials (Upper Primary stage) for developing textbooks/ supplementary readers as per requirement

1. Representative pieces on the suggested topics should have sufficient Bihar inputs. For example, while dealing with Travel and Tourism, places like Rajgir, Nalanda, Lauria etc. and topics like Golghar, Bodhivriksha etc. should be given priority.
2. Genuine Bihari writers in English or good texts on Bihar should be included with priority in the textbook.
3. Standard translation from different regional languages/ mother tongues should be given 50% space in the supplementary reader.
4. In the multilingual context of Bihar, the age- group of learners, their regional or the first language i.e., mother languages have to be focussed while making the textbook.
5. Attempts should be made to integrate different skills on a given topic.
6. The textbook should pinpoint the test to be given and suggest activities at the end of every lesson.
7. The choice of vocabulary, structures and theme should be related to life situations and the needs of our children.
8. The cultural context should be taken into consideration in which value –education and the guidelines of the preambles of Indian constitution should be suitably incorporated. Among other things, constitutional principles need to be included especially the philosophy of the preamble and the values implied in the chapter on the fundamental rights and the fundamental duties.
9. Folk tales/fables/ legend/ local history should adequately be included.
10. Contents as well as vocabulary of other subjects of study like everyday science etc. should also be taken into account in the preparation of the textbook. This will help reinforcement of learning along with meeting the linguistic needs of the child, enabling them to use English in various social contexts of learning situation. Similarly, there should be a meaningful correlation between the teaching of other languages and English.
11. Adequate emphasis should be laid on the actual use of language in a variety of situations.
12. With a view to achieving the objectives laid down in the syllabus textbook and workbook are required to be made for enhancing the levels of learners' competence and performance in English in the light of the syllabus prescribed for the purpose.
13. Attention could/ must be paid to these components as well, wherever possible:
    - Issues relating adolescence
    - Disaster management

Scanned with CamScanner

- Health
- environment

Curricular package

It is recommended that the curricular package for the upper primary stage (classes V-VIII) will consist of a textbook and a supplementary reader. There may also be a workbook. The textbook should contain 16-20 lessons (stories, poems, biographies, autobiographies, essays etc.) of varying lengths depending on the class. Each lesson/ unit should be followed by extensive exercises so that there is no need of a separate workbook. But if need be a separate workbook may also be prepared. The workbook will have the same number of corresponding worksheets as the number of the comprehensive units of the textbook. The supplementary reader will have about 6-12 pieces meant essentially for self-study promoting reading for information and pleasure. The supplementary reader should preferably be issue-based.

The learning materials require to be developed keeping in view the different classes so that the learning is 'without any burden on the learners' of the concerned classes. In other words, the quality content and the number of lessons should not appear taxing on them.

The Textbook and the Supplementary Reader will contain Bihar specific issues and topics in abundance. About 50% of the space will be given to the works of other languages used widely in Bihar. The standard translation will be preferred for this purpose

The recommended weightage in terms of marks is 40% for the textbook, 40% for language work including oral testing and 20 % for the supplementary reader.

Time available and coverage of syllabus

The number of working days in schools is over 220 days. However, due to various compulsions, the number of periods available in the schools of the state for actual teaching is not more than 180 days. The syllabus in English is designed in such a way that it can be covered in 100 hours, i.e. 150 periods of 40 minutes duration. This may be achieved by roughly five periods of 40 minutes duration per week. The entire session will be divided into three terms with two units each. Emphasis will be laid on the integrated teaching learning of the four linguistic skills in each unit. The lessons, therefore, have to be divided accordingly so that the learners undergo a natural learning process of communicative skills. Pronunciation, stress, intonation and accompanying gestures have to be made an important component of learning English language. This can be presented schematically in the following manner:

Term	Unit	Dialogue hours for covering the prescribed course	Dialogue hours for revision	Total dialogue hours
First Term	Unit 1	13 hours	03 hours	33
	Unit 2	13 hours	04 hours	
Second Term	Unit 3	13 hours	03 hours	33
	Unit 4	13 hours	04 hours	
Third Term	Unit 5	13 hours	03	34
	Unit 6	13 hours	05	
total		78	22	100 (roughly 150 periods of 40 minutes duration

Scanned with CamScanner

Evaluation

Evaluation will be an ongoing and continuous process. Ongoing evaluation becomes meaningful only when teachers and learners, both, are ready to take responsibility for their own progress not paying much attention to external benchmarks (real or imaginary, immediate or ultimate). This entails deeper understanding on the part of the teachers to be able to perceive and appreciate subtle changes in children's language learning and proficiency. This also entails a deep understanding on the part of the learners because learning process is individual and self-regulatory.

Evaluation depends heavily on **how** and **how much**. Experiences tell that learners participate in evaluations with more comfort when the experience is not always a failure and the outcomes can be seen as a legitimate and appropriate way towards the next step in learning.

Evaluations gain in meaningfulness when the children are clear about the immediate role played by current evaluation methods within the learning process. Continuous evaluation has to facilitate and guide teaching by determining the learner's current stage of development or attainment, in order to identify her "zone of proximal development".

For this, the teacher of English is expected to keep individual records of the learners and note down periodically the progress made by individual learners. He/she should also note down the problematic areas of each learner. This will help him plan remedial teaching.

In ultimate analysis, the purpose of evaluation should be an exercise towards 'the discovery of a learner' so that her creativity and originality can find an exposure for her much needed recognition and appreciation. **Such a 'learner' should appear as a 'face in the crowd' instead of being a face lost in the crowd**. This, however, does not, in any sense, mean ignoring the average.

Testing Conversational skills

Conversational skills- both listening and speaking- may be evaluated either through informal assessment or through a combination of informal assessment and formal assessment.

(I) **Informal Assessment:** Wherever in the course work the students are required to discuss, role play, simulate, express a point of view etc., the teacher should monitor the activities and quietly observe each learner's participation. This process should continue throughout the term. **A Conversation Skill Assessment Scale** is given below. For each skill, a learner may be awarded marks from 0 to 10, but specifications are given only for bands 1,3,5,7 and 9. Using this scale, a teacher can place a learner between the two given bands; for example, a learner falling between bands 3 & 5 would be awarded 4 marks, and more deserving learners could be awarded 10 marks. Learners should be informed at the beginning of the year that their class participation will be assessed in this way:

Conversation Skills Assessment Scale

Listening	Speaking
1. The learner shows general ability to understand words and phrases in a familiar context but cannot follow connected speech;	1. The learner shows ability to recite poems with gestures and understanding
3. S/he has ability to follow short connected utterances in a familiar context;	3. The learner shows ability to use only isolated words and phrases but cannot operate at connected speech level;
5. S/he has ability to take long dictations, without asking for repetitions;	5. In familiar situation, s/he uses only short connected utterances with limited accuracy.

Scanned with CamScanner

7. S/he has ability to understand explicitly stated information in both familiar and unfamiliar contexts;	7. S/he shows ability to use more complex utterances with same fluency in longer discourse; still makes some errors which impede communication
9. S/he understands a range of longer spoken texts with reasonable accuracy and is able to draw inference.	9. S/he organises and presents thoughts in a reasonably logical and fluent manner in unfamiliar situations; makes errors which do not interfere with communication

(II) Formal Testing

Informal assessment is preferred to assess conversation skills. However, a school may, if it wishes, reserve 10 of the 20 marks for formal assessment which should be held towards the end of the year. The formal assessment should be conducted as group interviews. Learners should be organised in groups of 4 or 5 and each group in turn should engage in a discussion on the given topic. To discourage rote learning of a speech, the topic should be notified only 10 minutes before the interview takes place. During the discussion, the teacher (preferably together with a colleague) observes the learner's performance and awards each one marks out of 10 according to the assessment scale. A school may opt for individual interviews if the procedure suggested above is not feasible. For this, debates and speech contests may be held.

b) Assignments

Based on course materials, a number of activities can be identified as suitable for continuous assessment assignments. These may be in the form of project works. The learner's performance in carrying out these assignments will be recorded and counted towards his final mark for the year. 20 marks have been allotted for these assignments.

Since speaking is not assessable through a written assignment, it chiefly forms the part of conversational skill assessment. Reading and listening can be assessed through course book activities which lead to a written product such as notes, a table or a summary. In view that these assignments are meant for listening and reading skill assessment, learners should be awarded marks as objectively as possible according to the extent to which they have understood, whether through reading or through listening. The learners should not be penalised in such assignments for errors in punctuation, spelling or grammar. Marking of these assignments will be based on the content expected to demonstrated comprehension and for this reason assessment scales will not be necessary.

Assessment of writing skills forms an important and integral part of the overall assessment of the learner's use of English language. A number of assignments, therefore, will focus or writing skills and involve extended writing.

The chosen assignments should vary each year. Throughout the year, the teacher should keep a record of marks awarded for assessments carried out either class or as homework and these marks should be aggregated to provide each learner's final marks out of 20 allotted for assignment. Final examination at the end of the class IX carries 40%.

Formal Written Tests:

The questions for the 1st Term, 2nd Term and the Final Examination will be set as follows. **1st Term Test**: 100 % questions will be asked from units prescribed for the 1st Term.

2nd Term Test: 30 % questions will be asked from units prescribed for the 1st Term and the remaining 70 % from the units prescribed for the 2nd Term.

Final Examination: 10 % questions will be asked from units prescribed for the 1st Term, 20 % from the units prescribed for the 2nd Term and the remaining 70 % from the units prescribed for the Final Term.

Scanned with CamScanner

Summative Evaluation

Summative evaluation will do well by moving away from being achievement oriented as is the case today and become proficiency oriented. Attempts have to be made not to test the mastery of studied passages, but rather to use the language appropriately in new contexts, in

Reading age-appropriate material
Listening to and understanding age-appropriate material
Conversing on age-appropriate topics
Writing on age-appropriate topics
Control over receptive vocabulary
Control over expressive vocabulary

The overall pattern of evaluation:

Besides summative evaluation at the end of the session or class, which would carry 40% weightage of marks, there could be two term/formal evaluations carrying 30% weightage; these should form the part of ongoing continuous assessment. Each evaluation should comprise both oral and written test. The other components of ongoing continuous evaluation would be the assignments –both home assignments and class assignments and the ongoing continuous evaluation, made in every class or at the end of every unit; both these could be given 20% weightage each. Thus the break-up of marks for the Upper Primary classes could be as follows

Evaluation	**marks**	**Class VI**		**Class VII**		**Class VIII**	
		written	**spoken**	**written**	**spoken**	**written**	**spoken**
1. continuous Assessment	**60**	**24**	**36**	**30**	**30**	**36**	**24**
a. 1st Term evaluation:	15	06	09	07	08	09	06
b. 2nd Term evaluation:	15	06	09	08	07	09	06
c. Ongoing class/unit evaluation:	20	08	12	10	10	12	08
d. Assignments:	10	04	06	05	05	06	04
2. Final Term evaluation:	**40**	**16**	**24**	**20**	**20**	**24**	**16**
Total	**100**	**40**	**60**	**50**	**50**	**60**	**40**

Syllabus: Class VI

Sl no	**Teaching Items**	**Method**	**Objective**	**Remarks/ Textual Support**
1.	Word Accent (Monosyllabic & disyllabic)	Oral exercises by loud reading	Reading and Speaking skills	Show how one word can have different accents depending on the use; e.g. August as noun has accent on the first syllable but as an adjective it has accent on the second syllable.
2.	Group discussions on familiar topics	Oral exercises	Developing argumentative and Speaking skills	Topics should be related to gender equality, religions and secularism, democracy, moral education etc.

Scanned with CamScanner

3.	Dictation of unseen passages	Listening and Writing exercises	Listening and Writing skills	Passages may be on the essence of different cultures and religions
4.	Sentence -making exercises based on the prescribed structures	Oral – Written exercises	Familiarity with the concepts of grammar and the order of words in sentences inductively	Words of common use as well of technical use (keeping in mind the level)
5.	Comprehension of simple but unseen passages (Short and long question-answer items)	Reading for understanding and responses	Ability to respond effectively in writing	Passages may be on adventure and imagination, travel and tourism, earthquake hazards, national diversity (different cultures in India)
6.	Reading of fables/folk tales/ short stories	Reading exercises	Reading with understanding	From ***Panchatantra***, ***Arabian Nights***, Gonu Jha's stories, Akbar –Birbal stories, the Bible etc
7.	Recitation of poems for enjoyment and understanding	Oral and written exercises	Enjoying and understanding poems	4-5 poems on human values, nature, liberty, patriotism etc.
8.	Controlled, guided and free (short) composition	Writing exercises	Communicative skills in Writing	Sufficient inputs should be given to encourage: • Simple narratives • Short descriptions • Notices • Informal letters
9.	Spoken English (based on prescribed structures)	Oral exercises through conversation and language games	Ability to speak English in different situations	Model written-Oral inputs
10.	Translation from mother tongue into English and vice versa	Written	Ability to translate from mother tongue into English and vice versa.	Simple passages on self, family, school, friends etc. based on prescribed structures
11.	Grammatical items and structures: a) Modal auxiliaries (continued) b) Word formation through Prefixes and suffixes c) Preposition: at, in, into, between, to, on, behind, in front of, over, under, by, for, than, with, from etc. d) Interchange of sentences:	Oral and Writing exercises	Listening, Speaking, Reading and Writing skills	Sufficient examples should be followed by extensive exercises, e.g. un + kind = unkind (Prefix), Love + ly = Lovely (suffix) He is a good boy. (Statement) – Is he a good boy? (Question) : Is she reading? (Question) – She is reading (Statement)

Scanned with CamScanner

	Statement into question and vice versa: e) Perfect Tenses (Present, Past & Future) f) Have/has to + V^1: I have to learn this lesson. g) Determiners (continued) h) Degrees of Comparison i) Passive Voice: Simple Present, Present Continuous, Present Perfect, Simple Past and Past Continuous j) Conjunction: so, yet, otherwise, as well as k) Punctuation marks: (comma and inverted commas) l) Reported speech (Statements with special focus on universal truth, Imperative sentences and Questions) m) Use of few, a few and the few			My father asked me to go, **so** I went. The boy worked hard, **yet** he failed. Be punctual, **otherwise**, you will be fined. Rekha **as well as** Soni is playing.

Syllabus: Class VII

Sl no	Teaching Items	Methods	Objectives	Remarks/ Textual Support
1.	Word Accent (polysyllabic)	Oral exercises by loud reading	Reading and Speaking skills	Sufficient examples of words having different accents at different positions
2.	Group discussions on familiar topics (contd)	Oral exercises	Developing argumentative and Speaking skills	Discussion may be held on elections, vote bank politics, dowry system, gender disparity, social discrimination, chemical hazards etc
3.	Sentence -making exercises based on the prescribed structures	Oral – Written	Familiarity with the	Words from different subjects

Scanned with CamScanner

			concepts of functional grammar and the order of words in sentences	taught at the level
4.	Comprehension of simple but unseen passage (Short and long question-answer items)	Reading aloud with understanding and doing Writing exercises	Ability to respond effectively in writing	May be on the great leaders of India, national movement, Dalit consciousness, India's neighbouring and other countries
5.	Reading of fables/folk tales/ short stories /short plays	Reading and Writing exercises	Reading with understanding and imbibing virtues	Stories from wide resources: local, national and international
6.	Recitation of poems for enjoyment and understanding	Oral and Written exercises	Enjoying and understanding poems and imbibing human values/ encountering truth	4-5 poems on human values, nature, liberty, patriotism, contemporary society, human psychology etc
7.	Controlled, guided and free (short) composition	Writing exercises	Communicative skills in writing	In addition to reinforcing items studied at class VI, Sufficient inputs should be given to encourage: • invitation • application
8.	Spoken English (based on prescribed structures)	Oral exercises through conversation and language games	Ability to speak English in different situations	Spoken and Written inputs to build environment for using language
9	Translation from mother tongue into	Writing	Ability to	Simple passages

Scanned with CamScanner

.	English and vice versa	exercise s	translate from mother tongue into English and vice versa.	on environment, culture, writers, leaders etc
10.	Grammatical items and structures: a) 'Must' for obligation: She must obey her parents b) 'Can' for permission: Can I stay here for the night? c) 'Should for suggestion: You are ill. You should go to a doctor. d) 'Shall' for promise: I shall give you a book. e) 'Let' for permission: Let me go. Let him play. f) Word order in sentence type g) Preposition: use of with/without = Cut it with knife. He did it without any help. h) Sequence of tenses i) Had to+ V^1: She had to cook her own food. j) Degrees of Comparison: changing from one Degree to another k) Use of little, a little, the little l) Passive Voice: Past Perfect, Simple Future, Future Perfect along with the reinforcement of other tense forms m) Conjunction (contd). n) Punctuation marks: (exclamation mark) o) Reported speech (contd) p) Clauses and the types of sentences : Principal, Subordinate, and Coordinate clauses (Introduction)	Oral and writing exercise s	Listening, Speaking, Reading and Writing skills	Sufficient examples followed by extensive exercises based on or related to texts.

Syllabus: Class VIII

Sl no	Teaching Items	Method	Objectives	Remarks/ Textual support
1.	Word Accent in connected speech	Oral exercises by loud reading	Reading and Speaking skills	Recorded as well as live conversation can be used for the purpose
2.	Group discussions on familiar topics (contd)	Oral exercises	Developing argumentative and Speaking skills	May be on contemporary socio-political issues, reformative measures to be adopted to

Scanned with CamScanner

				overcome different evils, problems of students etc.
3.	Sentence-making exercises based on the prescribed structures	Oral- written exercises	Familiarity with the concept of grammar and the order of words in sentences	Select vocabulary from different subjects prescribed for the class
4.	Comprehension of unseen passages Short and long question-answer items)	Reading aloud with understanding and doing writing exercises	Ability to respond effectively in Writing	Passages may be about Health and Reproductive health, Science and Technology, Environmental issues, Heritage, cultural diversities etc.
5.	Reading of folk tales/ short stories /short plays	Reading and Writing exercises	Reading with understanding and imbibing virtues	Different sources of folktales, stories and plays
6.	Reading of informative pieces/essays	Reading and Writing exercises	Reading with understanding	May be on festivals/ inspiring days, different communities in Bihar and their culture, human rights, disaster management etc
7	Recitation of poems for enjoyment and understanding	Oral and Written exercises	Enjoying and understanding poems and imbibing human values and/or encountering truth	4-5 poems on varying themes
8.	Controlled, guided and free composition	Writing exercises	Communicative skills in writing	Issues of universal and contemporary value
9	Spoken English (based on prescribed structures)	Oral exercises through conversation and language games	Ability to speak English in different situations	Written and oral inputs to build adequate environment
10.	Translation from mother tongue into English and vice versa	Written	Ability to translate from mother tongue into English and vice versa.	Passages may be about social evils, great personalities, inspiring stories etc.

Scanned with CamScanner

11.	Grammatical items and structures: a) Reinforcement of items like ❖ Determiners ❖ Linking words ❖ Use of Modal Auxiliaries in different situations ❖ Sequence of tenses in connected speech ❖ Reported speech ❖ Passive voice ❖ Punctuation marks b) Preposition: on, upon, over, between, since, of off, about, till, then etc. c) Will Have to+ V^1: She will have to come for help. d) use of each and every, almost and nearly, already and all ready etc. e) Clauses and the types of sentences (continues): Simple, compound and complex sentences f) Combining simple sentences	Oral and Writing exercises	Listening, Speaking, Reading and Writing skills	Sufficient examples followed by extensive exercises based on or related to texts.

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषा

कक्षा-VI

1. प्रार्थना -त्वमेव माता.....	(2 पद्य) - चित्रात्मक
2. सरलपदपरिचय -	चित्रात्मक (गृहोपकरण, पशु-पक्षी, पुष्प-फल तथा शरीर के अवयव)
3. संख्याज्ञानम् -	चित्रात्मक (1-20 सभी लिङ्गों में)
4. क्रियापदपरिचय -	चित्रात्मक (सरल क्रियाओं का प्रयोग)
5. मम परिवार : -	चित्रात्मक
6. सुभाषितानि -	एक पङ्क्ति वाले सुभाषित-10
7. शशसिंहकथा -	चित्रात्मक
8. जलमेव जीवनम् -	चित्रात्मक (पर्यावरण विषयक निबन्ध)
9. खेलक्षेत्रम् -	चित्रात्मक (वार्त्तालप)
10. सामाजिकं समत्वम् -	निबन्ध
11. गङ्गानदी -	निबन्ध
12. नीतिश्लोकाः -	अनुष्टुप् छन्द के पाँच छन्द

प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुप्रयुक्त व्याकरण, यथावश्यक योग्यता-विस्तार तथा पर्याप्त अभ्यास-प्रश्न दिये जाएँ ।

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषा

कक्षा–VII

1. वन्दना -	चित्रात्मक (सरल पौराणिक श्लोक-4)
2. कूर्मशशककथा -	चित्रात्मक (नियमित परिश्रम की शिक्षा)
3. ऋतुपरिचयः -	चित्रात्मक (निबन्ध-एक श्लोक सहित)
4. स्वतंत्रता दिवसः -	चित्रात्मक (वार्त्तालाप)
5. प्रहेलिकाः -	चित्रात्मक (पाँच पद्य)
6. संख्याज्ञानम् -	(21-50) प्रकीर्ण गद्य वाक्य
7. दीपोत्सवः -	चित्रात्मक (पर्यावरण तथा संस्कृति पर बल)
8. वसुधैव कुटुम्बकम् -	सामाजिक समरसता तथा वैश्वीकरण पर बल
9. सुभाषितानि -	पञ्चतन्त्र से आठ अनुष्टुप् छन्द के पद्य
10. दिनचर्या -	स्वस्थवृत्त से सम्बद्ध, आयुर्वेद के श्लोक भी दिये जायें ।
11. डॉ. अम्बेदकरः -	चित्रात्मक (संक्षिप्त जीवनी तथा उपलब्धियाँ)
12. अरण्यम् -	चित्रात्मक (पर्यावरण-संरक्षरण पर बल)
13. परिहास-कथा -	चित्रात्मक (गोनू झा की कोई रोचक कथा)
14. बोध गया -	धार्मिक स्थल की स्थिति, विशिष्टता तथा रमणीयता ।

प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुप्रयुक्त व्याकरण, यथावश्यक योग्यता-विस्तार तथा पर्याप्त अभ्यास-प्रश्न दिये जायें ।

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषा

कक्षा–VIII

1. मङ्गलम् –	'संगच्छध्वम्' .....तथा 'सह नाववतु'.....।
2. संघे शक्तिः –	चित्रात्मक (हितोपदेश के मित्रलाभ से चित्रग्रीव की कथा)
3. अस्माकं देशः –	निबन्ध, मानचित्रसहित, भारत की प्राचीन महिमा तथा आधुनिक स्थिति ।
4. प्रहेलिकाः –	पाँच श्लोक
5. सामाजिकं कार्यम् –	निबन्ध (समाजोपयोगी कार्य करने वालों का वर्णन)
6. लघुकथा –	सम्भाषण–संदेश से चयनित आधुनिक बोध की कथा ।
7. प्राचीनाः विश्वविद्यालयाः –	निबन्ध (तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला)
8. नीतिश्लोकाः –	चाणक्य नीतिदर्पण सै आठ श्लोक
9. दशरथ माँझी –	परिचयात्मक निबन्ध (अध्यवासय से कठिन कार्य करने की शिक्षा)
10. गुरु–शिष्य–संवादः –	विद्या के महत्त्व के सम्बन्ध में वार्त्तालाप
11. विज्ञानस्य उपकरणानि –	निबन्ध (उपकरणों के कार्य एवं आविष्कारक)
12. सदाचारः –	आदर्श आचरण सम्बन्धी आठ पद्य (आयुर्वेद, पुराण, एवं नीति ग्रन्थों से)
13. रविषष्ठी–व्रतोत्सवः –	चित्रात्मक (बिहार के सर्वाधिक लोकप्रिय व्रत का परिचय, आँचलिक तत्त्वों पर बल देते हुए, सामाजिक समरसता)
14. कृषिगीतम् –	चित्रात्मक (लोकगीत का संस्कृत में अनुवाद)

प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुप्रयुक्त व्याकरण, यथावश्यक योग्यता–विस्तार तथा पर्याप्त अभ्यास–प्रश्न दिये जायें ।

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषा

कक्षा–IX

1. ईशस्तुतिः –	गीता तथा उपनिषद् से पाँच पद्य
2. लोभाविष्ट चक्रधर कथा –	चित्रात्मक (पञ्चतंत्र से सम्पादित अंश)
3. यक्षयुधिष्ठिर संवादः –	महाभारत के वनपर्व से दस पद्य
4. चत्वारो वेदाः –	निबन्ध (वेदों का सामान्य परिचय)
5. वार्तालापः –	संस्कृत कक्षा में छात्रों तथा अध्यापक के बीच संस्कृत के महत्त्व पर संवाद ।
6. संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणम् –	निबन्ध (संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में पर्यावरण सम्बन्धी संक्षिप्त सूचनायें)
7. ज्ञानं भारः क्रियां विना –	पञ्चतंत्र की सम्पादित कथा, चित्रात्मक
8. नीतिपद्यानि –	नीतिशतक से आठ सरल श्लोक
9. विहारस्य सांस्कृतिकं वैभवनम्–	निबन्ध (बिहार की कलाओं का विशेष परिचय)
10. ईदमहोत्सवः –	निबन्ध, चित्रात्मक
11. ग्राम्य जीवनम् –	निबन्ध, चित्रात्मक (बिहार के गाँवों की समस्या तथा ग्रामवासियों का दैनिक जीवन)
12. वीर कुँवर सिंहः –	जीवनचरित तथा कार्य, चित्रात्मक
13. किशोराणां मनोविज्ञानम् –	निबन्ध (किशोरावस्था की महत्त्वाकांक्षा तथा दिशानिर्देश)
14. लघुकथा –	आधुनिक बोध से सम्बन्द्ध, शिक्षाप्रद ।
15. वैशालीवर्णनम् –	पद्य (नवरचित), वैशाली का महत्त्व, गणतंत्र–शासन की महिमा ।

प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुप्रयुक्त व्याकरण, यथावश्यक योग्यता–विस्तार तथा पर्याप्त अभ्यास–प्रश्न दिये जायें ।

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषा

कक्षा–X

1. मङ्गलम् –	उपनिषदों के पाँच पद्य
2. पाटलिपुत्रवैभवम् –	निबन्ध
3. अलसकथा –	विद्यापति की पुरुषपरीक्षा से सम्पादित, (मैथिली अकादमी संस्करण, पृष्ठ–54–56)
4. संस्कृतसाहित्ये लेखिकाः –	परिचयात्मक निबन्ध
5. भारतमहिमा –	पद्य (विष्णु पुराण, भागवतपुराण से संकलित तथा आधुनिक रचनाएँ सात पद्य)
6. भारतीयसंस्काराः –	निबन्ध (प्रमुख संस्कारों का परिचय तथा महत्त्व)
7. शास्त्रकाराः –	वार्तालापः (प्राचीन महत्वपूर्ण ग्रन्थों के लेखकों पर सूचनात्मक बातचीत)
8. नीतिश्लोकाः –	विदुरनीति से दस पद्य
9. कर्मवीरकथा –	आधुनिक गाँव के दलित व्यक्ति का पढ़लिखकर ऊँचा स्थाना पाना– इस विषय पर कल्पित कथा ।
10. स्वामी दयानन्दः –	परिचय तथा उपलब्धियाँ, चित्रात्मक
11. मन्दाकिनीवर्णनम् –	वाल्मीकीय रामायण के आयोध्याकाण्ड, सर्ग 95 के श्लोक 3 से 12 तक
12. व्याघ्रपथिककथा –	हितोपदेश से सम्पादित, चित्रात्मक
13. कर्णस्य दानवीरता –	चित्रात्मक (भास के कर्णभार नाटक से संकलित, चौखम्बा संस्करण में पृष्ठ–16 पर "ततः प्रविशति ब्राह्मणरूपेण शक्रः" से पृष्ठ–24 पर "तस्मात् गृह्यताम्" तक, सम्पादित)
14. विश्वशान्तिः –	निबन्ध

प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुप्रयुक्त व्याकरण, यथावश्यक योग्यता–विस्तार तथा पर्याप्त अभ्यास–प्रश्न दिये जायें ।

Scanned with CamScanner

संस्कृत (VI-VII-VIII)

1. प्रस्तावना

1.1 भूमिका

मानव समुदाय के जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने में संस्कृत भाषा एवं साहित्य का अद्वितीय योगदान प्राचीन काल से रहा है । न केवल भारतवर्ष की आदिम भाषा के रूप में अपितु विश्व की प्राचीनतम भाषा एवं साहित्य के रूप में संस्कृत का स्थान सर्वोपरि है । विश्व में अध्ययन के विविध विषयों में अंत: भाषा संबंध स्थापित करने में प्रवृत्त भाषा-विज्ञान का आरंभ पाश्चात्य देशों में संस्कृत के अध्ययन के बाद होता है ।

भारत की प्राय: अधिकांश भाषा साहित्य को समृद्ध करने में संस्कृत शब्दों का योगदान सर्वाधिक महत्त्व का है । अत: आज भारत में ही नहीं, अपितु विश्व में संस्कृत वाङ्मय के अध्ययन पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है । प्रांतीय एवं केन्द्रीय सरकार भी संस्कृत भाषा एवं साहित्य को जने-जने एवं गृहे-गृहे पहुँचाने के लिए कृतसंकल्प दिखती है । अत: बच्चों को उस ओर प्रेरित करने के लिए प्रारम्भिक स्तर से संस्कृत विषय के अध्यापन का प्रयास प्रांतीय एवं केन्द्रीय सरकारों के द्वारा सकारात्मक रूप में किया जा रहा है, जो अत्यन्त सराहनीय है ।

भारत के विशाल क्षेत्र को ध्यान में रखकर NCERT के द्वारा छठे वर्ग से संस्कृत के अध्यापन की योजना होने के कारण उसी स्तर से पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। ज्ञान के तीव्रता से विकास होने की स्थिति में पुराने पाठ्यक्रम को अद्यतन बनाने का प्रयास बिहार में किया जाता रहा है। इस दृष्टि से 21वीं शताब्दी में भूमण्डलीकरण तथा उदारीकरण के युग में संस्कृत पाठ्यक्रम को भी उसी दृष्टि से नवीकरण की आवश्यकता है। पर्यावरण की नयी समस्याओं से भी छात्रों को अवगत कराना आवश्यक है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए संस्कृत पाठ्यक्रम को नवीन स्वरूप देने का प्रयास प्रस्तावित पाठ्यक्रम में किया गया है।

प्राचीन पाठ्यक्रम से प्रस्तावित पाठ्यक्रम अधोलिखित रूप में कुछ नवीनता एवं विशिष्टता को लिए हुए हैं।

1.2 गौरवशाली अतीत

विश्व की प्राचीन भाषाओं में संस्कृत अन्यतम है। भारत का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद संस्कृत में निहित है। रामायण, महाभारत एवं भगवद्गीता भी संस्कृत में है। इनके अतिरिक्त आधुनिक विषयों-इतिहास, गणित, संगीत, चिकित्सा विज्ञान आदि का मूल स्रोत संस्कृत भाषा में उपलब्ध होता है। भारत की आधुनिक भाषाएँ संस्कृत से बहुत प्रभावित हैं, जिनमें संस्कृत के बहुसंख्य शब्द प्राप्त होते हैं। अत: आधुनिक भाषाओं के साहित्य एवं श्रव्य में प्रयुक्त शब्दों के मूल को समझने

Scanned with CamScanner

के लिए संस्कृत का ज्ञान अपरिहार्य है। इन भाषाओं के तत्सम एवं तद्भव शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया संस्कृत ज्ञान के बिना नहीं समझी जा सकती है। इनके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्त्व धर्म एवं अध्यात्म के ज्ञान के लिए संस्कृत भाषा एवं इसके विस्तृत साहित्य का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

1.3 संस्कृत-शिक्षण की आवश्यकता

आज का विश्व विकास की ओर प्रमुख होकर भी अशांति, अवसाद एवं आतंक के साये में जी रहा है। संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों में निहित पर्यावरण के संतुलन का पाठ, नैतिक शिक्षा, नारी सम्मान की अवधारणा, सर्वधर्मसमन्वय की उन्नत भावना जैसे जीवनोपयोगी तत्त्व मानव को इनसे मुक्ति दिला सकते हैं। योग, वास्तु, चिकित्सा जैसे अनेक वैज्ञानिक विषयों को और समृद्ध बनाने के लिए भी संस्कृत-शिक्षण अनिवार्य है।

1.4 संस्कृत की वैज्ञानिकता

संस्कृत की अपार शब्दनिधि विश्व का अनुपम उदाहरण है। संस्कृत के एक धातु से डेढ़ लाख शब्द व्युत्पन्न होते हैं। इस भाषा की शब्द व्युत्पादन की वैज्ञानिक विधि द्वारा शब्द या पद के सूक्ष्मतम स्वरूप तक पहुँच सकते हैं। किसी भी भाषा के कौशल हेतु श्रवण, वाचन, लेखन एवं भाषण दक्षता को विकसित करना आवश्यक है। प्राचीन मनीषियों ने इसी पक्ष को दृष्टिगत कर वेदाग साहित्य-शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द एवं ज्योतिष का विधान किया है। बाद में आचार्य पाणिनि ने संस्कृत व्याकरण को एक संतुलित एवं पूर्ण कलेवर प्रदान कर इस भाषा को पूर्णतः वैज्ञानिक बना दिया। नए शोधों से यह बात भी प्रमाणित हो गयी है कि संस्कृत भाषा आधुनिकता की नींव मानी जानेवाली 'कम्प्यूटर-प्रणाली' के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। संस्कृत के विभिन्न आयुर्वेद ग्रन्थों-चरक संहिता, सुश्रुत संहिता आदि तथा उपनिषद् जैसे अनेकानेक संस्कृत भाषा के ग्रंथों पर निरंतर जारी शोध इस भाषा की वैज्ञानिकता को ही तो बयाँ करता है। योगाचार्य रामदेव ने संस्कृत के 'पातञ्जलसूत्र' के प्राणायाम एवं योग सूत्रों को जन-जन तक पहुँचाकर वैज्ञानिक क्रांति का ही सूत्रपात किया है।

2. बिहार में संस्कृत की प्राचीन परम्परा

बिहार का अतीत संस्कृत के समृद्ध एवं सुनहले दिनों से पूर्ण रहा है। याज्ञवल्क्य, जनक जैसे आत्मद्रष्टा ज्ञानी, वराहमिहिर, आर्यभट्ट जैसे गणितज्ञ व खगोलविज्ञानी, भारती-मण्डन जैसे प्रगल्भ दार्शनिक, चाणक्य जैसे कूटनीतिज्ञ, पतञ्जलि जैसा वैयाकरण, विद्यापति जैसे कवि इस माटी में संस्कृत की सौंधी सुगंध को बिखेरते नजर आते हैं। दर्शन की अनेक शाखाएँ बिहार की इसी गण्डकी-कोशी-गंगा की तराइयों में पल्लवित पुष्पित हुईं ।

Scanned with CamScanner

3. वर्त्तमान चुनौतियाँ एवं संस्कृत-शिक्षण

3.1 पर्यावरण

आज पर्यावरण संकट एक महामारी का रूप धारण करता जा रहा है। विकास की अंधीदौड़ ने पर्यावरण को इस प्रकार विनाशोन्मुख कर रखा है। कि विकास के सारे आयाम ही बेमानी प्रतीत होने लगे हैं। ओजोन परत का संकट, अम्ल-वर्षा, असमय आते आँधी-तूफान, सुनामी, प्रलयंकारी बाढ़, अतिवृष्टि, जैसी पर्यावरणिक परेशानियाँ प्रतिदिन पैदा हो रही हैं। संस्कृत भाषा के अनेक ग्रन्थों द्वारा पर्यावरण के प्रति प्रेम का पाठ पढ़ाकर इन परेशानियों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। विश्व आदिम साहित्य-ऋग्वेद प्राकृतिक तत्त्वों की न केवल भूरि-भूरि प्रशंसा करता है बल्कि स्थापित विविध वैज्ञानिक प्रतिमानों की दैवीय रूप में स्तुति कर इन 'पंचभूतों' की उपादेयता को भी स्थापित करता है। संस्कृत साहित्य के अन्य दर्शनों में भी प्रकृति, जीव एवं जगत् के त्रिक को स्थापित कर इन तीनों के समन्वय की बात कहकर पर्यावरण संरक्षण का उपाय ही प्रस्तुत किया गया है। उल्लेखनीय है कि बाहरी पर्यावरण के साथ भीतरी पर्यावरण की स्वच्छता और संतुलन आवश्यक है। संस्कृत भाषा में निबद्ध विभिन्न ग्रंथ भीतरी पर्यावरण को भी नियंत्रित करते हैं।

3.2 लिंग भेदभाव

लिंगभेद आज के विकासशील राष्ट्रों की आम समस्या है। दहेज-प्रताड़ना, नारी-अशिक्षा, नारी स्वास्थ्य, दोहरा मानदंड जैसी अनेक कुदृष्टियाँ इन राष्ट्रों की आधी जनसंख्या को प्रभावित कर विकास के सारे मानदंडों को गड़बड़ा कर रख देती हैं। संस्कृत भाषा के प्रायः सभी ग्रंथ नारी समानता, अस्मिता व सम्मान के उत्स को दर्शाते हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जैसे वैदिक सूक्त नारी के आदर्शतम रूपों का बखान कर लिंग समानता को ही प्रदर्शित करते हैं।

3.3 शांति

आज हर समाज, राज्य व राष्ट्र आतंक, अनुशासनहीनता एवं नैराश्य के परिवेश से घिरा है। जैसे संस्कृत भाषा में निबद्ध 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' जैसे सर्व कल्याण की सोच वाला श्लोक हर स्तर पर शांति की कामना कर एक समृद्ध व शांत समाज, राज्य, राष्ट्र व विश्व की कल्पना को ही तो प्रतिरूपित करता है। इतना ही नहीं संस्कृत के कतिपय मंत्र पृथ्वी, ग्रह, जल, जीव, जगत्-सभी की शांति की बात कर शांतिपूर्ण जीवन के वजूद को स्थापित करता है।

अस्तु, संस्कृत के इन आदर्शों को प्राथमिक स्तर से उच्चतर स्तर तक संस्कृत शिक्षण में समन्वित कर मानव निर्मित सामाजिक, बुराइयों एवं प्रकृति के साथ छेड़छाड़ पर नियंत्रण तो पायी ही जा सकती है, साथ-ही आज की अशांति के वातावरण में संस्कृत के इन आदर्शो का अध्ययन विश्व शांति की दिशा में 'मील का पत्थर' साबित हो सकता है।

Scanned with CamScanner

4. संस्कृत पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम निर्माण के प्रमुख मार्गदर्शक बिंदु

NCF-05 के आलोक में बिहार प्रदेश के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2006 में निहित मूल तत्त्वों को आत्मसात् करने का प्रयास करते हुए भाषा-शिक्षण के अंतर्गत संस्कृत भाषा की पाठ्यचर्या का निर्माण निम्न तथ्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया है-

ग्रामीण एवं विद्यालयीय परिवेश केन्द्रित

सांस्कृतिक चेतना का विकास

मानव-मूल्य एवं सर्वधर्म-समभाव

पर्यावरण एवं मानवाधिकार

बिहार की आँचलिक भाषा एवं संस्कृत

सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समृद्धि, दलित चेतना एवं लिंगीय समानता मूल्यांकन

संस्कृत में निहित प्राचीन भारतीय विरासत की जानकारी

5. बिहार में संस्कृत-शिक्षण में बहुभाषिकता

प्राय: प्रदेशों में एक भाषा बोली जाती है, जैसे बंगाल में बंगला, ओडिसा में उड़िया, महाराष्ट्र में मराठी आदि। परंतु बिहार प्रदेश तो इस क्षेत्र में भी 'अनेकता में एकता' का नायाब नमूना पेश करता है। बिहार में हिन्दी भाषा के अतिरिक्त मैथिली, अंगिका, भोजपुरी, मगही, बज्जिका जैसी अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ हैं। ऐसी स्थिति में संस्कृत-शिक्षण के क्रम में क्षेत्र विशेष की भाषा के माध्यम से भी अध्यापन संस्कृत भाषा के अध्ययन को सरल, सुगम एवं तार्किक बना सकता है। उल्लेखनीय है कि यह पद्धति अन्य भाषाओं के शिक्षण के क्रम में भी उपादेय हो सकती है।

6. ग्रामीण/विद्यालयीय परिवेश और संस्कृत

किसी भी विद्यालय के आसपास के क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक वातावरण शिक्षण को काफी प्रभावित करते हैं। अतएव संस्कृत के प्रारंभिक शिक्षण के क्रम में यह बात उपयोगी हो सकती है कि क्षेत्र-विशेष में उपलब्ध मूर्त्त वस्तुओं के संस्कृत नामकरण से ही संस्कृत शिक्षण प्रारंभ किया जाए।

इसी प्रकार बिहार के क्षेत्रविशेष से सम्बन्धित संस्कृत सेवियों/संस्थानों के योगदान को उदाहरण के तौर पर शिक्षार्थियों के बीच रखकर शिक्षण को जिज्ञासापूर्ण बनाया जा सकता है।

□

Scanned with CamScanner

7. पाठ्यक्रम

उद्देश्य :	VI-VII-VIII
सामान्य उद्देश्य;	• संस्कृत अध्ययन के प्रति जिज्ञासा जाग्रत करना। • संस्कृत भाषा के आरंभिक तत्त्वों को रेखांकन, रेखाचित्र के माध्यम से परिचित कराना। • सरल संस्कृत को सुनकर समझने की क्षमता प्रदान करना। • संस्कृत के पद्यों एवं गद्यांशों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना। • प्रकृति प्रेम का विकास।
विशिष्ट उद्देश्य :	• छात्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करना। • संस्कृत ध्वनियों के शुद्ध-शुद्ध उच्चारण की योग्यता उत्पन्न करना। • संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने एवं बोलने की क्षमता का विकासकरना। • संस्कृत श्लोकों के वाचन की योग्यता उत्पन्न करना। • अपने परिवेश में नित्यप्रति प्रयोग में आनेवाली वस्तुओं-क्रियाओं के संस्कृत में लेखन-कौशल का विकास करना।

कक्षा	स्तरान्त योग्यताएँ				भाषिक तत्त्व क्षमता/तार्किक तत्त्व क्षमता	पाठ आधारित
	श्रवण	वाचन	लेखन	भाषण		
VI	• संस्कृत ध्वनियों को सुनकर पहचानना।	• संस्कृत वर्णों का शुद्ध-शुद्ध उच्चारण करना। • पाठ्य-पुस्तक में आये सरल सुभाषितों का शुद्ध-शुद्ध वाचन।	• संस्कृत पदों को शुद्ध-शुद्ध लिखना। • संख्यावाची शब्दों (एक से बीस) को संस्कृत में शुद्ध-शुद्ध लिखना।	• सुभाषितों का सस्वर वाचन कराना। • अपना तथा संबंधियों का नाम संस्कृत में परस्पर वार्तालाप तथा छात्रों के बीच सम्भाषण के द्वारा कराना। • संख्यावाची शब्दों (एक से बीस) को संस्कृत में छात्रों के बीच गिनती द्वारा अभ्यास कराना।	• अपने परिवेश में नित्य प्रयुक्त वस्तुओं एवं क्रियाओं के संस्कृत में रूपान्तरण की क्षमता का विकास यथा-हाथ-हस्तः, पुस्तक-पुस्तकम् चलना-चल्, हँसना-हस्, पढ़ना-पठ्। • वचन एवं लिंग का ज्ञान। • प्रकृति प्रेम का विकास।	• संधि द्वारा सुबन्त एवं तिङन्त प्रकरण ज्ञात करना। • अकारान्त (पुल्लिंग एवं नपुं.) पद (राम, फल)। • आकारान्त (स्त्रीलिंग) पद (लट् लकार आधारित)। • संख्यावाची शब्द (एक से दस) की पहचान करना।

Scanned with CamScanner

VI	• संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों को सुनकर पहचानना यथा- अनुनासिक एवं अनुस्वार, संयुक्ताक्षर एवं ऊष्म ध्वनियाँ।	• संस्कृत के सरल गद्यों एवं पद्यों का शुद्ध-शुद्ध वाचन।	• घर में प्रयुक्त होनेवाली वस्तुओं को संस्कृत में लिखना। • संस्कृत के सरल गद्यों एवं पद्यों को शुद्ध-शुद्ध लिखना। • छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखना।	• संस्कृत के सरल प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दे सकना। • छात्रों के बीच शिक्षक द्वारा संस्कृत पद्यों का सस्वर वाचन करना तथा छात्रों से अनुकरण वाचन करवाना।	• संख्यावाची संस्कृत पद (एक से पचास) का ज्ञान। • वर्ग में छात्रों के बीच गिनती के माध्यम से अभ्यास कराना। • प्रकृति के प्रति सौन्दर्यबोध की चेतना का विकास।	• संयुक्ताक्षर, अनुनासिक एवं अनुस्वार से युक्त पद का निर्माण। • शब्दों की व्युत्पत्ति एवं उदाहरण संयुक्ताक्षर का ज्ञान कराना। • क्रिया-पद (वर्ग चलकर आधारित)।

कक्षा	स्तरान्त योग्यताएँ				भाषिक तत्त्व क्षमता/तार्किक तत्त्व क्षमता	पाठ आधारित व्याकरण
	श्रवण	वाचन	लेखन	भाषण		
VII	• संस्कृत के सरल गद्यांशों एवं पद्यों को सुनकर अर्थग्रहण करना। • संस्कृत शिक्षक एवं सहपाठियों के संस्कृत कथनों को सुनकर तदनुरूप सम्भाषण करना।	• संस्कृत के सरल गद्यों एवं लघु-कथाओं का शुद्ध-शुद्ध पाठ करना। • संस्कृत के सरल पदों का सस्वर पाठ करना।	• संस्कृत के विविध सरल पदों से वाक्य निर्माण करना। • संस्कृत के गद्यांशों एवं पद्यों को सुनकर शुद्ध-शुद्ध लिख सकना। • संख्यावाची शब्द (इक्कीस से पचास) के संस्कृत शब्दों का वर्ग में छात्रों के बीच गिनती द्वारा अभ्यास कराना।	• संस्कृत में सरल प्रश्नोत्तर करना। • संस्कृत के श्लोकों को सस्वर सुनाना। • 'संख्यावाची संस्कृत पदों (इक्कीस से पचास) को सुनाना।	• पठित पाठ के आधार पर संस्कृत में पाँच सरल वाक्यों के निर्माण करने की क्षमता। • संज्ञा एवं क्रिया पदों में वचन परिवर्त्तन की क्षमता का विकास करना। • संस्कृत संख्यावाची पदों (एक से पचास) का गिनती द्वारा ज्ञान। • कक्षा में लिंग समानता की चेतना का विकास।	• पाठ में आये विभिन्न पदों द्वारा सरल वाक्य का निर्माण-बधा-पुस्तकम् इदं पुस्तकम् अस्ति। • वर्णों के उच्चारण स्थान। • पाठ में प्रयुक्त सौंधयुक्त (स्वर सन्धि से सम्बन्धित) पदों का सन्धि विच्छेद। • भूत कालिक प्रत्यय 'क्त' तथा 'क्तवतु' का ज्ञान। • लकार आधारित क्रिया पदों की पहचान करना।

Scanned with CamScanner

कक्षा	स्तरान्त योग्यताएँ				भाषिक तत्त्व क्षमता/तार्किक तत्त्व क्षमता	पाठ आधारित व्याकरण
	श्रवण	वाचन	लेखन	भाषण		
VIII	• नीतिकथा एवं सुभाषित पदों को सुनकर भाव ग्रहण करना। • संस्कृत शिक्षक एवं सहपाठियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में देना।	• उचित गति एवं शुद्ध उच्चारण के साथ संस्कृत गद्यांशों एवं पद्यों का वाचन करना।	• किसी पठित कहानी या पाठ का सारांश संस्कृत के पाँच वाक्यों में लिखना। • संस्कृत के सरल वाक्यों का मातृभाषा में अनुवाद संख्यावाची (इक्यावन से सौ) शब्दों का शिक्षक द्वारा वाचन एवं छात्र लेखन।	• पठित सामग्री पर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में देना। • संख्यावाची संस्कृत शब्दों (इक्यावन से सौ) को कक्षा में गिनती द्वारा अभ्यास करना।	• सर्वनाम एवं विशेषण पदों की पहचान। • प्रत्याहर सूत्रों का ज्ञान तथा प्रत्याहार बनाने की विधि बताना एवं संधि उपयोगिता बताना। • प्रत्यय का सामान्य ज्ञान। • क्रिया-विशेषण का ज्ञान। • वैज्ञानिक कौशल का विकास। • संख्यावाची संस्कृत पदों (एक से पचहत्तर) का ज्ञान • विद्यालय एवं सामाजिक स्तर पर लिंगीय चेतना का	• पाठ में आये विभिन्न पदों द्वारा सरल वाक्य का निर्माण-यथा-पुस्तकम् इदं पुस्तकम् अस्ति। • वर्णों के उच्चारण स्थान। • पाठ में प्रयुक्त संधियुक्त (स्वर सन्धि से सम्बन्धित) पदों का सन्धि विच्छेद। • भूत कालिक प्रत्यय 'क्त' तथा 'क्तवतु' का ज्ञान। • लकार आधारित क्रिया पदों की पहचान करना।

Scanned with CamScanner

कक्षा	स्तरान्त योग्यताएँ				भाषिक तत्त्व क्षमता/तार्किक तत्त्व क्षमता	पाठ आधारित व्याकरण
	श्रवण	वाचन	लेखन	भाषण		
	• वाक्यों को सुनकर लिखना तथा अर्थ समझना।	• उचित गति एवं उच्चारण के साथ संस्कृत गद्यांशों व पद्यों का वाचन। • संस्कृत के पद्यों का सस्वर पाठ करना।	• दैनिक कार्यों का विवरण संस्कृत में लिखना। • संख्यावाची संस्कृत पद (छिहत्तर से सौ) को शुद्ध-शुद्ध लिखना।	• परिवेश व पर्यावरण के विविध आयामों पर संस्कृत में बोलना। • संख्यावाची संस्कृत पदों (छिहत्तर से सौ) का वर्ग में गणना द्वारा अभ्यास करना।	• व्यञ्जन के सामान्य नियनों का ज्ञान। • दैनिक जीवन में प्रयुक्त अव्यय का सामान्य ज्ञान। • कारक एवं विभक्ति का सामान्य ज्ञान। • पत्र-लेखन की क्षमता का विकास करना। • अनुच्छेद लेखन की क्षमता। • सर्वनाम शब्द इदम्, किम्, एतत्, सर्व। • हलन्त शब्द (पु० स्त्री० नपुं०) श्रीमन् ऋक्, जगत्।	• सर्वनाम शब्द रूप-तत्, अस्मद्, • लोट् लकार क्रियापद की पहचान करना। संख्यावाची संस्कृत पद (एक से पचहत्तर) की पहचान करना। • सरल संस्कृत वाक्यों का निर्माण करना। • विभिन्न सन्धियों की पहचान एवं सन्धि-विच्छेद। • अव्यय पदों की पाठ से पहचान करना। • प्रयुक्त पदों में कारक एवं विभक्ति की पहचान करना। • संख्यावाची संस्कृत शब्द (छिहत्तर से सौ) की पहचान। • वर्णों को आभ्यान्तर एवं बाह्य प्रयत्न द्वारा अलग करना। • विधिलिङ् क्रियापदों की पहचान करना।

Scanned with CamScanner

8. शिक्षण-विधि एवं तकनीक

संस्कृत शिक्षण को सुगम, रोचक एवं छात्र केन्द्रित बनाने के लिए अध्यापक आवश्यकतानुसार प्रश्नोत्तर विधि, अभिनय-विधि को अपनाते हुए छात्रों के परिवेश एवं उनकी मातृभाषा का संस्कृत शिक्षण में संयोजन कर सकते हैं।

पुनः स्तरानुसार क्रियात्मक विधि का अधिकाधिक उपयोग कर भाषा कौशल के विकास का प्रयास किया जाए। अध्यापकों द्वारा संस्कृत के श्लोकों का सस्वर पाठ करते हुए छात्रों द्वारा अनुवाचन कराया जाए।

संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों का मनोरंजनपूर्ण अभ्यास भी भाषा, कौशल के विकास में उपयोगी हो सकता है। अध्यापक द्वारा प्रायोगिक व्याकरण का प्रयोग भी अभ्यास द्वारा सिखाया जाए।

अध्यापक बच्चों से विभिन्न पठित अंशों को दो-चार समूहों में बाँटकर शास्त्रार्थ करवा सकते हैं।

8.1 विद्यालय/कक्षा क्रियाकलाप एवं टी०एल०एम०

क्रीड़ापरक गतिविधियों का आयोजन

संस्कृत अनुलेख/श्रुतलेख

प्रार्थना में गुरु/ईश-वंदना विषयक कम-से-कम दो श्लोकों का प्रयोग

प्रत्येक कक्षा में प्रति माह श्लोकोच्चारण, अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन

सेमिनार, अभ्यास वर्ग का समायोजन

प्रत्येक विद्यालय में क्षेत्रीय महापुरुषों की तिथियों पर संस्कृत में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन विविध विषयों पर आधारित शास्त्रार्थ ।

संस्कृत के रोचक कथाओं, नाटकों एवं अन्य समसामयिक संदर्भों पर निर्मित संस्कृत के कार्टून फिल्मों या कथाचित्रों को दिखलाना।

कैसेट, वीडियो, कम्प्यूटर गेम आदि।

9. मूल्यांकन एवं प्रविधि

संस्कृत-शिक्षण के अन्तर्गत सतत मूल्यांकन आवश्यक है। तभी उद्देश्यानुरूप भाषा-कौशल का विकास किया जा सकता है। अस्तु, संस्कृत अध्यापक संस्कृत पाठ्यक्रम को साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक एवं वार्षिक कैलेण्डर बनाकर संस्कृत ध्वनियों, वर्णों, श्लोकों के पठन, वाचन एवं लेखन का सतत मूल्यांकन कर सकते हैं। सेमिनार एवं अभ्यास वर्ग भी मूल्यांकन में सहायक हो सकते हैं।

9.1 मौखिक परीक्षा

कक्षा-VI से VIII में 40 अंक

इससे छात्रों के संस्कृत श्रवण, वाचन, भाषण एवं स्मरण कौशलादि का मूल्यांकन हो सकेगा।

प्रथम इकाई परीक्षा	द्वितीय इकाई परीक्षा	अर्द्धवार्षिक परीक्षा	वार्षिक परीक्षा
मौखिक-15	मौखिक-15	मौखिक-20	मौखिक-20
मौखिक-15	प्रायोजना-15	लिखित-80	लिखित-80
गृह-कार्य-15	गृह-कार्य-15		
लिखित-55	लिखित-55		
कुल-100	कुल-100	कुल-100	कुल-100

Scanned with CamScanner

11. संभावित प्रायोजना कार्य

कक्षा-VI

1. संस्कृत भाषा में छात्र प्रतिज्ञा तथा विद्यालय प्रार्थना का कण्ठस्थीकरण
2. मंगलाचरणे (मांगलिक श्लोकों) का वाचन
3. अकारान्त पु., बीस
4. अस्मद्, युष्मद्, एतत् (तीनों लिंगों), का प्रथमा तथा षष्ठी में रूप का प्रयोग द्वारा ज्ञान
5. पूर्णमानव का चित्र बनाकर उसके विभिन्न अंगों का वाचन क्षरा ज्ञान
6. 1 से 30 तक संस्कृत संख्यावाची शब्दों की वर्ण में गणना द्वारा बोध
7. 10 संस्कृत श्लोकों का उच्चारण लयपूर्वक
8. पठ्, चल्, भू धातुओं का क्त एवं क्तवतु में प्रयोग द्वारा ज्ञान
9. विभिन्न फलों के संस्कृत नामों का संकलन वाचन द्वारा-श्रव्य दृश्य उपादानों का उपयोग
10. विभिन्न खाद्य पदार्थों के संस्कृत नामों का संकलन वाचन द्वारा
11. विभिन्न पक्षियों के संस्कृत नामों का संकलन वाचन द्वारा
12. विभिन्न पशुओं के संस्कृत नामों का संकलन वाचन द्वारा
13. विभिन्न फूलों के संस्कृत नामों का संकलन वाचन द्वारा
14. प्रतिदिन प्रयोग में आने वाले घरेलू तथा व्यवहार में आनेवाली वस्तुओं के संस्कृत नामों का संकलन
15. 10 अव्यय पदों को अर्थसहित लिखकर उससे वाक्य-निर्माण
16. संधि से 20 शब्दों की तालिका का निर्माण
17. एकवचन के बीस अकारान्त शब्दों से बने पदों का बहुवचन में परिवर्त्तन

कक्षा-VII

1. विद्या सम्बन्धी किसी 5 संस्कृत श्लोकों का उच्चारण वर्ग में
2. 20 अव्ययपदों से संस्कृत वाक्यों का निर्माण
3. भारत के मानचित्र पर भारत में प्रवहमना प्रमुख नदियों का परिचय
4. 51 से 75 तक संस्कृत संख्यावाची शब्दों का वर्ग में गणना द्वारा परिचय
5. गम्, दृश्, नी धातुओं का लृट् लकार में उच्चारण द्वारा बोध के बाद लेखन
6. 10 संस्कृत श्लोकों का लेखन
7. मुनि, साधु-शब्द रूप-लेखन
8. विभिन्न फलों के संस्कृत नामों का दृश्य-श्रव्य उपादानों द्वारा ज्ञान

Scanned with CamScanner

9. विभिन्न फूलों के संस्कृत नामों का दृश्य-श्रव्य उपादानों द्वारा परिचय
10. विभिन्न रंगों के संस्कृत नामों का श्रव्य-दृश्य उपादानों के माध्यम से परिचय
11. विभिन्न पोशाकों के संस्कृत नामों का श्रव्य-दृश्य उपादानों के माध्यम से परिचय
12. विभिन्न पशुओं के संस्कृत नामों का श्रव्य-दृश्य उपादानों के माध्यम से परिचय
13. विभिन्न पक्षियों के संस्कृत नामों का श्रव्य-दृश्य उपादानों के माध्यम से परिचय
14. प्रतिदिन प्रयोग में आनेवाली वस्तुओं के संस्कृत नामों का संकलन
15. स्वर संधि तालिका का निर्माण
16. पाठ्यपुस्तक में दिये गये किसी कहानी का सारांश का छात्रों द्वारा वर्ग में कथन संस्कृत में।

कक्षा-VIII

1. 40 अव्ययपदों को अर्थबोध तथा उनसे संस्कृत वाक्य-निर्माण
2. विभिन्न पारिवारिक सम्बन्धवाची शब्दों का संकलन
3. विभिन्न फलों के संस्कृत नामों का वर्ग में परस्पर संवाद
4. विभिन्न पुष्पों के संस्कृत नामों का संकलन
5. विभिन्न खाद्यपदार्थों के संस्कृत नामों का श्रव्य-दृश्य उपादानों द्वारा परिवय
6. विभिन्न पोशाकों के संस्कृत नामों का श्रव्य-दृश्य उपादानों द्वारा परिचय
7. विभिन्न रंगों के संस्कृत नामों का श्रव्य-दृश्य उपादानों द्वारा परिचय
8. विभिन्न पशुओं के संस्कृत नामों का श्रव्य-दृश्य उपादानों द्वारा परिचय
9. विभिन्न पक्षियों के संस्कृत नामों का श्रव्य-दृश्य उपादानों द्वारा परिचय
10. पितृ, मातृ-शब्दरूप प्रथमा तथा षष्ठी में वाक्या प्रयोग द्वारा
11. अस्, स्था, पा धातु रूप लट् तथा लृट् में-धातुरूप (विधिलिङ्ग में)
12. व्यंजन तथा विसर्ग संधि तालिका का निर्माण

Scanned with CamScanner

13. स्तरान्त अधिगम क्षमता

कक्षा-VI-VIII

- संस्कृत पद्यांशों एवं गद्यांशों का सस्वर वाचन
- संस्कृत में पत्र-लेखन का सामान्य ज्ञान
- संस्कृत के सरल वाक्यों का निर्माण
- संख्यावाची संस्कृत शब्दों का ज्ञान
- संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण पदों की पहचान
- वर्णों के उच्चारण स्थान का ज्ञान
- संस्कृत के सरल वाक्यों को सुनकर समझना एवं तदनुरूप कार्य करना
- संधि के सामान्य नियमों का ज्ञान
- परिवेश की वस्तुओं और क्रियाओं का परस्पर संलाप तथा प्रश्नोत्तर विधि द्वारा ज्ञानवर्धन

14. संस्कृत शिक्षक से अपेक्षाएँ

- संस्कृत श्लोकों के सस्वर वाचन का ज्ञान
- बहुभाषिकता का ज्ञान
- दृश्य, श्रव्य, यान्त्रिक माध्यमों को उपयोग करने की क्षमता
- चित्र-कौशल का ज्ञान
- गेयता एवं अभिनेयता
- व्याकरण का ज्ञान
- संस्कृत-सम्भाषण में कुशलता

Scanned with CamScanner

15. संभावित प्रश्नपत्र की रूपरेखा (स्तरवार) लिखित परीक्षा

कक्षा–VI

इकाई परीक्षा

पूर्णांक-40 समय-1½घंटे

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

1. वर्णों का उच्चारण स्थान
2. शब्द रूप
3. धातुरूप
4. संधि
5. संधि विच्छेद

रचनात्मक कार्यम्

1. चित्रों को देखकर संस्कृत में वाक्य-निर्माण
2. वचन परिवर्त्तन
3. संख्यावाची शब्दों का संस्कृत में रूपान्तरण
4. संस्कृत शब्दों से वाक्य-निर्माण

पठित-अवबोधनम्

1. संस्कृत शब्दों का अर्थ लिखना
2. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति
3. शुद्ध/अशुद्ध कथन-निर्धारण
4. एक पद में उत्तर देना
5. पूर्ण वाक्य में उत्तर देना
6. समानार्थक शब्द का ज्ञान
7. विपरीतार्थक शब्द का ज्ञान
8. संख्यावाची शब्दों का आरोह/अवरोह क्रम में संयोजन

अपठित-अवबोधनम्

1. एक पद में उत्तर लिखना
2. एक पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखना
3. विभक्ति की पहचान
4. एक अव्यय पद का चयन

Scanned with CamScanner

कक्षा-VI-VII

पूर्णांक-100 समय-3 घंटे

अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

1. वर्णों का उच्चारण स्थान
2. शब्द रूप
3. धातुरूप
4. संधि
5. संधि विच्छेद

रचनात्मक कार्यम्

1. चित्रों को देखकर संस्कृत में वाक्य-निर्माण
2. वचन परिवर्त्तन
3. संख्यावाची शब्दों का संस्कृत में रूपान्तरण
4. संस्कृत शब्दों से वाक्य निर्माण

पठित-अवबोधनम्

1. संस्कृत शब्दों का अर्थ लिखना
2. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति
3. शुद्ध/अशुद्ध कथन-निर्धारण
4. एक पद में उत्तर देना
5. पूर्ण वाक्य में उत्तर देना
6. समानार्थक शब्द का ज्ञान
7. विपरीतार्थक शब्द का ज्ञान
8. संख्यावाची शब्दों का आरोह/अवरोह क्रम में संयोजन
9. घटनाक्रमानुसार वाक्यों का संयोजन

अपठित-अवबोधनम्

1. एक पद में उत्तर देना
2. एक पूर्ण वाक्य में उत्तर देना
3. विभक्ति की पहचान

Scanned with CamScanner

कक्षा-VIII

पूर्णांक-40 समय-1½घंटे

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

1. संधि/संयोग
2. संधि-विच्छेद
3. शब्दरूप
4. धातुरूप
5. सकारात्मक वाक्यों का नकारात्मक वाक्य में रूपान्तरण

रचनात्मक कार्यम्

1. चित्रों को देखकर संस्कृत में वाक्य-निर्माण
2. संस्कृत शब्दों से वाक्यों का निर्माण
3. अशुद्ध संस्कृत वाक्यों का संशोधन
4. प्राचार्य को दो दिनों के अवकाश हेतु आवेदन-पत्र
5. पिता को अपनी पढ़ाई के सम्बन्ध में जानकारी देने हेतु पत्र
6. संख्यावाची शब्दों का संस्कृत में रूपान्तरण

पठित-अवबोधनम्

1. संस्कृत शब्दों का अर्थ लिखना
2. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति
3. शुद्ध/अशुद्ध कथन-निर्धारण
4. एक पद में उत्तर देना
5. पूर्ण वाक्य में उत्तर देना
6. समानार्थक शब्द का ज्ञान
7. विपरीतार्थक शब्द का ज्ञान
8. संख्यावाची शब्दों का आरोह/अवरोह क्रम में संयोजन
9. घटना क्रमानुसार वाक्यों का संयोजन

अपठित-अवबोधनम्

1. एक पद में उत्तर लिखना
2. एक पूर्ण वाक्य में उत्तर लिखना
3. विभक्ति की पहचान

Scanned with CamScanner

कक्षा-VIII

पूर्णांक-100 समय-3 घंटे

अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

1. संधि/संयोग
2. संधि-विच्छेद
3. शब्दरूप
4. धातुरूप
5. सकारात्मक वाक्यों का नकारात्मक वाक्य में रूपान्तरण
6. नकारात्मक वाक्यों का सकारात्मक वाक्यों में रूपान्तरण

रचनात्मक कार्यम्

1. चित्रों को देखकर संस्कृत में वाक्य-निर्माण
2. संस्कृत शब्दों से वाक्यों का निर्माण
3. अशुद्ध संस्कृत वाक्यों का संशोधन
4. प्राचार्य के पास शुल्क माफी के लिए आवेदन-पत्र
5. माता को अपनी परीक्षा की सम्पन्नता की जानकारी देने हेतु पत्र
6. संख्यावाची शब्दों का संस्कृत में रूपान्तरण

पठित-अवबोधनम्

1. संस्कृत शब्दों का अर्थ लिखना
2. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति
3. शुद्ध/अशुद्ध कथन-निर्धारण
4. एक पद में उत्तर देना
5. पूर्ण वाक्य में उत्तर देना
6. समानार्थक शब्द का ज्ञान
7. विपरीतार्थक शब्द का ज्ञान
8. संख्यावाची शब्दों का आरोह/अवरोह क्रम में संयोजन

अपठित-अवबोधनम्

1. एक पद में उत्तर देना
2. एक पूर्ण वाक्य में उत्तर देना
3. विभक्ति की पहचान
4. शब्दों के लिंग की पहचान

Scanned with CamScanner

درجہ چھ سے آٹھ کے عربی نصاب کا تعارف

عربی زبان دنیا کی ان اہم ترین زبانوں میں سے ایک ہے جس کو بین الاقوامی سطح پر بولی اور سمجھی جانے والی دنیا کی دوسری سب سے بڑی زبان کا درجہ حاصل ہے۔ ہندوستان کے حوالہ سے اس زبان کی اہمیت یہ ہے کہ اہل ہند اس زبان سے اس وقت سے آشنا ہیں جب کہ عرب ہند تعلقات کی نوعیت محض تجارتی سطح کی تھی۔ لیکن جب اس زبان نے ہندوستان میں اپنا گھر بنا لیا تو تہذیب و ثقافت کے لین دین میں یہ ایک دوسرے سے اس قدر قریب ہوئی کہ علم و سائنس اور ادب و تہذیب کا ایسا گرانقدر سرمایہ وجود پذیر ہوا جس نے ہندوستان کو دنیا کی دوسری اقوام سے قریب کرنے کا بڑا اہم کارنامہ انجام دیا۔ مرور ایام کے ساتھ علم اور قدرتی سائنس کے ایسے ذخیرے عربی میں سمٹ آئے جس سے انسانی ترقی اور تہذیب و ثقافت کے انتشار میں بڑی مدد ملی۔ عربی زبان ہندوستان کی دوسری زبانوں کے ساتھ تقابل کے عمل سے گزر کر اس قدر وسیع اور ثمر آور ہوگئی کہ یہ زبان قومی یکجہتی اور تہذیبی ہم آہنگی کی علامت بن گئی۔

ہندوستان میں عربی زبان کی تدریس کو کئی جہتوں سے بہت اہمیت حاصل ہے۔ ایک تو یہ کہ خود ہندوستانی تہذیب کے ارتقائی مراحل کی تاریخ اس میں پوشیدہ ہے۔ طباعت و اشاعت کے اس جدید دور میں بھی عربی زبان میں علم و سائنس کے ایسے ذخیرے منظر عام پر آنے سے محروم ہیں جو سائنس، انجینئرنگ، میڈیسین اور دیگر علوم کے لیے بنیادی ماخذ کا درجہ رکھتی ہیں۔ ظاہر ہے اگر اس زبان کے پڑھنے والے نہ رہیں تو اس میں موجود علوم کے ذخیروں سے دنیا محروم رہ جائے گی جو بہر حال عالمی خسارہ کے مترادف ہوگا۔

معاصر زمانہ میں عربی زبان کا تعلق روزگار سے جڑ جانے کے بعد اس کی تدریس کی ضرورت مزید دوبالا ہوگئی ہے۔ ایک طرف جہاں ہندوستان کے تعلقات عرب ممالک کے ساتھ مسلسل ترقی پذیر ہیں اور تجارتی و دوسرے معاملات سے متعلق معاہدے دونوں ملکوں کو ایک دوسرے سے قریب تر کرتے جا رہے ہیں تو دوسری طرف ہندوستان سے خلیجی ممالک کی طرف روزگار کے لیے جانے والے افراد کی تعداد روز بروز بڑھتی جا رہی ہے۔ ایسی صورت میں عربی زبان کی تدریس کی اہمیت روز روشن کی طرح عیاں ہے۔ روزگار کے لیے خلیجی ممالک کا سفر نہ صرف ملک کے باشندگان کی معاشی حالت کو بہتر بناتا ہے بلکہ اس سے خود ملک کی معیشت بھی ترقی پذیر ہوتی ہے جو ملک کی ترقی اور خوشحالی کا ضامن ہے۔ دوسرے لفظوں میں یہ کہا جائے کہ عربی زبان کی تعلیم سے سیدھے ملک کی ترقی و خوش حالی وابستہ ہے۔

عربی زبان کی اسی خصوصیت اور اس کی تدریس کی ضرورت کو مدنظر رکھتے ہوئے حکومت بہار نے اس کو اپنے اسکولوں میں ابتدائی درجہ چھ سے متعارف کرانے کا مستحسن فیصلہ لیا ہے کیوں کہ اعلی درجات میں اس کی تعلیم کا نظم کالجوں اور یونیورسٹیوں میں پہلے سے موجود ہے۔ بہار میں ابتدائی درجہ سے اس کی شمولیت کا سب سے بڑا فائدہ یہ ہوگا کہ بچہ اعلیٰ درجہ تک پہنچتے پہنچتے اس زبان سے اس قدر آشنا ہو چکا ہوگا اور اس کی تفہیم کی اس قدر استعداد پیدا ہو چکی ہوگی کہ وہ از خود مسائل حل کرنے کی پوزیشن میں ہوں گے اور عربی میں لکھنے اور بولنے کا بھی بہت حد تک ملکہ حاصل ہو چکا ہوگا۔

ہندوستان ایک کثیر لسانی ملک ہے جس میں اردو کو گنگا۔ جمنی تہذیب کی علامت کہا جاتا ہے اور اردو زبان خود عربی، فارسی اور ہندوستان کی دوسری زبانوں کے حسین امتزاج کا نمونہ ہے۔ شروع سے عربی کی تدریس سے اردو کی لسانی خصوصیات جہاں نمایاں ہو کر سامنے آئیں گی وہیں بچے اردو زبان کی صحیح تفہیم اور اس کی درست خوانی پر عبور حاصل کرنے میں کامیاب ہوں گے۔ اس طرح عربی کی تعلیم و تدریس سے ہندوستان کی ایک بڑی زبان اردو کی تفہیم بھی متحقق ہوگی۔

Scanned with CamScanner

لہٰذا عربی کی تدریس درجہ چھ سے شروع کرنے کا فیصلہ حکومت بہار کا ایک تاریخی قدم ہے جس سے عربی کی ترویج و اشاعت کو نہ صرف پر پرواز ملیں گے بلکہ ملک میں تہذیبی رشتوں کو بھی استحکام نصیب ہوگا۔

عربی زبان کی کلاسیکی حیثیت کا اعتراف اور اس میں موجود علمی، سائنسی اور ادبی سرمایہ کی اہمیت کو تسلیم کرتے ہوئے حکومت بہار نے اسے اپنے اسکولوں میں چھٹے درجے سے شامل نصاب کرنے کا مستحسن قدم اٹھایا ہے۔ عربی زبان کی تدریس کے حوالے سے اس درجہ کو بالکل ابتدائی درجہ مانتے ہوئے اس میں عربی کے حروف تہجی کی شناخت اور اس کے حرکات سے واقفیت کو اولیت دی گئی ہے اور اس سلسلہ میں جدید طریقۂ تدریس کی روشنی میں تفہیم حروف کے لیے تصویروں کی مدد لی گئی ہے یعنی حروف تہجی الف تا یا میں سے ہر حرف کے سامنے اس حروف سے شروع ہونے والے پھل، سبزی یا دیگر عام فہم اشیا کی تصویر دی گئی ہے تا کہ بچہ تصویروں کی مدد سے حروف کو پہچان لے اس کے بعد بغیر تصویروں کے الف تا یا تمام حروف تہجی کی مشق کرائی گئی ہے تا کہ بچہ کو حروف تہجی ازبر ہو جائیں۔ اس کے ساتھ ساتھ حرکات (زبر، زیر، پیش، جزم، تشدید، تنوین) کی شناخت کا اہتمام کیا گیا ہے۔ بچوں کی عمر اور طبعی قوت اخذ کو ذہن میں رکھ کر چند عام فہم پھلوں، سبزیوں، پھولوں، سائنسی آلات اور اعضائے جسمانی کے اہم حصے وغیرہ تصویروں کے ساتھ دیئے گئے ہیں تا کہ بچے سمجھ کر آسانی سے یاد کر سکیں اور زبان کے تئیں ان کی رغبت میں اضافہ ہو۔ اسی درجہ میں حروف شناسی کے بعد اس کے لکھنے کی مشق بھی کرائی جائے گی۔ اس سلسلہ میں بچوں کو اتنی مشق کرائی جائے کہ دلچسپی برقرار رکھتے ہوئے وہ دو حرفی، سہ حرفی الفاظ لکھنے کے اہل ہو جائیں۔ اس کے ساتھ ہی اعداد شناسی پر بھی زور دیا جائے گا۔ اعداد شناسی اور ان کی تحریر ان بچوں کے لیے آسان ہوگی جو پہلے ہی اردو اعداد سے واقف ہو چکے ہوں گے اور اردو و عربی اعداد معمولی فرق کے علاوہ یکساں طور پر لکھے جاتے ہیں۔

ساتویں اور آٹھویں درجہ کے بچوں کی عمر اور ان کی طبیعت اور شعور کی بالیدگی کو مدنظر رکھتے ہوئے ابتدائی قواعد (نحو و صرف) کا اضافہ کیا گیا ہے۔ قواعد کے اضافہ میں اس بات کو ملحوظ خاطر رکھا گیا ہے کہ یہ طبیعت پر بوجھل نہ ہو بلکہ تفہیم اسباق میں معاون ثابت ہو۔ چھوٹے چھوٹے مکالمات کی مدد سے بچوں کے اندر عربی خوانی کا رُجحان پروان چڑھانے کی کوشش کی گئی ہے۔ عربی سے اردو اور اردو سے عربی میں چھوٹے چھوٹے جملوں کے ترجمہ کا اہتمام کیا گیا ہے تا کہ اس مرحلہ میں بچوں کے اندر چھوٹے چھوٹے جملے بنانے کی لیاقت پیدا ہو جائے، ساتھ ہی سبق آموز آسان کہانیوں کے اضافہ کے ساتھ دلچسپ نظموں سے بھی بچوں کو روشناس کرایا گیا ہے۔ اس مرحلہ میں بھی مناسب موقعوں پر تصویروں کا اہتمام کیا گیا ہے۔ ان درجات کی نصاب سازی میں اس بات کی کوشش کی گئی ہے کہ مسلسل مشق و تمرین کے ذریعہ بچوں کے اندر زبان کے حوالہ سے اتنی استعداد پیدا ہو جائے کہ وہ چھوٹے چھوٹے عربی جملوں کی تفہیم اور اسی طرح اردو کے چھوٹے چھوٹے جملوں کو عربی میں منتقل کرنے کے لائق ہو جائیں۔ اس سلسلہ میں ہر مرحلہ پر اس بات پر خاص توجہ دی گئی ہے کہ بچے زبان کے تئیں رغبت کا اظہار کریں، تنفر کی کیفیت پیدا نہ ہو۔ درجات کے بتدریج ارتقا کے ساتھ ساتھ ان درجات کے نصاب میں بھی تدریجی ارتقا کو ملحوظ رکھا گیا ہے۔

⊙⊙⊙

Scanned with CamScanner

چھٹی جماعت کے لیے عربی نصاب کا خاکا

(Class VI)

- ⊙ حروف تہجی کی شناخت تصویروں کی مدد سے
- ⊙ حرکات وسکنات کی شناخت
- ⊙ دوحرفی / سہ حرفی الفاظ لکھنے کی مشق

چھوٹے چھوٹے جملوں، فقروں اور تصاویر کی مدد سے حسب ذیل کا تعارف:

(۱) اسم اشارہ سے بنے جملے، با تصویر، اردو سے عربی، عربی سے اردو ترجمہ، خالی جگہوں کو بھرنا

(۲) جسم کے اعضاء مع تصویر

(۳) پیشہ وروں کا تصویروں کے ساتھ تعارف، مثلاً ٹیچر، ڈاکٹر، مصور، پائلٹ، ریل ڈرائیور، انجینئر وغیرہ

(۴) ضمائر سے متعلق جملے، اردو سے عربی ترجمے اور مشق

(۵) معرف باللام سے بنے الفاظ و جملے، اردو سے عربی ترجمے اور مشق

(۶) رنگوں کا تعارف

(۷) حروف استفہام

(۸) حروف جار سے متعلق الفاظ و جملے، اردو سے عربی ترجمے اور مشق

(۹) مرکب توصیفی

(۱۰) مرکب اضافی

(۱۱) اَیُ ، کل سے بنے جملے

(۱۲) اعداد

(۱۳) سائنسی ایجادات

(۱۴) دنوں کا تعارف

(۱۵) قصے

(۱۶) نظمیں

⊙⊙⊙

Scanned with CamScanner

ساتویں جماعت کے لیے عربی نصاب کا خاکا

(Class VII)

حسب ذیل کا تعارف:

(۱) اسلامی مہینے

(۲) عیسوی مہینے

(۳) واحد اور جمع مکسر و سالم سے جملے، اردو سے عربی ترجمے، مشقی سوالات۔

(۴) مضاف میں تانیث کی پہچان۔

(۵) فعل (ماضی) کی گردان اور جملے۔

(۶) فعل (مضارع) کی ساخت، گردان مع استعمال لا و لم، جملے۔

(۷) لن، لم، لما، س، سوف کا استعمال۔

(۸) مخلوط ماضی و مضارع سے بنے جملے۔

(۹) مستقبل قریب و بعید کی تعریف مع امثلہ و ماضی قریب و ماضی بعید کی تعریف مع امثلہ۔

(۱۰) فعل امر، فعل نہی۔

(۱۱) قصے

(۱۲) نظمیں

⊙⊙⊙

Scanned with CamScanner

آٹھویں جماعت کا نصابی خاکہ

(Class VIII)

(۱) افعال معتل
(۲) افعال ثلاثی مزید فیہ۔
(۳) افعال ناقصہ سے متعلق جملے، تعداد، مشقی سوالات۔
(۴) حروف مشبہ بالفعل
(۵) اسم فاعل
(۶) اسم مفعول
(۷) اسم تفضیل
(۸) افعال مقاربہ کے جملے، تعداد، مشقی سوالات۔
(۹) افعال مدح و ذم کے جملے، تعداد، مشقی سوالات۔
(۱۰) خبریہ، انشائیہ جملے۔
(۱۱) کلمات شرط و جزا
(۱۲) مضامین/ قصے
(۱۳) نظمیں
(۱۴) امثال و حکم

⊙⊙⊙

گھنٹیوں کی تقسیم (L-3)

(Class VI - VIII)

کُل تدریسی ایام (سالانہ)	180 دن (تقریباً 25 ہفتے)
فی ہفتہ گھنٹیوں کی تعداد	05
کُل گھنٹیاں (5×25)	125

Scanned with CamScanner

...ودوسری بڑی زبانوں کے عربی نصاب کا تعارف

عربی زبان دنیا کی ان اہم ترین زبانوں میں سے ایک ہے جس کو بین الاقوامی سطح پر بولی اور سمجھی جانے والی دنیا کی دوسری بڑی زبان کا درجہ حاصل ہے۔ ہندوستان کے حوالے سے اس زبان کی اہمیت یہ ہے کہ اہل ہند اس زبان سے اس وقت سے آشنا ہیں جب کہ عرب ہند تعلقات کی نوعیت محض تجارتی سطح کی تھی۔ لیکن جب اس زبان نے ہندوستان میں اپنا گھر بنایا تو تہذیب و ثقافت کے لین دین میں یہ ایک دوسرے سے اس قدر قریب ہوئی کہ علم و سائنس اور ادب و تہذیب کا ایسا گرانقدر سرمایہ وجود پذیر ہوا جس نے ہندوستان کو دنیا کی دوسری اقوام سے قریب کرنے کا بڑا اہم کارنامہ انجام دیا۔ مرور ایام کے ساتھ علم اور خصوصاً سائنس کے ایسے ذخیرے عربی میں سمٹ آئے جس سے انسانی ترقی اور تہذیب و ثقافت کے استحکام میں بڑی مدد ملی۔ عربی زبان ہندوستان کی دوسری زبانوں کے ساتھ تفاعل کے عمل سے گزر کر اس قدر وسیع اور پُر اثر ہو گئی کہ یہ زبان قومی یکجہتی اور تہذیبی ہم آہنگی کی علامت بن گئی۔

ہندوستان میں عربی زبان کی تدریس کو کئی جہتوں سے بہت اہمیت حاصل ہے۔ ایک تو یہ کہ خود ہندوستانی تہذیب کے ارتقائی عمل کی تاریخ اس میں پوشیدہ ہے۔ طباعت و اشاعت کے اس جدید دور میں بھی عربی زبان میں علم و سائنس کے ایسے ذخیرے منظر عام پر آنے سے محروم ہیں جو سائنس، انجینئرنگ، میڈیسن اور دیگر علوم کے لیے بنیادی ماخذ کا درجہ رکھتی ہیں۔ ظاہر ہے اگر اس زبان سے پڑھنے والے نہ رہیں تو اس میں موجود علوم کے ذخیروں سے دنیا محروم رہ جائے گی جو بہر حال عالمی خسارہ کے مترادف ہوگا۔

معاصر زمانہ میں عربی زبان کا تعلق روزگار سے جڑ جانے کے بعد اس کی تدریس کی ضرورت مزید دوبالا ہو گئی ہے۔ ایک طرف جہاں ہندوستان کے تعلقات عرب ممالک کے ساتھ مسلسل ترقی پذیر ہیں اور تجارتی و دوسرے معاملات سے متعلق معاہدے دونوں ملکوں کو ایک دوسرے سے قریب تر کرتے جا رہے ہیں تو دوسری طرف ہندوستان سے خلیجی ممالک کی طرف روزگار کے لیے جانے والے افراد کی تعداد روز بروز بڑھتی جا رہی ہے۔ ایسی صورت میں عربی زبان کی تدریس کی اہمیت روز روشن کی طرح عیاں ہے۔ روزگار کے لیے خلیجی ممالک کا سفر نہ صرف ملک کے باشندگان کی معاشی حالت کو بہتر بناتا ہے بلکہ اس سے خود ملک کی معیشت بھی ترقی پذیر ہوتی ہے اور اس کی ترقی اور خوشحالی کا ضامن ہے۔ دوسرے لفظوں میں یہ کہا جائے کہ عربی زبان کی تعلیم سے سیدھے ملک کی ترقی و خوش حالی وابستہ ہے۔

عربی زبان کی اسی خصوصیت اور اس کی تدریس کی ضرورت کو مدنظر رکھتے ہوئے حکومت بہار نے اس کو اپنے اسکولوں میں ابتدائی درجہ سے متعارف کرانے کا مستحسن فیصلہ لیا ہے کیوں کہ اعلیٰ درجات میں اس کی تعلیم کا نظم کالجوں اور یونیورسٹیوں میں پہلے سے موجود ہے۔ بہار میں ابتدائی درجہ سے اس کی شمولیت کا سب سے بڑا فائدہ یہ ہوگا کہ بچہ اعلیٰ درجہ تک پہنچتے پہنچتے اس زبان سے اس قدر آشنا ہو چکا ہوگا اور اس کی تفہیم کی اس قدر استعداد پیدا ہو چکی ہوگی کہ وہ از خود مسائل حل کرنے کی پوزیشن میں ہوں گے اور عربی میں لکھنے اور بولنے کا بھی بہت حد تک ملکہ حاصل ہو چکا ہوگا۔

ہندوستان ایک کثیر لسانی ملک ہے جس میں اردو کو گنگا۔ جمنی تہذیب کی علامت کہا جاتا ہے اور اردو زبان خود عربی، فارسی اور ہندوستان کی دوسری زبانوں کے حسین امتزاج کا نمونہ ہے۔ شروع سے عربی کی تدریس سے اردو کی لسانی خصوصیات جہاں نمایاں ہو کر سامنے آئیں گی وہیں بچے اردو زبان کی صحیح تفہیم اور اس کی درست خواندگی پر عبور حاصل کرنے میں کامیاب ہوں گے۔ اس طرح عربی کی تعلیم و تدریس سے ہندوستان کی ایک بڑی زبان اردو کی تفہیم بھی متعلق ہوگی۔

Scanned with CamScanner

لہٰذا عربی کی تدریس درجہ چھ سے شروع کرنے کا فیصلہ حکومت بہار کا ایک تاریخی قدم ہے جس سے عربی کی ترویج واشاعت کو نہ صرف پر پرواز ملیں گے بلکہ ملک میں تہذیبی رشتوں کو بھی استحکام نصیب ہوگا۔

درجہ چھ تا درجہ آٹھ عربی کتب کی تدریس کے بعد اب امید کی جاتی ہے کہ طلبہ کو کافی رغبت بڑھ چکی ہوگی اور ان کا شعور اگلے مراحل کو بآسانی طے کرنے پر آمادہ ہو چکا ہوگا۔ اس کے پیش نظر درجہ نویں اور دسویں کے طلبہ کے لیے ایسا نصاب مرتب کرنے کی کوشش کی گئی ہے جس کے ذریعہ وہ ہلکے پھلکے مضامین اور چھوٹی چھوٹی خبریں بآسانی پڑھ سکیں اور ان کا مفہوم اخذ کر سکیں اور اس غرض سے چند قواعد کو ملحوظ رکھتے ہوئے مکالمے، قصص، مضامین اور نظمیں نصاب میں شامل کی ہیں تاکہ ان کی مدد سے کما حقہ عربی زبان وادب سے آشنائی ہو سکے اور ملک و بیرون ملک کے حالات کا جائزہ لیا جا سکے، قصص ومضامین کے ذریعہ عربی لکھنے، بولنے اور سمجھنے سے جو طالب علم کتراتے ہیں یا اس زبان سے متعلق سماج میں پھیلی ہوئی اس غلط فہمی کا کہ عربی نہایت دشوار زبان ہے، ازالہ ہو سکے۔ چنانچہ ہم نے افعال کی اقسام اور معرب ومبنی کے جملے، منصرف وغیر منصرف پر مشتمل جملے نیز مفعول کی قسمیں جس کی ضرورت ہمیشہ طلبہ کو پڑتی ہے، بھی شامل کی ہیں۔ اسی طرح محاورے، مکالمے، مضامین کو بھی ان درجوں میں خاص طور پر شامل کیا گیا ہے تاکہ بات چیت میں کسی دشواری کا سامنا نہ کرنا پڑے اور وہ اپنا مافی الضمیر بلا تکلف ادا کر سکیں۔

مذکورہ باتوں کو پیش نظر رکھتے ہوئے یہ بات کہی جا سکتی ہے کہ اگر استاذ اپنے شاگردوں کی صحیح رہنمائی کریں تو طالب علم عربی زبان وادب سے نہ صرف واقف ہوگا بلکہ اس کی مدد سے آگے کے مراحل کو بحسن وخوبی انجام دے سکے گا۔

⊙⊙⊙

Scanned with CamScanner

نویں جماعت کے عربی نصاب کا خاکا

(Class IX)

(۱) معرب مبنی کا بیان مع امثلہ
(۲) منصرف، غیر منصرف کی شناخت مع امثلہ
(۳) نون ثقیلہ ونون خفیفہ کی گردان مع امثلہ
(۴) مفعول کی قسمیں مع امثلہ
(۵) عربی سے اردو/ اردو/ انگریزی/ ہندی میں ترجمہ
(۶) اردو/ انگریزی/ ہندی سے عربی میں ترجمہ
(۷) مضمون نویسی
(۸) خطوط نگاری

حسب ذیل مضامین:

(۹) من ادب القرآن
(۱۰) من ضوء الحديث
(۱۱) من سيرة النبى ﷺ
(۱۲) الامثال والحكم
(۱۳) حيلة الشيطان
(۱۴) فضيلة الشغل
(۱۵) فصول السنة
(۱۶) الشرطى
(۱۷) من يضع الحجر
(۱۸) من جد وجد
(۱۹) الحواريين الاستاذ والتلاميذ

حسب ذیل نظمیں:

(۲۰) غرور الدنيا
(۲۱) وصف القلم
(۲۲) نشيد الوطن
(۲۳) ادب المعاشره

⊙⊙⊙

Scanned with CamScanner

دسویں جماعت کے عربی نصاب کا خاکا

(Class X) .

(۱) معرفہ و نکرہ، معرفہ کی قسمیں۔
(۲) حروف ناصبہ، حروف جازمہ کے اقسام مع امثلہ، مشقی سوالات۔
(۳) رباعی مجرد و مزید فیہ مع امثلہ۔
(۴) عربی سے اردو / انگریزی / ہندی میں ترجمہ
(۵) اردو / انگریزی / ہندی سے عربی میں ترجمہ
(۶) خطوط نگاری
(۷) مضمون نویسی

حسب ذیل مضامین:

(۸) من ادب القرآن
(۹) من ضوء الحدیث
(۱۰) تزویج النبی ﷺ خدیجة بنت خویلد
(۱۱) اسلام حمزة بن عبد المطلب عم النبی ﷺ
(۱۲) مولانا ولایت علی الصادقفوری
(۱۳) الامثال والحکم
(۱۴) الکلب الحنون
(۱۵) حمار و ثور
(۱۶) السماء
(۱۷) الانبج
(۱۸) الطبع والادب
(۱۹) من یمنعک منی؟
(۲۰) بلادی
(۲۱) مجلد الکتب

حسب ذیل نظمیں:

(۲۲) العلم والجاہ
(۲۳) ما فی الدنیا
(۲۴) نصیحة غالیة

⊙⊙⊙

گھنٹیوں کی تقسیم (L-3)

(Class IX - X)

کل تدریسی ایام (سالانہ)	180 دن (تقریباً 25 ہفتے)
فی ہفتہ گھنٹیوں کی تعداد	05
کل گھنٹیاں (5 × 25)	125

Scanned with CamScanner

تمہید

درجہ چھ سے دس تک عربی کو ایک مضمون کی حیثیت سے پڑھنے کے بعد یہ اُمید کی جاتی ہے کہ طلبہ عربیٔ زبان سے اس قدر واقف ہو چکے ہوں گے اور اس کے تئیں اتنی رغبت پیدا ہو چکی ہو گی کہ طلبہ اگلے مرحلے میں عربی پڑھنے کی طرف مائل ہوں گے۔ چنانچہ بارھویں درجہ کے لیے جو عربی کا نصابی خاکا تیار کیا گیا ہے اس میں اس بات کا خاص خیال رکھا گیا ہے کہ گزشتہ اسباق سے ارتباط رکھتے ہوئے اس درجہ کے نصابی معیار کو قدرے بلند کیا گیا ہے۔ اسباق کے انتخاب میں یہ بات بھی ملحوظ رہی ہے کہ اس سطح پر زبان وادب کے تئیں طلبہ کی صلاحیت اس لائق ہو جائے کہ اس کے بعد وہ جس سمت رُخ کرنا چاہیں پورے اعتماد کے ساتھ کر سکیں۔ جیسا کہ معلوم ہے عربی زبان کی تدریس کی معنویت عصر حاضر میں مزید بڑھ گئی ہے کیوں کہ تجارتی اور سیاسی سطح پر ہندستان کے روابط عرب ممالک سے تیزی سے ترقی پذیر ہیں ایسے میں خلیجی ممالک میں روزگار کے مواقع بھی بڑھ گئے ہیں۔ بارھویں درجہ تک طلبہ عربی پڑھنا چاہیں تو صرف زبان میں مہارت پیدا کر کے اپنے لیے روزگار کے مواقع میں توسیع کر سکتے ہیں اور جن کو ادب سے دلچسپی بڑھتی ہے وہ اپنی راہ اس طرف آسانی سے اختیار کر سکتے ہیں۔

بارھویں درجہ میں عربی زبان وادب کی تاریخ سے بچوں کو اس حد تک روشناس کرایا گیا ہے کہ وہ اس زبان کی نشو ونما اور ترقی کے تدریجی مراحل سے واقف ہو کر یہ جان سکیں کہ اس زبان کو عالمی سطح پر اپنی شناخت قائم کرنے میں کن مراحل سے گزرنا پڑا ہے اور آج یہ کس مقام پر کھڑی ہے۔ اسی طرح قواعد کے حصے میں وہ تمام ضروری باتیں ہیں جو طلبہ کو اگلے مرحلے میں قدم رکھنے کے لیے معاون ہوں۔ معانی و بیان کے بنیادی مصطلحات کو بیان کرتے ہوئے عربی سے اردو اور اردو سے عربی ترجمہ نگاری پر بھی خصوصی توجہ دی گئی ہے۔ اسی طرح قصے، کہانیاں اور مکالمے کی مدد سے طلبہ کے اندر اندازِ گفتگو کو پروان چڑھانے کی کوشش کی گئی ہے۔

مذکورہ باتوں کو مدنظر رکھتے ہوئے یہ اُمید کی جاتی ہے کہ طلبہ اپنے اساتذہ کی نگرانی میں عربی زبان وادب سے اپنا رشتہ جوڑ کر مستقبل کو تابناک بنانے کی کوشش کریں گے جو عربی زبان کے فروغ کا بھی سبب ہوگا۔

⊙⊙⊙

Scanned with CamScanner

نصاب برائے درجہ ششم، ہفتم اور ہشتم (فارسی)

Syllabus of Persian for Classes VI, VII & VIII

مقاصد اور اہمیت

ہندوستان کو فارسی کا وطن ثانی کہا جائے تو بے جا نہ ہوگا۔ اس ملک میں اس زبان و ادب کی تاریخ قدیم بھی ہے اور قوی بھی۔ یہ زبان ایک طویل مدت تک ہندوستان جیسے لسان کی سرکاری زبان رہ چکی ہے اور بہ انداز خاص سنسکرت اور اوستا کے خواہرانہ رشتے کی یاد دلاتی رہی ہے۔ پھر زمانہ بدلا اور فارسی کی تداولی حیثیت میں فرق آیا لیکن یہ حقیقت ہے کہ وہ اردو کے رشتے سے آج بھی اپنے اثرات اور اپنی اہمیت و ضرورت کا ہمیں بہ ہر وجوہ احساس دلا رہی ہے۔ خصوصاً ہندوستان کی ان ریاستوں کے لیے جہاں آج اردو کو دوسری سرکاری زبان کا درجہ حاصل ہے، فارسی کی عصری و تعلیمی اہمیت محتاج بیان نہیں کیوں کہ یہ اردو کی معنویت کو دوبالا کرنے کا ایک بہترین ذریعہ ہے۔ اگر ہم (بہ شکل اردو) کسی ریاست کی ثانوی سرکاری زبان کو مضبوط و مستحکم اور مفید و کارآمد بنائے رکھنا چاہتے ہیں تو ہمیں فارسی کی تعلیم کے انتظام و انصرام پر توجہ دیے بغیر کوئی چارۂ کار نہیں۔

صرف اردو ہی کیا، حقیقت تو یہ ہے کہ جس طرح ہندوستان کی کشمیر جیسی ریاست کی زبان، ایرانی پراکرت سے اپنا رشتہ رکھتی ہے اور جس طرح اس ملک کی دیگر بڑی بڑی علاقائی اور ریاستی زبانوں پر فارسی کے نقوش و اثرات مرتب ہوئے ہیں، انھیں دیکھتے ہوئے کہا جا سکتا ہے کہ آریائی لسانیاتی رشتہ سے فارسی کی تعلیم پر توجہ، گویا ہندوستان کی مختلف علاقائی اور ریاستی زبانوں کے لسانیاتی و لفظیاتی استحکام پر توجہ کے مترادف ہے۔ اردو اور ہندی اگر سگی بہنیں ہیں اور اردو کے لیے فارسی کی اہمیت و ضرورت طے شدہ ہے تو پھر یہ کہنا کیوں کر مبالغہ ہو سکتا ہے کہ فارسی کی تعلیم سے ہندی شبد کوش کو فائدہ پہنچنا خارج از امکان نہیں ہے۔ لسانیات کی تاریخ گواہ ہے کہ فارسی نے ہندوستان کو بہت ساری بھلائی ہوئی آریائی آوازیں یاد دلائی ہیں اور انھیں ہمیشہ کے لیے ذہنوں میں محفوظ کر دیا ہے۔ مزید یہ کہ نسل در نسل ملک کی بہت بڑی آبادی کو بہ ایں لحاظ اس قوت میں اضافہ سے نوازا ہے جسے طلاقتِ لسانی کہتے ہیں، بول چال میں تلفظ کی درستگی، حسن ادا اور لب و لہجے میں کرختگی کے بجائے نرمی و شیرینی اور صفائی و نفاست کے لیے فارسی کی اہمیت اور اس کا اثر واضح ہے۔ یہ شیریں زبان ہے، تو بے شک یہ دلوں کو جیت لینا بھی جانتی ہے۔

فارسی کا ہندوستان سے رشتہ نہ تو معمولی ہے اور نہ ہی کسی اعتبار سے کم اثر اور کم فائدہ بخش۔ بات ہندوستان میں تعلیم یا ذریعۂ تعلیم بننے والی زبان کی ہو یا اخلاقیات و عرفانیات کے توسط سے قومی یکجہتی کے مضبوط و سدا بہار عناصر کو فروغ دینے کی، بہر حال فارسی کے تاریخی و تہذیبی اثرات مسلّم ہیں۔ ہندوستان، ایران کے بعد فارسی کا دوسرا بڑا گہوارہ رہا ہے۔ یہاں تک کہ اگر فارسی کی تاریخ سے دور ہندوی کے اکتسابات ہٹا دیے جائیں تو فارسی کے ادبی و علمی رنگ روپ کا پھیکا پڑ جانا لازمی ہے۔ ہندوستان کے لیے بھی فارسی کی گوناگوں اہمیت ہر دور میں رہی ہے۔ ایک زمانہ تھا کہ دکن کے مقابلے میں شمالی ہند کے تہذیبی افتخارات اسی زبان و ادب کی بہ دولت نمایاں رہے اور آج بھی کسی نہ کسی طرح تاریخی تداول کے یہ اثرات غیر محسوساتی نہیں۔ فارسی کے صرف ایک کلاسیکی زبان یا تاریخی تبرک ہونے کا تصور غلط بھی ہے، خطرناک اور نقصان دہ بھی کیوں کہ ہندوستان میں چاہے اس کے ماضی کی طرح آج اس کا حال شاندار نہ ہو، لیکن مشرق

Scanned with CamScanner

وسطیٰ میں عربی کے بعد سب سے زیادہ اہمیت رکھنے والی زبان ہے۔

لہٰذا ثقافتی و سیاسی روابط اور ملک و بیرون ملک کے مخطوطات اور تہذیبی آثار و کتبات سے استفادہ کے لیے اس زبان کی عصری ضرورت و اہمیت سے انکار کا سوال ہی نہیں۔ بیشتر ملکوں سے صحافتی و سفارتی اور ثقافتی تعلقات کی بحالی و تازہ کاری میں اس زبان سے کافی مدد کا حصول ممکن ہے۔

اندرونِ ملک معاملات پر نظر ڈالیں تو فارسی کی اہمیت یہ ہے کہ آرکائیوز، دستاویز، عدالتی کاغذات، اہم فرامین اور مختلف نوعیت کے ریکارڈ کو پڑھنے، سمجھنے اور مختلف نوعیت کی علمی و ادبی تحقیقات کا سلسلہ جاری رکھنے کے لیے فارسی کی ضرورت و اہمیت روشن ہے۔ اس زبان کی مدد سے نہ صرف یہ کہ فرانسیسی جیسی بعض اہم مغربی زبان سے، بشرطِ خواہش ہم قریب ہو سکتے ہیں بلکہ مشرق وسطیٰ کے بیشتر ممالک میں پہنچ سکتے اور روزگار کے مواقع کی فراہمی کو آسان بنا سکتے ہیں۔ ریڈیو، ٹی وی وغیرہ کے بیرونی پروگراموں اور بعض غیر ملکی تجارتی روابط و خطوط کے لیے اس زبان سے آشنائی عصری ضرورت و اہمیت کی حامل ہے۔ بہت سارے ایسے ثقافتی فنون اور ہندستان کے مسلم ہی نہیں غیر مسلم فن کاروں کی مختلف علوم و فنون میں ایسی بہت ساری یادگاریں موجود ہیں، جن کی مغربی ممالک میں بڑی قدر ہے اور ان کی تفہیم، فارسی کے بغیر ممکن نہیں۔ آج کی دنیا امن و سکون کی تلاش میں ہے۔ یہ موجودہ تہذیب کی عالمگیر ضرورت بھی ہے۔ فارسی کا اخلاقیاتی ذخیرۂ ادب اس لحاظ سے موجودہ دور میں بڑی اہمیت رکھتا ہے۔ ایک تعلیمی مضمون کی حیثیت سے فارسی نہ صرف مرکزی بلکہ صوبائی سطح کے مقابلہ جاتی امتحانات میں شرکت کرنے والے طلبہ کے لیے بھی، ان کی کامیابیوں کو روشن بناتی رہی ہے۔

غرض کہ متعدد عصری فوائد اور عصری ضرورتیں فارسی کی ارزش اور قدر و قیمت کا احساس دلاتی ہیں۔ ان ہی معنویتوں کے پیش نظر فارسی نصاب کا یہ خاکہ ماہرین کے مخلصانہ تعاون سے مرتب کیا گیا ہے۔

وضاحت

درجہ ششم کا نصاب چھوٹے چھوٹے ''فقروں اور جملوں'' پر مشتمل رکھا گیا ہے تاکہ ان کی مدد سے طلبا کو ایسی مثالیں مل جائیں جو قواعدی لحاظ سے ان کے لیے مفید ہوں، انھیں درست اور متنوع فارسی جملوں کے توسط سے، ترجمہ کا ایک ماحول دے سکیں اور ان کے ذخیرۂ الفاظ، قواعدی شعور اور ان کی دل چسپیوں میں اضافہ کا باعث ہوں۔ مذکورہ درجہ کی تعلیم مکمل کرتے ہوئے وہ اس منزل تک آجائیں کہ اگر کسی موضوع پر، مختلف قواعدی نوعیت کے چند جملے انھیں پڑھنے کو ملیں تو انھیں اجنبی نہ لگیں اور ہلکے پھلکے دائرے میں ترجمہ بھی کرنے لگیں۔

درجہ ششم کے مقابلے میں درجہ ہفتم کا نصاب ''طویل جملوں'' پر محتوی ہے اور یہاں اس بات پر توجہ دی گئی ہے کہ زبان کے نظام فعل'' کی حیثیت سے قواعدی نوعیت کے جملے بچوں کے سامنے آئیں۔ یہ جملے قدرے طویل ہوں تاکہ بچوں کے ذخیرۂ الفاظ میں بھی اضافہ ہوتا رہے۔ انھیں طرح طرح کے جملے پڑھنے کے مواقع ملتے رہیں جو ان کے لیے نفسیاتی لحاظ سے خاص قواعدی ماحول بھی فراہم کردیں۔ اس طرح وہ ان تمام اسما و افعال پر مشتمل، مختلف النوع جملے پڑھ لیں جن کا تعلق مصدر کے مادۂ ماضی سے ہوتا ہے۔ ساتھ ہی ساتھ ترجمہ کے باب میں بھی ان کی دل چسپی ماند نہ ہو۔

مذکورہ درجات سے آگے بڑھتے ہوئے، درجہ ہشتم کا نصاب اگر ایک طرف اقتباسات اور پیراگراف کی شکل میں ہے تو دوسری طرف یہاں قواعدی لحاظ سے، ایسے جملے، عبارتیں اور اقتباسات لائے گئے ہیں جو ''مادۂ مضارع سے تعلق رکھنے والے اسما و افعال پر محتوی ہیں۔ ساتھ ہی ساتھ اس درجہ کے نصاب میں محاوروں اور کہاوتوں کو بھی نظر انداز نہیں کیا گیا ہے۔ یہاں جملے کی مختلف اقسام سے رشتہ مند کرانے کی کوشش کی گئی ہے کہ فارسی میں حکایات اور مضامین کے نمونے دیے گئے ہیں۔ اس طرح بچوں کے مبلغ علم کو اس مقام تک لانے کی کوشش کی گئی ہے کہ فارسی میں حکایات اور مضامین کے نمونے سامنے آئیں تو انھیں اجنبی نہ رہیں اور ترجمے کا کام بھی انھیں غیر دل چسپ نہ معلوم ہو۔ اس طرح ہمارا یہ نصابی سلسلہ ایک خاص ترتیب و کیفیت کے

Scanned with CamScanner

ساتھ، بچوں کو فارسی صرف ونحو کی مختلف شاخوں اور مشکلوں سے تعلق رکھنے والے جملوں سے آشنا کرنے کی مخلصانہ سعی ہے۔ ترتیب نصاب کے اصل مقصد کو ثمر آور بنانے کے لیے، تمام اسباق کے ساتھ ایسے مشقیہ سوالات مہیا کیے گئے ہیں جو فارسی کے طلبا کو ہمہ جہت تعلیمی شعور اور دل چسپی کی دولت مہیا کر سکیں۔ ان میں پڑھنے کے ساتھ ساتھ باتوں کو سمجھنے، انھیں لکھنے اور دوسری زبان سے اپنی زبان میں ڈھالنے یا اس کے برعکس تحریری محنت کا ذوق وشوق پیدا کر سکے۔ ان میں اپنے آپ پر اعتماد ہو اپنے کام میں دل چسپی نظر آنے لگے، اور وہ نئی معلومات سے آشنا ہونے کا نفسیاتی لطف پاتے رہیں مگر کہنے کی ضرورت نہیں کہ یہ نصابی سلسلہ اگر ہماری محنتوں کا کوئی قابل لحاظ اور مقصدی سرمایہ بن سکتا ہے تو اسی شرط کے ساتھ کہ ہمارے اساتذہ کرام کی بالغ نظری، ان کی تدریسی توجہ اور ان کے تدریسی تجربات سے محروم نہ ہو۔



Scanned with CamScanner

ایسی تراکیب، فقرے اور چھوٹے چھوٹے جملے پر مشتمل اسباق، جن سے درج ذیل کی نمایندگی ہو سکے۔

- اسم معرفہ
- اسم اشارہ
- مصدر و اسم مصدر
- حروف جار
- کلمات صفات
- واحد جمع
- مذکر مونث
- اضداد
- ہم صوت الفاظ
- مترادفات
- اضافت، مکرر اضافت
- مرکبات (اشارہ، صفت، جار)
- افعال ناقصہ
- فعل لازم و متعدی
- فعل معروف و مجہول
- ضمیر منفصل
- ضمیر متصل
- ضمیر مشترک
- ''ی'' کا استعمال
- اعداد کا استعمال
- روزہای ہفتہ

ت: غیر اردو داں طلبہ و طالبات کے لیے کتاب کے آخر میں ضمیمہ کے طور پر دو ایسے سبق دیے جائیں، جن کا تعلق ابتدائی علم ہجا سے ہو۔ یہ سبق اس طرح تیار کیے جائیں کہ طالب علم املا نویسی سے واقف ہو جائیں۔

⊙⊙⊙

Scanned with CamScanner

ایسے طویل جملے اور آسان اقتباسات پر مشتمل اسباق، جن سے درج ذیل کی نمایندگی ہو سکے۔

- ماضی مطلق معروف
- ماضی مطلق مجہول
- ماضی قریب معروف
- ماضی قریب مجہول
- ماضی بعید معروف
- ماضی بعید مجہول
- ماضی ناتمام معروف
- ماضی ناتمام مجہول
- ماضی شکیہ معروف
- ماضی شکیہ مجہول
- ماضی شرطیہ معروف
- ماضی شرطیہ مجہول
- مستقبل معروف
- مستقبل مجہول
- اسمِ مفعول
- اسمِ مصدر
- فعلِ اخباری
- فعلِ التزامی
- اثباتی فعل
- منفی فعل
- ماہ ہای قمری و ماہ ہای شمسی ایرانی
- ترجمتین (فارسی سے اُردو، اُردو سے فارسی، برائے مشق)

⊙⊙⊙

Scanned with CamScanner

درجہ ہشتم
(CLASS-VIII)

ایسی عبارتیں اور ایسے پیراگراف جن پر مشتمل اسباق سے درج ذیل کی نمایندگی ہو سکے:

- مضارع معروف
- مضارع مجہول
- حال معروف
- حال مجہول
- امر
- نہی
- اسم فاعل
- اسم مفعول اختراعی
- طریق تعدیہ
- پیشوندی مصادر
- مرکب مصادر
- افعال مرتبہ
- محاورات
- ضرب الامثال
- خبریہ جملے
- انشائیہ جملے
- شرطیہ جملے
- استفہامی جملے
- تشبیہ والے جملے
- حکایات
- مضامین
- ترجمہ (فارسی سے اُردو، اُردو سے فارسی، بمائے مشق)

⊙⊙⊙

گھنٹیوں کی تقسیم (L-3)

(Class VI - VIII)

کل تدریسی ایام (سالانہ)	180 دن (تقریباً 25 ہفتے)
فی ہفتہ گھنٹیوں کی تعداد	05
کل گھنٹیاں (5×25)	125

Scanned with CamScanner

पाठ्यक्रम – VI–VIII

1. भाषा

भोजपुरी

1. प्रस्तावना

भाषा एगो अइसन साधन बा जवना के माध्यम से आदमी अपना मन के पीड़ा, हर्ष–विषाद के अभिव्यक्ति एक दोसरा से करेला। सब तरह के ज्ञान–विज्ञान के प्रचार–प्रसार में भाषा के भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण होला। भोजपुरी के बारे में कहल जाला कि ई वीर लोगन के भाषा ह। भाषा के माध्यम से आदमी एक दोसरा से संपर्क स्थापित करेला, अपना भावन के आदान–प्रदान करेला आ एकरे माध्यम से हर चीज के चाहे ऊ साहित्य होखो, इतिहास होखो भा भूगोल होखो समझे के कोशिश करेला। अपना भीतर के संवेदना के संप्रेषण करेला आ इहे एक दोसरा से जोड़े के कोशिश करेला। एह से अपना मातृभाषा में शिक्षण के व्यवस्था कइल बहुत जरूरी बा ताकि एकरा के व्यवसायिका भाषा बनावल जा सके।

भोजपुरी भारत के कइ राज्यन के बड़हन भू–भाग में बसल लोगन के मातृभाषा ह। एकरा अलावे कईगो अइसन राज्यन के राजधानी में भोजपुरी भाषियन के संख्या करोड़न में बा। विदेशन में बसन कई गो अइसन देश बा जहवाँ भोजपुरी बोलल जाला आ ओहीजा ओकरा के मातृभाषा के रूप में मान्यता मिलल बा। नेपाल के सात जिला आ मॉरिशस, फिजी, हालैण्ड, गुआन अइसन कई गो देस बा जहाँ भोजपुरिया लोग अपना काबिलियत के बूता प आपन झंडा गड़ले बा। भोजपुरी भाषा के गौरवशाली इतिहास बा। एकरा पद्य साहित्य के लिखित साहित्य त छठ्ठी–सातवीं शताब्दी से मिले लागेला जबकि एकर गद्य के भंडार लोककथा आ लोकगाथा के रूप में सुरक्षित बा। ओह साहित्य के अध्ययन से ओह समय के सामाजिक शैक्षिक, आर्थिक स्थितियन के पता चलेला। आज भोजपुरी के प्रभाव एतना फइल रहल बा कि ई प्रिंट मिडिया से लगायत श्रव्य आ दृश्य माध्यमों से आपन पैर जमा रहल बा आ ई एकरा लोकप्रियता के आ ओकरा संप्रेषण क्षमता के इजहार करत बा। एकरा के अउर समर्थ बनावे खातिर एकरा के जीवन के विभिन्न क्षेत्र, ज्ञान–विज्ञान, न्यायिक जीवन आ रोजगार से जोड़े खातिर शिक्षा–संस्कृति, कला–शिल्प, व्यापार आदि माध्यम में एकर समावेश जरूरी बा। आ इ काम पठन–पाठन के माध्यम से ही संभव बा। साहित्य के माध्यम से भोजपुरी शब्दन, कहाउतन, मुहावरन के संरक्षण आ संवर्द्धन के कामो कइल बड़ा महत्त्वपूर्ण होई। आ एकनी के संरक्षण से राष्ट्रभाषा के बल मिली। शिक्षार्थी

2. ज्ञान–विस्तार

स्कूली शिक्षा के समय ई ध्यान रखल बहुत जरूरी बा कि शिक्षार्थी आपन शिक्षा पूरा करत–करत अपना भीतर भाषा आ साहित्य के विषय में अतना समझदारी पैदा कर लेव कि कवनो गद्य भा पद्य रचना के विश्लेषण करत खा ऊ आपना स्वतंत्र राय आत्मविश्वास के साथ व्यक्त कर सके। आ पाठ्यक्रम से बाहरो के रचना पढ़ के ओकरा बारे में आपन संवेदनात्मक आ बौद्धिक प्रतिक्रिया दे सके। लइकन के

Scanned with CamScanner

भोजपुरी भाषा के विशेषता, बारीकी आ सौंदर्य क पहचान सके ओकरा के हिगरा सके। भाषा के माध्यम से लइका अपना अगल–बगल के दुनिया के यथार्थ के समझ सके आ कल्पना के संसार के रचना क सके। भाषा के जरिए ज्ञान के विस्तार अतना कर लेव कि अखबार में छपेवाला व्यक्ति विशेष सामाजिक–सांस्कृतिक विषयन के जानकारी प्राप्त कर सके आ ओकर पहचान कर सके।

3. कौशल–विस्तार

स्कूली पढाई के समय लइकन के भोजपुरी भाषा में भाषा में अइसन निपुणता आ पकड बन लेवे के चाहीं कि समय अइला प ऊ विभिन्न माध्यम से पढ़ल सामग्री के एकट्ठा क के ओकर उपयोग कर सके। भाषा में दक्षता आ कौशल के बल पर श्रव्य आ दृश्य संचार माध्यम से प्रचारित–प्रसारित वार्ता आ भाषण आदि के सुन के समझ सके। लइकन के अपना भाषिक दक्षता आ कल्पना–कौशल के बल प वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण आदि में अपना प्रतिभागिता के प्रमाण दे सके चाहे ओकरा के लिखके भ अभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्त कर सके।

4. रुचि आ रुझान

भाषा के शिक्षण अइसन होखे के चाहीं कि शिक्षार्थी में अउर भषन आ अंग्रेजी के विविधता के प्रति स्वीकार आ सद्भाव–सम्मान के भाव बने आउर भोजपुरी के सहारे आउर भारतीय आ विदेशी भाषा आ ओकरा साहित्य के प्रति उत्सुकता आ जाने के भावो विकसित होखे। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के शिक्षण द्वारा अपना संगे–संगे पूरा देश के समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के जान–समझ के ओकरा अच्छाइयन के अपनावे के मनोवृत्ति जनमो। जातिवाद, वर्गवाद, ऊँच–नीच के छोटहन मनोभाव, धर्म–सम्प्रदाय के लेके मन में गाँठ बना लेवे वाली कट्टरता, लिंग–भेद आदि दूर होखे आ मन में सहिष्णुता, सद्भाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आ सहज अपनापन के भाव जन्मे आ बद्धमूल होखे, तबे भोजपुरी भाषा आ साहित्य के शिक्षण सार्थकता प्राप्त कर सकता।

5. पाठ्य–पुस्तक

स्कूली शिक्षार्थीन में योग्यता आ निपुणता विकसित करे खातिर ई जरूरी बा कि पाठ्य–पुस्तकन में भोजपुरी–भाषा साहित्य में ऊपरवर्णित विशेष स्थितियन आ विषयन के समावेश होखे। काहेंकि पाठ्य–पुस्तक एगो बहुत बड़ साधन होला जवना के माध्यम से दिशा–निर्देश दिहल जा सकेला। एकर खातिर बहुत जरूरी बा कि पाठ्य–पुस्तकन में दिहल जायेवाला पाठ जब तइयार कइल जाय त ई ध्यान रखल जाव कि पाठ तइयार करेवाला लोग सावधानी के साथ सामाजिक समरसता आ साम्प्रदायिक सद्भाव के ध्यान रखत विविध विषयक वांछित दृष्टिकोण आ समझ के साथ चुनाव करे।

किताब में पाठ के चुनाव करत समय ई ध्यान रखे के होई कि पाठ अइसन होखे जे पाठकन के मन में जिज्ञासा आ कौतूहल उत्पन्न कर सके ताकि शिक्षार्थी ओके सहज रूप से ग्रहण करे आ ओकरा साथे आपन तादात्म्य स्थापित कर सके।

पाठ्य–पुस्तक तइयार करत खा ओकर आयाम बड़हन राखे के होई ताकि जीवन के विभिन्न क्षेत्रन के अभिव्यक्ति हो सके जइसे लोक–संस्कृति, विज्ञान, पर्यावरण, लोककथा, कृषि, श्रम, संस्कृ

Scanned with CamScanner

सिनेमा, खेल, संवैधानिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि। ऊपरवर्णि विषयन के जरिए भाषा के विविध प्रयोग, ओकर शब्द–संपदा, ओकरा संदर्भन आ जीवन–जगत् के विविध रूपन के दर्शन हो सके आ शिक्षार्थी सहज रूप में ओकर के याद कर सके।

पाठ्य–पुस्तक के जरिए शिक्षार्थी के मानसिक विकास होला। एह से ओह से संबद्ध पाठन के अभ्यास अइसन होखे जवना से शिक्षार्थी के भीतर विषय–वस्तु के परखे के क्षमता विकसित होखे आ रचना के बिन्दुवार विश्लेषण करके आ ओकरा विविध पहलुअन के परखे के देखे के दृष्टि के विकास हो सके। संगही कल्पनाशीलता के बढ़ावा देवे के दृष्टि राखे के होई।

6. व्याकरण आ रचना

ई बात साँच बा कि भाषा के माध्यम से व्याकरण आ रचना के समझ आवेला। व्याकरण के माध्यम से रचना के समझ आ दिशा–निर्देश के साथे विस्तार देबे आ अभ्यास के जरिए ओकरा के जागरूक आ समझदार बनावल जाव। एह से अलगे से व्याकरण के पठन के व्यवस्था ना क के ओकरा के रचना आधारित बनावल जाव आ ओकरे माध्यम से लइकन के सैद्धांतिक समझ विकसित करे के चाहीं। हालाँकि व्याकरण के संक्षिप्त जानकारी आवश्यक बा। एह से पाठ्य–पुस्तक में संकलित अभ्यास के पहिले प्रयोग के माध्यम से व्याकरण के समझ पैदा करे के चाहीं। एह से व्याकरण के पाठ्य–पुस्तक से संबंधित विषयन के अलग से भी पाठ रखल जा सकेला। हालाँकि अइसन व्यवस्था आठवाँ ;टप्प्द्ध से ही ठीक होई। एह तरह के स्वतंत्र पाठ में व्याकरण के अइसनो विषय आ सकेला जवना खातिर पाठ्य–पुस्तक में संकलित पाठ आ अभ्यास संभवना होखे एह से पाठ के संकलन–संग्रह में एह बात के ध्यान रखल जरूरी होई। व्याकरण आ रचना के ज्ञान अभ्यास साध्य होखे आ ई रुचिकर होखे। व्याकरण के सहज सरल बनावल जा सके एकरा खातिर आपस में बंतिआवल चाहे स्कूल के बाहर लोगन के साथ बातचीत में कक्षा में सीखल व्याकरण के ज्ञान से सहज प्रयोग खातिर प्रेरित करे के चाहीं।

वर्ग VI–VIII

7. पाठ्यक्रम

उद्देश्य

- अपना अनुभव के आधार पर भाषा के सृजनात्मक प्रयोग दोसरा के अनुभव से जुड़के ओही स्थिति में ओह चीजन, घटनन आ स्थितियन के समझे के क्षमता के विकास कइल।
- पत्र–पत्रिका, दूरदर्शन आ रेडियो से प्रचारित–प्रसारित रचनन के सुन–समझ के स्वतंत्र रूप के मौखिक लिखित अभिव्यक्ति के क्षमता के विकास कइल।
- लइकन के भीतर रस–प्रेम, सामाजिक–रिश्तन में प्रेम आ राष्ट्रीयता के भावना के विकास कइल।
- सीखल शब्द भंडारन में बढ़ोत्तरी करे आ भाषा के प्रवाहपूर्ण प्रयोग के क्षमता के विकास।
- शब्दन, मुहावरन आ लोकोक्तियन के प्रयोग के विकास कइल।
- साहित्यिक विधन आ ज्ञान से संबंधित विषयन के समझ विकसित कइल आ ओह से आनंद उठावल।

Scanned with CamScanner

- भाषा के प्रकृति के पहचानल आ ओकर विश्लेषण कइल।
- भाषा के बारीकी के समझल आ सही सौंदर्यबोध क्षमता के विकसित कइल।
- पाठ्य–पुस्तक से अलग–व्यावहारिक प्रयोगन जइसे गीत, संवाद, अंताक्षरी, वाद–विवाद, भाषण, खेल–कूद आ अन्य सहयोगी क्रियाकलापन के आधार पर भाषा आ साहित्य के समझ विकसित कइल।

शिक्षण–युक्ति

- समसामयिक मुद्दन से जुड़ल परिवेशगत विषयन पर लइकन के संज्ञानात्मक स्तर पर जुड़ल मुद्दन प कक्षा में परिचर्चा कइल जा सकत बा।
- पाठ्य–पुस्तक के कवनो कहनी के नाट्य–रूपांतरण क के समूह में अभिनय कइल जा सकत बा।
- रचनन प आपन राय देत समय लइकन से सवाल पूछे खातिर उत्साहित कइल।
- अखबार में छपल समाचार आ चित्रन पर राय।
- विज्ञापन–पोस्टर, साइनबोर्ड, पत्र–पत्रिकन में छपल कहानियन के भाषा के विश्लेषण कक्षा में करावल जा सकेला।
- बोल–चाल के भाषा में मुहावरा के प्रयोग कइल।
- वर्ण के मूल ध्वनि के सुरक्षित रखत शब्दन के वाक्य में प्रयोग के अभ्यास करावल।
- शब्द–युग्मन के बारीकी आ ओकर प्रयोग।

व्याकरण

- वाक्य–रचना में लिंग संबंधी अभ्यास।
- काल आ क्रिया संबंधी अभ्यास।
- विशेषण आ क्रिया विशेषण अभ्यास।
- कारकन के वाक्य में पहचान : संबद्ध अभ्यास।

वर्ग VI

एह कक्षा खातिर एगो किताब होई जवना में 12 गो पाठ होई। शुरू के पाठ के भाषा एकदम आसान होई। एह बात के ध्यान रखे के होई कि शिक्षार्थी पहिले–पहिल भोजपुरी पढ़े जाता। धीरे–धीरे भाषा के स्तर बढ़ावल जाई। हर पाठ के संगे वस्तुनिष्ठ, बहुविकल्पी, लघुउत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय तथा परियोजना कार्य होई। पाठन के चयन में आगे लिखल विषय के ध्यान राखल जाई –

गद्य

1. भोजपुरी लोककथा
2. सांस्कृतिक पर्व–त्योहार
3. ऐतिहासिक स्थल के सैर, यात्रा–वृत्तांत
4. सामाजिक सद्भाव बढ़ावेवाली कहानी (अनुवाद)

Scanned with CamScanner

5. पर्यावरण पर पाठ
6. जीवनी (भोजपुरिया क्षेत्र के केहु महापुरुष के)

पद्य

1. सुमिरन/देश–वंदना
2. संत कवि के दोहा
3. भोजपुरी के बुझउवल
4. प्रकृति वर्णन पर आधारित पाठ
5. साहसिक से भाव भरे वाली कविता
6. राष्ट्रीय भाव के जगावेवाला गीत

व्याकरण

1. संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषण के पहचान आ प्रयोग।
2. मुहावरा के प्रयोग
3. विराम–चिह्न के पहचान।

वर्ग–VII

एह वर्ग में एगो पुस्तक होई, जवना में 13 गो पाठ होई। एह में 6 गो पाठ गद्य के आ 7 गो पाठ पद्य के रहे के चाहीं। पाठ–चयन में बिहार के लेखकन के रचनन के प्राथमिकता दिहल जाई। हर विधा के रचना देवे के चाही। एक अध्याय अनुवाद पर होखे के चाही।

गद्य

1. रेखा–चित्र
2. कलाकार के जीवनी
3. बिहार में आजादी के लड़ाई से संबंधित पाठ
4. अंधविश्वास दूर करे वाली कहानी
5. नाटक/यात्रा–वृत्तांत
6. पर्यावरण पर पाठ

पद्य

1. वैज्ञानिक साहित्य 1
2. संत काव्य 2
3. प्रकृति–वर्णन (लोकगीत) 1
4. हास्य कविता 1
5. आधुनिक काव्य के विविध क्षेत्र 2

Scanned with CamScanner

व्याकरण

1. कर्म का दृष्टि से क्रिया के भेदन के पहचान
2. मुहावरा आ लोकोक्ति के वाक्य–प्रयोग
3. शब्द युग्म के पहचान
4. पर्यायवाची शब्दन के ज्ञान, अभ्यास

वर्ग–VIII

एह वर्ग के पाठ्य–पुस्तक में 14 गो पाठ होई, जवना में गद्य में 8 गो आ पद्य में 5 गो आ व्याकरण पर एगो पाठ होई। हर विधा के रचना राखे के चाही। एक अध्याय अनुवाद पर रखे के चाही।

गद्य

1. राष्ट्रीय एकता से संबंधित पाठ
2. ऐतिहासिक स्थल के यात्रा–वृत्तांत/पत्र
3. स्त्री–पुरुष के बराबरी बतावे वाली कहानी
4. सामाजिक कुरीतियन के उजागर करे वाला पाठ
5. भोजपुरी के प्रसिद्ध नाटककार के जीवनी
6. सांस्कृतिक पर्व पर पाठ
7. थारू जनजाति से संबंधित पाठ
8. चरित्र–निर्माण/मानव मूल्यपरक कहानी

पद्य

1. राष्ट्रीय एकता से संबंधित कविता
2. समाज सुधार से संबंधित कविता
3. संत काव्य
4. ऋतु वर्णन (लोकगीत)
5. आधुनिक कविता

व्याकरण

1. वाक्य भेद–सरल, संयुक्त आ मिश्रित : अभ्यास वाक्यन में अर्थ का दृष्टि से पुनरूक्ति भेद आ पहचान : अभ्यास।
   पर्याय, विलोम, श्रुतिसम–भिन्नार्थक, अनेकार्थक आ कई एक शब्दन के बदला में एगो शब्द।

Scanned with CamScanner

छठवाँ वर्ग खातिर पाठ्यचर्या

क्रम	शिक्षण मद	तरीका	उद्देश्य	मंतव्य / मूल पाठ के सहायक सामग्री
1.	शब्द के उच्चारण (एक अक्षर आ दू मात्रावाला अक्षर)	जबानी बोल के पढ़ के	बोले आ पढ़े में निपुणत	एकही शब्द के भिन्न उच्चारण के उदाहरण दे के।
2.	समूह बनाके आस–पास के परिचित प्रसंग / विषय पर चर्चा	जबानी अभ्यास	बोले आ बहस करे के क्षमता के विकास	धार्मिक, धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्र, चरित्र–निर्माण से संबंधित विषय
3.	सुन के लिखल (अनजान परिच्छेद)	सुने भा लिखे के अभ्यास	सुने आ लिखे के कौशल के विकास	परिच्छेद भिन्न संस्कृतियन पर आधारित
4.	वाक्य बनावे के अभ्यास	जबानी आ लिखित	व्याकरण के समझ के साथे शब्द आ वाक्य बनावे के प्रेरणा	सामान्य प्रयोग में आनेवाले शब्दों के साथ तकनीकी शब्दों का प्रयोग (स्तर के अनुसार)
5.	अनजान परिच्छेद के पढ़के समझ पैदा कइले (लघु आ दीर्घ प्रश्नोत्तर)	पढ़के समझदारी पैदा करे खातिर	सही जवाब देबे आ प्रभावकारी लेखन के योग्यता बढ़ावल	यात्रा, पर्यटन, साहसिक कार्य, भूकंप आ सांस्कृतिक विषय संबंधी अनुच्छेद
6.	कहानी / लोककथा के पाठ	पढ़े के अभ्यास	पढ़े के साथे–साथे समझदारी विकसित कइल	पंचतंत्र, लोककथा आदि से
7.	कविता–पाठ	जबानी / लिखित	समझदारी बढ़ावल आ आनंद उठावल	मानवीय मूल्य, राष्ट्रीय बोध आ प्राकृतिक
8.	संयमित आ नियंत्रित रचना संयोजन	लिखित अभ्यास	संप्रेषण क्षमता के विकास	खेल–कूद, सांस्कृतिक भिन्नता आदि
9.	स्वीकृत पाठ के आधार पर भाषा बोले के कोशिश	जबानी अभ्यास मातृभाषा में खेल के बोल आदि	भाषा बोले के योग्यता बढ़ावल	आस–पास के लोगन के साथे बोल–बतिया के
10.	अनुवाद	लिखित	मातृभाषा से हिन्दी आ अंग्रेजी फेरं अंग्रेजी, हिन्दी से मातृभाषा में	परिवार, समाज, स्कूल आ स्वीकृत पाठ के आधार

Scanned with CamScanner

11.	व्याकरण	जबानी / लिखित पाठ आधारित	सुने समझे, पढ़े आ लिखे के कौशल में निपुणता	पाठ आधारित सामग्री

सातवाँ वर्ग खातिर पाठ्यचर्या

क्रम	शिक्षण मद	तरीका	उद्देश्य	मंतव्य / मूल पाठ के सहायक सामग्री
1.	शब्द के उच्चारण (बहुअक्षरीय)	जबानी आ बोल के	पढ़े आ बोले के कौशल के विकास	भिन्न प्रकार के शब्द के उच्चारण अलग–अलग स्थिति में
2.	समूह में चर्चा कइल परिचित प्रसंग / विषय पर	जबानी अभ्यास	बोल आ बहस करे के क्षमता के विकास	चुनाव, दहेज, सामाजिक असमानता आदि पर चर्चा
3.	वाक्य बनावे के स्वीकृत अभ्यास पाठ पर आधारित	जबानी / लिखित	व्यवहारिक व्याकरण से परिचित कहावत	भिन्न विषयन के शब्द जे पढ़ावल जात होखे।
4.	अनजान परिच्छेद के पढके लघु आ दीर्घ प्रश्नोत्तर	अनुच्छेद के समझदारी पैदा करे के साथे लिखित अभ्यास	समझ के सही जवाब देवे आ प्रभावकारी लेखन के योग्यता बढ़ावल	भारत के महापुरुष, राष्ट्रीय धरोहर, राष्ट्रीय आन्दोलन आदि
5.	कथा / लोककथा / एकांकी के पाठ	जबानी / लिखित अभ्यास	पढ़े के साथे–साथे समझदारी पैदा कइल	स्थानीय, राष्ट्रीय स्तर के कथा–कहानी आदि
6.	कविता–पाठ	जबानी / लिखित	समझदारी बढ़ावल आ आनंद उठावल	मानवीय मूल्य, प्राकृतिक, सामाजिक विषय पर आधारित
7.	संयमित आ नियंत्रित रचना संयोजन	लिखित अभ्यास	संप्रेषण क्षमता आ लेखन के विकास	कला–संस्कृति, शांति आ समकालीन विषय, सामाजिक आ पर्यावरण से संबंधित
8.	स्वीकृत पाठ के आधार प भाषा बोले के	जबानी अभ्यास	भाषा बोले के योग्यता बढ़ावल	आस–पास के लोग के साथे – बोल–बतिया के

Scanned with CamScanner

	कोशिश	खेल के बोल आदि लिखित		
9.	अनुवाद	लिखित	मातृभाषा से हिन्दी / अंग्रेजी फेर हिन्दी / अंग्रेजी से मातृभाषा में	पर्यावरण, साहित्यिक, सांस्कृतिक विषयन प
10.	व्याकरण	जबानी / लिखित अभ्यास	सुने, समझे आ बोले, पढ़े, लिखे के कौशल में निपुणता प्राप्त कइल	पाठ आधारित सामग्री

आठवाँ वर्ग खातिर पाठ्यचर्या

क्रम	शिक्षण मद	तरीका	उद्देश्य	मंतव्य / मूल पाठ के सहायक सामग्री
1.	शब्द के उच्चारण	जबानी अभ्यास जोर से बोलके	पढ़े आ बोले के अभ्यास में दक्षता	
2.	समूह–चर्चा (परिचित विषय / प्रसंग)	जबानी अभ्यास	बोले आ बहसे करे के दक्षता के विकास	समकालीन, सामाजिक, राजनीतिक आ सुधारात्मक विचार आ अउर कठिनाइयन प
3.	वाक्य बनावे के अभ्यास पाठ आधारित	जबानी / लिखित अभ्यास	व्याकरण से परिचय आ शब्द वाक्य–निर्माण	भिन्न–भिन्न विषयन से शब्द के चुनाव क के
4.	अनजान परिच्छेद के पढ़ के समझ पैदा कइल (लघु–दीर्घ उत्तर)	पढ़े–लिखे के समझदारी पैदा करे खातिर	सही जवाब आ प्रभावकारी लेखन योग्यता पैदा कइल	विज्ञान, स्वास्थ्य तकनीकी, पर्यावरण, सांस्कृतिक भिन्नता आदि
5.	कहानी / लोककथा पाठन	लिख / पढ़ के अभ्यास	लिखे–पढ़े के समझदारी विकसित कइल	विभिन्न स्रोत से प्राप्त कहानी, लोककथा, लोकनाटक
6.	सूचनात्मक अनुच्छेद	पढ़े–लिखे	समझदारी के साथे	पर्व–त्योहार, भिन्न–भिन्न

Scanned with CamScanner

	निबंधन पढल	के अभ्यास	पढे के क्षमता के विकास	समाज आ संस्कृति, मानवाधिकार आदि
7.	कविता पाठ	जबानी / लिखित अभ्यास	समझदारी बढावला के साथे पढे में दक्षता पैदा कइल	विभिन्न विषय पर चार–पाँच किसिम के कविता
8.	संयमित आ नियंत्रित रचना संयोजन	लिखित अभ्यास	संप्रेषण क्षमता के विकास	समकालीन जीवन आ वैश्विक विषय
9.	स्वीकृत पाठ के आधार पर मातृभाषा बोले के कोशिश	मातृभाषा में जबानी अभ्यास खेल, कहावत आदि के बोल के साथे	भाषा में भिन्न–भिन्न विषयन पर बोले के योग्यता बढावल	आस–पास के लिखित सामग्री आ बोले–बतिया के
10.	अनुवाद	लिखित	मातृभाषा से हिन्दी / अंग्रेजी आ हिन्दी / अंग्रेजी से मातृभाषा में	सामाजिक बुराइयन से संबंधित महापुरुष के जीवन–चरित्र निर्माण के कहानी के अंश
11.	व्याकरण	जबानी आ लिखित अभ्यास	सुने–समझे पढ़े आ लिखे के योग्यता पैदा कइल	पाठ आधारित सामग्री से

पाठ्यचर्या के पठन–पाठन खातिर समय तालिका

अवधि	इकाई	संवाद अवधि	'परियोजना आ समीक्षा खातिर संवाद अवधि	संवाद की कुल अवधि
पहली अवधि	पहली इकाई	20	10	30
	दूसरी इकाई	20	10	30
दूसरी अवधि	पहली इकाई	20	10	30
	दूसरी इकाई	20	10	30
तीसरी अवधि	पहली इकाई	20	10	30
	दूसरी इकाई	20	10	30
कुल		120	60	180

Scanned with CamScanner

ई पाठ्यक्रम एह ढंग से तइयार कइल गइल बा कि ई 70 घंटा (120 घंटी में) में आसानी से पढावल जा सकता। एह से वइसन इलाका के विद्यालय जवन, प्राकृतिक आपदा (बाढ आदि) आ आउर कवनो कारण से बंद रहत होखे, ओजाँ परियोजना आ समीक्षा खातिर निर्धारित संवाद अवधि 35 घंटा (60 घंटी) के उपयोग संवाद अवधि में होई।

मूल्यांकन
वर्ग छठा से आठवाँ तक

वर्ग छठा से आठवाँ तक के मूल्यांकन पूछ–ताछ के माध्यम से आउर लिखित परीक्षा के आधार पर, दूनू तरह से होखे चाहीं।

1. आंतरिक मूल्यांकन 60% (यानी सौ में साठ प्रतिशत अंक)
2. लिखित उत्तर के माध्यम से 40% (यानी सौ में चालीस प्रतिशत अंक)

शिक्षार्थीन के एह छोट उमिर में पूछ–ताछ के माध्यम से मूल्यांकन, ओह लोगन में विषय के प्रति रूझान आ केतना प्रगति भा विकास हो रहल, ओके जाँचल बहुत जरूरी बा। खास क के एह किशोरावस्था में लइका घर–परिवार भा समाज आ वातावरण के प्रति थोड़ा–थोड़ा जागरूक होखे लागेले। लइकन में बोले के क्षमता आ ओकरा विकास खातिरो लिखित परीक्षा जरूरी बा। एह कला भाषा के प्रति ओकरा मन मिजाज में केतना रुचि आ भाषा के बोले में केतना मधुरता बा, आ लिखे में ओकरा शैली के प्रगति के जाँचे खातिर बा। लिखित परीक्षा में बहुविकल्पी आ वर्णनात्मक प्रश्न शामिल होखे के चाहीं। शिक्षार्थीन में भाषा–कौशल के जानकारी खातिर मूल्यांकन बहुत जरूरी बा।

मूल्यांकन चाहे पूछ–ताछ के माध्यम से होखे भा लिखित परीक्षा के रूप में परीक्षा त कवनो हालत में भयमुक्त आ तनावमुक्त होखे के चाहीं।

साल में तीन गो परीक्षा लिहल जरूरी बा।

परीक्षा
वर्ग छठा से आठवाँ तक

वर्ग छठा से आठवाँ तक के शिक्षार्थीन के मूल्यांकन विद्यालय–स्तर पर औपचारिक आ अनौपचारिक दूनू तरह से होखे के चाहीं।

कुल 100 पूर्णांक में 60 अंक आंतरिक मूल्यांकन के माध्यम से आ 40 अंक औपचारिक लिखित परीक्षा के माध्यम से मूल्यांकन होखी, जवना में तिमाही आउर छमाही परीक्षा के अधिभार (वेटेज) अंतिम परिणाम में शामिल कइल जाई। यानी, अंतिम परीक्षाफल में अंक एक प्रकार से रही।

तिमाही परीक्षा से	**20%**	**प्राप्तांक**
छमाही परीक्षा से	**40%**	**प्राप्तांक**
अंतिम (वार्षिक) परीक्षा से	**40%**	**प्राप्तांक**

1.ग्रेड देवे के पद्धति में भी मूल्यांकन के अनुपात आउर आधार इहे होई।,

2.शिक्षक माह के आधार पर भी जाँच परीक्षा ले सकेले। ई उनका इच्छा पर बा।

3.परीक्षा में अंकन के विभाजन एह प्रकार से होखी।

Scanned with CamScanner

4.(क) पूछ–ताछ के माध्यम से
(व्यापक रूप से) मूल्यांकन - 20%

(ख) जबानी पूछ–ताछ (पाठ्यक्रम से) 20%

- समूह–चर्चा
- तत्काल जवाबी बुद्धि
- पाठ्य के अलावा जानकारी
- पढ़ावत अंश के समझ

लिखित

(अ) बहुविकल्पी 30%

(अति लघुउत्तरीय, मिलान–पद, एगो उत्तर चुने के, खाली जगह के भरे के) आ वर्णनात्मक (लमहर उत्तर आ छोट उत्तर वाला)

- लिखित परीक्षा कुल 60 अंक के होखी।
- ध्यान देवे के पड़ी – (योग्यता मापन के प्रश्न बनावत समय) ज्ञान के प्रयोग, तार्किक निष्कर्ष, समस्या समाधान सृजनात्मक आ उच्च विचारशीलता भाषा आ विचार के नजर में पूरा आ उपयोगी होखे।
- छमाही परीक्षा आउर वार्षिक परीक्षा पिछलका तिनमाहियों परीक्षा के अध्ययन क्षेत्र से नीचे लिखल प्रकार से प्रश्न चयनित होखे।

छमाही परीक्षा : विगत से 30: वर्तमान से 70: अंतिम (वार्षिक) परीक्षा,

(क) सबसे पिछली परीक्षा के अध्ययन क्षेत्र से	(ख) दूसरा पिछली परीक्षा के अध्ययन क्षेत्र से	वर्तमान से
10%	20%	70%

अंतिम परीक्षा फल एह प्रकार बनी –

विषय	तिमाही परीक्षा			छमाही परीक्षा				वा० प०				प्राप्त				कुल
	आंतरिक मूल्यांकन	जबानी	लिखित									प्रा० प० औसत	पहिला प०	दू० प०	वा० प०	100
												40%	20%	20%	20%	100%

Scanned with CamScanner

छठा से आठवाँ वर्गन के पाठ्यक्रम सुगम आ बोधगम्य, कल्पनाशीलता, शिक्षार्थीन के भाषा के प्रगति भा विकास करावे वाला त बढ़ले बा, साथे–साथे व्यक्ति आ समाज, घर आ बाहर, परिवेश आ पर्यावरण, देश आ दुनिया सम्बन्धी नयका– नयका बात विचार आ तथ्य शिक्षार्थिन के सोझा अइहें। एसे शिक्षार्थी विषय के प्रति रुचि के साथे तनावमुक्त होके अपना ज्ञान आ समझ आ कौशल के विस्तार से विकास कर सकिहें। एह वर्गन के शिक्षार्थी किशोरावस्था के प्रभाव से जानकारी के प्रति अधिक ग्राही आउर धारक स्वाभाविक रूप से हो जाले। एह से मनोवैज्ञानिक रूप से ई तथ्य के ध्यान में राखि के काफी ज्ञानवर्द्धक आ प्रामाणिक पाठन के संकलन पाठ्य–पुस्तकन में प्रस्तावित बा। ओकरा में दिमागी मनोरंजनों के आ गम्भीर उद्देश्यनों के भी ख्याल कइल गइल बा। शिक्षणकाल में शिक्षार्थिन के समझावे खातिर शिक्षक के भाषा अउरियो बोधगम्य होखे के चाहीं।

एह वर्गन के पाठ्यक्रम से शिक्षार्थी भाषा के शक्ति आ क्षमता के अपना भीतर अनुभव करे लागिहे आ तब स्वाभाविक रूप से ऊ बात विचार के सिलसिला में आगे बढ़िये। भाषा आ साहित्य के माध्यम से वोह लोग में सामाजिक सम्बन्ध के बोध आ पहचान के चेतना जागी। समाज प्रेम, देश प्रेम राष्ट्रीयता, भाईचारा आ आपसी सहयोग के विकास होई। भाषा के प्रयोग के नजर से तमाम स्तर पर शुद्धता, संयम आउर ओकर उपयोग अउरी बढ़ जाई। मुहावरा आ लोकोक्तियन के बोध आ व्यवहार बढ़े लागी। अनेक तरह के समस्या चिंता आ चिंतन आ अउरियो बातन के समझ आवे लागी एह चरण में व्याकरण आ भाषा के रचनात्मक रूपन के ज्ञान के दायरा स्वाभाविक रूप से विस्तृत आ गहरा हो जाला।

घंटी के बँटवारा (सप्ताह में) छठा से आठवाँ ले

5 घंटी

शिक्षक के विशेष ध्यान देवे के पड़ी कि शिक्षार्थीन में भाषा के बोले के लिखे के, सोचे–समझे के भरपूर अवसर मिल सके।

पाठ्य–सामग्री के चयन खातिर सुझाव पाठ्य–सामग्री खातिर तीन गो स्रोत बा। एह तीनू स्रोतन से लेवे के पड़ी।

पहिला स्रोतः– भोजपुरी देश स्तर पर आ कुछ–कुछ जगह विदेसनों में बोलल जाले। ई छिट–पुट बहुत जगहा पइठ बनवले बिआ। ओकरा पत्र–पत्रिकन पर भी ध्यान देवे के पड़ी आ इहों से सामग्री इकट्ठा कइल जा सकेला।

दूसरा स्रोतः– ओकरा अपना परिवेश के साहित्य आ साहित्यकारन से।

तीसरा स्रोतः– सामग्री के अभाव में विशेष रचनन खातिर भोजपुरी के साहित्यकारनों से मदद लिहल जा सकेला।

भोजपुरी के एगो आपन क्षेत्र विस्तार बा। ओकरा अलावे छिट–पुट तौर पर जगे–जगे बोलल जाले खास के ई द्वीप देशन में भी आपना भागीदारी जोगवले बिआ। एह से ओकरा स्वरूप पर ध्यान देवे के पड़ी। एह पाठ्यक्रम में प्रान्तीय स्वरूप पर बल देवे के चाहीं। अबही ओकर जरूरत बा, बाद में धीरे–धीरे ई आपन स्वरूप विस्तार खुद क ली। भाषा आपन धारा समय के अन्तराल में खुद बना लेला। 100: में 90: प्रान्तीय आ 10: गैर प्रान्तीय भी रहे के चाहीं। ओकरा से अपना प्रांत के ओकर भाषी भावी पीढ़ी अपना समृद्ध विरासत के परिचित हो सकी, साथे–साथे ओकरा पाठ्यक्रम के रचनन के चयन में

Scanned with CamScanner

ओकरा हर विधन कथा, कविता, कहानी, नाटक निबन्ध, लेख, जीवनी, संस्मरण आदि के उचित स्थान जरूर मिल सके।

भोजपुरी के इतिहास कवनो एक आ दू सदी के नइखे, ओकर हजार वर्षन के इतिहास बा। आजादी के लड़ाई में भोजपुरियन के महत्त्वपूर्ण भागीदारी रहल बा। ओकरा गोदी में बहुते संत, भक्त, देशभक्त, कवि आ साहित्यकार खेलल कूदल बाड़े आ संस्कारित भइल बाड़े। एह लोग के ज्ञान पराक्रम के गीत, कथा, गाथा आ उपदेशन के अबही ल ई जोगवले बिआ, एह से लोक जागरण जइसे उन्नीसवीं–बीसवीं सदी के नवजागरण, स्वाधीनता आंदोलन, दलित, महिला–उत्थान से सम्बन्धित आंदोलनन आ अभियान चेतना के सुवाहक साहित्य एह पाठ्यक्रम में शामिल हो सको। एह सबसे शिक्षार्थीन में मानववादी दृष्टिकोण जरूर पनपे के चाहीं, एपर ध्यान रहे।

ज्ञान–विज्ञान, नया–नया तकनीक, सूचना आ संचार के साथे–साथे व्यापार के बहुत विकास भइल बा आ हो रहल बा, ओपर आधारित रचनन के सुगम आ बोधगम्य बना के पाठ्यक्रम में राखल जा सकेला।

पुरनकी रचनन के साथे–साथे नयकी दमदार रचनन के भी संग्रह जरूरी बा जवन राष्ट्रीय भावधारा से जुड़ल होखे। सामाजिक आ राजनीतिक स्तर पर ढेर विषमता आ कट्टरता लउकत बा। एह संकीर्णता से पाठ्यक्रम के दूर राखे के पड़ी। शिक्षार्थियन में हमेशा अच्छा धारणा के विकास करे, एकर ध्यान पाठ्यक्रम में होखे के चाहीं। जीवन–जगत् के विभिन्न रूपन आ पहलुअन के समावेश कइल जाये के चाहीं जेसे एह पाठ्यक्रम के पढ़के जे विद्यार्थी निकले अपना अतीतो के यादगारी राखे आ ओकरा के साफ–साफ समझे। एह पाठ्यक्रम के निर्माण के पीछे मुख्य ध्येय इहे बा।

Scanned with CamScanner

गणित
(VI - VIII)

प्रस्तावना :

उच्च प्राथमिक स्तर तक आते-आते शिक्षार्थी अमूर्तन की स्थिति में पहुँचने के लिए तैयार हो जाता है और विश्लेषणात्मक क्षमता इसी के अनुरूप बढ़ जाती है । बच्चे अमूर्त का प्रयोग संबंधों को समझने, संरचनाओं को देख पाने और चीजों का विवेचन करने, कथनों की सत्यता या असत्यता को लेकर तर्क करने लगते हैं । प्रस्तुत पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी की इस क्षमता को ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थी के सोच का गणितीकरण एवं उसकी गणितीय शक्तियों के विकास पर ध्यान देने का प्रयास किया गया है । पाठ्यक्रम में यह भी ध्यान रखा गया है कि बच्चे पूर्व की तरह गणना में प्रवीणता हासिल करने के साथ-साथ अर्थपूर्ण हल पेश करें साथ ही गणित में बच्चे सरलतापूर्वक अपने अनुभव के आधार पर समस्याओं का विश्लेषण करें तथा सत्यता प्रमाणित करने के लिए प्रयास प्रारंभ करें । इस पाठ्यक्रम से शिक्षकों तक यह संदेश पहुँचाने का प्रयास किया गया है कि -

- गणित की एक अपनी भाषा होती है, शिक्षार्थी में इस गणितीय भाषा की समझ विकसित करने की प्रवृत्ति जाग्रत हो ।
- संख्या-बोध से संख्या पैटर्न की ओर एवं उनमें संबंध तथा इन संबंधों में पैटर्न खोजने की प्रवृत्ति को प्रश्रय मिले ।
- चरों का उपयोग, रैखिक समीकरण का हल, समस्या का सृजन इत्यादि पर आधारित शब्द समस्या के माध्यम से शिक्षार्थी जीवन की समस्या/अनुभव को गणित की भाषा में संप्रेषित कर सके ।
- गणित की संक्रियाओं के साथ-साथ शिक्षार्थीं की संकल्पनात्मक क्षमता को मजबूत आधार मिले । वृत्त चतुर्भुज जैसे नियमित आकारों के अलावा उससे ऊपर विभिन्न ज्यामिति आकारों / आकृतियों को समझ सके तथा क्षेत्रमिति एवं ज्यामिति के आपसी संबंध को जानते हुए ज्ञान का प्रयोग दैनिक जीवन में कर सके ।
- जीवन तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित उपयोगी आँकड़ों की समझ विकसित करने के लिए आँकड़ों का प्रयोग इस स्तर पर पढ़ाया जाए ।
- गणितीय कौशल को जीवन में उतारने के लिए चित्र, रेखा चित्र, रैखिक ग्राफ, प्रवाह-चार्ट को इस स्तर पर पाठ्यक्रम में रखा गया है ।
- बीजगणित, अंकगणित, ज्यामिति के माध्यम से गणित के उच्चतर लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रयास किया गया है ।

पाठ्यक्रम को इतना खुला रखने का प्रयास किया गया है कि बच्चे खुद के तरीके विकसित करने, अपने खुद के रास्ते ढूँढ़ने, अपनी खुद की समझ इस्तेमाल करने व खुद के तर्क रखने के अवसर हासिल कर सकें । पाठ्यक्रम की दृष्टि से शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे पाठ्यक्रम को महत्त्वाकांक्षी बनाने की पूरी कोशिश करें और गणित के महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों को पढ़ायें । उसे महत्त्वाकांक्षी इस अर्थ में होना चाहिए कि वह उपर्युक्त उच्च लक्ष्य की प्राप्ति करे न कि केवल सीमित लक्ष्य की प्राप्ति ।

Scanned with CamScanner

गणित

वर्ग -VI	वर्ग VII	वर्ग VIII
इकाई I- संख्या-पद्धति (50 घंटे) **I. संख्याओं की समझ** • पाँच अंकों तक की संख्याओं का सम्यक् ज्ञान; संख्याओं का आकलन, बड़ी-छोटी संख्याओं की पहचान इत्यादि । • स्थानीय मान (पुनरावलोकन एवं विस्तार),=,<,> तथा कोष्ठकों का प्रयोग, संख्या संक्रियाओं पर शब्द समस्याएँ, बड़ी संख्याओं सहित(उत्तर अधिकतम पाँच अंकों की संख्या हो) । मात्रा और लम्बाई की इकाइयों का परिवर्त्तन, संख्या संक्रियाओं के प्रतिफल का आकलन । आठ अंकों तक की बड़ी संख्याओं की समझ एवं आरंभिक जानकारी तथा बड़ी संख्याओं का अनुमानीकरण । **II. संख्याओं का खेल** • कोष्ठकों का सरलीकरण, गुणक और विभाजक 2,3,4,5,6,8,9,10,11 से विभाज्यता के नियम (सभी पैटर्न के माध्यम से) सम/विषम/अभाज्य(रूढ़)/ भाज्य संख्याएँ, सह अभाज्य संख्याएँ, अभाज्य गुणनखंड, प्रत्येक संख्या को अभाज्य विभाजकों के गुणनफल के रूप में व्यक्त किया जा सकता है ।	**इकाई I- संख्या-पद्धति (30 घंटे)** **I.पूर्णांक** • पूर्णांक का गुणा एवं भाग, शून्य से किया भाग अर्थहीन है । • पूर्णांक के गुण (योग एवं गुणा, क्रम विनिमेय, सहचर्य, वितरण के नियमों सहित) । पूर्ण संख्याओं से भी उदाहरण शामिल किये जाएँगे / घटाव के लिए क्रम विनिमय नियम सही नहीं है । • शब्द समस्याएँ जिनमें पूर्णांकों की सभी संक्रियाएँ हों । **II. भिन्न एवं दशमलव संख्या** • भिन्नों का गुणा । • भिन्न का व्युत्क्रम । • भिन्नों का भाग । • मिश्र भिन्न से संबंधित शब्द समस्याएँ । • परिमेय संख्याओं का परिचय(संख्या रेखा पर निरूपण सहित)। दशमलव • परिमेय संख्याओं पर संक्रियाएँ। दशमलव के रूप में परिमेय संख्याओं का निरूपण । • परिमेय संख्याओं की सभी संक्रियाएँ एवं इनपर आधारित शब्द समस्याएँ ।	**इकाई I- संख्या-पद्धति (53 घंटे)** **I- परिमेय संख्या** • परिमेय संख्या के गुण, तादात्म्य सहित सामान्य विधि, विस्तारीय गुणों का वर्णन, संक्षिप्त विधि द्वारा परिमेय संख्या बताना, संख्या रेखा पर परिमेय संख्या का निरूपण, दो परिमेय संख्याओं के बीच अनगिनत दूसरी परिमेय संख्याओं का अस्तित्व । दो संक्रिया वाले तार्किक/इबारती प्रश्न । **II-घातांक** • घातांकों के रूप में पूर्णांक, पूर्ण घात वाले घातांकों के नियम । **III-वर्ग, वर्गमूल, घन तथा घनमूल** • वर्ग और गुणनखंड विधि तथा भाग विधि द्वारा वर्गमूल निकालना (मात्र चार अंकों तक की संख्या) । घन और गुणनखंड विधि द्वारा घनमूल निकालना (मात्र तीन अंकों तक की संख्या) । अभीष्ट संख्या के समीप पहुँचने की प्रक्रिया सीखना । **IV-संख्याओं का खेल** **विस्तृत रूप** • 2 और 3 अंकीय संख्याओं को विस्तृत रूप में लिखना और समझना, जैसे (100a+10b+c) जहाँ a,b,c 0 से 9 के बीच की संख्या है । इसे

Scanned with CamScanner

- महत्तम समापवर्त्तक तथा लघुत्तम समापवर्त्य, अंभाज्य गुणनखंड तथा महत्तम समापवर्त्तक एवं लघुत्तम समापवर्त्य के लिए भाग विधि एवं अभाज्य गुणनखंड, ल. स. × म. स. = दो संख्याओं का गुणनफल ।

III. पूर्ण संख्याएँ

- प्राकृत संख्याएँ, पूर्ण संख्याएँ, संख्याओं के गुण (क्रम विनिमेय, साहचर्य, वितरण, योगात्मक एवं गुणात्मक तत्समक अवयव(Identity), संख्या रेखा, पैटर्न का अवलोकन, नियमों को पहचानना एवं निर्धारण ।

IV. ऋणात्मक संख्याएँ एवं पूर्णांक

- ऋणात्मक संख्याओं का उद्‌भव, ऋणात्मक संख्याओं के नमूने, दैनिक जीवन से जुड़ाव, ऋणात्मक संख्याओं का क्रम, संख्या रेखा पर ऋणात्मक संख्याओं का निरूपण । पैटर्न का अवलोकन तथा नियमों का निर्धारण। पूर्णांक, संख्या रेखा पर पूर्णांकों का निरूपण एवं पहचान । पूर्णांकों के जोड़ एवं घटाव की संक्रियाएँ, संख्या रेखा पर संक्रियाओं को दिखाना (ऋणात्मक पूर्णांकों का योग संख्या के मान को कम करता है), पूर्णांकों की तुलना, पूर्णांकों को क्रमबद्ध करना ।
- दशमलव भिन्नों का गुणा एवं भाग ।
- इकाईयों का रूपांतरण (लम्बाई एवं मात्रा) ।
- लम्बाई एवं मात्रा की इकाई पर आधारित शब्द समस्याएँ ।

संबंधित विभिन्न खेलों, पहेलियों में व्यक्त करना (जैसे लुप्त संख्याओं का पता लगाना जो चारों संक्रियाओं से संबंधित पहेली में वर्णों/अक्षरों के रूप में प्रदर्शित हों यथा

अगर क = 1
ख = 2
ग = 3
घ = 4
ल = 8
व = 9
तो क + घ = ख + ?

- बच्चों से समस्याएँ एवं पहेलियाँ निर्मित करवाना तथा उनका हल ढूँढ़ना ।
- संख्या पहेली एवं खेल

V- द्विआधारी संख्याएँ -

- 10 आधार वाली संख्या का 2 आधार वाली संख्या में निरूपण एवं एक दूसरे में रूपांतरण ।

Scanned with CamScanner

V. भिन्न • भिन्न (पुनरावृत्ति), पूर्ण के योग के रूप में भिन्न, भिन्नों का निरूपण (चित्रांकन एवं संख्या रेखा द्वारा), विभाजन, भाग के रूप में, सम, विषम एवं मिश्र भिन्न, समान भिन्न, भिन्नों की तुलना, भिन्नों का जोड़ एवं घटाव (बड़ी एवं कठिन भिन्नों को छोड़कर) । • दशमलव भिन्न की अवधारणा की समीक्षा, दशमलव भिन्न के संदर्भ में स्थानीय मान, भिन्नों एवं दशमलव भिन्नों का एक दूसरे में रूपांतरण, (आवर्त्त दशमलव छोड़कर), दशमलव के योग एवं घटाव पर आधारित शब्द समस्याएँ (मुद्रा, मात्रा, लम्बाई, तापमान पर आधारित दो संक्रियाएँ एक साथ		
इकाई - II बीजगणित (10 घंटे) **I. बीजगणित से परिचय** • पैटर्न, उपयुक्त शब्द समस्याओं तथा सामान्यीकरण के माध्यम से चर से परिचय (उदाहरण 5x1=5 आदि) और अधिक उदाहरणों के माध्यम से ऐसे पैटर्न का निर्माण । • सरल संदर्भों (एकल संक्रियाएँ) वाले उदाहरणों के माध्यम से अज्ञात चर से परिचय । •	**इकाई II : बीजगणित** (25 घंटे) **I.** घात • घातांक (सिर्फ प्राकृत संख्या) • घातांक के नियम (पैटर्न के माध्यम से सामान्यीकरण) (i) $a^m \times a^n = a^{m+n}$ (i) $(a^m)^n = a^{mn}$ (ii) $\frac{a^m}{a^n} = a^{m-n}$ (iii) $a^m b^m = (ab)^m$ जहाँ m और n प्राकृत संख्याएँ हैं । **II.** बीजीय व्यंजक • एक या दो चर वाले सामान्य बीजीय व्यंजकों का निर्माण ।	**इकाई II बीजगणित** (10 घंटे) • बीजगणितीय व्यंजक - बीजीय व्यंजकों का गुणा एवं भाग केवल पूर्णांक गुणक) कुछ सामान्य अशुद्धियाँ, उदाहरण $2+x \neq 2x$, $7x+y \neq 7xy$, $7x+y \neq 7(x+y)$ इत्यादि । • तादात्म्य $(a+b)^2 = a^2 + 2ab + b^2$, $(a-b)^2 = a^2-2ab+b^2$, $a^2-b^2 = (a+b)(a-b)$ • गुणनखण्ड के सरल प्रश्न जैसे $a(x+y)$, $(x \pm y)^2$, (a^2-b^2), $(x+a)(x+b)$ • एक या दो चर वाले रैखिक समीकरण को हल करना जिसमें गुणा और भाग से संबंधित संक्रियाएँ शामिल हों, शाब्दिक प्रश्न(व्यावहारिक समस्याओं का गणितीय सूत्र में

Scanned with CamScanner

	• स्थिरांक, गुणांक एवं घातों की पहचान • समान और असमान पद, व्यंजकों की श्रेणी यथा x^2y इत्यादि (घातांक ≤ 3, चरों की संख्या ≤ 2) • बीजीय व्यंजकों का जोड़,घटाव और गुणा (गुणांक पूर्णांक के रूप में) । • एक चर वाले सरल रैखिक समीकरण एवं संदर्भ आधारित समस्याएँ जिसमें दो संक्रियाएँ हों)	• निरूपण, जटिल गुणांक वाले समीकरण का प्रयोग नहीं) ।
इकाई - III अंकगणित (10 घंटे) • अनुपात की अवधारणा • दो अनुपातों का समानुपात • ऐकिक नियम • शब्द समस्याएँ	**इकाई III अंकगणित** (15 घंटे) • अनुपात (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष) एवं समानुपात • ऐकिक नियम • प्रतिशत से संबंधित समस्याएँ • 100 हर के साथ एक भिन्न के रूप में प्रतिशत की समझ । • भिन्न एवं दशमलव का प्रतिशत में तथा प्रतिशत का भिन्न एवं दशमलव में रूपांतरण । • लाभ एवं हानि का अनुप्रयोग (सरल समस्या) • साधारण ब्याज का अनुप्रयोग (समय पूर्ण वर्षों में) ।	**इकाई III अंकगणित** (10 घंटे) • लाभ एवं हानि : साधारण तथा चक्रवृद्धि ब्याज में अंतर (3 वर्षों तक ही) । • पैटर्न के माध्यम से चक्रवृद्धि ब्याज के लिए सूत्र प्राप्त करना । • अत्यधिक व्यय, बट्टा, कर, शेयर और लाभांश • प्रत्यक्ष अनुपात एवं किस्तों में भुगतान । • समय व दूरी से संबंधित व्यवहारिक प्रश्न । • समय और काम संबंधित व्यवहारिक प्रश्न ।

Scanned with CamScanner

इकाई - IV - ज्यामिति (37 घंटे)	इकाई IV ज्यमिति (40 घंटे)	इकाई IV ज्यामिति (20 घंटे)
I. आधारभूत ज्यामितीय जानकारियाँ (द्विविमीय) • ज्यामिति से परिचय, दैनिक क्रिया-कालापों/ अनुभवों से इसका जुड़ाव व उनपर प्रभाव। • रेखा, रेखाखंड, किरण • खुली एवं बंद आकृतियाँ • बंद आकृतियों के अंत: एवं बाह्य भाग • वक्र एवं रैखिक संरचनाएँ • कोण - शीर्ष, भुजा अंत:भाग, बाह्यभाग • त्रिभुज - शीर्ष, भुजाएँ, कोण, अंत एवं बाह्य भाग, ऊँचाई एवं माध्यिका । • चतुर्भुज - भुजाएँ, शीर्ष, कोण, विकर्ण, आसन भुजाएँ, सम्मुख भुजाएँ, उत्तल चतुर्भुज के अंत: एवं बाह्य भाग । • वृत्त-केन्द्र, त्रिज्या, व्यास, वृत्तखंड, जीवा चाप, अर्धवृत्त, परिधि, अंत: एवं बाह्यभाग	I. आकृतियों की समझ • कोणों का युग्म (मौखिक, पूरक, अनुपूरक, सम्पूरक आसन्न एवं सम्मुख); उदग्र रूप से सम्मुख कोणों के सरल प्रमाण एवं उसका सत्यापन • तिर्यक रेखा सहित समानांतर रेखाओं के गुण (एकांतर, संगत, अंत:, बाह्य कोण) । **II. त्रिभुजों के गुण** • कोणों के योग का नियम (कागज को मोड़कर प्रमाण एवं सत्यापन, सामानांतर रेखाओं के गुणों का उपयोग करते हुए प्रमाण) • बाह्य कोण के गुण • त्रिभुज की दो भुजाओं का योग तीसरी भुजा से बड़ा होता है । • पाइथोगोरस साध्य (केवल सत्यापन)	**I.विभिन्न आकृतियों की समझ** • चतुर्भुज के गुण, चतुर्भुज के चारों कोणों का योग 360^0 के बराबर होता है (सत्यापन करें)। • समानान्तर चतुर्भुज के गुण (सत्यापन सहित) 1) समानान्तर चतुर्भुज की विपरीत भुजाएँ एक दूसरे के बराबर होती हैं। 2) समानान्तर चतुर्भुज के विपरीत कोण एक दूसरे के बराबर होते हैं । 3) समानान्तर चतुर्भुज के विकर्ण एक दूसरे को समद्विभाजित करते हैं । 4) आयत के विकर्ण एक दूसरे के बराबर होते हैं तथा एक दूसरे को समद्विभाजित करते हैं । 5) विषमकोण समचतुर्भुज के विकर्ण एक दूसरे को लम्ववत् समद्विभाजित करते हैं । 6) वर्ग के विकर्ण एक दूसरे के बराबर होते हैं तथा एक दूसरे को लम्ववत् समद्विभाजित करते हैं । 7) 4, 5 एवं 6 किस प्रकार 2 पर आधारित हैं।
II. सरल आकृतियों की समझ (द्विविमीय एवं त्रिविमीय) । • रेखाखण्ड की माप • कोणों की माप • रेखा-युग्म • तिर्यकछेदी व लंबवत् रेखाएँ • सामांतर रेखाएँ • कोणों के प्रकार - न्यूनकोण, अधिककोण, समकोण, पुनर्युक्त कोण, संपूर्ण कोण, शून्य	III. सममिति • परावर्त्तन सममिति की पुनरावृत्ति । घूर्णन सममिति की समझ । द्विविमीय वस्तुओं की घूर्णन सममिति का अवलोकन 90^0, 120^0, 180^0 • सरल आकृतियों के 90^0 एवं 180^0 पर घूर्णन की संक्रिया। • आकृति के घूर्णन एवं परावर्त्तन सममिति के विभिन्न उदाहरण • आकृतियों के ऐसे उदाहरण जिनमें परावर्त्तन एवं	**II. द्विविमीय एवं त्रिविमीय की प्रस्तुति** • द्विविमीय एवं त्रिविमीय की अवधारणा (3D वस्तुओं का 2D में चित्रण, शीर्षों, किनारों तथा पृष्ठों की गणना । त्रिविमीय आकृति के लिए समतल पृष्ठ के ऑयलर (Euler) संबंध का सत्यापन । (घन, घनाभ, चतुष्फलक, प्रीज्म एवं पिरामिड)

Scanned with CamScanner

IV. रचना (स्केल, प्रोट्रेक्टर, कम्पास के साथ) • रेखाखंड खींचना • वृत्त की रचना • लंबविभाजक • कोणों की रचना (प्रोट्रेक्टर से) • 60°, 120° के कोण (कम्पास से) • कोण विभाजक 30°, 45°, 90° आदि कोणों की रचना (कम्पास से) ।		
इकाई -V क्षेत्रमिति : (09 घंटे) **परिमिति की अवधारणा तथा क्षेत्रफल से परिचय** • विभिन्न आकृतियों का उपयोग करते हुए परिमिति की समझ एवं उससे परिचय • समान परिमिति वाले विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ • क्षेत्रफल की अवधारणा • आयत एवं वर्ग का क्षेत्रफल (परिमिति तथा क्षेत्रफल से संबंधित भ्रांतियों के उदाहरण) • आयत की परिमिति • आयत के लिए परिमिति का सूत्र ज्ञात करना, वर्ग के लिए सूत्र ज्ञात करना (पैटर्न एवं समान्यीकरण द्वारा)	**इकाई -V** **क्षेत्रमिति (06 घंटे)** • परिमिति : पुरनावृत्ति, वृत्त की परिधि एवं क्षेत्रफल की अवधारणा (व्यवहारिक शाब्दिक प्रश्न), π की अवधारणा । **क्षेत्रफल** • इकाई के प्रयोग के साथ क्षेत्रफल की माप की अवधारणा (वर्ग, आयत, त्रिभुज, समांतर चतुर्भुज तथा वृत्त, दो सकेंद्री आयात एवं दो संकेंद्री वृत्तों के बीच का क्षेत्रफल ।	**इकाई V - क्षेत्रमिति (10 घंटे)** 1. सम-चतुर्भुज, समलंब चतुर्भुज तथा बहुभुज का क्षेत्रफल 2. आयतन की अवधारणा, मूल इकाई का प्रयोग करते हुए आयतन की गणना, घन/घनाभ एवं बेलन का आयतन । 3. आयतन एवं धारिता (धारिता का मापन) 4. घन, घनाभ एवं बेलन का पृष्ठ क्षेत्रफल

Scanned with CamScanner

कोण, ऋजु कोण ।

- त्रिभुज का वर्गीकरण (भुजाओं व कोणों के आधार पर)
- चतुर्भुज के प्रकार - समलंब चतुर्भुज, सामांतर चतुर्भुज, आयत, वर्ग, विषमबाहु चतुर्भुज
- सरल बहुभुज; परिचय नियमित व अनियमित अष्टभुज तक
- त्रिविमिय आकृत्तियों की पहचान - घन, घनाभ, बेलन, गोला, शंकु, प्रिज्म, पिरामिड (त्रिभुजाकर एवं वर्गाकार) परिवेश में त्रिविमिय आकृतियों की पहचान
- त्रिविमियों आकृतियों के अवयव (तल, किनारा, शीर्ष) घन, घनाभ, बेलन, शंकु, चतुष्फलक ।

III सममिति (परावर्त्तन)

- परावर्त्तन सममिति के लिए द्विविमीय सममितीय वस्तुओं की पहचान एवं अवलोकन
- सरल द्विविमीय आकृतियों के परावर्त्तन की संक्रिया (दर्पण के सहारे)
- परावर्त्तन सममिति को पहचानना [अवलंब (Axes) की पहचान करते हुए] ।

घूर्णन सममिति शामिल हों तथा इसके विपरीत ।

IV. त्रिविमिय आकृतियों का द्विविमीय निरूपण

- छिपे पृष्ठों को दिखाते हुए त्रिविमीय आकृति का द्विविमीय आकृति में चित्रण
- शीर्षों, किनारों, सतह की जालो से पहचान एवं गणना (घन, घनाभ तथा बेलन के लिए)
- चित्रों का वस्तुओं से मिलान (नामो की पहचान)
- देखकर आकलन करते हुए आसपास के क्षेत्र का मानचित्रण

V. सर्वांगसमता

- आच्छादन (super position) के माध्यम से सर्वांगसमता, उदाहरण ब्लेड, स्टॉम्प इत्यादि ।
- सरल ज्यामितीय आकृतियों का सर्वांगसमता विस्तार, जैसे त्रिभुज, वृत्त
- सर्वांगसमता की शर्त्तें (सत्यापन द्वारा) SAS, SSS, ASA, RHS

VI. रचना (स्केल, प्रोट्रेक्टर, कम्पास के उपयोग से)

- दी गई रेखा के बाहर किसी बिंदु से उस रेखा के समानान्तर रेखा खींचना (एकांतर कोण की समझ के साथ)
- त्रिभुज की रचना दी गई तीन भुजाओं के आधार पर, एक भुजा एवं दो कोणों के आधार पर, दो भुजाओं एवं एक कोण के आधार पर ।

III. बनावट/रचना

चतुर्भुज की बनावट जिसमें

- चार भुजाएँ एवं एक विकर्ण की लम्बाई दी गई है ।
- तीन भुजाएँ एवं दो विकर्ण की लम्बाई दी गई है ।
- तीन भुजाएँ एवं दो अंत:कोणों की माप दी गई है ।
- दो संगत भुजाएँ एवं तीन कोणों के माप दिए गए हैं ।

Scanned with CamScanner

इकाई -VI आंकड़ों का प्रयोग (04 घंटे)	इकाई - VI - आँकड़ों का प्रयोग (04 घंटे)	इकाई VI - आँकड़ों का प्रयोग (10 घंटे)
• आँकड़ा : परिचय, किसी परिकल्पना की जाँच के लिए आँकड़ों का चयन करना । • आँकड़ों का संग्रह एवं इसे व्यवस्थित करना, आँकड़ों को मिलान दंडचिह्न तथा तालिका में व्यवस्थित करने वाले उदाहरण • चित्रालेख - चित्रालेख द्वारा प्रदर्शन/मापन की आवश्यकता, चित्रालेख की रचना। • ग्राफ पेपर की जानकारी एवं दंडालेख पढ़ना।	• आँकड़ों का संग्रह एवं उन्हें व्यवस्थित करना, परिकल्पना जाँच हेतु आँकड़ों का चयन एवं संग्रह • असंग्रहित आँकड़ों का माध्य, माध्यिका एवं बहुलक एवं उनकी व्यावहारिक समझ । • दंडालेख-निर्माण (ग्राफ पेपर पर) • प्रयोगों के माध्यम से आँकड़ों का उपयोग करते हुए प्रायिकता (probability) की समझ (सिक्के, पासे इत्यादि की उछाल से प्राप्त संभावनाओं की गणना एवं उनका सारणीकरण) ।	• दंड आलेख का अध्ययन, अवर्गीकृत आँकड़े एवं इसे वर्गीकृत रूप में सजाना, वर्गीकृत आँकड़े का आलेख में निरूपण एवं व्याख्या। • व्यावहारिक आँकड़ों के आधार पर वृत्त-आलेख यथा जनसंख्या, साक्षरता प्रतिशत, वर्षा, प्रदूषण, फसल पैदावार इत्यादि। • सिक्का उछालना एवं पासा फेंकने की घटनाओं से उत्पन्न विभिन्न संभावनाओं का ज्ञान एवं उनका सामान्यीकरण । दैनिक क्रिया-कलापों में उत्पन्न विभिन्न संभावनाओं से इनका संबंध । एक समान सिक्कों के बारबार उछाल के बारंबारता का चित्रियनिरूपण । एक समान सिक्कों, पासों के उछाल के परिणामों का आकलन, रैंडम घटनाओं का ज्ञान। आलेख (07 घंटे) • अक्ष एवं कार्तीय समतल • विभिन्न स्थितियों के लिए बिंदु निर्धारण (वर्ग के लिए परिमिति बनाम लंबाई, वर्ग का क्षेत्रफल बनाम भुजा की लम्बाई । • आलेख पठन - रैखिक आलेख पठन, समय और दूरी का आलेख पठन ।

Scanned with CamScanner

सहायक पाठ • आर्यभटट् एवं भास्कराचार्य की संक्षिप्त जीवनी एवं कुछ महत्त्वपूर्ण योगदान ।	**सहायक पाठ** महावीराचार्य एवं पींगलाचार्य की संक्षिप्त जीवनी एवं कुछ महत्त्वपूर्ण योगदान ।	**सहायक पाठ** • युक्लिड एवं ब्रह्मगुप्त की संक्षिप्त जीवनी एवं कुछ महत्त्वपूर्ण योगदान ।

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन प्रक्रिया :

मूल्यांकन, सीखने की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग है । शिक्षार्थी में पाठ्य-वस्तु के अपेक्षित प्रतिफलों की प्राप्ति किस स्तर तक हुई है इसकी जाँच आवश्यक है क्योंकि अधिगम प्रतिफलों की प्राप्ति में कमी के बाद भी उपचारात्मक शिक्षण द्वारा इसकी पूर्त्ति की जा सकती है । प्राथमिक स्तर पर मूल्यांकन के निम्नांकित मानदण्ड सुझाए गए हैं ।

- वर्ष में तीन सावधिक परीक्षाएँ --

  प्रथम - चौथे माह के अन्त तक निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार ।
  द्वितीय - आठवें माह तक निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार ।
  तृतीय(वार्षिक) - वर्ष के अंत में सम्पूर्ण पाठ्यक्रमानुसार ।

परीक्षा का स्वरूप :

- लिखित
- मौखिक / आन्तरिक मूल्यांकन

  मौखिक परीक्षान्तर्गत गणितीय गतिविधियों यथा गणितीय पहेली / खेल, चित्र पहेली, समस्या, खेल एवं गणितिज्ञों के परिचय आदि द्वारा अवधारणाओं की समझ की जाँच शामिल होगी । आन्तरिक मूल्यांकन निर्धारित परीक्षा अवधि तक वर्ग में गणित विषय में शिक्षार्थी की उपलब्धि, स्तर दैनन्दिन क्रिया-कलापों से संबंधित प्रोजेक्ट कार्यों के आधार पर होगा ।
- प्रत्येक इकाई शिक्षण के पश्चात् इकाई जाँच की जाएगी । शिक्षक को इकाई जाँच के तरीके (लिखित / मौखिक / गतिविधि आधारित / समूह-चर्चा इत्यादि) अपनाने की स्वतंत्रता होगी ।
- शिक्षक इकाई जाँच का रिकार्ड रखेंगे ताकि आवश्यकता पड़ने पर आन्तरिक मूल्यांकन का औचित्य समझाने में सुविधा हो ।
- इसके अतिरिक्त सह-शैक्षिक मूल्यांकन की व्यवस्था होगी जिसका आधार निम्नांकिन बिंदु हो सकते हैं -

  मूल्य
  क्रियात्मकता
  विद्यालीय गतिविधियों में भागीदारी
  गृह-कार्य सम्पादन

Scanned with CamScanner

समय-विभाजन :-

इकाई	वर्ग - VI		वर्ग - VII		वर्ग - VIII	
	घंटियों में	घंटों में	घंटियों में	घंटों में	घंटियों में	घंटों में
संख्या-पद्धति	75	50	45	30	79	53
बीजगणित	15	10	37	25	15	10
अंकगणित	15	10	22	15	15	10
ज्यामिति	55	37	60	40	30	20
क्षेत्रमिति	13	09	09	06	15	10
आँकड़ों का प्रयोग	06	04	06	04	15	10
आलेख	-	-	-	-	10	07

अपेक्षित अधिगम क्षमता :

- बच्चे को गणित से आनंद मिले, इस अनुभूति का विकास ।
- तार्किक क्षमता/चिन्तन का विकास ।
- लाभप्रद क्षमताओं विशेषकर संख्यनन संख्या से जुड़ी क्षमताएँ, संख्या प्रक्रिया, माप, मुद्राओं आदि का विकास ।
- मूर्त्त की समीक्षा तथा अमूर्त्त को समझ सकने की क्षमता का विकास, समस्याओं को सूत्रबद्ध करने व उनका हल ढूँढ़ने की क्षमता का विकास ।
- अन्वेषणात्मक क्षमता का विकास ।
- परियोजना कार्य करने की क्षमता का विकास ।
- शब्द समस्याएँ/इबारती प्रश्न स्वयं बनाने व उनका हल निकालने की क्षमता का विकास ।
- गणित के प्रति स्थापित भय कम करना ।
- विभिन्न गणितज्ञों की जीवनी एवं उनकी उपलब्धियों से अवगत होना ।
- विभिन्न गणितीय सत्र--खेलों, पहेलियों, समस्या-खेलों, पैटर्न आदि के माध्यम से गणितीय क्षमता का विकास तथा ऐसे खेलों, पहेलियों आदि को स्वयं निर्मित करने की क्षमता का विकास ।
- दैनिक जीवन से जुड़ी सामान्य समस्याओं के समाधान में गणित की चारों संक्रियाओं के अनुप्रयोग की समझ ।
- गणितीय गतिविधियों को आयोजित करने की क्षमता का विकास, समूह-चर्चा द्वारा गणितीय समस्याओं के हल ढूँढ़ने की प्रवृत्ति का विकास ।
- विभिन्न ज्यामितिय द्विविमीय एवं त्रिविमीय आकृतियों (घन, बेलन, शंकु, वृत्त की सामान्य

Scanned with CamScanner

- विभिन्न प्रकार के कोणों (समकोण, न्यूनकोण, अधिककोण) की सामान्य समझ एवं वातावरणीय वस्तुओं में उनकी स्थिति का ज्ञान ।
- मुद्राओं से संबंधित समस्याओं के हल हेतु चारों संक्रियाओं का ज्ञान ।
- माप की विभिन्न मानक, अमानक इकाइयों का ज्ञान तथा एक इकाई का दूसरी से तुलना करने तथा बदलने के कौशल का विकास ।
- विभिन्न संख्याओं के पैटर्न की पहचान का ज्ञान ।
- घड़ी देखना तथा 12 एवं 24 घंटे वाली घड़ियों के बीच संबंध तथा समय-सारणियों का ज्ञान ।

शिक्षकों से अपेक्षित दक्षताएँ :

- **निर्देशन की योजना बनते समय**
  - * विषय से संबंधित परिवेश में उपलब्ध आँकड़े, उदाहरण, अनुभव, सामग्री इत्यादि का चयन ।
  - * समस्याओं को सूत्रबद्ध करने एवं गणना में गति प्रदान करने के लिए शिक्षार्थियों को प्रेरित करने एवं उनके उत्साह को बनाये रखने के लिए आवश्यक कथन, क्रिया-कलाप, सामग्री इत्यादि का प्रयोग ।
  - * शिक्षार्थियों को स्वचिन्तन के लिए प्रेरित करना एवं उनके चिन्तन की दिशा को समस्या समाधान की दिशा में ले जाना ।
  - * शिक्षण-प्रक्रिया को अधिगम प्रक्रिया का पूरक बनाने के साथ-साथ बाल मनोविज्ञान को सर्वोच्च स्थान देना तथा उचित शिक्षण विधि का चुनाव ।
  - * चुने गये उदाहरण में पर्यावरण, आपदा-प्रबंधन, जनसंख्या, फसल उत्पादन, उद्योग-धंधे, सफाई से संबंधित आँकड़े को महत्त्व देना ।
- **कक्षा-शिक्षण-प्रक्रिया में**
  - * बालकों के अनुभव, उदाहरण, विषय से संबंधित क्रिया-कलाप की सराहना एवं चर्चा करना ।
  - * बालकों को नये ज्ञान की उपयोगिता बताने के लिए विभिन्न उदाहरणों का प्रयोग ।
  - * बालकों में ज्ञान प्राप्ति की लालसा उत्पन्न करने के पश्चात् विषय को सरल, स्पष्ट एवं रोचक ढंग से कक्षा में प्रस्तावित करना ।
  - * कक्षा में की गई चर्चा का कक्षा के बाहर की स्थिति में प्रयोग करवाना ।
  - * प्राप्त नई जानकारी का प्रयोग अन्य क्षेत्रों में करने के लिए प्रेरित करना ।
- **कक्षा के बाहर शिक्षकों की भूमिका**
  - * गणित के शिक्षकों की भूमिका कक्षा के बाहर की दुनिया में भी सक्रिय होनी चाहिए ।

Scanned with CamScanner

* पाठ सहगामी क्रियाओं के निष्पादन में मंच की सजावट, कला-कृतियों के निर्माण, बैठने की व्यवस्था इत्यादि अनेक स्थान पर गणित के उपयोग की चर्चा करनी चाहिए ।
* शिक्षक, प्रोजेक्ट कार्य में शिक्षार्थियों की सहभागिता को सुनिश्चित करेंगे ।

❑ **निदानात्मक शिक्षण में**

* प्रत्येक शिक्षार्थी के अधिगम स्तर की पहचान करना ।
* शिक्षार्थी के अधिगम स्तर में सुधार के लिए उनके कमजोर बिंदुओं की पहचान एवं समाधान ।
* विशिष्ट शिक्षार्थियों को गणित के अन्य क्रिया-कलाप एवं जटिल प्रश्नों के विश्लेषण के लिए प्रेरित करना ।
* निम्न अधिगम स्तर वाले शिक्षार्थियों को अन्य वाह्य सहायक सामग्री, उदाहरणों द्वारा पुन: प्रेरित करना ।

❑ **मूल्यांकन प्रक्रिया में**

* सतत मूल्यांकन के लिए -
  - शिक्षार्थियों के चिन्तन के तरीके ।
  - संश्लेषण-विश्लेषण के तरीके ।
  - अमूर्त्त तथ्यों की व्याख्या के तरीके ।
  - समस्याओं का गणितीय भाषा में निरूपण कौशल ।
  - गणना की शुद्धता ।
  - गणना की गति ।
  - गणितीय सूत्रों का व्यवहारिक जीवन में प्रयोग ।
  - गणितीय क्रिया-कलाप में भाग लेना ।
  - गणित संबंधी सामग्री के संकलन, इत्यादि विभिन्न आदतों का अवलोकन करना होगा ।
* शिक्षार्थियों की उपलब्धि प्राप्तांक का विश्लेषण ।
* असफलता की स्थिति में असफलता के कारणों को स्पष्ट करना एवं सुधार की उपाय अपनाना

Scanned with CamScanner

3. विज्ञान

1. प्रस्तावना :

नये पाठ्यक्रम के निर्माण का उद्देश्य इसे बदलते समय की माँग के अनुरूप प्रासंगिक एवं आवश्यकता आधारित बनाना है। इस पाठ्यक्रम का आधार 'सीखना बिना बोझ के' [Learning without burden] सिद्धान्त पर आधारित है।

यह पाठ्यक्रम 'पाठ आधारित' न होकर 'प्रकरण (थीम) आधारित' है जो कि (1) भोजन, (2) पदार्थ/सामग्री, (3) सजीवों का संसार (4) गतिमान वस्तुएँ, लोग और विचार, (5) वस्तुएँ कैसे कार्य करती हैं, (6) प्राकृतिक घटनाएँ एवं (7) प्राकृतिक संसाधन है। थीम आधारित इस पाठ्यक्रम में विषय-वस्तु (अवधारणाएँ) वर्गानुक्रम में विस्तारित होते गए हैं। इस तरह इसने स्पाइरल (सर्पीला) रूप ले लिया है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि किसी भी स्तर पर विषय-वस्तुओं की पुनरावृत्ति नहीं हो पायी है।

पाठ्यक्रम का संबंध न केवल पाठ्यसामग्रियों से है बल्कि इसका संबंध पाठ्य-पुस्तक लेखन और वर्ग कक्ष विनियम से भी है। अतः पाठ्यक्रम की आत्मा ''सीखना बिना बोक्ष के'' सिद्धांत के अनुकूल पाठ्य-पुस्तकें होनी चाहिए और इसका एहसास इसके व्यवहार कर्त्ताओं को भी होना चाहिए। वर्ग कक्ष विनिमयन तभी प्रभावी होता है जब वह शिक्षार्थियों के अनुभव पर आधारित हो। ऐसा होने पर ही शिक्षार्थियों को विषय-वस्तु का बोध होता है। वर्त्तमान पाठ्यक्रम की रूपरेखा अध्यापक को वर्ग विनिमयन तथा पाठ्य-पुस्तक के लेखकों को दिशा और दशा प्रदान करेगा। वर्ग कक्ष विनिमयन में जहाँ अध्यापकों को इस बात में सहायता मिलेगी कि किसी अवधारणा के लिए कौन से महत्त्वपूर्ण प्रश्न हो सकते हैं और कौन-सी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं, वहीं पाठ्य-पुस्तक लेखकों को तथा शिक्षार्थियों को अनुभव आधारित बनाने में सहायता मिलेगी। प्रश्न खोजी प्रवृत्ति आधारित हो, जो शिक्षार्थियों में कुछ कहने की उत्सुकता एवं जिज्ञासा पैदा करे। क्रमबद्ध प्रश्नों के द्वारा अवधारणा की समझ विकसित करने का प्रयास हो ताकि विद्यार्थी स्वयं उत्तर खोजें एवं जहाँ आवश्यक हो अध्यापक की सहायता से अपनी समझ, ज्ञान व ज्ञानार्जन के कौशल साथ-साथ विकसित करते चलें। प्रश्न सूचनात्मक आधारित न होकर अवधारणात्मक आधारित हों, ऐसा ध्यान में रखते हुए अध्यापक को वर्ग कक्ष की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में लाना है तथा पाठ्य-पुस्तक लेखकों के लिए भी यह मार्गदर्शन है कि पाठ्य-पुस्तक विकास के क्रम में तथा भविष्य में संशोधन की गुंजाइश हो तो विषय-वस्तु की रचना एवं व्याख्या इस तरह करें कि विषय-वस्तु का आरंम्भ ऐसे प्रश्नों, उदाहरणों एवं प्रयोगों के माध्यम से हो ताकि बच्चे अवधारणा विकसित करते हुए स्वयं निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करें तथा नियमों एवं सिद्धांतों को स्वयं परिभाषित करने का प्रयास करें तथा पाठ्य-पुस्तक लेखक प्रश्नों, उदाहरणों एवं प्रयोगों की व्याख्या करने के बाद नियमों एवं सिद्धांतों का उल्लेख करें। यदि ऐसा पाठ्य-पुस्तक साधन के रूप में शिक्षक एवं बच्चे व्यवहार करें तो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया आनन्ददायी होगा तथा शिक्षार्थियों में अवधारणात्मक ज्ञान उत्तरोत्तर विकसित होता चला जायेगा।

अध्यापक की इस प्रवृत्ति से जहाँ वर्ग कक्ष विनिमय सुगम और बोधगम्य होगा, वहीं लेखक को पाठ्यसामग्री के बोझ को कम करने में सुविधा भी होगी।

लेखक इस बात का ख्याल रखेंगे कि पाठ्य-सामग्री ज्यादा-से-ज्यादा गतिविधि आधारित हो तथा अध्यापक इस बात पर बल देंगे कि बच्चे प्रस्तावित गतिविधियाँ समूह में करें।

Scanned with CamScanner

2. उद्देश्य :

- शिक्षार्थियों को परिवेश से जोड़ना, परिवेशीय समझ विकसित करना और परिवेश के प्रति जागरूक तथा संवेदनशील बनाना।
- शिक्षार्थियों में स्वयं करके सीखने तथा खोजी-भावना का विकास करना और आपस में मिलजुलकर सीखने की प्रवृत्ति विकसित करना।
- सीखने की प्रक्रियाओं यथा--अवलोकन, विभेदीकरण, वर्गीकरण, मापन आदि को सीखने की प्रक्रिया के अनुभव-प्रयोग की दक्षता विकसित करना।
- पाठ्यक्रम की संबद्ध अवधारणाओं की समझ विकसित करना।
- कार्य और कारण में संबंध स्थापित करना तथा वैज्ञानिक चेतना विकसित करना।
- प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण व्यवहार तथा संरक्षण की समझ विकसित करना।

Scanned with CamScanner

3. पाठ्यक्रम

वर्ग -VI

1. प्रकरण (Theme) : भोजन (Food)

उद्देश्य (Objective)

- भोजन के स्रोतों से अवगत कराना।
- भोजन के अवयव और शारीरिक वृद्धि के बीच संबंध की समझ विकसित करना।
- स्वास्थ्य और स्वच्छता के बीच गहरा संबंध है, इसका अवबोध कराना।
- फसल से अन्न-प्राप्ति के विभिन्न प्रक्रमों की जानकारी कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
भोजन के स्रोत • भोजन के विभिन्न स्रोत क्या हैं? • गायें हरी घास तथा पत्तियाँ ही क्यों खाना पसंद करती हैं? • अन्य जानवर क्या खाते हैं?	* पादप तथा जंतु-खाद्य उत्पादन के स्रोत * शाकाहारी, मांसाहारी, सर्वाहारी जीव। * कुछ दैनिक खाद्य पदार्थों की पोषकता।	* पौधों एवं जंतुओं से प्राप्त खाद्य सामग्री (पालक, बैंगन, आलू, दूध, मांस, मछली, अंडा आदि) के चित्र/चार्ट।	* विभिन्न खाद्य सामग्री का चार्ट द्वारा प्रदर्शन। * जंतुओं में भोजन संबंधित आदतों पर चर्चा। * बिहार के विभिन्न जिलों की खाद्य संस्कृति पर आधारित पदार्थों की सूची तैयार करना, जैसे चूड़ा-दही, लिट्टी- चोखा, चावल, दाल, सब्जी, विभिन्न प्रकार के सत्तू, आटा, आदि पर चर्चा करना।
भोजन के अवयव * हमारे भोजन के मुख्य अवयव क्या हैं? * हमलोग विभिन्न प्रकार के भोजन क्यों करते हैं? * भोजन करने से हमें क्या प्राप्त होता है? * उपवास के दिन शरीर में क्यों कमजोरी महसूस होती है?	* भोजन के अवयव- कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, रुक्षांस (रफेज), विटामिन, खनिज एवं जल तथा उनके स्रोत * भोजन की अनिवार्यता	* मध्यावधि भोजन, भोजन तालिका एवं चित्र जो कुपोषण से अपंग शिक्षार्थियों या लोगों की जानकारी देते हैं।	* भोजन के विभिन्न अवयवों का चार्ट तैयार करना एवं मंड, प्रोटीन तथा वसा का परीक्षण। विभिन्न प्रकार की अपंगता पर समूह चर्चा।

Scanned with CamScanner

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
• भोजन शरीर की वृद्धि में किस प्रकार सहायक है?	* मानव-स्वास्थ्य पर भोजन अवयवों के प्रभाव शारीरिक वृद्धि के लिए आवश्यक। * संतुलित भोजन। * कुपोषण से अपंगता तथा संबंधित बीमारी। * संदूषित भोजन से पैदा होने वाली बीमारियाँ। * अन्य राज्यों में उपलब्ध खाद्य पदार्थ और उनके व्यवहार के तौर-तरीके।		* विटामिन के विभिन्न फायदे तथा कमी से होनेवाले नुकसान की तालिका तैयार करना। * अन्य राज्यों में भोजन संबंधी पदार्थ एवं भोजन के तौर-तरीकों पर चर्चा।
स्वास्थ्य एवं स्वच्छता * भोजन करने से पहले हाथ क्यों साफ करते हैं? * भोजन पकाने से पहले खाद्य सामग्री को क्यों साफ कर लिया जाता है? * खुजली वाले लोगों से परहेज क्यों किया जाता है?	* स्वच्छता तथा सफाई का महत्त्व तथा अस्वच्छ भोजन से नुकसान। * स्वस्थ जीवन के आधार-व्यक्तिगत स्वच्छता और अच्छी आदतें। * संक्रामक बीमारियाँ --प्रकार तथा बचाव के उपाय।	* स्वास्थ्य संबंधी चार्ट। * स्वच्छता संबंधी आदतों की तालिका। * पत्र-पत्रिकाओं से संक्रामक बीमारी से संबंधित सचित्र विवरण।	* स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के बीच तालमेल स्थापित करना। * संक्रामक बीमारियों की सूची/तालिका बनाना और उसपर चर्चा करना।
फसल से अन्न की प्राप्ति * फसल कटाई के बाद उससे अन्न (गेहूँ, धान) किस प्रकार प्राप्त करते हैं? * खाद्य पदार्थों की साफ-सफाई एवं संरक्षण।	* फसल से अन्न की प्राप्ति--दौनी, गहाई, ओसाई, (threshing, winnowing) हाथ द्वारा चुनना, छानना, निथारना (sediment-ation)।	* विभिन्न फसलों से अन्न-प्राप्ति संबंधी चित्र/चार्ट।	* किसी बुजुर्ग से फसल कटाई के बाद के अभ्यास के बारे में जानकारी हासिल करना। * अवक्षेपीकरण, छानना एवं निथारना

Scanned with CamScanner

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
	* भोजन का संबंध स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से है ऐसी अवधारणा विकसित करना। * अन्न को छिलके से अलग करने की आवश्यकता, अन्न की प्राप्ति।		तथा पृथक्करण का प्रयोग। वर्ग में आपस में बातें करके अन्न की सफाई के बारे में जानकारी प्राप्त करना। मटर, चना, धान तथा जौ के छिलके को अलग कर प्राप्त दानों का अध्ययन करना। किसी किसान से फसल कटाई से लेकर अन्न प्राप्ति तक के चरणों के संबंध में बातचीत करना । खाद्यान्न के आपस में मिश्रित होने पर इसे विभिन्न विधियों से पृथक करने के व्यवहार पर चर्चा।

2. थीम (प्रकरण) : पदार्थ/वस्तुएँ (Materials)

उद्देश्य (Objective)

- दैनिक जीवन की वस्तुएँ, यथा--वस्त्र-निर्माण संबंधी विभिन्न प्रकार के रेशों से परिचित कराना।
- विभिन्न पदार्थों/वस्तुओं को खास-खास गुणधर्मों के आधार पर वर्गीकरण की दक्षता/योग्यता विकसित करना।
- पदार्थ की अवस्था में होनेवाले परिवर्त्तनों तथा उस पर पड़नेवाले प्रभावों से अवगत कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
दैनिक जीवन की वस्तुएँ * हमारे वस्त्र किन चीजों से निर्मित हैं? * हमारे पूर्वज वस्त्र के रूप में किस चीज का व्यवहार करते थे, जब उनके	* वस्त्र-निर्माण की विभिन्न सामग्री कपास, ऊन, मिल्क आदि। * वस्त्र-निर्माण की	* रूई, ऊन, जूट, सिल्क के धागे/ कपड़े। * बुजुर्गों के अनुभव।	* विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के नमूनों का प्रदर्शन। * रूई से धागा तैयार करना।

Scanned with CamScanner

* पास कपड़े नहीं थे? * क्या हमारे वस्त्र पादप उत्पाद से भी निर्मित हैं? * किस प्रकार के स्थान पर ये पादप उपजते हैं? * पौधे के किस-किस भाग का उपयोग कपड़ा तैयार करने में होता है?	* वस्तुओं का विकास। * आस-पास उपलब्ध * रेशे-पादप रेशा, कपास, जूट आदि। * रेशेदार पौधों के उत्पादन के लिए आवश्यक भूमि के प्रकार।	* ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक * जानकारी। * तकली, चरखा, हैंडलूम (हथकरघा)	* आसपास में मौजूद रेशेदार पादपों की सूची तैयार करना। * रेशे और उनसे बने वस्त्रों पर समूह चर्चा।
विभिन्न प्रकार के पदार्थ/वस्तुएँ * हमलोग अपने आसपास कौन-कौन-से पदार्थ/वस्तुएँ/सामग्री देखते हैं?	* सामान्य गुण धर्म के आधार पर पदार्थों/ वस्तुओं/सामग्रियों का वर्गीकरण।	* आसपास में उपलब्ध पदार्थों/ वस्तुओं/ सामग्रियों के नमूने।	* चमक, कठोरता, पारदर्शिता, पानी में डूबना, तैरना आदि गुण-धर्मों के आधार पर आस-पास के पदार्थों/ वस्तुओं का समूहीकरण/ वर्गीकरण।
पदार्थ/वस्तु/सामग्री में परिवर्त्तन और आपसी क्रिया-अभिक्रिया * गर्म करने से वस्तुएँ किस प्रकार बदलती हैं? * क्या ये ठंढा करने पर पूर्व अवस्था में वापस आ जाती हैं? * जलने पर मोमबत्ती छोटी क्यों होती चली जाती है? * एक कप पानी में नमक की कितनी मात्रा घुल सकती है? * क्या बालू पानी में घुल जाता है?	* वस्तुओं में अवस्था परिवर्त्तन तथा उनके कारण। * अवस्था परिवर्त्तन के बाद कुछ वस्तुओं/पदार्थों को पूर्व अवस्था में वापस नहीं आना और कुछ पदार्थों का पूर्व अवस्था में वापस आ जाना। (भौतिक एवं रासायनिक परिवर्त्तन) * घुल्य (विलेय), घोलक (विलायक)	* मोमबत्ती, माचिस, पानी, बर्त्तन, बर्नर, पत्थर, नमक, चीनी, बालू, कंकड़।	* मोमबती, पानी, पत्थर को गर्म कर उनकी अवस्था परिवर्त्तन का अवलोकन। * आस-पास की मौजूद चीजों पर ताप के प्रभाव का अध्ययन। * विभिन्न पदार्थों की घुलनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन व्यावहारिक कार्य। * घुलनशील,

Scanned with CamScanner

	और घोल (विलायक) संतृप्त-असंतृप्त विलयन। * वस्तुओं पर ताप का प्रभाव। * बदलते ताप पर विभिन्न पदार्थों की घुलनशीलता में अंतर। * समान ताप पर विभिन्न पदार्थों की घुलनशीलता में अंतर।		अघुलनशील पदार्थों का प्रयोग आधारित वर्गीकरण। * घुलनशीलता पर उच्च ताप (गर्म करने पर) एवं निम्नताप (ठंढा करने पर) के प्रभाव का अवलोकन।

3. थीम (प्रकरण) : सजीवों का संसार (World of the living)

उद्देश्य (**Objective**)

- सजीवों की विशेषताएँ , उनके आवासों तथा उनके विभिन्न अंगों की जानकारी प्राप्त कराना।
- जंतुओं में अनुकूलन और पौधों में रूपांतरण संबंधी विशेषताओं/खूबियों को समझने की योग्यता विकसित करना।
- पौधे और जंतुओं के अंगों से परिचित कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
आसपास की वस्तुएँ * सजीव और निर्जीव वस्तुओं को कैसे जान लेते हैं? * क्या पेड़-पौधे सजीव हैं? * पौधे और जन्तु को कैसे पहचानते हैं? * पौधे और जन्तु में क्या अन्तर है?	* सजीव एवं निर्जीव की विशेषताएँ तथा उनमें अंतर। * पौधों तथा जंतुओं की प्रमुख विशेषताएँ तथा उनमें अंतर।	* आस-पास में मौजूद पौधे तथा जंतु। * बीज	* देखकर पौधों तथा जंतुओं में अंतर स्पष्ट करना। * आस-पास में मौजूद वस्तुओं के आधार पर सजीव तथा निर्जीव की सूची तैयार करना।

Scanned with CamScanner

* क्या निर्जीव वस्तुओं में वृद्धि होती है? * क्या पौधे अंधकार में वृद्धि कर सकते हैं?			* अंधेरे में बीजों को अंकुरित करा कर देखना। * पालतू जानवरों में वृद्धि का अध्ययन करना।
सजीवों के वास स्थान • क्या सभी जंतुओं के वास-स्थान एक समान होते हैं? • सजीवों (पौधे और जंतुओं) को वास-स्थान किस प्रकार प्रभावित करते हैं? • मछलियाँ पानी में किस प्रकार जीवित रहती हैं? • आकाश में पक्षी किस प्रकार उड़ते हैं?	* सजीवों के प्राकृतिक वास स्थान * प्राकृतिक वास स्थान (जलीय, स्थलीय, मरुस्थलीय)। * जंतुओं में अनुकूलन, इनकी संरचना तथा जीने के ढंग। * पौधों में रूपांतरण- जलीय, स्थलीय, वायुवीय।	* जलीय, स्थलीय, पौधों और जंतुओं के चित्र तथा उनसे संबंधित सूचनाएँ। * गमलों में लगे विभिन्न प्रकार के पौधे।	* जलीय, स्थलीय, मरुस्थलीय पौधों का तुलनात्मक अध्ययन करना। * हर्बेरियम (छोटे पौधों तथा पत्तियों के) तैयार करना। * पौधों में रूपांतरण का अध्ययन-लत्तेदार, काँटेदार पौधे, मूली आदि। * जीवन को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय कारकों (जल, ताप, प्रकाश, हवा, मिट्टी) के प्रभाव का अवलोकन करना।
पौधों की संरचना एवं कार्य * पौधों के विभिन्न भागों (जड़, तना, पत्ती) के कार्य बतायें। * पौधा किस प्रकार जल प्राप्त करता है? * पौधों में पत्तियों का क्या महत्त्व है? * जड़ तथा तना में मुख्य अंतर क्या है?	* पौधे के विभिन्न अंग : जड़, तना, पत्ती, पुष्प एवं उनके महत्त्व। * जड़ एवं तना में अंतर। * पुष्प की बनावट एवं उसके कार्य।	* पौधा, पुष्प, हैंडलेंस, ब्लेड, आलपिन ।	* पौधों के विभिन्न अंगों का अध्ययन तथा उनमें अंतर समझना। * जड़ के कार्यों (गमले में या आस-पास में मौजूद

Scanned with CamScanner

* विभिन्न प्रकार के फूल एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न होते है? * फूलों का अध्ययन आप कैसे कर सकते हैं?			पौधे को पानी देकर तथा पानी न देकर) का अध्ययन करना। * फूल के विभिन्न अंगों का प्रदर्शन एवं अध्ययन करना। * फूल के अंडाशय और उसके कटे सेक्सन में बीजांड का अवलोकन। * विभिन्न प्रकार की पत्तियों एवं फलों के हर्बेरियम तैयार करना।
जंतुओं की संरचना एवं कार्य • हमारे शरीर के मुख्य अंग कौन-कौन-से हैं? • हमारे शरीर के आंतरिक अंग कौन-कौन-से हैं? • शरीर में कितनी हड्डियाँ पायी जाती हैं? • मछलियों को तैरने में कौन-सा अंग सहायता करता है? • क्या तिलचट्टा में हड्डी पायी जाती है? • सर्प, स्नेल्स (घोंघा), केचुआ (अर्थवर्म) किस प्रकार गति करते हैं?	• जन्तुओं के विभिन्न अंगों की बाह्य एवं आंतरिक संरचना। • विभिन्न अंगों के कार्य। • मानव तथा कुछ अन्य जंतुओं के कंकाल-तंत्र तथा उनके प्रमुख कार्य। • बिना हड्डी वाले जंतु एवं उनमें गति ।	• कंकाल के प्रतिरूप/चार्ट, X-ray प्लेट (आदमी के), कीड़े, तिलचट्टे, अर्थवर्म, घोघा, जोंक।	* X-ray तथा प्रतिरूप तथा चार्ट द्वारा हड्डियों तथा उनकी संधियों की जानकारी प्राप्त करना। * हड्डी वाले तथा बिना हड्डी वाले जंतुओं की सूची बनाना। * हड्डी वाले (कंकाल वाले) जन्तुओं का हाथ, पैर, गर्दन तथा अंगुली की गति के प्रदर्शन के साथ दूसरे हड्डी वाले जन्तुओं के उपर्युक्त अंगों की गति के साथ अवलोकन कराना।

Scanned with CamScanner

			* बिना कंकाल वाले जन्तु यथा अर्थवर्म (केचुआ) में तथा जोंक में गति का अवलोकन ।

4. थीम (प्रकरण) : गतिमान वस्तुएँ, लोग एवं विचार (Moving things, People and ideas)

उद्देश्य (**Objective**)

- गतिशीलता की अवधारणा स्पष्ट करना।
- गति की परिभाषा से अवगत कराना।
- चाल की परिभाषा से अवगत कराना।
- चाल, समय और तय की गयी दूरी के बीच के आपसी संबंधों की समझ विकसित करना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
गति * पूर्वकाल में लोग एक जगह से दूसरी जगह कैसे जाते थे? * उस समय तय की गयी दूरी को कैसे मापा जाता था? * हमें कैसे पता चलता है कि कोई वस्तु गतिशील है या नहीं? * किस प्रकार तय किया जाएगा कि किसी वस्तु ने कितनी दूरी तय की है?	* दूरी (लंबाई) की माप की जरूरत तथा उसका मापन। * वस्तु का समय के साथ स्थिति में परिवर्त्तन।	* पैमाना, स्केल, रस्सी, धागा। * दूरी मापन के संबंध में प्रचलित धारणाएँ।	* लंबाई अथवा दूरी को विभिन्न तरीके से मापना (कदम, रस्सी, पैमाना या हाथ या बीता से) हवा, पानी और जमीन पर गतिशील वस्तुओं का अवलोकन तथा हवा में उड़ती पतंग तथा पानी में कागज की नाव चलाकर कुछ वस्तुओं की गतिशीलता का अध्ययन। * कलाई घड़ी, दीवार घड़ी की सूइयों तथा सूरज, चाँद एवं पृथ्वी की आवर्त्त गति का अवलोकन।

Scanned with CamScanner

5. थीम (प्रकरण) : वस्तुएँ कैसे कार्य करती हैं (How things works)

उद्देश्य (Objective)

- विद्युत धारा की अवधारणा स्पष्ट करना।
- विद्युत धारा के स्रोतों से अवगत कराना।
- विद्युत परिपथ की समझ विकसित करना।
- चुम्बक और इसकी विशेषताओं से परिचित कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
विद्युत धारा तथा परिपथ * बल्ब कैसे जलता है? * टॉर्च किस प्रकार कार्य करता है? * क्या सभी पदार्थों से विद्युत-धारा प्रवाहित होती है? * विद्युत संबंधी कार्य करते समय व्यक्ति रबर के दस्ताने का व्यवहार क्यों करता है?	* विद्युत-धारा एवं उसके स्रोत * विद्युत-परिचय, विद्युत धारा के प्रभाव एवं खतरे। * खतरे से बचने के उपाय * सेल (शुष्क सेल, वोल्टीय, डायनियल सेल, संचालक बैट्री)। * विद्युत चालकता, विद्युतरोधी।	* तार, बल्ब, बैट्री, टॉर्च, स्वीच, प्लास्टिक रबर, शीशा, लोहा लकड़ी।	* टॉर्च में बैट्री डालकर तथा एक परिपथ तैयार करना। * बैट्री द्वारा बल्ब जलाना। * शुष्क सेल को खोलकर अध्ययन करना। * लकड़ी पर विद्युत-धारा का प्रभाव देखना। * विद्युत-धारा का धातुओं पर प्रभाव देखना।
चुम्बक * चुम्बक क्या है? * चुम्बक से दिशा निर्देशन कैसे संभव है? * दो चुम्बकों को आमने-सामने लगाने पर क्या होता है? * क्या लकड़ी पर चुम्बक का प्रभाव पड़ता है?	* चुम्बक, चुम्बकीय ध्रुव, उसके गुण। * समान ध्रुवों में विकर्षण और असमान ध्रुवों में आकर्षण। * चुम्बकीय सुई (कम्पास)	* लोहा, चुम्बक और लोहा का बुरादा (चूर्ण), कम्पास, धागा आदि।	* वस्तुओं को चुंबक आकर्षित करता है इसे प्रदर्शित करना। * विभिन्न पदार्थों की चुम्बकीयता तथा अचुम्बकीयता का अध्ययन करना। * कम्पास, सूई की सहायता से चुम्बक के ध्रुवों को जानना। * धागा में चुम्बक बाँध कर उसे लटका कर दिशा-ज्ञान के लिए उपयोग करना।

Scanned with CamScanner

6. थीम (प्रकरण) : प्राकृतिक परिघटनाएँ (Natural Phenomenon)

उद्देश्य (Objective)

- वाष्पीकरण और संघनन की घटनाओं से अवगत कराना।
- जल की विभिन्न अवस्थाओं और उनकी आवश्यकताओं का बोध कराना।
- जल-चक्र की परिघटना की समझ विकसित करना।
- प्रकाश के संदर्भ में वस्तुओं की विभिन्न प्रकृतियों से परिचित कराना।
- छाया और प्रतिबिंब बनने की प्रक्रियाओं की समझ विकसित करना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
वर्षा, बादल, गर्जन, तड़ित * वर्षा कैसे होती है? * बादल का निर्माण कैसे होता है?	* जल का वाष्पीकरण तथा संघनन। * जल की विभिन्न अवस्थाएँ। * जल-चक्र।	* जल, जल-स्रोत नित्यदिन के अनुभव, बर्फ	* जल को किसी बर्तन में गर्म कर उसके ढक्कन पर जमा जलकणों के संघनन से बनी बूँदों का अवलोकन। * जल की विभिन्न अवस्थाओं पर चर्चा। * जल-चक्र का चार्ट-निर्माण।
प्रकाश (Light) * वे कौन-सी चीजें हैं, जिनके आर-पार देख सकते हैं? * छाया कब बनती है? क्या रात के अंधेरे में छाया बनती है? * किन-किन परिस्थितियों में छाया का आकार घटता एवं बढ़ता है?	* वस्तुओं में पारदर्शी अपारदर्शी तथा अर्द्ध-पारदर्शी के रूप में वर्गीकरण। * प्रकाश-स्रोत और छाया का बनाना। * अपारदर्शी वस्तुओं की प्रकाश के प्रति प्रकृति। * छाया का रंग। * परावर्त्तक सतह : प्रतिबिम्ब का बनना, प्रतिबिम्ब एवं छाया में अंतर।	• शिक्षार्थियों के स्वयं के अनुभव, मोमबत्ती, टॉर्च, लैम्प, सूरज की रोशनी, काला-सफेद कागज, शीशा, दर्पण, तेल लगा कागज आदि।	• धूप, टॉर्च, जलती मोमबत्ती और लैम्प आदि प्रकाश के स्रोत- इस पर चर्चा करना। • धूप में छाया-निर्माण का अवलोकन करना। • सुबह, दोपहर तथा शाम में अपने शरीर की छाया का अवलोकन करना, टॉर्च द्वारा किसी पदार्थ पर रोशनी डालकर छाया बनाना तथा छाया के रंग का अवलोकन करना। • अपने शरीर या किसी वस्तु के प्रतिबिम्ब और उसकी छाया का अवलोकन कर

Scanned with CamScanner

			अंतर स्पष्ट करना। • पिनहोल कैमरा बनाना या कार्ड-बोर्ड पर छिद्र बनाकर प्रकाश को देखना। • शीशा, कागज, लकड़ी पर प्रकाश डालकर पारदर्शिता का अध्ययन करना। • दर्पण द्वारा प्रतिबिम्ब बनने का अवलोकन करना।

7. थीम (प्रकरण) : प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources)

उद्देश्य (Objective)

- सजीवों के लिए जल की आवश्यकता का एहसास कराना।
- सूखा एवं बाढ़ से प्रकृति पर पड़नेवाले प्रभावों से परिचित कराना।
- सभी जीवों के जीवन के लिए वायु आवश्यक है, इसकी समझ विकसित करना।
- कचरों के सही निस्तरण और उनके पुनर्चक्रण की आवश्यकता और प्रक्रिया का अभिज्ञान कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
जल का महत्त्व * प्यासा रहने की स्थिति में जल पीने के बाद आप कैसा अनुभव करते हैं? * यदि कुछ समय या कई घंटों/ दिनों तक पीने के लिए जल नहीं मिले तो क्या होगा? * यदि वर्षा न हो तो मिट्टी, मनुष्य, जानवर, नदी, तालाब तथा पौधों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? * यदि ज्यादा वर्षा हो, तब क्या प्रभाव पड़ेगा?	* जल का महत्त्व। * सजीवों की जल पर निर्भरता। * सूखा एवं बाढ़- बिहार के संदर्भ में विशेष जानकारी।	* अनुभव, समाचार-पत्र एवं पत्रिका की रिपोर्ट	* जल की आवश्यकता तथा उसकी उपलब्धता पर चर्चा। * एक परिवार द्वारा प्रतिदिन, एक सप्ताह और एक माह में प्रयुक्त जल की मात्रा का अनुमान लगाना। * जल के विभिन्न व्यवहारों की सूची बनाना। * जल के दुरूपयोग रोकने के लिए व्यवहारिक क्रिया-

Scanned with CamScanner

			कलाप कराना। * जल की उपयोगिता के संबंध में आपस में बातें करना। * पौधों के लिए जल की आवश्यक मात्रा, अत्यधिक मात्रा तथा अल्प मात्रा के पौधों पर पड़नेवाले प्रभावों का अवलोकन एवं चर्चा।
हवा का महत्व * थोड़ी देर नाक और मुँह बंद करने पर आपको कैसा लगता है? * बारिश के बाद केचुए मिट्टी के बाहर क्यों आ जाते हैं? * बंद कमरे में साँस लेने में क्या कठिनाई होती है? **कचरा (Waste)** * क्या आप सब्जी तथा फल के छिलके एवं कटे हुए टुकड़ों को फेंक देते हैं? * क्या इनका किसी अन्य कार्य में इस्तेमाल हो सकता है? * क्या घर से निकले कचरे को आप कहीं फेंक देते हैं? इसका वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है? * प्लास्टिक बैगों तथा कचरे से भरे इन बैगों को कहीं भी फेंक देने से क्या प्रभाव पड़ सकता है? * सड़े हुए कचरे से दुर्गंध क्यों आती है?	* जल में रहने वाले पौधे एवं जानवर। * भूमि के अंदर तथा भूमि की ऊपरी सतह पर पाए जानेवाले जीव। * सभी जीवों के जीवन के लिए वायु की आवश्यकता। * कचरा और उसका पुनर्चक्रण एवं पुनःउपयोग। * बेकार पदार्थ और इनका पुर्नचक्रण एवं पुनःउपयोग। * कचरा प्रदूषण एवं उसका प्रभाव * सड़ने और नहीं सड़ने वाली वस्तुएँ- सड़ने की क्रिया में जैविक सहयोग और पादपों की वृद्धि में उपयोग।	* गमले में लगा पौधा। * शीशे का जार। * पौधों और जंतुओं के जीवन के संबंध में शिक्षार्थियों के अनुभव। * प्लास्टिक बैग। * घर की रसोई के कचरे।	* जलयुक्त गमले में लगे पौधे को शीशे के जार से ढक कर दो दिनों के बाद पौधे की स्थिति का अवलोकन। * घरेलू कचरे, फल सब्जी आदि के छिलकों का सर्वेक्षण। * कचरों को सीधे मिट्टी में डालकर या उन्हें प्लास्टिक थैले में भरकर मिट्टी में डालने से उनमें होनेवाले परिवर्त्तनों का अवलोकन । * प्लास्टिक थैलों के ढेर के कारण नालियों में जल-जमाव का अध्ययन।

Scanned with CamScanner

वर्ग – VII

1. थीम (प्रकरण) : भोजन (Food)

उद्देश्य (**Objective**)

- पौधों का पोषण कैसे होता है, इनसे अवगत कराना।
- प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया की समझ विकसित करना।
- पाचन में सहायक तंत्रों, पाचन-प्रक्रिया तथा पाचन-संबंधी अन्य कारकों से परिचित कराना।

उपप्रकरण (**Sub theme**) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (**Concepts**)	संसाधन (**Resources**)	गतिविधियाँ (**Activities**)
पौधों में पोषण * पौधे किस प्रकार भोजन प्राप्त करते हैं? * क्या कुकुरमुत्ता खुद से भोजन निर्माण करता है?	* पौधों में पोषण के विभिन्न प्रकार –स्वपोषी, विषमपोषी परजीवी, मृतोपजीवी। * प्रकाश संश्लेषण।	* हरे पत्ते वाला पौधा, कुकुरमुत्ता, रंग-बिरंगी (variegated) पत्ती वाले पौधे, अमर बेल पौधे, अल्कोहल, आयोडिन घोल, किट मेटेरियल (kit materials)	* हरा पौधा, कुकुरमुत्ता तथा अमरबेल पौधों में अंतर स्पष्ट करना * प्रकाश संश्लेषण की क्रिया के लिए प्रकाश तथा हरी पत्ती आवश्यक है, इसके लिए प्रयोग प्रदर्शन करना।
भोजन का उपयोग * जन्तु किस प्रकार भोजन का उपयोग करते हैं? * गाय जुगाली क्यों करती है? * छिपकली कीटों को किस प्रकार खाती है?	* पोषण के प्रकार, अमीबा तथा मानव में पोषण। * पाचनतंत्र – मानव तथा जुगाली करनेवाले जन्तुओं का। * दांतों के प्रकार। * श्वसन तथा परिवहन में संबंध। * एंजाइम पाचन में सहायक। * पाचन-संबंधी बीमारियाँ	* मानव दाँत के प्रतिरूप। * पाचन-तंत्र का मॉडल/चार्ट। * अमीबा का मॉडल/चार्ट। * छिद्रयुक्त पेट (उदर) की कहानी।	* अमीबा का चार्ट/स्लाइड प्रदर्शन। * पास-पड़ोस में जुगाली करने वाले जंतुओं की सूची तैयार करना। * पाचन-तंत्र में विभिन्न एंजाइम तथा उनकी क्रियाओं की तालिका का निर्माण। * स्टार्च पर लार के प्रभाव का अध्ययन।

Scanned with CamScanner

2. थीम (प्रकरण) : वस्तुएँ/पदार्थ (Materials)

उद्देश्य (Objective)

- रेशा, इसकी प्राप्ति-विधि और इस पर पड़नेवाले प्रभावों से परिचित कराना।
- उष्मा, उष्मीय अवस्था तथा ताप (तापमान) की समझ विकसित करना। (वस्त्रों के सन्दर्भ में)
- पदार्थों की प्रकृति तथा रासायनिक अभिक्रिया के परिणाम की अवधारणा स्पष्ट करना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
दैनिक जीवन की वस्तुएँ * क्या कुछ वस्त्र जन्तु स्रोत से प्राप्त होते हैं? * ये जन्तु कौन-कौन से हैं? * इन्हें कौन पालता है? * जन्तु के किस भाग से रेशा प्राप्त होता है? * रेशे किस प्रकार निकाले जाते हैं? * कपड़े किस प्रकार हमें गर्म रखते हैं? * ठंढा और गर्म का क्या अर्थ है?	* ऊन, सिल्क-जन्तु रेशा। * सिल्क निकालने की विधि। * स्वास्थ्य सम्बंधी समस्या * ऊष्मा का प्रवाह (वस्त्रों के संदर्भ में) * ताप (वस्त्रों के संदर्भ में)	* ऊन, सिल्क धागा। भेड़ से ऊन प्राप्ति तथा सिल्क के कीड़े से सिल्क धागा निकालने की जानकारी। * पोटेशियम परमैग्नेट। * मेटल स्ट्रीप या रॉड (छड़)। * मोम, पिन, स्प्रीट लैम्प, दियासलाई, ग्लास, थर्मामीटर। ठंडा पानी, बर्फ, घड़ा।	* ऊनी और सिल्क के कपड़ों में अंतर का प्रदर्शन। * प्राकृतिक और कृत्रिम रेशों में अंतर के सम्बन्ध में बातचीत। * ऊन से स्वेटर तैयार करते हुए देखना अथवा खुद से तैयार करके समझना।
गर्मी देनेवाली वस्तुएँ * शरीर से उष्मा का प्रवाह वातावरण में तथा वातावरण से उष्मा का प्रवाह शरीर में कैसे होता है? इन परिस्थितियों में हम क्या अनुभव करते हैं? * सूर्य की रोशनी में गर्मी क्यों महसूस होती है?	* उष्मा, उष्मा-संचरण, ताप तथा इसकी माप। * उष्मा तथा तापमान में अंतर।	* थर्मामीटर, मोमबत्ती, दीप, दियासलाई आदि।	* गर्मी तथा ठंढ का अनुभव कराने हेतु प्रयोग एवं उष्मा के प्रवाह की व्याख्या एवं निष्कर्ष शिक्षार्थियों के द्वारा कराने में सहयोग। * मोमबत्ती अथवा दीप जला कर

Scanned with CamScanner

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
* उष्मा क्या है? * गर्म, गर्माहट, ठंडा का क्या मतलब है?			अवलोकन करना तथा उनसे प्राप्त उष्मा का अनुभव करना। * थर्मामीटर से शरीर का ताप मापना। * चालन, संवहन, और विकिरण की अवधारणा प्रयोग द्वारा स्पष्ट करना।
विभिन्न प्रकार के पदार्थ * हल्दी के धब्बे पर साबुन के प्रयोग से क्या होता है? * नींबू का रस खट्टा क्यों लगता है? * ओल तथा कंद खाने पर मुँह तथा जीभ पर इसका कैसा प्रभाव पड़ता है ?	* पदार्थों का अम्लीय, क्षारीय और उदासीन रूप में वर्गीकरण। * सूचक (Indicator)	* नींबू, ओल, कंदा । * चीनी, नमक, सिरका। * परखनली, ड्रायर, प्लास्टिक की छोटी शीशी आदि। * हल्दी, साबुन ।	* चीनी, नमक, सिरका, लाइम, जूस, सामान्य पदार्थों के विलयन, हल्दी, लिटमस (China rose) के साथ जाँच करना। * उदासीनता का प्रदर्शन। * हल्दी के घोल में साबुन का प्रयोग एवं प्रदर्शन ।

Scanned with CamScanner

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
पदार्थ कैसे परिवर्त्तित होते हैं/एक दूसरे से क्रिया करते हैं? • तावा, खुरपी, लोहे की छड़ कुदाल को आर्द्र स्थिति में छोड़ देने पर उनके ऊपर क्या जमा हो जाता है? • खुला हुआ छोड़ देने पर काटा गया बैगन या सेव काला क्यों हो जाता है? • समुद्री जल नमकीन क्यों होता है? • क्या समुद्र-जल से नमक प्राप्त किया जा सकता है?	• रासायनिक पदार्थ। • रासायनिक अभिक्रियाओं के परिणाम। • पदार्थों का पृथकीकरण-रवाकरण।	• बीकर, परखनली, स्प्रीट लैम्प, प्लेट, पेट्रीडीश, ड्रापर, पिन, सिरका, खाने वाला सोडा, कॉपर सल्फेट, यूरिया, फिटकरी (पोटाश एलम) आदि ।	• जंग लगने, उदासीनीकरण (सिरका और खाने वाला सोडा) का अवलोकन। • कॉपर सल्फेट से कॉपर का विस्थापन -प्रयोग प्रदर्शन। • रासायनिक सूत्र का उदाहरण सहित सामान्य परिचय। • यूरिया, पोटाश एलम, तूतिया आदि के अति संतृप्त विलयन से वाष्पीकरण द्वारा रवाकरण का प्रदर्शन। • कटे सेब और कटे बैगन की सतह पर होनेवाले परिवर्त्तन का अवलोकन।

3. थीम (प्रकरण) : सजीवों का संसार (The world of the living)

Scanned with CamScanner

उद्देश्य (Objective)

- जलवायु का जैव-अजैव पर पड़नेवाले प्रभावों का अभिज्ञान कराना।
- सजीवों में श्वसन की प्रक्रिया की समझ विकसित करना।
- पादप के विभिन्न प्रकार और उनमें होनेवाली क्रियाओं का बोध कराना।
- पादप में प्रजनन की क्रियाओं से अवगत कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
सजीवों पर परिवेश का प्रभाव * रेगिस्तान में रातें क्यों ठंडी होती हैं? * ग्रीष्म तथा शरद ऋतु किस प्रकार मिट्टी को प्रभावित करती है ? * क्या सभी मिट्टियाँ एक समान होती हैं? * क्या बालू से बर्त्तन तैयार किया जा सकता है? * जब आप मिट्टी खोदते हैं तो क्या हर स्तर पर मिट्टी एक समान होती है, * शरद ऋतु में पक्षी पंख को किस प्रकार रखते हैं? * जब पानी की धारा सीमेंटेड या खाली भूमि पर गिरती है तो क्या होता है?	* जलवायु। * मिट्टी के प्रकार, मिट्टी द्वारा जल का अवशोषण। * फसल के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी। * विभिन्न जलवायु में जंतुओं का अनुकूलन।	* समाचार पत्र-पत्रिकाओं से मौसम की जानकारी (ताप, आर्द्रता, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि के संदर्भ में) * सूर्य, पृथ्वी से सम्बन्धित आँकड़े-आकार, दूरी आदि।	* दैनिक ताप परिवर्त्तन और दिन की अवधि का ग्राफ तैयार करना। * विभिन्न प्रकार की मिट्टियों की जल धारण क्षमता का प्रायोगिक प्रदर्शन और निष्कर्षण। * विभिन्न प्रकार की मिट्टियों को भींगाकर उनके स्वरूप का अवलोकन तथा उसमें जल-धारण क्षमता का अवलोकन करना।
जीवों में श्वसन • क्या हम बिना साँस लिये हुए जिंदा रह सकते हैं? * मनुष्य और जीव-जंतु साँस क्यों लेते हैं?	• पौधों एवं जन्तुओं में श्वसन। • श्वसन के प्रकार (ऑक्सीजन तथा बिना ऑक्सीजन के)	• चूना जल (Lime water), अंकुरित बीज, किट मेटेरियल,	• थोड़ी देर नाक तथा मुँह बन्द करने के फलस्वरूप प्राप्त अनुभव का विवेचन। • खुद साँस छोड़कर

Scanned with CamScanner

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
• क्या पौधे भी साँस लेते हैं? • हम उच्छवास के द्वारा क्या छोड़ते हैं? • जल में पौधे एवं जन्तु किस प्रकार जीवित रहते हैं? **सजीवों में पदार्थों की गति** • पौधों में जल तथा भोजन का संवहन किस प्रकार होता है? • जन्तु पानी क्यों पीते हैं? • पसीना क्यों निकलता है? • हमारे शरीर के सभी भागों में रक्त पाया जाता है, क्यों और कैसे? • रक्त का रंग लाल क्यों होता है? • क्या सभी जानवरों में रक्त पाया जाता है? • पेशाब में क्या पाया जाता है? **पादप जनन** • पौधों (आलू, अदरक) के कुछ भाग फूले हुए क्यों होते हैं? • क्या इनके कुछ अन्य कार्य भी हैं? • पुष्प का मुंख्य कार्य क्या है? • बीज एवं फल का निर्माण कैसे होता है? • बीजों का प्रकीर्णन किस प्रकार होता है ?	• पादप के विभिन्न प्रकार-झाड़ी, पौधा, वृक्ष। • पादप में भोजन तथा जल का संवहन। • रक्त संचरण एवं उत्सर्जन तंत्र (जंतुओं में) । • पसीना निकलना। • पौधों में कायिक प्रजनन, लैंगिक तथा अलैंगिक प्रजनन। • परागण, स्वपरागण तथा परपरागण। • निषेचण, फल और बीज का बनना।	• रंगीन पानी, पौधा, वृक्ष की डाली, शीशे की जार, प्लास्टिक बैग, अंडा, चीनी, नमक, स्टार्च, बेनेडिक्ट घोल, $AgNO_3$ का घोल। • घड़ी, स्टैथो-स्कोप • Bryphyllum leaves, आलू, प्याज, अदरक, फूल, यीस्ट पाउडर (Yeast Powder), चीनी ।	उसकी गर्माहट महसूस करना। • बीज में श्वसन - श्वसन की क्रिया में ऊष्मा की विमुक्ति का प्रदर्शन। • बीजों के श्वसन की प्रायोगिक जाँच। • पौधों की जड़ों द्वारा जल का अवशोषण तथा तने में जल एवं भोजन के संवर्धन हेतु प्रयोगिक प्रदर्शन। • नाड़ी की धड़कन की गति की माप। • दौड़ने के बाद छाती की धड़कन की माप। • डायलेसिस पर चर्चा। • अंडे की झिल्ली का प्रयोग कर डायलेसिस का प्रदर्शन। • आलू के कायिक प्रजनन का प्रयोग। • यीस्ट में मुकुलन। • फूल के विभिन्न अंगों का अध्ययन। • कीटों द्वारा परागण की विधि पर चर्चा। • फल तथा बीज के विकास का अवलोकन ।

Scanned with CamScanner

			• फल तथा बीज--संग्रह करना तथा प्रकीर्ण की विभिन्न विधियों पर गौर करना।

4. थीम (प्रकरण) : गतिमान वस्तुएँ तथा विचार (Moving Things People and Ideas)

उद्देश्य (Objective)

- समय और इसकी माप की आवश्यकता की समझ विकसित करना।
- तीव्र और धीमी गति में अंतर-बोध कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
गतिमान वस्तुएँ * हमलोग घड़ी क्यों पहनते हैं? * लोगों को समय की माप की जरूरत क्यों महसूस होती है? * हम कैसे समझेंगे कि कोई वस्तु कितनी तीव्र गति से घूम रही है?	* समय और इसके माप की समझ। * आवृत्ति के आधार पर समय की माप। * गतिमान वस्तुओं की गति-सीधी रेखा पर तीव्र तथा धीमी।	* गति संबंधी प्रतिदिन के अनुभव, घड़ी, स्टॉपवाच, कलाई घड़ी, मीटर स्केल, धागा, पत्थर का छोटा टुकड़ा।	* जमीन, जल तथा आकाश में गतिमान वस्तुओं की तीव्र तथा धीमी गति के रूप में विश्लेषण। * सड़क पर दौड़ती वस्तु का किसी समय सीमा के अंतर्गत तय की गई दूरी का मापन और चाल की गणना। * समरूप चाल/गति की दूरी-समय के सापेक्ष ग्राफ का प्रदर्शन। * ज्ञात दूरी को तय करने में लगे समय के आधार पर उस गतिमान वस्तु की

Scanned with CamScanner

			गति की गणना करना। * सरल लोलक के आवर्त्तकाल का अवलोकन। (Observation of time period of a simple pendulum)

5. थीम (प्रकरण) : वस्तुएँ कैसे कार्य करती हैं? (How things work ?)

उद्देश्य (Objective)

- विद्युत-परिपथ के संकेतों का अभिज्ञान कराना।
- विद्युत-धारा के उष्मीय प्रभावों से अवगत कराना।
- विद्युत-धारा युक्त तार का चुम्बक पर पड़नेवाले प्रभाव और धारायुक्त कुंडली का चुम्बक जैसे व्यवहार करने का बोध कराना।
- विद्युत-फ्यूज और विद्युत-घंटी के कार्य-सिद्धांत की समझ विकसित करना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
विद्युत-धारा तथा परिपथ * हम एक विद्युत-परिपथ सुविधापूर्वक कैसे दिखा सकते हैं? * बल्ब जलने पर वह गर्म क्यों हो जाता है? * फ्यूज किस प्रकार कार्य करता है? * किस प्रकार विद्युत-धारा कम्पास की सूई की दिशा को प्रभावित करती है? * विद्युतीय चुम्बक क्या है? * विद्युत-घंटी किस प्रकार कार्य करती है?	* विद्युत-परिपथ के संकेत- परिपथ के विभिन्न अंगों हिस्सों के लिए। * विद्युत का उष्मीय प्रभाव। * विद्युत-धारायुक्त तार का चुम्बक पर पड़ने वाला प्रभाव। * धारावाही कुंडली चुम्बक जैसा कार्य करती है। * विद्युत-घंटी की कार्य-प्रणाली।	* तार, बल्ब, एलुमिनियम की पन्नी (Foil), बैट्री, कंपास, पेंसिल, पेपर, कुंडली, लोहे की काँटी, विद्युत-घंटी आदि।	* विद्युत-परिपथ को रेखा चित्र द्वारा प्रदर्शित करना। * विद्युत-धारा के संबंध में पूर्व की गतिविधियों का स्मरण करना। * विद्युत-धारा के उष्मीय प्रभाव का प्रायोगिक प्रदर्शन । * विद्युत प्रवाहित तार का चुम्बक पर पड़ने वाले प्रभाव का प्रदर्शन। * विद्युत चुम्बक बनाना। * विद्युत चुम्बक का दैनिक जीवन में व्यवहार किस

Scanned with CamScanner

			तरह होता है– इसका स्मरण/चर्चा। * फ्यूज बनाना। * विद्युत–घंटी की कार्य–प्रणाली का प्रदर्शन।

6. थीम (प्रकरण) : प्राकृतिक परिघटनाएँ (Natural Phenomenon)

उद्देश्य (Objective)

- प्राकृतिक घटनाओं, यथा वर्षा (बारिश), बिजली का चमकना और तड़ित का गिरना आदि से परिचित कराना।
- प्रकाश–किरणों के गमन एवं परावर्त्तन के व्यवहारों का अभिज्ञान कराना।
- प्रतिबिम्ब के बनने और उनकी प्रकृति से परिचित कराना।
- श्वेत प्रकाश के संघटन की समझ विकसित करना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
बारिश(वर्षा), बादल गर्जन तड़ित * वायु (air)और हवा (wind) में क्या अंतर है? * आँधी क्यों आती है? * इसका क्या प्रभाव पड़ता है? * आँधी से कभी–कभी घर की छतें क्यों उड़ जाती हैं या क्षतिग्रस्त हो जाती हैं?	* तेज हवा (आँधी) अतिवृष्टि का मानव/ जन्तु/पेड़–पौधों पर प्रभाव (संवाद के रूप में)	* प्राकृतिक आपदा संबंधी अनुभव, समाचार–पत्र तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचार की कटिंग तथा कहानियाँ (Narratives)।	* आँधी और अतिवृष्टि संबंधी अनुभव। * आँधी, अतिवृष्टि से होनेवाले नुकसान की सूची तैयार करना तथा फोटो–संग्रह करना। * आपस में तथा बड़ों से बातें करके आवश्यक जानकारियाँ हासिल करना। * पवन गति/पवन दिशा–सूचक उपकरण बनाना और प्रदर्शित करना।

Scanned with CamScanner

			* गतिमान हवा द्वारा किसी दूसरी वस्तु को उड़ाने का प्रदर्शन। * आँधी-तूफान के कुप्रभावों पर चर्चा और सम्भावित सुरक्षात्मक कदम।
प्रकाश (Light) * क्या हम मुड़ी हुई नलिका से किसी प्रकाश-स्रोत को देख सकते हैं? * किसी दीवाल पर सूर्य के प्रकाश को कैसे डाल सकते हैं?	* प्रकाश की सीधी रेखा में गमन। * प्रकाश का परावर्त्तन, कुछ खास सतहें प्रकाश को परावर्त्तित करती हैं।		* सीधी तथा मुड़ी हुई नलिका से प्रकाश स्रोत का अवलोकन । * दीवार या सफेद कागज पर प्रकाश के परावर्त्तन का अवलोकन।

7. थीम (प्रकरण) : प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources)

उद्देश्य (Objective)

- सजीवों के लिए जल के महत्त्व का बोध कराना और इसके उचित व्यवहार में लाने के प्रति सजग बनाना।
- वन सजीवों की आत्मा है, का एहसास कराना और इसके रख-रखाव के प्रति जागरूक बनाना।
- जल-निकासी के उचित प्रबंधन और इसकी साफ-सफाई का अभिज्ञान कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
जल का अभाव * घरेलू कार्यों के लिए आप पानी कहाँ से प्राप्त करते हैं? * क्या वह (जल) पर्याप्त होता है? * क्या कृषि की जरूरत के लिए	* जल प्रकृति में विभिन्न रूप में उपलब्ध है। * जल का दुरुपयोग-कारण और परिणाम।	* अनुभव, समाचार- पत्र, पत्रिकाओं, मीडिया द्वारा प्रकाशित/प्रसारित	* Case history-जहाँ पानी की कमी रहती है। ऐसी जगहों के लोग किस प्रकार पानी के प्रति

Scanned with CamScanner

पानी पर्याप्त है? * पौधों को जब पर्याप्त पानी नहीं मिलता है, तो इसका उस पर क्या प्रभाव पड़ता है? * पौधे जब सूख जाते हैं, तो उनका क्या होता है? * दैनिक जीवन में जल का किस तरीके से उपयोग करें कि जल कम खर्च हो?	विवेकपूर्ण व्यवहार * जल की कमी का जीवन पर असर, कारण (जनसंख्या तथा उनकी जरूरत के संदर्भ में)।	समाचार।	विवेकपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित करते हैं- दृष्टांत के साथ चर्चा। * परियोजना-कार्य, जल-स्रोत से संबंधित (बिहार के परिप्रेक्ष्य में)
वन उत्पाद * वन/जंगल से हमें कौन-कौन-से उत्पाद प्राप्त होते हैं? * क्या वन/जंगल से अन्य जीव भी लाभान्वित होते हैं? * क्या होगा यदि जंगल/वन पूर्णत: समाप्त हो जाएँ। **कचरा-प्रबंधन** * आपके घर का गंदा जल कहाँ जाता है? * क्या आपने जल-निकासी का नाला देखा है? * क्या नालों से जल का बहना कभी-कभी बाधित होता है? * इसका क्या प्रभाव पड़ता है? * क्या प्लास्टिक थैली का नालों में गिराना जल-जमाव का प्रमुख कारण है?	* वन/जंगल में पादप और जंतुओं की आपसी निर्भरता। * जल और वायु के शुद्धिकरण में वन/जंगल का योगदान। * आदिवासियों का वन- उत्पाद पर निर्भरता। * जल-निकासी के लिए नाली/मोरी की आवश्यकता। कारण - (प्लास्टिक थैली का व्यवहार एवं नालों में जल जमाव। * जल-जमाव का कुप्रभाव।	* एतद् संबंधी शिक्षार्थियों के अनुभव। * संबंधित फोटोग्राफ। * अवलोकन, अनुभव तथा एतद् संबंधी फोटोग्राफ/ चार्ट।	* वन/जंगल के उत्पादों की सूची बनाना और उन पर समूह चर्चा करना। * वन/जंगल की केस स्टडी। * उन क्षेत्रों की पहचान करना जहाँ नाले खुले हैं, उनमें पानी स्थिर हो गया हो और प्रदूषण की समस्या पैदा हो गई हो। * अपने घर के जल निकास का अवलोकन। * अपने गाँव/मुहल्ले के नालों का नजरी नक्शा बनाना और * उसकी (नालों की) खुली-खामी का पता लगाना। * भूमिगत जल का गंदे नालों द्वारा प्रदूषित होना-इस पर चर्चा।

Scanned with CamScanner

			* दूषित जल से होनेवाली बीमारियाँ और उनकी रोकथाम पर समूह-चर्चा।

वर्ग -VIII

1. थीम (प्रकरण) : भोजन (Food)

उद्देश्य (Objective)

- अच्छी उपज के कारकों से परिचित कराना।
- कृषि के संदर्भ में नाइट्रोजन स्थिरीकरण और नाइट्रोजन-चक्र के महत्त्व से अवगत कराना।
- खाद्य पदार्थ (भोजन-सामग्री) कैसे खराब हो जाती है, इसकी समझ विकसित करना तथा इनके संरक्षण की विधियों/तकनीकों से अवगत कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
फसल-उत्पादन * फसल-उत्पादन से आप क्या समझते हैं? * विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन किस प्रकार होता है? * जंतु-स्रोतों से कौन-कौन-से खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं? * अन्य कौन-कौन से स्रोतों से खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं?	* फसल उत्पादन! : भूमि (मिट्टी) की तैयारी, बीजों का चुनाव, बुआई, सिंचाई, उर्वरकों के प्रयोग, गुड़ाई, निकौनी, कटाई, गहाई, ओसाई, सफाई, भंडारण। * नाइट्रोजन स्थिरीकरण। * नाइट्रोजन-चक्र	* पास के खेत-खलिहान, बगान, नर्सरी, माल गोदाम, कोल्ड स्टोरेज आदि का भ्रमण * स्थानीय पुरुष और महिला किसानों से कृषि और कृषि संबंधी कार्यों पर बातचीत।	* बीजों और पौधों का संग्रहण-बातचीत और व्यवहार। * खाद्य पदार्थों और संबंद्ध स्रोतों के चार्ट बनाना। * फसली पौधे पौधों का हर्बेरियम तैयार करना। * देश के विभिन्न भागों के व्यवहारगत सिंचाई के तरीकों के चार्ट तैयार करना तथा उनपर चर्चा करना। * छीमीदार पौधों की जड़ की गाँठें (Nodules) तथा उनके काट (Section) का अवलोकन।

Scanned with CamScanner

सूक्ष्म जीव आपने दही का जमना देखा है? यह कैसे जमता है? भोज्य पदार्थों में खमीर कैसे बनता है? * भोजन क्यों खराब हो जाता है? * भोजन की सामग्री को खराब होने से कैसे बचाया जा सकता है? * क्या कोई ऐसा उपकरण है, जिसके प्रयोग द्वारा सूक्ष्म जीव देखे जा सकते हैं?	सूक्ष्म जीव - उपयोगी और हानिकारक। सूक्ष्म जीव और बीमारियाँ।	माइक्रोस्कोप किट सामग्री दही, पावरोटी, सड़े-गले पदार्थ। * भोजन संरक्षण संबंधी. चित्र/चार्ट।	बल्ब से लेंस बनाना तथा उसके प्रयोग द्वारा पानी की बूँद, दही, फफूँदी आदि में सूक्ष्म जीवों को अवलोकित करना। * गीले आटे में किण्वन का प्रदर्शन-आयतन में वृद्धि (यीस्ट का प्रयोग), फूँक कर गैस का बैलून में संग्रह और चूना-जल द्वारा उसकी जाँच करना।

2. थीम (प्रकरण) : पदार्थ/सामग्री/वस्तुएँ (Materials)

उद्देश्य (Objective)

- वस्त्र-उत्पादन संबंधी रेशों, विशेषकर संश्लेषित रेशों की विशेषताओं से परिचित कराना।
- विभिन्न प्रकार के पदार्थों की क्रियाओं तथा उनके उपयोगों से अवगत कराना ।
- धातु-अधातु के गुणों तथा उपयोगों की समझ विकसित करना।
- चीजें/वस्तुएँ कैसे परिवर्त्तित होती हैं, अभिक्रिया करती हैं का अभिज्ञान कराना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
हमारे दैनिक जीवन में पदार्थ * कपड़े किन पदार्थों से बनते हैं? * क्या हमारे कुछ कपड़े संश्लेषित (मानव निर्मित) धागों के बने होते हैं? * वस्त्र संबंधी कच्चे माल (Raw materials) कहाँ से प्राप्त होते हैं? * पहनने के अलावा कपड़ों के क्या अन्य उपयोग भी हैं? * आपके पास-पड़ोस में किस-किस प्रकार के रेशे/धागे पाये जाते हैं? वे किन-किन कार्यों में प्रयुक्त होते हैं?	* संश्लेषित रेशे-उदाहरण और वस्त्र- निर्माण में उपयोग। * अन्य संश्लेषित पदार्थ/ वस्तुएँ-रबर, प्लास्टिक, फाइबर आदि। * प्लास्टिक की उपयोगिता और इनके अत्यधिक	* विभिन्न प्रकार के रेशों से बने कपड़ों के नमूने, खिलौने, दैनिक जीवन में काम आनेवाली अन्य वस्तुएँ। * पास-पड़ोस से रेशेदार चीजों का संकलन या इन वस्तुओं के नमूनों	* वस्त्रों की निर्माण-सामग्री के संबंध में समूह-चर्चा। * विभिन्न प्रकार के रेशों से बने वस्त्रों की गुणवत्ता/ विशेषताओं की जाँच -जल, उष्मा ज्वाला का प्रभाव, विद्युत चालकता, उष्मीय चालकता की तथा तनन शक्ति

Scanned with CamScanner

	उपयोग से उत्पन्न समस्याएँ। * उपयोगिता एवं अपेक्षित गुणों के आधार पर उनका व्यवहार के लिए चयन।	को किट मैटेरियल के हिस्से में लाना।	(Tensile strenght) की जाँच/परीक्षण। * संश्लेषित रेशों से निर्मित वस्तुओं का पास-पड़ोस में सर्वेक्षण।
विभिन्न प्रकार के पदार्थ और उनकी क्रियाएँ * तार किस पदार्थ का बना होता है? * क्या लकड़ी का तार संभव है? * बिजली का तार किस पदार्थ (धातु) का बना होता है? क्या मोटा तार से पतला तार बनाया जा सकता है? * क्या तांबा या एलुमिनियम धातु पर लौह धातु की तरह जंग लगता है? * आपके आसपास और कौन-कौन-सी वस्तुएँ उपलब्ध हैं और वे किन पदार्थों से बनी हैं? * पेंसिल के अंदर वाली काली चीज किस पदार्थ की बनी होती है? * विद्युत (बिजली) के तार ताम्बे या एलुमिनियम के ही क्यों बनाये जाते हैं? * दैनिक जीवन में काम आनेवाली कुछ धातुओं के नाम बतायें तथा उनसे बनी कुछ वस्तुओं के भी नाम बतायें।	• धातु तथा अधातु के भौतिक-रासायनिक गुण तथा उपयोगिता।	• आसपास में मौजूद विभिन्न वस्तुओं में प्रयुक्त पदार्थ।	• धातुओं एवं अधातुओं के भौतिक गुणों का अवलोकन। * धातुओं के रासायनिक गुणों का अध्ययन। * विस्थापन अभिक्रिया का अवलोकन-कॉपर सल्फेट के घोल में जस्ते की प्लेट डालकर। * विभिन्न पदार्थों पर अम्ल एवं क्षार के प्रभाव का अध्ययन। * रासायनिक समीकरण का शाब्दिक परिचय।
चीजें कैसे परिवर्त्तित होती हैं/ अभिक्रया करती हैं			

Scanned with CamScanner

* ईंधन किसे कहते हैं? * मोमबती (कैंडिल) के जलने पर, उसके मोम में क्या परिवर्त्तन होता है? * किरोसीन/प्राकृतिक गैस को जलाने पर क्या होता है? * कौन-सा ईंधन उत्तम है और क्यों?	* ईंधन के प्रकार और स्रोत * दहन, ज्वाला (Flame) ईंधनों से उष्मा की प्राप्ति। * ईंधनों की दक्षता/ गुणवत्ता में अंतर। * ईंधनों के मूल्य। * ईंधन के दहन-क्रम में हानिकारक पदार्थों का निकलना-प्रदूषण की समस्या। * प्राकृतिक संसाधनों का सीमित भंडार।	* मोम का रासायनिक इतिहास-एम॰ फराडे (1860)। * विभिन्न प्रकार के ईंधनों का संकलन- नमूना स्वरूप।	* मोमबत्ती की भौतिक विशेषताओं का विश्लेषण और चर्चा। * जलती मोमबत्ती में होने वाले परिवर्त्तनों का अवलोकन। * आदर्श ईंधन के गुणों का विश्लेषण * प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग पर वाद-विवाद / पक्ष-विपक्ष।

3. थीम प्रकरण : सजीवों का संसार (The world of living)

उद्देश्य (Objective)

- जीव-जंतुओं की सुरक्षा और उनके प्राकृतिक आवासों के संरक्षण की आवश्यकता का बोध कराना।
- जंतु और पादप कोशिकाओं की संरचना से अवगत कराना।
- जीवन की निरंतरता से संबद्ध पक्षों, यथा-प्रजनन, प्रजनन-तंत्र आदि से परिचित कराना तथा जनसंख्या स्थिरीकरण के प्रति संवेदित करना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
जैव विविधता का संरक्षण * आरक्षित जंगल/अभ्यारण्य से आप क्या समझते हैं? * हमलोग पेड़-पौधों और जंतुओं को कैसे सुरक्षित रख सकते हैं?	* जैव विविधता/ जंगली जीव/पौधे का संरक्षण। * जैविक उद्यान, आरक्षित वन/ जंगल आदि। * विशिष्ट क्षेत्र के	* जंगली जीवों पर आधारित फिल्म, टी॰ वी॰ कार्यक्रम * जैविक उद्यान/ जंगली क्षेत्र/	* सुरक्षित स्थान, जैसे-पार्क, फार्म में लगी फसलों की तुलना में असुरक्षित स्थानों के पेड़-पौधों के संबंध में

Scanned with CamScanner

* हम यह कैसे जानते हैं कि पौधे/ जंतुओं की कुछ प्रजातियाँ खतरे में हैं? * क्या होगा यदि लोग लगातार वृक्षों को काटते जाएँ?	वनस्पति एवं जन्तु (फ्लोरा एवं फाउना), संकटग्रस्त प्रजातियाँ, रेड डाटा बुक आदि। * स्थानीय प्रजातियाँ प्रवासन (migration)	अभ्यारण्य आदि का भ्रमण। * कुछ प्रजातियों की समाप्ति (विलुप्त) संबंधी केस स्टडी। * MEF/NGOs भारत सरकार के आँकड़े- स्थानीय एवं संकटग्रस्त प्रजातियों से संबंधित।	बातचीत। * जंगली जीवों के विलुप्तीकरण (depletion) के संबंध में बातचीत। * अवैध शिकार (Poaching)-ऐसा क्यों होता है-इस पर संवेदनापूर्ण बातचीत।
कोशिका (Cell) * क्या आपने कभी अपने शरीर, पेड़-पौधे के भागों, जैसे-पत्ती, फूल को लेंस से तथा सूक्ष्मदर्शी से देखा है? * क्या इन सबकी संरचना समान दिखाई पड़ती है या इनमें कोई अंतर होता है? * क्या आप उस यंत्र/उपकरण से परिचित हैं, जिसका उपयोग सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तुओं/संरचना को देखने में होता है?	* कोशिका-रचना एवं कार्य। * रंजक-केन्द्रक, रिक्तिकाएँ, कोशिका झिल्ली, कोशिका भित्ति, हरित लवक आदि। * पादप और जंतु कोशिका में अंतर।	* सूक्ष्मदर्शी, प्याज की झिल्ली, मुख गुहा के अन्दर की गाल की खुरचन, किसी पत्ती की बाहरी छाल, दलपुंज, स्पाइरोगाइरा, पादप के तने, जड़ का अनुप्रस्थ काट का स्थायी स्लाइड, जन्तु के छोटी आँत के अनुप्रस्थ काट का स्थायी स्लाइड ।	* सूक्ष्मदर्शी के प्रयोग द्वारा उत्तक कोशिका, रक्त के धब्बे को देखना। * प्याज के छिलके, गाल की खुरचन, तने का टी॰ एस॰ में उत्तक का अध्ययन। * पौधे एवं जंतुओं की विभिन्न प्रकार की कोशिकाएँ देखना और उनकी संरचना में अंतर समझना। * स्पाइरोगाइरा, हाइड्रिला की कोशिका को देखने में रंजक का प्रयोग।
जीवन की निरंतरता * पौधे और जीव-जंतुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी कैसे होती है? * माता के गर्भ के अन्दर शिशु का विकास कैसे होता है? * बच्चे का लिंग-निर्धारण	* जीवन की निरंतरता-लैंगिक तथा अलैंगिक प्रजनन। * अंतस्त्रावी ग्रंथियाँ (endocrine system in animal)। * मानव-प्रजनन-तंत्र।	* फिल्म * परामर्शी (काऊंसलर) * फोटो * जीवन-चक्र चित्र/चार्ट।	* वार्त्तालाप-जीवन-चक्र, बच्चे के उम्र बढ़ने के साथ उसमें होनेवाले शारीरिक और व्यवहारगत परिवर्त्तन। * लिंग-निर्धारण, प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी

Scanned with CamScanner

कैसे होता है? * क्या सभी जीव-जंतु वंशवृद्धि के क्रम में बच्चे ही पैदा करते हैं?	* किशोरावस्था-बढ़ते वय के साथ शारीरिक बदलाव। * द्वितीयक लैंगिक लक्षण। * प्रजनन स्वास्थ्य * बाह्य और आंतरिक निषेचन। * लिंग-निर्धारण		जागरूकता। * लिंग भेद-सामाजिक सोच पर परिचर्चा। * खेल के माध्यम से किशोरावस्था को समझना।

4. थीम प्रकरण : गतिमान वस्तुएँ, लोग एवं विचार (Moving things, People and Idea)

उद्देश्य (Objective)

- बल की परिभाषा, परिमाण और प्रकार से अवगत कराना।
- घर्षण को प्रभावित करनेवाले कारक, परिस्थितियाँ और उसके लाभ-हानि से परिचित कराना।
- दाब के विभिन्न पक्षों, यथा-अवधारणा, माप और उसके प्रभावों की समझ विकसित करना।
- ध्वनि-उत्पादन, स्रोत, प्रकार और ध्वनि प्रदूषण का अभिज्ञान करना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
बल की समझ * जब हम किसी वस्तु को खींचते या ढकेलते हैं तो क्या होता है? * क्या होता है, जब किसी वस्तु पर बल लगाया जाता है? * किसी वस्तु की गति और दिशा में किस प्रकार परिवर्त्तन किया जा सकता है? * क्या करने से किसी वस्तु के आकार में परिवर्त्तन हो सकता है? * एक चुम्बक को लोहे के टेबुल पर से उठाने और उसी चुम्बक को लकड़ी के टेबुल पर से उठाने में क्या समान परिमाण में बल लगेगा?	* बल की अवधारणा-खींचने और धकेलने के रूप में। * बल का परिमाण-वस्तु की गति, दिशा और आकार में परिवर्त्तन। * बल के प्रकार-संपर्क और असंपर्क बल (contact and non-contact forces)।	* बल के संबंध में दैनिक जीवन में प्राप्त अनुभव। * किट-सामग्री।	* दैनिक जीवन में बल और गति संबंधी घटनाओं का अवलोकन, विश्लेषण तथा विवेचना। * गतिमान वस्तु की चाल और दिशा में परिवर्त्तन का प्रदर्शन। * वस्तु के आकार में बल लगाकर परिवर्त्तन प्रदर्शित करना। * कमानीदार तुला द्वारा किसी वस्तु के भार की माप ज्ञात करना। * चुम्बक द्वारा बल का प्रदर्शन

Scanned with CamScanner

घर्षण * समतल सतह पर लुढ़कते गेंद की गति क्रमशः घटती जाती है और अंततः वह गेंद रुक जाती है, क्यों? * ढलान पर से गेंद, माचिस का डिब्बा और डस्टर एक साथ छोड़ा जाए तो इनमें कौन सबसे पहले नीचे आएगा और क्यों?	* घर्षण को प्रभावित करने वाले कारक। * सर्पी (sliding) और लुढ़कन (rolling) घर्षण। * घर्षण के लाभ और हानि–गाड़ी, साइकिल, नाव, जलयान, वायुयान आदि के संदर्भ में विवेचना। * घर्षण को बढ़ाना–घटाना (सोदाहरण)	* गेंद, डस्टर, माचिस का डिब्बा और नत तल, बाल–बियरिंग।	* रुखड़ी, चिकनी तथा ढालुवाँ सतह पर घर्षण के प्रभाव का अध्ययन। * घर्षण के बढ़ाने–घटाने की आवश्यकता पर सोदाहरण चर्चा। * बॉल–बियरिंग का प्रदर्शन–इसके कार्य (लाभ के संदर्भ में) पर चर्चा। * गतिमान वस्तुओं के घिसने के कारण टूटना–फूटना (उदाहरण) * पेपर, कार्ड–बोर्ड पर लिखे हुए/चिह्नों को मिटाना।
दाब * पिन नुकीला बना होता है, क्यों? * अधिक हवा भरने पर बैलून क्यों फट जाता है? * उल्टे गिलास/घड़ा को पानी में डालने पर कठिनाई होती है, क्यों? * पानी से भरी बाल्टी जबतक पानी के अंदर होती है, हल्की लगती है, लेकिन पानी की सतह से बाहर आते ही भारी लगने लगती है क्यों?	* दाब की अवधारणा। * वायु तथा द्रव द्वारा लगनेवाला दाब। * वायु मंडलीय दाब। * उत्प्लवन बल। * वस्तुओं का प्लवन।	* दाब के संबंध में दैनिक जीवन के अनुभव। * कामचलाऊ मैनोमीटर और दाब मापी (बैरोमीटर)। * पानी, गिलास, कागज आदि।	* वस्तु की सतह घटा–बढ़ा कर घटते–बढ़ते दाब का अनुभव करना। * विभिन्न स्थितियों में दाब आधारित प्रयोगों का प्रदर्शन। * वायु दबाव डालती है, का प्रदर्शन। * एक कामचलाऊ मैनोमीटर बनाना और दाब मापने में उसका उपयोग करना। * एक कामचलाउ दाबमापी (प्रेसर डिटेक्टर) बनाना

Scanned with CamScanner

* पानी से लबालब भरे गिलास के ऊपर कागज का एक टुकड़ा डालकर उलटने पर क्या होता है? ध्वनि * ध्वनि के द्वारा संप्रेषण कैसे होता है? * ध्वनि कैसे उत्पन्न होती है? * विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ क्या हैं? विभिन्न प्रकार की ध्वनियों में किस आधार पर विभेद किया जाता है? * कैसी ध्वनि अप्रिय और अनापेक्षित होती है? * ध्वनि प्रदूषण क्या है?	* ध्वनि के विभिन्न प्रकार- सुरीली ध्वनि, कर्कश ध्वनि ... आदि। • ध्वनि के स्रोत • कंपन-ध्वनि उत्पादन का कारण। * आवृत्ति/बारंबारता। * ध्वनि के गमन के लिए माध्यम आवश्यक।	* ध्वनि संबंधी दैनिक जीवन के अनुभव। * किट सामग्री। * वाद्य यंत्र * स्वरित द्विभुज फॉर्क आदि।	और द्रव की विभिन्न गहराइयों में उस पर पड़ने वाले दाब का अवलोकन करना। * टेबुल पर/बरतन पर ठोककर, ट्यूनिंग फॉर्क द्वारा, मुँह से बोलकर बाँसुरी के प्रयोग द्वारा ध्वनि उत्पन्न करना और सुरीली, कर्कशध्वनि और शोर के रूप में उन्हें वर्गीकृत करना। * श्रव्य-अश्रव्य ध्वनियों के उदाहरण देना। * एक ही स्रोत का व्यवहार कर विभिन्न
ध्वनि प्रदूषण से बचना जरूरी है, क्यों?	* शोर (कर्कश ध्वनि) -अप्रिय और अनापेक्षित ध्वनि को कम करने की आवश्यकता। * श्रव्य और अश्रव्य ध्वनि। * ध्वनि प्रदूषण से होनेवाली हानियाँ		प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न करना। * कंपन ध्वनि उत्पादन का कारण हैं--इसका अवलोकन (जल तरंग, तबला आदि के प्रयोग द्वारा)। * खिलौना, टेलिफोन का निर्माण। * यह पता लगाना कि आपके पास-पड़ोस में किन-किन कारणों से शोर उत्पन्न होता है, उनकी सूची बनाना तथा उन्हें कम करने का प्रयास करना।

Scanned with CamScanner

5. थीम प्रकरण : वस्तुएँ कैसे कार्य करती हैं ? (How things work ?)

उद्देश्य (Objective)

- विद्युत के चालक और कुचालक द्रवों की पहचान करना।
- विद्युत-धारा के रासायनिक प्रभावों की समझ विकसित करना।
- विद्युत-लेपन (इलेक्ट्रोप्लेटिंग) की प्रक्रिया से अवगत होना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
विद्युत-धारा और विद्युत परिपथ * भींगे हाथ से जब हम किसी विद्युत प्रवाहित हो रहे विद्युत उपकरण को छूते हैं तो विद्युत का झटका क्यों लगता है? ऐसा करने से क्या खतरा हो सकता है? * जब विद्युत चालक किसी विलयन से विद्युत-धारा प्रवाहित करायी जाती है तो क्या होता है? * किसी वस्तु पर किसी धातु की परत कैसे चढ़ाई जा सकती है?	* विद्युत चालक द्रव- अम्लीय जल, लेमन जूस, नमक का घोल * विद्युत कुचालक द्रव- शुद्ध जल/डिस्टिल्ड वाटर, किरोसिन आदि। * विद्युत-धारा के रासायनिक प्रभाव। * विद्युत लेपन (इलेक्ट्रोप्लेटिंग) का सामान्य ज्ञान।	* रबर कैप, पिन, जल बल्ब, सीसा/लेड, सेल, विभिन्न प्रकार के द्रव पदार्थ, कार्बन छड़, बीकर, बैट्री, कामचलाऊ इलेक्ट्रोलेटिक सेल, तृतिये का घोल।	* विभिन्न द्रवों जैसे- नल का पानी, नमकीन जल, लेमन जूस, डिस्टिल्ड वाटर, किरोसिन, तनु नमकाम्ल/ गंधकाम्ल आदि से विद्युत-धारा प्रवाहित कर उनकी विद्युत चालकता, विद्युत कुचालकता का पता लगाना। * नमकीन घोल से गैस का निकलना, कॉपर सल्फेट ($CuSO_4$) के घोल से तांबा (Cu) का जमा होना, पोटैशियम आयोडाइड और स्टार्च के घोल के साथ इलेक्ट्रिक पोल(इलेक्ट्रोड)- विद्युत-धारा के रासायनिक प्रभावों

Scanned with CamScanner

			का अध्ययन। * इलेक्ट्रोप्लेटिंग की घटना का सरल प्रयोग/प्रदर्शन।

6. थीम (प्रकरण) : प्राकृतिक घटनाएँ (Natural phenomena)

उद्देश्य (Objective)

- वर्षा के समय होनेवाली घटनाओं, जैसे- बिजली का चमकना, बादलों का गरजना और तड़ित का गिरना जैसी घटनाओं के घटित होने के कारणों की समझ विकसित करना।
- प्रकाश के परावर्त्तन से संबंधित घटनाओं, जैसे- प्रतिबिंब का बनना, किसी वस्तु को देखना, प्रकाश का बिखरना आदि की वैज्ञानिकता से परिचित कराना तथा परावर्त्तन के नियम और आँख की बनावट को समझने की योग्यता विकसित करना।
- आकाशीय पिंडों को पहचानने और उनकी गतिविधियों को समझने की कुशलता विकसित करना। साथ ही भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा के कारणों को जानने तथा उससे निपटने की कुशलता विकसित करना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
वर्षा, बिजली का चमकना और बादलों की गर्जन/तड़ित * तड़ित क्या है? * तड़ित के आघात से बचने के लिए सुरक्षात्मक उपाय क्या किया जाना चाहिए?	* बादलों का विद्युत आवेशित होना। * धन और ऋण आवेश। * विद्युत आवेशों में आकर्षण-विकर्षण। * तड़ित चालक का सिद्धान्त	* बादल और तड़ित पर आधारित सामग्री। * किट-सामग्री। * कंघी, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े और सूखे बाल।	* बादलों के गरजने और तड़ित के गिरने की घटनाओं पर समूह-चर्चा। * धन और ऋण आवेशों के प्रदर्शन हेतु कंघी, बाल और कागज का प्रयोग। * तड़ित चालक पर वार्त्ता।
प्रकाश * नये चमकते तथा पुराने धुंधले बरतनों पर बने प्रतिबिंबों में अंतर। * ऐसे अंतर का क्या कारण है?	* परावर्त्तन के नियम।		* प्रकाश के परावर्त्तन के नियमों की जाँच करना। * ग्लास शीट और मोमबत्ती के प्रयोग द्वारा परावर्त्तित

Scanned with CamScanner

* जब आप अपना प्रतिबिंब दर्पण में देखते हैं तो आपके चेहरे का दायाँ भाग बायें की ओर बायाँ भाग दायें की ओर दिखाई पड़ता है, ऐसा क्यों? * सभी सतहों पर प्रतिबिंब नहीं बनते हैं, क्यों? * किसी वस्तु को देखने में कौन-सी चीज सहायक है? * हम अपने शरीर के पिछले भाग का प्रतिबिंब दर्पण में कैसे देख सकते हैं? * जल पर के वॉयल फिल्म्स पर कभी-कभी अनेकों रंग	* समतल दर्पण पर बनने वाले प्रतिबिंब की प्रकृति। * नियमित और बिखरित (diffused) परावर्तन। * किसी वस्तु से प्रकाश का परावर्तित होकर आँखों पर पड़ना। * बहु परावर्त्तन एवं बहु परावर्त्तन की घटना। * प्रकाश का बिखरना (Dispersion of light)	* दर्पण प्रकाश स्रोत, किरण स्रोत (mirror covered with black paper with a thin slit) सममतल दर्पण, मोमबत्ती, स्केल * अनुभव, सीधी और मुड़ी हुई ट्यूब। दर्पण तथा जिस वस्तु को देखा जाना है। * समतल दर्पण, जल।	प्रतिबिंबों का अवलोकन। * विभिन्न उदाहरणों पर चर्चा। * प्रकाश किरणें सीधी रेखा में गमन करती हैं पर आधारित प्रयोग (सीधी और मुड़ी हुई ट्यूब से क्रमशः प्रकाश स्रोत को देखना। * कई समतल दर्पणों के प्रयोग द्वारा। * एक केलिडोस्कोप बनाना। * 45° कोण पर जल की सतह पर झुके समतल दर्पण द्वारा कागज के
दिखाई पड़ते हैं। ऐसा क्यों? * हमारी आँख में क्या है, जिसके कारण हम देख पाते हैं। * क्यों कुछ लोग देखने में असमर्थ होते हैं?	* आँख की संरचना। * आँख के लेंस का अपारदर्शक हो जाना, प्रकाश का आँख तक नहीं पहुँच पाना। ऐसे लोग जो आँख से नहीं देख पाते, उनकी अंतः करण	* मानव आँख का मॉडल या चार्ट। * दृष्टि संबंधी शिक्षार्थियों के अनुभव। * केस हिस्ट्री। * ब्रेल शीट का नमूना।	सफेद शीट पर या दीवाल पर बने स्पेक्ट्रम का अवलोकन। * चमकती टॉर्च पर आँख की पुतली की अनुक्रिया का अवलोकन। * आँख के प्यूपिल (pupil) की प्रतिक्रिया का अवलोकन (blindspot) का प्रदर्शन। ऐसे अंधे व्यक्तियों का इतिहास/कार्य/

Scanned with CamScanner

	(अंत:चेतना) द्वारा देखना। * वैकल्पिक तकनीकी की उपलब्धता ब्रेल लिपि । * अंधापन के संबंध में पोषण की भूमिका।		सामाजिक योगदान जो आँखयुक्त व्यक्तियों से श्रेष्ठ हो, का दृष्टान्त और उनके बारे में विवरण * ब्रेल शीट के साथ गतिविधि।
रात्रि आकाश * रात में हम आकाश में क्या देखते हैं? * तारे और ग्रहों की पहचान हम कैसे कर सकते हैं?	* आकाशीय पिंडों की जानकारी और उनका वर्गीकरण- चाँद, ग्रह, तारे, तारामंडल (Constellation)। * आकाशीय पिंडों का अंतरिक्ष (space) में गमन। * सौर-जगत्।	दिन और रात में आकाशीय पिंडों को देखने का अनुभव। * सौर-जगत् का मॉडल, चार्ट, रोल प्ले आदि। * प्लेनेटोरियम (तारामंडल)	* आकाशीय पिंडों का अवलोकन करना। * कुछ महत्त्वपूर्ण तारों एवं तारामंडल का अवलोकन * कुछ दृश्य ग्रहों का अवलोकन। * सौर-जगत् और तारामंडल का मॉडल/चार्ट तैयार करना। * पृथ्वी का सूर्य की परिक्रमा का रोल-प्ले करना।
भूकंप * भूकंप के समय क्या होता है? * इसके प्रभाव को कम करने के लिए क्या किया जा सकता है?	* भूकंप होने का कारण और इस आपदा से बचने के प्रयास।	* भूकंप के आँकड़े। * सिस्मोग्राफिक केन्द्र का परिभ्रमण।	* भूकंप के प्रभाव के विभिन्न पक्षों पर चर्चा। * स्थायी एवं अस्थायी रचनाओं की जाँच पड़ताल सम्बंधी गतिविधियाँ।

Scanned with CamScanner

7. थीम (प्रकरण) : प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources)

उद्देश्य (Objective)

- प्राकृतिक संसाधनों पर मानव-अतिक्रमण से उत्पन्न चिंतनीय स्थिति का एहसास कराना।
- प्राकृतिक संसाधनों की सीमा से अधिक दोहन के दुष्परिणाम का बोध कराना।
- प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण व्यवहार की दृष्टि विकसित करना।
- वायु और जल प्रदूषण के कारण और निवारण की समझ विकसित करना।

उपप्रकरण (Sub theme) और परिचयात्मक प्रश्न	अवधारणाएँ (Concepts)	संसाधन (Resources)	गतिविधियाँ (Activities)
प्राकृतिक संसाधनों पर मानव का अतिक्रमण * लकड़ी से हम क्या-क्या करते हैं ? * अगर हमारे पास लकड़ी नहीं होती तो क्या होता? * अगर हम जंगलों को लगातार काटते जायें तो अंतत: क्या होगा?	* जंगलों की कटाई के दुष्परिणाम-मानव और अन्य जीवों के लिए उत्पादों का अभाव, भूमि के भौतिक गुणों में परिवर्त्तन, वर्षा की मात्रा का घटना। * फिर से जंगल लगाना-कागज का पुन: चक्रण।	* जंगलों की कटाई संबंधी आँकड़े और जंगलों की सुरक्षा के लिए अभियान ।	* जंगलों की कटाई संबंधी कथाएँ/ कहानियाँ और इस पर चर्चा। * प्रोजेक्ट-पेपर का पुन: चक्रण।
* कोल और पेट्रोलियम का हम क्या करते हैं? * क्या कृत्रिम तरीकों से हम कोल और पेट्रोल सृजित कर सकते हैं?	* प्रकृति में कोल और पेट्रोलियम का बनना। जीवाश्म इंधन (fossil fuel) * कोल और पेट्रोलियम की अधिक निकासी का दुष्परिणाम।	* चार्ट आदि।	* कोल और पेट्रोलियम का प्रकृति में बनना और अधिक निकासी पर समूह-चर्चा।
वायु और जल का प्रदूषण * मानव की कौन-कौन-सी गतिविधियाँ हैं, जो वायु-प्रदूषण में सहायक है? * जल-प्रदूषण के मुख्य कारण क्या-क्या हैं?	* वायु और जल का प्रदूषण और इनका क्रमश: अनुपयुक्त होते जाना-कारण और निवारण।	* अत्यधिक वायु और जल प्रदूषित स्थल।	* केस स्टडी और परिचर्चा। * भौतिक और रासायनिक विधियों (सूर्य के प्रकाश के व्यवहार सहित) द्वारा जल का शुद्धिकरण।

Scanned with CamScanner

* क्या जल का साफ और पारदर्शी दिखाई पड़ना उसकी शुद्धता का परिचायक है ?	* जल का जैविक और रसायनिक संदूषण * अशुद्ध जल की मिट्टी में आवश्यकता से अधिक उपस्थिति और जल-स्त्रोतों पर उर्वरक और कीड़े मारने की दवा का प्रभाव। भूमि जल, पेयजल। * मिट्टी में उर्वरकों का अधिक उपयोग करने से मिट्टी, जल स्त्रोतों यथा भूमिजल, पेय जल इत्यादि पर प्रभाव।	* जल-शुद्धिकरण की अन्य विधियों पर चर्चा।

Scanned with CamScanner

विज्ञान के पाठ्यक्रम हेतु सहायक पाठ : हमारे वैज्ञानिक

वर्ग VI हेतु :- थीम (प्रकरण) : भोजन में

भातीय वैज्ञानिक **'जीवक'** -- इनकी जीवनी ।

वर्ग VII हेतु :- थीम (प्रकरण) : वस्तुएँ कैसे कार्य करती है?

भातीय वैज्ञानिक **-डॉ॰ के॰ एस॰ कृष्णन :** भारतीय भौतिक के चहुँमुखी विकास के लिए कृष्णन का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है ।

थीम (प्रकरण) :- सजीवों का संसार

भारतीय वैज्ञानिक - **सर जगदीश चन्द्र बसु :** पेड़-पौधों के दुख-दर्द, खुशी और हर उस संवेदनशीलता को सिद्ध किया है, जितना मनुष्य महसूस करते हैं ।

वर्ग VIII हेतु :- थीम (प्रकरण) : भोजन

भारतीय वैज्ञानिक - **'रेवण' :** सैकड़ों वर्ष-पूर्व उनके द्वारा प्रतिपादित कृषि विज्ञान संबंधी सिद्धान्त आज भी मान्य है।

थीम (प्रकरण) :- प्राकृतिक संसाधन :

भारतीय वैज्ञानिक **-डॉ॰ एम॰ विश्वेश्वरैया :** पानी-की व्यवस्था जिसमें स्वचालित जल द्वारा और सिंचाई की खण्ड पद्धति भी शामिल है, में वैज्ञानिक तरीकों के आविष्कार ने उनको मौलिक ख्याति दिलाई।

नोट : (1) वर्ग VI से VIII तक के सहायक पाठ में एक-एक अथवा दो-दो वैज्ञानिकों की अभिनव उपलब्धियाँ सम्मिलित की जानी हैं।

(2) वर्ग VI से VIII तक के प्रकरण एवं उपप्रकरण से संबंधित परियोजना कार्य की सूची शिक्षक द्वारा तैयार करना अपेक्षित है ।

(3) विद्यालय में इको-क्लब तथा साईंस-क्लब की भी व्यवस्था होनी चाहिए । बाल-विज्ञान काँग्रेस में वर्ग VIII के बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित होनी चाहिए ।

Scanned with CamScanner

न्यूनतम संवाद अवधि तालिका

वर्ग - VI

अध्याय	प्रकरण	उप-प्रकरण	न्यूनतम संवाद अवधि(घंटा में)	न्यूनतम संवाद अवधि(घंटी में)
1-	भोजन	भोजन के स्रोत	05	07
		भोजन के अवयव	05	07
		स्वास्थ्य एवं स्वच्छता	05	07
		फसल से अन्न की प्राप्ति	08	12
2	पदार्थ, वस्तुएँ	दैनिक जीवन की वस्तुएँ	05	08
		विभिन्न प्रकार के पदार्थ	05	08
		पदार्थ में परिवर्त्तन क्रिया, अभिक्रिया	08	12
3-	सजीवों का संसार	आस-पास की वस्तुएँ	04	06
		सजीवों के वास-स्थान	06	09
		पौधों की संरचना एवं कार्य	08	12
		जन्तुओं की संरचना एवं कार्य	08	12
4-	गतिमान वस्तुएँ, लोग और विचार	गति	04	06
5-	वस्तुएँ कैसे कार्य करती हैं ?	विद्युत-धारा तथा परिपथ	05	08
		चुम्बक	05	08
6-	प्राकृतिक परिघटनाएँ	वर्षा, बादल, गर्जन, तड़ित	04	06
		प्रकाश	08	12
7-	प्राकृतिक संसाधन	जल का महत्त्व	04	06
		हवा का महत्त्व	04	06
		कचरा	04	06
		योग	**105** घंटे	**158** घंटियाँ

* न्यूनतम आवंटित घंटियाँ(प्रति सप्ताह) - 06
* न्यूनतम संवाद अवधि 105 घंटे जिसमें 40 मिनट की 158 घंटियाँ होंगी ।
* न्यूनतम संवाद अवधि के अतिरिक्त शेष शिक्षण-अधिगम अवधि(साप्ताहिक/वार्षिक) का उपयोग शिक्षक अपने स्तर से शिक्षार्थियों की दक्षता वृद्धि के लिए करेंगे । यथा पुनरावृत्ति, उपचारात्मक शिक्षा (रिमेडियल क्लासेस), परियोजना-कार्य, संवर्धन, अभ्यास व अन्य ।

Scanned with CamScanner

न्यूनतम संवाद अवधि तालिका
वर्ग - VII

अध्याय	प्रकरण	उप-प्रकरण	न्यूनतम संवाद अवधि(घंटा में)	न्यूनतम संवाद अवधि(घंटी में)
1-	भोजन	पौधों में पोषण	06	09
		भोजन का उपयोग	06	09
2	पदार्थ, वस्तुएँ	दैनिक जीवन की वस्तुएँ	06	09
		गर्मी देने वाली वस्तुएँ	06	09
		विभिन्न प्रकार के पदार्थ	06	09
		पदार्थ कैसे परिवर्त्तित होते हैं, एक दूसरे से क्रिया करते हैं ?	06	09
3-	सजीवों का संसार	सजीवों पर परिवेश का प्रभाव	06	09
		जीवों में श्वसन	05	07
		सजीवों में पदार्थ की गति	05	07
		पादप जनन	06	09
4-	गतिमान वस्तुएँ, लोग और विचार	गतिमान वस्तुएँ	04	06
5-	वस्तुएँ कैसे कार्य करती हैं ?	विद्युत-धारा तथा परिपथ	07	12
6-	प्राकृतिक परिघटनाएँ	वर्षा, बादल, गर्जन, तड़ित	06	09
		प्रकाश	08	12
7-	प्राकृतिक संसाधन	जल का अभाव	07	11
		वन उत्पादन	07	11
		कचरा प्रबंधन	07	11
		योग	**105 घंटे**	**158 घंटियाँ**

* न्यूनतम आवंटित घंटियाँ (प्रति सप्ताह) - 06
* न्यूनतम संवाद अवधि 105 घंटे जिसमें 40 मिनट की 158 घंटियाँ होंगी ।
* न्यूनतम संवाद अवधि के अतिरिक्त शेष शिक्षण-अधिगम अवधि(साप्ताहिक/वार्षिक) का उपयोग शिक्षक अपने स्तर से शिक्षार्थियों की दक्षता वृद्धि के लिए करेंगे । यथा पुनरावृत्ति, उपचारात्मक शिक्षा (रिमेडियल क्लासेस), परियोजना-कार्य, संवर्धन, अभ्यास व अन्य ।

Scanned with CamScanner

न्यूनतम संवाद अवधि तालिका

वर्ग - VIII

अध्याय	प्रकरण	उप-प्रकरण	न्यूनतम संवाद अवधि (घंटा में)	न्यूनतम संवाद अवधि(घंटी में)
1-	भोजन	फसल उत्पादन	08	12
		सूक्ष्म जीव	05	07
2	पदार्थ, वस्तुएँ	हमारे दैनिक जीवन के पदार्थ	07	11
		विभिन्न प्रकार के पदार्थ और उनकी	05	08
		क्रियाएँ ।	05	08
		चीजें कैसे परिवर्त्तित होती हैं ?		
3-	सजीवों का संसार	जैव विविधता का संरक्षण	03	04
		कोशिका	07	12
		जीवन की निरंतरता	09	13
4-	गतिमान वस्तुएँ,	बल की समझ	05	08
	लोग और विचार	घर्षण	05	07
		दाब	05	08
		ध्वनि	05	08
5-	वस्तुएँ कैसे कार्य करती हैं ?	विद्युत-धारा तथा परिपथ	06	09
6-	प्राकृतिक	वर्षा, बिजली का चमकना और	04	06
	परिघटनाएँ	बादलों का गर्जन	09	13
		प्रकाश	05	07
		रात्रि आकाश	03	04
		भूकम्प		
7-	प्राकृतिक संसाधन	प्राकृतिक संसाधनों पर मानव का	05	07
		अतिक्रमण	04	06
		वायु और जल का प्रदूषण		
		योग	**105 घंटे**	**158 घंटियाँ**

* न्यूनतम आवंटित घंटियाँ(प्रति सप्ताह) - 06
* न्यूनतम संवाद अवधि 105 घंटे जिसमें 40 मिनट की 158 घंटियाँ होंगी ।
* न्यूनतम संवाद अवधि के अतिरिक्त शेष शिक्षण-अधिगम अवधि(साप्ताहिक/वार्षिक) का उपयोग शिक्षक अपने स्तर से शिक्षार्थियों की दक्षता वृद्धि के लिए करेंगे । यथा पुनरावृत्ति, उपचारात्मक शिक्षा (रिमेडियल क्लासेस), परियोजना-कार्य, संवर्धन, अभ्यास व अन्य ।

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन

अध्यापक को प्रत्येक अध्याय (प्रकरण) की समाप्ति के बाद मौखिक या लिखित रूप में पाठ्य मूल्यांकन हेतु एक जाँच-परीक्षा लेनी चाहिए जिसमें परियोजना-कार्य अवश्य सम्मिलित हों । वर्ग VIII के लिए परियोजना कार्य अनिवार्य रूप से लागू किया जाना चाहिए । उसके आधार पर शिक्षार्थी / शिक्षार्थियों को उचित मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए । यदि अधिकांश शिक्षार्थी समुचित जवाब नहीं दे रहे हैं, तो उस अध्याय की पुनरावृत्ति के बाद ही आगे अध्याय की शुरुआत करनी चहिए और कमजोर शिक्षार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Classes) की भी व्यवस्था होनी चाहिए । शिक्षार्थियों के क्रिया-कलापों में सहभागिता के आधार पर शिक्षकों द्वारा उनका मूल्यांकन करना चाहिए ।

Scanned with CamScanner

समाज विज्ञान

कक्षा : VI से VIII

प्रस्तावना :

बिहार की स्कूली शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम-निर्माण में बिहार प्रान्त के परिवेश, आधारभूत शैक्षिक ढाँचे और उपलब्ध संसाधन, प्रांत का गौरवशाली इतिहास, प्रांतीय जरूरतों और जनमानस का ख्याल रखा गया है एवं उन्हें जगह दी गयी है । यह पाठ्यक्रम शिक्षकों, विषय विशेषज्ञों द्वारा निर्मित एक ऐसा दस्तावेज है जिसमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ई॰ की खुशबू तो है ही, स्थानीय दृष्टिकोण की भी झलक है और इसी आलोक में बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों की शिक्षा को 'बिना बोझ पढ़ाई की सोच' के साथ नया स्वरूप प्रदान करने की कोशिश की गयी है । पाठ्यक्रम-निर्माण के समय शिक्षार्थियों का दृष्टिकोण, शिक्षकों की क्षमता और उपलब्ध साधन को भी ध्यान में रखा गया है ताकि वर्ग कक्ष में चीजें न तो उबाऊ हों और न ही बिखरी हुईं । हमारा यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को 'सीखने' का पर्याप्त अवसर देगा । पाठ्यक्रम में विषय-वस्तु का चुनाव और संयोजन इस तरह किया गया है कि वे व्यवहारिक जीवन से जुड़ी हुई हों और शिक्षार्थियों के मानसिक-सामाजिक परिवेश से मेल खाती हो । इसके अतिरिक्त प्रत्येक चरण अपने अगले और पिछले चरण से समन्वय करता हुआ नजर आता है, इसलिए निरंतरता का प्रवाह दिखता है और किसी भी स्तर पर रिक्तता की गुंजाइश नहीं दिखती है । इसके अलावा विषय-वस्तु का उद्देश्य या अधिगम प्रतिफल के अतिरिक्त कक्षा में उपयोग किए जा सकने वाले संसाधनों एवं तरीकों का भी जिक्र किया गया है । यह पाठ्यक्रम शिक्षकों के लिए निर्देशिका का कार्य करेगा । सामाजिक विज्ञान के तहत इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र एवं अर्थशास्त्र जैसे विषय स्कूली शिक्षा में पढ़ाये जाते रहे हैं । 6वीं कक्षा से शिक्षार्थियों के लिए विषयवार पाठ्यक्रम उपर्युक्त विशेषताओं के साथ तैयार किये गये हैं लेकिन प्राथमिक कक्षाओं तक उन्हें पर्यावरण शिक्षा : समाज विज्ञान के तहत ही रखा गया है ।

कक्षा 6 से कक्षा 12 तक समाज विज्ञान को अलग-अलग विषयों में बाँटा गया है - इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और नागरिकशास्त्र ।

Scanned with CamScanner

I - इतिहास

भूमिका

कक्षा 6 से कक्षा 8 के शिक्षार्थियों को प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक के भारतीय इतिहास से परिचित कराने का प्रयास किया गया है ताकि शिक्षार्थियों को अपने देश के अतीत की क्रमबद्ध जानकारी प्राप्त हो सके ।

वर्ग 6 के पूर्व इतिहास का अध्ययन सामाजिक विज्ञान के रूप में है । वर्ग 6 से एक अलग विषय के रूप में इतिहास को रखा गया है । वर्ग 6 तक, शिक्षार्थियों में तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है, अतः इतिहास को भी उसी रूप में शिक्षार्थियों के सामने रखने का प्रयास किया गया है । वर्ग 6 में इतिहास के अन्तर्गत अतीत का ज्ञान, क्या, कब, कहाँ और कैसे के रूप में कराया गया है । प्रारंभिक समाज से लेकर जीवन के विभिन्न आयामों से गुजरते हुए, सुदूर प्रदेशों से सम्पर्क साधते हुए नये साम्राज्य एवं राज्य की अवधारणा को क्रमबद्ध रूप में शिक्षार्थियों के सामने रखा गया है । जानकारी देने में 'From Near to Far' के सिद्धान्त को अपनाया गया है । इन सारे पाठों के माध्यम से शिक्षार्थियों में इतिहास की क्रमबद्ध समझ, कल्पना तथा तर्क करने की शक्तियों का विकास होगा । प्रदेश की मिटट्री से उपजे कई प्रवर्त्तकों जैसे - बुद्ध, महावीर, सम्राट अशोक जैसी महान् विभूतियों से बच्चे अवगत होंगे ।

वर्ग VII में पाठ की क्रमबद्धता को जारी रखते हुए मध्यकालीन इतिहास को अध्ययन का केन्द्र रखा है । राजनैतिक एवं सैनिक-विजयों, प्रशासनिक संरचना में बदलाव, सल्तनत एवं मुगल कालीन साम्राज्यों का उत्थान-पतन, वास्तुकला, तात्कालिक सामाजिक संरचना, सामासिक संस्कृति, क्षेत्रीय संस्कृतियों का उत्कर्ष एवं 18वीं शताब्दी में नई राजनीतिक संरचनाओं को ज्ञान कराने हेतु 750 AD से इसकी शुरुआत की गई है । इन पाठों के माध्यम से बच्चे मध्यकालीन भारतीय समाज का अपने ढंग से अध्ययन एवं विश्लेषण कर भारत के बहुआयामी स्वरूप को आत्मसात् कर सकेंगे ।

वर्ग VIII में क्रमबद्धता एवं निरंतरता के साथ भारतीय इतिहास का आधुनिक स्वरूप शिक्षार्थियों के सामने रखा गया है । भारत में कम्पनी शासन की स्थापना, भारत में ब्रिटिश सत्ता के सुदृढ़ीकरण, ब्रिटिश शासन एवं शिक्षा, उपनिवेशवाद एवं कबीलाई समाज ग्रामीण समाज की संरचना, शहरीकरण एवं नये शहरों का उदय, महिलाओं की स्थिति एवं सुधार, राष्ट्रीय आंदोलन जिसमें 1857 ई॰ की क्रांति में बिहार के विद्रोह को आधार बनाया गया है । इसके पश्चात् स्वातंत्र्योत्तर भारत के क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय विकास को रखा गया ताकि बच्चे अन्य देशों के साथ भारत के संबंधों की जानकारी लें एवं अपने सपनों के भारत हेतु भारत के नव-निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ायें ।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य

(i) इतिहास अध्ययन के महत्त्व को समझना ।

(ii) इतिहास की शुरुआत कहानी के रूप में न करके कब, क्यों और कैसे के रूप में ।

(iii) ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण, पर्यटन, फिल्में, मानचित्रों को प्राथमिकता ।

(iv) राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ-साथ प्रान्तीय दृष्टिकोण को प्राथमिकता ।

(v) इतिहास को उसके नैतिक मूल्यों से जोड़कर पढ़ाना ।

(vi) पुरातात्विक साक्ष्यों को संग्रहालय से जोड़ना ।

(vii) सामाजिक (syncretic) संस्कृतियों के मिलाप से समन्वित संस्कृति एवं समाज की रचना ।

(viii) सामाजिक एवं लैंगिक समस्याओं की पहचान एवं सकारात्मक दृष्टिकोण

(ix) समाज एवं राष्ट्रप्रेम ।

(x) देश के भावी कर्णधारों को प्रशिक्षित करने के लिए विश्लेषण, वर्त्तमान की व्याख्या ।

शिक्षण-विधि

विभिन्न आयुवर्ग के शिक्षार्थियों के लिए अलग-अलग शिक्षण विधियाँ अपनायी जानी चाहिए । षष्ठ वर्ग से अष्टम वर्ग के शिक्षार्थियों के लिए अपनायी जानेवाली शिक्षण विधि :

इतिहास मानव विकास की कहानी है । विभिन्न महापुरुष एवं घटनाएँ ही इतिहास का निर्माण करती हैं । इन महापुरुषों एवं घटनाओं के विषय में बतलाने हेतु कथात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाना चाहिए । छोटी कक्षाओं में यह अत्यंत लाभदायक सिद्ध होती है, अतएव इस विधि का प्रयोग प्रारंभिक स्तर पर अवश्य किया जाना चाहिए । किन्तु इस विधि का प्रयोग करते समय शिक्षकों को कुछ सावधानी भी बरतनी चाहिए ।

1- कहानी कभी भी पुस्तक से पढ़ी न जाय, बल्कि यह सुनाई जाए ।

2- जिस ऐतिहासिक तथ्य से कहानी सम्बन्धित हो, अध्यापक को उसका पूर्ण ज्ञान होना चाहिए ।

3- कहानी काल-क्रम के अनुसार होनी चाहिए ।

इस विधि के प्रयोग से शिक्षार्थियों में इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न होती है, उनमें कल्पनाशक्ति का विकास होता है, उनकी जिज्ञासा की पूर्त्ति होती है, जिससे वे जिज्ञासु बने रहते है ।

मूल्यांकन-प्रक्रिया :

नवीं पाठ्यक्रम में संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनोक्रियात्मक तीन पक्षों का मूल्यांकन सीखने के क्रम में सतत करने के साथ-साथ सावधिक मूल्यांकन करने की बात की गयी है क्योंकि मूल्यांकन सीखने एवं सिखाने का मापदण्ड है । मौखिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रश्न पूछना, शिक्षार्थियों के द्वारा विषय विशेष में प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति (विषयगत जानकारी), परियोजना

Scanned with CamScanner

कार्य, सामाजिक गतिविधियों में उनकी रुचि एवं संलिप्तता कक्षा के सामुहिक कार्यों में शिक्षार्थियों की रुचि तथा उनकी सहभागिता, वाद-विवाद, वार्त्तालाप इत्यादि को आधार बनाया जाएगा । शैक्षिक-भ्रमण के दौरान उनकी रुचियों तथा उनके द्वारा इसकी लिखित रपट, पर्यावरणीय एवं राजनैतिक घटनाओं में उनकी रुचि आदि को भी आधार बनाया जा सकता है ।

(क)

वर्ग	मूल्यांकन प्रक्रिया	मौखिक
V -VIII	70»	30»
IX-XII	80»	20»

(ख) मूल्यांकन के लिखित परीक्षा के लिए प्रश्नों के स्वरूप की अनुशंसा :-

वर्ग	प्रश्नों के प्रकार			
	वस्तुनिष्ठ (बहुविकल्पीय)	एक पंक्ति के उत्तर वाले प्रश्न	लघु प्रश्न दो/तीन वाक्यों वाले प्रश्न	दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
III-V	50%	25%	25%	
VI-VIII	40%	25%	25%	10%
IX - X	40%	20%	20%	20%
XI - XII	20%	20%	20%	40%

(ग) परीक्षा दो स्तरों पर आयोजित होगी ।

(अ) आन्तरिक/विद्यालय स्तरीय (ब) सार्वजनिक

(घ) सार्वजनिक परीक्षा केवल विद्यालीय (माध्यमिक तक की शिक्षा)) शिक्षा के समाप्ति पर हो । जिसमें समाज-विज्ञान के अन्तर्गत लिखित परीक्षा 80 प्रतिशत की होगी तथा विद्यालय 20 प्रतिशत का विषयगत मौखिक मूल्यांकन करेगा जिसके अन्तर्गत कई प्रकार की ऊपरलिखित गतिविधि आधारित शिक्षार्थियों की उपलब्धियों के आधार पर प्राप्तांक दिए जाएँगे । परीक्षाफल दोनों लिखित एवं मौखिक के योग पर कल्पित किया जाएगा ।

(ङ) विद्यालयीय परीक्षा के अन्तर्गत तीन सावधिक परीक्षाएँ होगी जिसमें प्रश्नों का प्रतिशत पढ़ाए गए पाठ से निम्नवत् होगा ।

परीक्षा		प्रश्नों का प्रतिशत
प्रथम सावधिक	-	पढ़ाए गए पाठ से शतप्रतिशत
द्वितीय सावधिक	-	प्रथम सावधिक परीक्षा से पूर्व पढ़ाए गए पाठ से 30 प्रतिशत तथा बाद में पढ़ाए गए पाठ से 70
तृतीय सावधिक	-	प्रथम सावधिक परीक्षा तक पढ़ाए गए पाठ से 10 प्रतिशत + द्वितीय सावधिक परीक्षा तक पढ़ाए गए पाठ से 20 प्रतिशत (प्रथम सावधिक परीक्षा तक को छोड़कर) +70 प्रतिशत अन्तिम या तृतीय सावधिक परीक्षा तक पढ़ाए गए पाठ से ।

Scanned with CamScanner

परीक्षाफल

परीक्षाफल की तैयारी में विद्यालय से आयोजित तीनों सावधिक परीक्षाएँ महत्त्व रखती हैं । अतः परीक्षाफल में अन्तिम सावधिक परीक्षा में शिक्षार्थियों द्वारा अर्जित कुल प्राप्तांक का 60 प्रतिशत तथा प्रथम एवं द्वितीय सावधिक परीक्षाओं में शिक्षार्थियों द्वारा अर्जित कुल प्राप्तांकों का अलग-अलग 20-20 प्रतिशत जोड़कर शिक्षार्थी के इस वर्ष की मेधा की गणना होगी ।

सत्र/परीक्षा

अन्तिम परीक्षा मार्च में आयोजित होगी तथा परीक्षाफल मार्च माह में ही प्रकाशित कर दिया जाए, ताकि अप्रैल के प्रथम सप्ताह में नामांकन की प्रक्रिया सम्पन्न कर लिया जाए तथा पठन-पाठन का कार्य अप्रैल के दूसरे/तीसरे सप्ताह से आरम्भ किया जा सके ।

सत्र अप्रैल से मार्च रखा जाना है ।

शिक्षक के लिए वह उपलब्ध संसाधन जहाँ वह पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यसामग्री तलाश सकते हैं ।

पाठ्यक्रम

वर्ग - VI

इकाई	पाठ्य-वस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1. हमारा अतीत	इतिहास विषय का परिचय	इतिहास अध्ययन के महत्त्व को समझना	
2. क्या,कब,कहाँ और कैसे ?	अध्ययन काल (तिथि) का निर्धारण, भौगोलिक रुपरेखा इतिहास लेखन के स्त्रोत ।	कालक्रम को समझना, स्थान विशेष को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जानना एवं स्त्रोतों को समझना ।	विश्व के भौगोलिक नक्शे से शिक्षार्थियों को परिचित कराना ।
3- प्रारंभिक समाज	आरंभिक मानव की शिकारी प्रवृत्ति-खाद्य संग्राहक जीवन-शैली और उसका प्रभाव प्रस्तर औजारों का अविष्कार एवं प्रयोग संदर्भ अध्ययन -बिहार का प्राक् इतिहास बहुत ही समृद्ध है और इसकी जानकारी	पुरातात्विक साक्ष्य के रूप में पत्थर की वस्तुओं की पहचान कराना । आरंभिक समाज की विभिन्न प्रथाओं एवं परम्पराओं से शिक्षार्थियों को अवगत कराना ।	विभिन्न प्रकार के पुरातात्विक साक्ष्य जैसे पत्थर की बनी वस्तुएँ एवं औजार ।

Scanned with CamScanner

	बच्चों को From near to far के सिद्धांत पर देना है ।		
4- प्रथम कृषक एवं पशुपालक	कृषि एवं पशुपालन का प्रारंभ फसल, पशु-धन, आवास, मिटट्री के बर्त्तन, कब्रों इत्यादि के संबंध में पुरातात्विक साक्ष्य विषय अध्ययन- पश्चिमोत्तर भारत ।	आरंभिक मानव के घरेलू जीवन के आवश्यकताओं और उनकी पूर्त्ति की जानकारी बच्चों को देना, मानवनिर्मित स्थायी बस्तियों में भौतिकवाद के प्रारंभ का विश्लेषण करना ।	विभिन्न ऋतुओं से उत्पन्न होनेवाली फसलों से शिक्षार्थियों को परिचित कराना, दूध, गोबर एवं पशुचर्म की उपादेयता पर प्रकाश डालना । कुम्भकार के पास ले जाकर बर्तन एवं मूर्त्ति बनाने की कला से शिक्षार्थियों को परिचित कराना ।
5- प्रारंभिक शहर प्रथम नगरीकरण	हड़प्पा संस्कृति का विकास वास्तुकला की विशेषताएँ शिल्पकला एवं समाज का विकास धार्मिक जीवन नगरीकरण का अर्थ, संदर्भ- पश्चिमोत्तर भारत ।	प्राचीन शहरी जीवन की विशिष्टताओं से परिचित कराना, नगरीय केन्द्रों के पुरातात्विक साक्ष्यों को चिह्नित करना । पुरातात्विक साक्ष्यों की सहायता से हस्तनिर्मित वस्तुओं का विश्लेषण ।	स्थानीय या अन्य उपलब्ध संग्रहालयों का भ्रमण ।
6- जीवन के विभिन्न आयाम	वेद एवं वेदों की शिक्षा एक समकालीन ताम्रपाषाण युगीन बस्ती केस अध्ययन- पश्चिमोत्तर भारत ।	वैदिक सभ्यता की विशेषताओं एवं वेदों की महत्ता से शिक्षार्थियों को अवगत कराना वैदिक जीवन के साथ-साथ अन्य सभ्यताओं एवं उनके आपसी संबंधों से अवगत कराना ।	आरुणि, नचिकेता आदि से सम्बन्धित उपनिषदों की कक्षाओं से शिक्षार्थियों को परिचित कराना ।

Scanned with CamScanner

7. प्रारंभिक राज्य	द्वितीय शहरीकरण, महाजनपदों का उत्कर्ष, राजतंत्र एवं गणतंत्र ।	प्राचीन भारत में राज्य एवं इसके विभिन्न रूपों से अवगत कराना । प्राचीन शासन व्यवस्था । मगध साम्राज्य एवं लिच्छिवि गणराज्य।	प्राचीन गणराज्यों में स्थित संग्रहालयों का भ्रमण ।
8. नये प्रश्न, नवीन विचार ।	उपनिषद् एवं उसकी शिक्षा । बौद्ध धर्म, बुद्ध की जीवनी एवं शिक्षा । जैनधर्म-महावीर की जीवनी एवं शिक्षा ।	उपनिषदों, महावीर एवं बुद्ध की शिक्षाओं से परिचित कराना ।	राजगीर, पाटलिपुत्र, बोधगया एवं वैशाली की महत्ता से शिक्षार्थियों को परिचित कराना । यदि हो सके तो इन दोनों स्थानों का भ्रमण कराना ।
9. प्रथम साम्राज्य	साम्राज्य का विस्तार सम्राट अशोक मौर्य प्रशासन	साम्राज्य की अवधारणा से परिचित कराना । अशोक के धम्म में निहित मानव-मूल्यों से शिक्षार्थियों को परिचित कराना । मौर्यकालीन प्रशासनिक संरचनाओं से शिक्षार्थियों को परिचित कराना ।	अशोक के शिलालेखों/अभिलेखों का प्रत्यक्ष दर्शन । अशोक से संबंधित संग्रहालयों का भ्रमण । धम्म में निहित मानव मूल्यों से शिक्षार्थियों को परिचित कराना ।
10. शहरी एवं ग्राम्य जीवन ।	मोर्यात्तर कालीन भारतीय जीवन कृषि एवं व्यापार का विकास संगम कालीन व्यापार एवं जीवन ।	प्राचीन मूर्त्तिकला, सिक्कों के प्रचलन एवं लिखित स्रोतों का इतिहास के अध्ययन में प्रयोग को रेखांकित करना ।	तत्कालीन सिक्कों का अध्ययन ।

Scanned with CamScanner

		संगम काल तक आर्थिक जीवन को विश्लेषित करना ।	
11-सुदूर प्रदेशों से सम्पर्क ।	सुदूर प्रदेशों के विजेता, अशिक्षयोलार भारत से संबंध, बौद्ध धर्म का विस्तार, उत्तर भारत से मध्य एशिया तक कला एवं स्थापत्य का विकास ।	दूरस्थ प्रदेशों से सम्पर्क के विभिन्न आयामों को समझना, योग के महत्व को रेखांकित करना । इससे लिखित एवं दृश्य स्रोतों का उपयोग समझना ।	कुशीनगर, लुम्बिनी, वैशाली, पावापुरी, राजगृह का भ्रमण । संग्रहालय-पटना, नवादा एवं गया ।
12- नये साम्राज्य एवं राज्य	गुप्त साम्राज्य, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त हर्षवर्द्धन, पल्लव एवं चालुक्य । नालन्दा विश्वविद्यालय एवं कुमारगुप्त ।	इस युग के राजनैतिक एवं सैन्य संगठन की जानकारी साम्राज्य विस्तार की रणनीति के स्वरूप को समझ विकसित करना। प्रशस्ति एवं चरित्रों का प्राचीन इतिहास के अध्ययन स्रोतों के रूप में समझना ।	अपने क्षेत्र के संग्रहालय में उपलब्ध गुप्तकालीन सिक्कों एवं कला सामग्रियों का शिक्षार्थियों द्वारा अवलोकन । नालंदा का भ्रमण ।
13-संस्कृति एवं विज्ञान	साहित्य (पुराण महाकाव्य) शिल्पकला, मूर्तिकला, चित्रकला विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	लिखित एवं दृश्य स्रोतों के अध्ययन के प्रति समझ विकसित करना, इनके विश्लेषण एवं मूल्यांकन की क्षमता बढ़ाना । मौर्योत्तर कालीन प्रशासनिक संरचना को समझना । प्राचीन भारत की जीवन शैली को समझना, सभ्यता के विकास को क्रमिक रूप से समझना ।	Project work, Excursion, Demonstration

Scanned with CamScanner

14- हमारे इतिहासकार श्री के. पी. जयसवाल, प्रो. ए. एस. आल्तेकर	जीवन रचनाएँ	प्राचीन भारत के इतिहास लेखन की समझ पैदा करना ।	

VI

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1	-	02	-	1 घंटा 20 मिनट
2	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
3	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
4	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
5	-	07	-	4 घंटा 40 मिनट
6	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
7	-	07	-	4 घंटा 40 मिनट
8	-	07	-	4 घंटा 40 मिनट
9	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
10	-	04	-	2 घंटा 40 मिनट
11	-	04	-	2 घंटा 40 मिनट
12	-	07	-	4 घंटा 40 मिनट
13	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
14	-	04	-	2 घंटा 40 मिनट
		योग : 72		48 घंटा

Scanned with CamScanner

वर्ग - VII

इकाई	पाठ्यवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1- कहाँ, कब, कैसे ? मध्यकालीन भारतीय उपमहाद्वीप के सन्दर्भ में मानचित्र प्रदर्शन काल-निर्धारण स्त्रोतों का अध्ययन ।	मध्यकालीन भारतीय उपहाद्वीप को मानचित्र द्वारा प्रदर्शित करना तथा नयी शब्दावली से परिचित कराना । काल निर्धारण को रेखांकित करना, मुख्य परिवर्त्तनों को दर्शाना स्त्रोतों पर संक्षिप्त चर्चा ।	परिवर्त्तित नामों से शिक्षार्थियों को अवगत कराना । प्रमुख ऐतिहासिक झुकावों (Trends) की चर्चा । स्त्रोतों में, ऐतिहासिक ग्रन्थ, स्थापत्य कला, चित्रकला, यात्रावृत्तांत, संगीत, साहित्य, शिलालेख, सिक्कों, और अन्य अभिलेखों को स्पष्ट करना ।	प्राचीन भारत एवं मध्यकालीन भारत के मुख्य अन्तरों की एक चार्ट के माध्यम से प्रस्तुति ।
2- नये राज्य एवं राजाओं का उदय ।	700 AD से 1200 AD के बीच के राजनैतिक हलचलों का रेखांकन, सामन्तवाद का प्रचलन । विषय अध्ययन-काल तमिल क्षेत्र में कृषि विस्तार सहित । गुर्जर प्रतिहार, राष्ट्रकुट, पाल सेन एवं गजनवी इत्यादि राजवंशों का अध्ययन, तुर्कों का आगमन ।	राजनैतिक एवं सैन्य विजयों, प्रशासनिक संरचना में बदलाव से उत्पन्न परिवर्त्तनों से परिचित कराना । तुर्कों के भारत आगमन की परिस्थितियों से अवगत कराना, तत्कालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक अवस्था से परिचित कराना ।	बिहार के विभिन्न हिस्सों में पाये जाने वाले पालकालीन मूर्त्तियों का शिक्षार्थियों द्वारा अवलोकन ।

Scanned with CamScanner

इकाई	पाठ्यवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
3- तुर्क अफगान शासक	कुतुबुदद्ीन, इल्तुतमिश बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, मोहम्मद बिनतुगलक, फीरोजशाह सैय्यद और लोदीवंश ।	सल्तनत की स्थापना एवं सुदृढ़ीकरण साम्राज्य विस्तार एवं प्रशासनिक सुधार ।	विभिन्न ऐतिहासिक लेखों यथा अलबरूनी के यात्रा-वृत्तान्तों के दृष्टान्त । संग्रहालयों एवं पुस्तकालयों का भ्रमण ।
4- मुगल-साम्राज्य एवं अफगान पुनर्स्थापना	बाबर, हुमायूँ, शेरशाह सूरी, अकबर, जहाँगीर, नूरजहाँ, शाहजहाँ, औरंगजेब, मुगल साम्राज्य का पतन ।	मुगल-साम्राज्य का भारतीय समाज में मिलन, शेरशाह के प्रशासनिक सुधारों से अवगत कराना । मुगल-साम्राज्य का विस्तार एवं अन्य शासकों से संबंध प्रशासन तंत्र एवं कृषि की स्थिति । मुगल-साम्राज्य के पतन के कारण ।	शैक्षिक भ्रमण ऐतिहासिक पुस्तकों का अवलोकन, दृष्टान्त, चित्र उदाहरण ।
5- शक्ति के प्रतीक के रूप में वास्तुकला, किले एवं धार्मिक स्थल ।	देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग स्थापत्य कला शाहजहाँ द्वारा कला एवं स्थापत्य को दिए गए संरक्षण का विशेष अध्ययन	पूजा-स्थलों, महलों, किलों इत्यादि के निर्माण में विभिन्न सामग्रियों एवं अभियंत्रण कौशल के प्रयोग का बोध कराना । समकालीन इतिहास-लेखन में भवनों, अभिलेखों आदि की उपयोगिता का रेखांकन	Education Tours, visit of monuments संग्रहालयों का भ्रमण

Scanned with CamScanner

इकाई	पाठ्यवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
6- शहर, व्यापारी और कारीगर	विविध शहरी केन्द्र, दरबारयुक्त नगर, धार्मिक स्थल, बंदरगाह एवं व्यापारिक केन्द्र । अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं इसमें पूर्वी भारत की भूमिका । केस अध्ययन-पटना, हुबली ।	आर्थिक प्रगति और उससे प्रभावित ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया को समझना । नगरों के उत्थान एवं नगरीय जीवन की विशेषताओं की जानकारी । विदेशी यात्रियों के विवरणों के ऐतिहासिक स्रोतों के रूप में उपयोगिता ।	विदेशी यात्रियों एवं लेखकों के दृष्टान्त, चित्र, मुद्राएँ, संग्राहलयों का भ्रमण ।
7- सामाजिक(syncretic) संस्कृति का विकास	इस्लाम का भारतीय समाज एवं भारतीय समाज का इस्लाम पर प्रभाव, विभिन्न धार्मिक विश्वास, तीर्थ-स्थल भक्ति आंदोलन सूफी मत एवं सांप्रदायिक सद्भाव की परम्पराएँ, कबीर के उपदेश । प्रशासनिक नीतियों में धार्मिक सुधार के उदाहरण-केस (दीने इलाही) विजय नगर का सांस्कृतिक योगदान ।	हिन्दू मुस्लिम संस्कृतियों के मिलाप से उठने वाले सकारात्मक तथ्यों से परिचित कराना ।	भक्ति आंदोलन के गीतों/चित्रों/पुस्तकों से संदर्भ का प्रयोग, शैक्षिक भ्रमण ।

Scanned with CamScanner

इकाई	पाठ्यवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
8-क्षेत्रीय संस्कृतियों का उत्कर्ष	क्षेत्रीय भाषाओं, चित्रकला, संगीत, साहित्य का विकास, केस अध्ययन- बिहार, बंगाल	क्षेत्रीय सांस्कृतिक परंपराओं की समझ शिक्षार्थियों में विकसित करना । क्षेत्रीय भाषाई साहित्य का इतिहास के अध्ययन स्त्रोत के रूप में परिचय कराना । इनकी महत्ता समझना और सम्मान करना ।	स्थानीय पुस्तकालय, संग्रहालय का भ्रमण, चित्रों का उपयोग, बुजुर्गो से वार्त्तालाप इत्यादि ।
9. 18वीं शताब्दी में नई राजनैतिक संरचनाएँ	उपमहाद्वीप में स्वतंत्र एवं स्वायत राज्यों का उदय । मराठा साम्राज्य । स्वतंत्र एवं क्षेत्रवादी विचारधाराओं के उदय की परिस्थितियों एवं उसके परिणामों से अवगत कराना । राष्ट्रीयता की भावना की पृष्ठभूमि समझाना ।	क्षेत्रीय स्तर पर राजनीतिक शक्तियों के उदय के महत्व को भारतीय इतिहास के प्ररिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना एवं इनके परिणाम की ऐतिहासिक व्याख्या प्रस्तुत करना ।	ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण, संग्रहालयों का भ्रमण ।
10- हमारे इतिहासकार प्रो. सैयद हसन अस्करी, सर यदुनाथ सरकार	जीवन रचनाएँ	मध्यकालीन भारत के इतिहास लेखन की समझ पैदा करना ।	

Scanned with CamScanner

VII

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1	-	06	-	4 घंटा
2	-	08	-	5 घंटा 20 मिनट
3	-	10	-	6 घंटा 40 मिनट
4	-	12	-	8 घंटा
5	-	06	-	4 घंटा
6	-	06	-	4 घंटा
7	-	10	-	6 घंटा 40 मिनट
8	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
9	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
10	-	04	-	2 घंटा 40 मिनट
		योग : 72		48 घंटा

वर्ग - VIII

इकाई	पाठ्य-वस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1. कब कहाँ कैसे ? भौगोलिक सीमाएँ	अवधि सिंहावलोकन नई भौगोलिक सीमाओं का परिचय । समय अवधि का निर्धारण । स्रोत का परिचय ।	उपमहाद्वीप/क्षेत्र अन्तर्गत परिवर्त्तित नामों का परिचय । निर्धारित कालावधि में मुख्य परिवर्त्तनों का चित्रण । पूर्ववर्ती स्रोत से वर्त्तमान स्रोत की भिन्नता ।	आधुनिक विश्व के सिर्फ रेखांकित मानचित्र पर विभिन्न महादेशों एवं देशों को शिक्षार्थियों द्वारा अंकित करवाना ।

Scanned with CamScanner

2. भारत में कम्पनी शासन की स्थापना	वाणिज्यवाद एवं व्यापार का विस्तार । भारतीय भूभागों पर आधिपत्य के लिए औपनिवेशिक शक्तियों में संघर्ष ।	व्यापारिक शक्ति का राजनैतिक शक्ति में परिवर्त्तन के निहितार्थ को अवगत कराना । भारत में ब्रिटिश सत्ता के सुदृढ़ीकरण के कारण एवं प्रतिरोध से अवगत कराना । अंग्रेजों की शोषण नीति से शिक्षार्थियों को अवगत कराना ।	दृष्टांत चित्र ।
3-ग्रामीण जीवन और समाज	ब्रिटिश कृषि नीतियाँ और उनका खेतिहर किसानों तथा जमीन्दारों पर प्रभाव । व्यवसायिक फसलों का प्रचलन (चम्पारण) । किसान विद्रोह(नील से) विशेष अध्ययन बंगाल एवं बिहार ।	पिछले समाज की तुलना में परिवर्त्तनों का रेखांकन । ब्रिटिश भू-राजस्व की नीति से ग्रामीण समाज पर पड़े प्रभाव से अवगत कराना । कृषि और भूराजस्व से ग्रामीण समाज पर पड़ी आर्थिक चोट से समाज में उत्पन्न हलचल एवं राष्ट्रीयता की भावना के प्रादुर्भाव से अवगत कराना ।	साहित्यिक कृतियों यथा 'आनंदमठ', 'नीलदर्पण' आदि का दृष्यन्त, प्रेमचंद की साहित्यिक पुस्तकों से ग्रामीण जीवन, नारी-जीवन की विषमता, शोषण के दृष्यन्त ।
4. उपनिवेशवाद एवं जनजातीय समाज	19वीं शताब्दी में जनजातीय आर्थिक-सामाजिक परिवर्त्तन । जनजातीय विद्रोह (बिरसा मुण्डा पर केन्द्रित) । क्षेत्रीय केन्द्रबिन्दु-छोटानागपुर एवं उत्तर पूर्व ।	क्षेत्र एवं खास-समुदाय में उभरे स्थानीय स्तर पर विद्रोह के कारणों की समझ पैदा करना उनके परिणाम से अवगत कराना ।	झारखंड, संथाल परगना आदि क्षेत्रों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति को क्षेत्रों मे जाकर देखना ।
5. शिल्प एवं उद्योग	19वीं शताब्दी में हस्तशिल्प का ह्रास । 20वीं शताब्दी में ।	शिक्षार्थियों को अनौद्योगिकरण एवं औद्योगीकरण की प्रक्रिया से परिचित कराना ।	

Scanned with CamScanner

	उद्योगों का विकास विशेष केन्द्र बिन्दु - वस्त्र उद्योग ।	बुनावट कला एवं बुनकरों के जीवन के संबंध में जानकारी देना । श्रम की महत्ता/ कारीगरी के महत्त्व को समझना ।	हस्तशिल्प प्रदर्शनी का भ्रमण, बुनकरों के कार्य का प्रत्यक्ष अवलोकन तथा बड़े कारखानों का भ्रमण ।
6- 1857-58 का विद्रोह ।	सेना में विद्रोह तथा क्रांति का विस्तार । अभिजात्य वर्ग एवं कृषक सहभागिता का स्वरूप । इसमें बिहार के 1857 ई० के विद्रोह को आधार बनाया जाए ।	राष्ट्रीयता की भावना का एक राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में तेजी से विकास, उसके कारण एवं परिणाम को समझना, ब्रिटिश-भारतीय के संबंध को विभिन्न पृष्ठभूमि में समझना, शोषण के प्रति जागरूकता ।	पोस्टर, दृष्टांत, चित्र, संग्रहालय भ्रमण, नाटकीकरण ।
7. ब्रिटिश शासन एवं शिक्षा ।	नई शिक्षा प्रणाली, स्कूल । पाठ्यक्रम, कॉलेज, विश्वविद्यालय तकनीकी प्रशिक्षण । स्वदेशी शिक्षा प्रणाली में बदलाव । राष्ट्रीयता शिक्षा की अवधारणा एवं विकास । शोषण की नीतियों को समझना एवं राष्ट्रीयता की भावना को बलवती बनाना ।	वर्त्तमान शिक्षा-प्रणाली के अतीत को समझना । शिक्षा की राजनीति सत्ता एवं सांस्कृतिक पहचान से कैसे जुड़ी है इसकी समझ बनाना ।	आख्यान विधि ।
8. महिलाओं की स्थिति एवं सुधार ।	सती-प्रथा पर विवाद, विधवा-पुनर्विवाह,बालविवाह एवं विवाह की उम्र । स्त्रियों एवं उनकी शिक्षा के संबंध में विभिन्न समाज सुधारकों के विचार अध्ययन । बिन्दु- बंगाल / बिहार	तात्कालीन लैंगिक समस्याओं को समझना, उनके प्रादुर्भाव के कारण एवं उन्मूलन के क्रम में आए रूढ़िवादी विचारों की बाधाओं को समझना एवं पतन की अनिवार्यता की समझ पैदा करना ।	महान समाज सुधारकों यथा राजाराम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, गाविंद राणाडे, तिलक, स्वामी दयानन्द सरस्वती, विवेकानंद, केशव चन्द्र सेन, सर सैयद अहमद खाँ, दादाभाई नौरोजी, फरदोन जी, बाबा राम सिंह आदि की जीवनी, चित्र एवं वार्त्तालाप ।

Scanned with CamScanner

9- जातीय व्यवस्था की चुनौतियाँ	जाति सुधार हेतु तर्क, महात्मा ज्योतिराव फूले, वीरालिंगम, नारायण गुरु, पेरियार, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, बाबा साहेब अम्बेदकर के विचार इन सुधारकों के विचारों एवं कृत्यों का प्रभाव, अध्ययन केन्द्र - महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश ।	शिक्षार्थियों को उन महापुरुषों की जीवनियों से अवगत कराना जिन्होंने जाति सुधार पर बल दिया । समाज में व्याप्त सामाजिक विसंगतियों का समाज पर प्रभाव और उनके उन्मूलन के प्रयास से उभरी स्थितियों से अवगत कराना ।	पोस्टर, चार्ट
10- उपनिवेशवाद एवं शहरी बदलाव ।	शहरीकरण एवं नये शहरों का उदय औपनिवेशिक नीतियों एवं संस्थाओं के प्रभाव: नगरपालिका, लोक निर्माण, योजना, रेल तंत्र, पुलिस-तंत्र ।	19वीं एवं 20वीं शताब्दी में शहरी विकास के स्वरूप का रेखांकन ॥ नगर विकास के इतिहास से शिक्षार्थियों को चित्रों के माध्यम से परिचय कराना । औपनिवेशिक काल में नये-नये प्रकार के शहरों के उद्‌भव पर चर्चा । औद्योगिक प्रगति एवं वैज्ञानिक खोजों के जनजीवन पर पड़े प्रभाव से अवगत कराना एवं जनमानस में उसकी स्वीकार्यता, परिवर्त्तन की सापेक्षता की समझ पैदा करना ।	आख्यान विधि, परिचर्चा ।

Scanned with CamScanner

11- कला-क्षेत्र में परिवर्त्तन ।	चित्रकला, साहित्य स्थापत्य कला । नई तकनीकों एवं संस्थाओं का प्रभाव- कला-विद्यालय, छापाखाना, पाश्चात्य शैक्षिक नीति एवं राष्ट्रवादी कला । प्रदर्शन-कला में बदलाव, संगीत एवं नृत्य का आमजन से जुड़ाव । लेखन के नये तरीके । नई वास्तुकला ।	कला संस्कृति के प्रति सौन्दर्यबोध पैदा करना प्राचीन कलाकृतियों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के प्रति जागरूकता और सम्मान की भावना पैदा करना ।	संग्राहलयों का भ्रमण चित्रों का अवलोकन, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण ऑडियो/विडियो
12-राष्ट्रीय आन्दोलन (संक्षिप्त परिचर्चा)	राष्ट्रीय आन्दोलन (1885 से 1947 के बीच) का सिंहावलोकन आन्दोलन के विविध आयाम तथा इसमें विभिन्न सामाजिक वर्गो की सहभागिता ।	उदारवादी/उग्रवादी राष्ट्रीयता के प्रादुर्भाव को समझना । सामाजिक एकता की महत्ता से अवगत कराना ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति आदर सम्मान का भाव पैदा करना ।	संग्रहालय, चित्र, वीडियो फिल्म, पुस्तकालय, नाटकीकरण के रूप में ।
13- स्वातंत्रयोत्तर भारत ।	1947 ई॰ के पश्चात् राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय विकास । अन्य देशों के साथ संबंध । भविष्य हेतु योजना ।	राष्ट्रीयता की भावना की अपरिहार्यता को समझना । क्षेत्रवाद की बुराइयों से अवगत होना, वृहत्तर संबंधों की महत्ता की समझ वैज्ञानिक एवं समाजवादी दृष्टिकोण का विकास, अन्तर्राष्ट्रीय शांति-सद्भाव की आवश्यकता को समझना ।	समाचार-पत्रों से प्राप्त सूचनाओं का अध्ययन, वार्त्तालाप, वाद-विवाद ।
14- हमारे इतिहासकार प्रो॰ कालीकिंकर दत्त	जीवन रचनाएँ	आधुनिक भारत के इतिहास लेखन की समझ पैदा करना ।	

Scanned with CamScanner

प्रोजेक्ट कार्य : स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने वाले अपने आस-पास के स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी एकत्रित करना, यथा राजकुमार शुक्ल, सात शहीद, जुब्ब सहनी, कर्नल महबूब, कुँवर सिंह, बैकुंठ शुक्ल, खुदीराम बोस, मजहरुल हक, पीरअली इत्यादि । साथ ही विद्यालय/गाँव/पंचायत का इतिहास, प्राचीन खंडहर, मंदिर/मस्जिद/गुरुद्वारा, प्राचीन नदी, तालाब, आस-पास के ऐतिहासिक स्थल पर भी प्रोजेक्ट कार्य कराए जाने चाहिए ।

शिक्षक से अपेक्षाएँ -

1- पाठ्यक्रम का अध्ययन कर अपनी समझ विकसित करेंगे ।

2- दैनिक जीवन से जुड़ी घटनाओं, चुनौतियों एवं अनुभवों को अपने अध्यापन कार्यों में शामिल करेंगे ।

3- शिक्षार्थियों के मानसिक क्षमता के अनुरूप पाठ की प्रस्तुति करेंगे ।

4- पाठ्यक्रम में चित्र, मॉडल, कहानी, कविता, प्रयोग, भ्रमण, मूक नाटक, वार्त्तालाप इत्यादि गतिविधियों को देकर इसे लचीला बनाने का प्रयास किया गया है, जिसे शिक्षक अध्यापक के दौरान ध्यान में रखेंगे तथा गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य सम्पन्न करेंगे ।

5- शिक्षक अपने शिक्षण कार्य के दौरान अन्य गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए स्वतंत्र होंगे ।

6- शिक्षार्थियों की कल्पनाशीलता एवं सृजनशीलता को शिक्षक प्राथमिकता देंगे तथा अध्यापन का कार्य-बल केन्द्रित करेंगे । रेखाचित्रों के निर्माण का कार्य शिक्षार्थियों से कराना इत्यादि इस ओर एक बेहतर कदम हो सकता है ।

7- स्थानीय संस्थाओं यथा ग्राम पंचायत, डाकघर, विद्यालय, महाविद्यालय, थाना, ब्लॉक, प्राचीन ऐतिहासिक वस्तुएँ इत्यादि का शैक्षिक भ्रमण शिक्षार्थियों के साथ शिक्षक जरूर करें ताकि बच्चे इसका व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें ताकि इससे सम्बन्धित ज्ञान को सीधे साक्षात्कार कर सकें ।

8 समाज में मौजूद विभिन्न पेशेवर को यथा कृषक, लोहार, दुग्ध उत्पादक, मुर्गी पालनों इत्यादि क्रिया-कलापों तथा उनके पेशागत अनुभवों से शिक्षार्थियों का प्रत्यक्षीकरण करा कर शिक्षार्थियों के ज्ञान में वृद्धि करेंगे ।

9- सामाजिक सद्भावना एवं सहयोग में वृद्धि के लिए शिक्षक शिक्षार्थियों को स्थानीय रीति-रिवाजों, कला, संस्कृति पर्व-त्योहारों की जानकारी, शिक्षार्थियों के अनुभवों को उनके द्वारा ही सुनवा कर कराएँगे । इस प्रकार एक साझी समझ विकसित करेंगे ।

10- किसी भी महत्त्वपूर्ण घटना/व्यक्ति के सम्बन्ध में अद्यतन जानकारी रखेंगे ।

11- परियोजना-कार्य शिक्षार्थियों में सृजनशीलता को बढ़ाती है इसलिए शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे विषय-वस्तु देकर शिक्षार्थियों को निर्माण-कार्य हेतु स्वतंत्र छोड़ दें ताकि परियोजना-कार्य उनके सोच का प्रतिनिधित्व कर सके ।

12- ज्यों-ज्यों शिक्षार्थियों की कक्षाएँ बढ़ती जाती हैं शिक्षार्थियों में संवेदनात्मक विकास, क्षमता और कौशल का भी विकास होता जाता है, शिक्षक इनकी उन

Scanned with CamScanner

नयी संवेदनाओं को समझते हुए इनकी बढ़ती क्षमता एवं कौशल का लाभ लेते हुए अपने विवेक से इसे और अधिक बढ़ने में अपनी शैक्षिक कुशलताओं का उपयोग कर बढ़ने देंगे ।

13- शिक्षक-अध्यापन के क्रम में पूर्वग्रह से ग्रसित नहीं होंगे तथा पाठ्य-वस्तु को मूल्यरहित होकर शिक्षार्थियों को देंगे । सिद्धान्तों के प्रति खुला दिमाग रखेंगे तथा तोड़-मोड़ कर नहीं रखेंगे ।

14- यथासम्भव श्रव्य-दृश्य सामग्री की व्यवस्था कर उसके माध्यम से शिक्षण कार्य का किया जाना ज्यादा बेहतर होगा ।

15- अध्यापन के क्रम में विषय-शिक्षक हमेशा ही पाठ का सम्बन्ध शिक्षार्थियों के सामाजिक-राजनैतिक, आर्थिक और भौगोलिक परिवेश से दर्शाएँगे ताकि पाठ की प्रस्तुति सरल हो सके ।

· समाज विज्ञान के लिए प्रस्तावित पाठ्य-पुस्तक किन अपेक्षाओं के अनुरूप हो ?

- स्पष्ट एवं साफ छपाई से बनी हो तथा मजबूत जिल्दयुक्त हो ।
- कागज साफ हो ताकि इतना मोटा जरूर हो कि एक ओर की छपाई दूसरे ओर नहीं दिखे ।
- पाठ्य-पुस्तक की छपाई में कई रंग जरूर प्रयोग में लाए जाएँ ।
- पुस्तक के संदर्भ चित्र/मानचित्र अधिकाधिक दिए जाएँ तथा कहीं-कहीं चित्र भी दिए जाएँ जिन्हें शिक्षार्थियों को पूरा करने का निर्देश अंकित हो ।
- पुस्तक में शिक्षार्थियों के लिए निर्देश हो ।
- पुस्तक में विषय-शिक्षक/अभिभावक/प्राचार्य/शिक्षाधिकारी के लिए भी दिशा-निर्देश अंकित हो ।
- पाठों के बीच मुख्य विंदु मोटे-अक्षरों में छपे हों तथा शिक्षकों के लिए दिशा निर्देश पाठ्यवार जरूरत अंकित हों ।
- उप-पाठ/पाठ के एक हिस्से के बाद पुस्तक में वस्तुनिष्ठ प्रश्न हों ताकि शिक्षक अध्यापन के क्रम में इन प्रश्नों से अपना मूल्यांकन कर सकें ।
- पाठ्य-पुस्तक में पाठ्य के अन्त में संबंधित प्रश्नावली के अन्त में शिक्षार्थियों की प्रतिक्रिया जानने हेतु रिक्त स्थान दिया गया हो तथा इसे पढ़ने का निर्देश विषय-शिक्षक को अवश्य हो ।
- पाठ्य-पुस्तक में अभ्यास कार्य हेतु पर्याप्त स्थान हो ।
- पाठ्य-पुस्तक में ऐसे अवसरों का संकेत हो जिनमें शिक्षार्थियों में सृजनशीलता का भाव उत्पन्न हो तथा बच्चे सृजन करने को अभिमुख हों ।
- दिए गए चित्रों में लैंगिक विषमता नहीं हो का ध्यान जरूर रखा गया हो ।
- दिए गए चित्रों की पृष्ठभूमि में यथासंभव पर्यावरण से जुड़े परिवेश दबे हों ।
- पाठों को प्रस्तुत करने का माध्यम यथासंभव कथा, कहानी, नाटक, पहेली, घटना इत्यादि के रूप में हो ।

Scanned with CamScanner

- पाठ्य-पुस्तक में प्रयुक्त भाषा बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर हो तथा सुग्राह्य हो ।
- पाठों का क्रमिक समायोजन हो ।
- पाठ्य-पुस्तक का निर्माण शिक्षार्थियों को ध्यान में रखकर किया जाए न कि शिक्षक को ।
- पाठ्य-पुस्तक में पर्याप्त गतिविधियाँ हों जिससे बच्चा विद्यालय के बाहर जाकर भी ज्ञान का सृजन कर सके ।
- पाठ्य-पुस्तक का मूल्य न्यूनतम हो ताकि यह सभी शिक्षार्थियों को उपलब्ध हो सके या पाठ्य-पुस्तक के वितरण की निःशुल्क व्यवस्था हो ।

VIII

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1	–	06	–	4 घंटा
2	–	06	–	4 घंटा
3	–	04	–	2 घंटा 40 मिनट
4	–	05	–	3 घंटा 20 मिनट
5	–	04	–	2 घंटा 40 मिनट
6	–	05	–	3 घंटा 20 मिनट
7	–	05	–	3 घंटा 20 मिनट
8	–	06	–	4 घंटा
9	–	05	–	3 घंटा 20 मिनट
10	–	05	–	3 घंटा 20 मिनट
11	–	05	–	3 घंटा 20 मिनट
12	–	08	–	5 घंटा 20 मिनट
13	–	04	–	2 घंटा 40 मिनट
14	–	04	–	2 घंटा 40 मिनट
	योग –	72		48 घंटा

Scanned with CamScanner

II- भूगोल

औचित्य

वर्तमान पाठ्यक्रम में कक्षा VI से भूगोल को एक अलग विषय के रूप में रखा गया है जो समाज और राजनीति विषय का एक हिस्सा है ।

कक्षा VI तक पहुँचते-पहुँचते शिक्षार्थियों को चिंतन एवं तार्किक शक्ति विकसित हो जाये, वे प्रत्येक वस्तु को समालोचनात्मक ढंग से देख सकें, साथ-ही-साथ उनके सोचने, समझने और तार्किक शक्ति का दायरा भी बढ़े अतएव उन्हें सर्वप्रथम पृथ्वी, सौरमंडल में पृथ्वी, पृथ्वी और ग्लोब, पृथ्वी के परिमंडल, पृथ्वी के प्रमुख स्थल रूप की जानकारी दी गयी है, क्योंकि जीवन के आरंभ से ही वह पृथ्वी को देखता एवं इस पर विभिन्न क्रियाएँ करता आया है । पृथ्वी की विशेषताओं एवं विभिन्नताओं की जानकारी देने के क्रम में उसके अनुभवों को ही जानकारी का आधार बनाया गया है, जिससे सीखना स्थायी हो सके साथ-ही-साथ अब उसे क्षेत्र विशेष की परिधि से बाहर निकालकर अपने राज्य की सम्पूर्ण लेकिन संक्षिप्त जानकारी देने का भी प्रयास किया गया है जिससे वह अपने प्रदेश के संसाधनों, संस्कृतियों, धरोहरों ,वनस्पतियों, कृषि के स्वरूपों, दर्शनीय स्थलों की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सके ।

कक्षा VII में भूगोल के अंतर्गत पृथ्वी से संबंधित जानकारियों का विस्तार करते हुए पृथ्वी की आंतरिक संरचना, भू-आकृतियों में परिवर्त्तन लानेवाले बल तथा विभिन्न परिमंडलों की जानकारी दी गयी है जिससे बच्चे पृथ्वी एवं विभिन्न मंडलों से संबंधित समझ को मजबूत कर सके । पर्यावरण की अहमियत एवं सौंदर्यबोध को भी जोड़ा गया है ताकि बच्चा पर्यावरण को सिर्फ उपभोक्तावादी दृष्टिकोण से नहीं देखे वरन् सौंदर्यबोध भी उत्पन्न कर सकें । विभिन्न भागों में जनजीवन में पाये जानेवाले अंतर को भी स्पष्ट किया गया है जिससे धरातलीय विभिन्नताओं एवं विशेषताओं की समझ में वृद्धि हो सके । विभिन्न ऋतुमापक यंत्रों के प्रदर्शन एवं उपयोग के द्वारा शिक्षार्थियों को इन यंत्रों की आवश्यकता एवं महत्त्व की समझ विकसित करने का प्रयास किया गया है ।

कक्षा VIII में संसाधन एवं उसकी आवश्यकता के द्वारा संसाधन की महत्ता एवं संरक्षण की आवश्यकता क्यों ? समझ उत्पन्न करने की कोशिश की गई है । साथ ही शिक्षार्थियों का ज्ञान विस्तार करते हुए अपने देश के बारे में जानने का अवसर प्रदान किया गया है, जिससे वे भारतीय कृषि, उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी विस्तार, मानव संसाधन इत्यादि की समझ रख सकें । इसके अतिरिक्त एशिया महादेश की संक्षिप्त जनकारी भी उन्हें प्रदान की गयी है । क्योंकि वर्त्तमान भूमण्डलीकरण के युग में ज्ञान का सिमटना शिक्षार्थियों की प्रतिभा को दबाना होगा । साथ-ही-साथ चूँकि इस वर्ग तक आते-आते उसके अनुभव एवं जानकारियों का विस्तार हो जाता है अतएव आँकड़ों के आरेखीय निरूपण की जानकारी भी उसे दी गयी है जिससे वो आँकड़ों को देखकर घबराये नहीं, बल्कि उनसे खेल सकें ।

उद्देश्य :

(1) तर्क एवं चिंतन शक्ति का विकास करना ।

(2) पृथ्वी की विविधताओं एवं विशेषताओं की समझ विकसित करना ।

(3) धरोहरों एवं संस्कृति के प्रति सम्मान तथा संरक्षण की भावना विकसित करना ।

(4) पर्यावरण का सौंदर्यबोध एवं संरक्षण का भाव पैदा करना ।

Scanned with CamScanner

(5) देश एवं महादेश की विविधताओं , संसाधनों की जानकारी देना ।

(6) देशप्रेम की भावना विकसित करना ।

(7) भूमंडलीकरण के दौर में कदम-से-कदम मिलाकर चलने की आवश्यकता की समझ विकसित करना ।

(8) वस्तुओं को विश्लेषणात्मक तरीके से देखने की समझ उत्पन्न करना ।

पाठ्यक्रम

वर्ग - VI

इकाई	Key Concept (मूल अवधारणा)	Learning Outcome(उद्देश्य)	Activities/Resources (गतिविधियाँ/संसाधन)
1- हमारा सौरमंडल	आकाश गंगा और सौरमंडल की जानकारी । सौरमंडल में ग्रहों की स्थिति । ग्रहों का एक दूसरे ग्रहों से संबंध, उपग्रहों की जानकारी (पृथ्वी का उपग्रह) । क्षुद्रग्रह एवं उल्कापिंड ।	सौरमंडल में ग्रहों की स्थिति एवं एक ग्रह से दूसरे ग्रह की दूरी,सबसे निकट एवं सबसे दूर का ग्रह, उपग्रह एवं अन्य उल्कापिंडों की जानकारी देना । सौरमंडल की अवधारणा स्पष्ट करना ।	चार्ट, पेपर पर ग्रहों की स्थिति दर्शाना । तारामण्डल की शैक्षिक यात्रा ।
2- पृथ्वी एवं उसकी गतियाँ	पृथ्वी की दैनिक एवं वार्षिक गति । गतियों का प्रभाव। ऋतु परिवर्त्तन ।	दैनिक एवं वार्षिक गति की जानकारी देना । ऋतु परिवर्त्तन की समझ विकसित करना ।	चार्ट पेपर पर पृथ्वी की दैनिक एवं वार्षिक गति का चित्र बनाना । ग्लोब दिखाना ।
3- पृथ्वी और ग्लोब	ग्लोब के माध्यम से अक्षांश एवं देशान्तर का ज्ञान । महत्त्वपूर्ण अक्षांश एवं देशान्तर रेखाएँ, ध्रुव ।	ग्लोब, पृथ्वी की मॉडल, की समझ विकसित करना । काल्पनिक रेखा के महत्त्व से अवगत कराना ।	अक्षांश एवं देशांतर रेखाओं की पहचान करवाना । मॉडल दिखाना एवं निर्माण हेतु प्रेरित करना ।

Scanned with CamScanner

	पृथ्वी का तापीय कटिबंध । देशान्तर और समय : स्थानीय समय , मानक समय तथा अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा ।	पृथ्वी के तापीय कटिबंधों की समझ उत्पन्न करना ।	
4- पृथ्वी के परिमंडल	स्थलमंडल जलमंडल वायुमंडल जैवमंडल	भौतिक एवं जैव मंडल के आपसी संबंध एवं प्रभाव की समझ उत्पन्न करना ।	चित्र, चार्ट
5- पृथ्वी के प्रमुख स्थल रूप	पर्वत, पठार और मैदान का स्वरूप, उनके प्रकार एवं मानव पर प्रभाव ।	पर्वत, पठार और मैदान की जानकारी देना । पर्वत, पठार और मैदान के बदलते स्वरूप एवं मानव पर उसके प्रभाव की जानकारी देना । स्थलीय स्वरूपों की समझ विकसित करना ।	चित्र, चार्ट स्थलीय भ्रमण
6- हमारा राज्य: बिहार	स्थिति, बिहार के पड़ोसी राज्य, राजनैतिक एवं प्रशासनिक विभाजन, जलवायु, वनस्पति, वन्य प्राणी, जनसंख्या, बिहार के दर्शनीय स्थल-गया, बोधगया, पटना (गोलघर, महावीर मंदिर, हरिमंदिर, पत्थर की मस्जिद तारामंडल, जैविक उद्यान), राजगीर, सासाराम, नालंदा एवं वैशाली ।	भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं की जानकारी देना । वनस्पति, वन्यप्राणी एवं उसके संरक्षण की आवश्यकता से अवगत कराना । बढ़ती जनसंख्या के प्रभावों को समझना ।	चित्र, चार्ट, नक्शा, भ्रमण, मानचित्र पर वन्य प्राणी तथा अभ्यारण्य दर्शाना । बिहार के मानचित्र पर प्रशासनिक विभाजन को दर्शाना । गोलघर, बोधगया आदि स्थलों का भ्रमण ।

Scanned with CamScanner

7- मानचित्र अध्ययन	मानचित्र का महत्त्व, परिभाषा, प्रकार, मानचित्र के घटक, दूरी एवं दिशा ।	मानचित्र की महत्ता एवं आवश्यकता की समझ विकसित करना ।	मानचित्र-राजनैतिक, प्राकृतिक अपने विद्यालय का रेखाचित्र बनाकर उसके परिवेश को दर्शाना ।

प्रोजेक्ट : बिहार के दर्शनीय स्थल पर एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करें ।

वर्ग - VII

इकाई	Key Concept (मूल अवधारणा)	Learning Outcome(उद्देश्य)	Activities/Resources (गतिविधियाँ/संसाधन)
1- पृथ्वी की आंतरिक संरचना	भूपटल, मैंटल, क्रोड, । चट्टान एवं खनिज, इनकी आवश्यकता, उपयोगिता, एवं महत्त्व ।	पृथ्वी की आंतरिक संरचना की समझ विकसित करना ।	पृथ्वी की आंतरिक संरचना का मॉडल । विभिन्न प्रकार के स्थानीय स्तर पर होने वाले परिवर्त्तनों का अवलोकन एवं रिकार्ड रखना ।
2- पृथ्वी पर परिवर्त्तन लाने वाले बल	भूसंचलन एवं इससे उत्पन्न स्थलाकृतियाँ । प्रमुख स्थलाकृतियाँ (पर्वत, पठार, मैदान) भूकम्प एवं ज्वालामुखी तथा उनका आपदा प्रभाव ।	पृथ्वी पर होनेवाले परिवर्त्तनों एवं सहायक कारकों की समझ उत्पन्न करना । आपदा प्रबंधन की समझ उत्पन्न करना । ज्वालामुखी और भूकम्प के संदर्भ से प्राकृतिक आपदाओं का बोध करना	दृष्टांत प्रस्तुत करना(यथा लातूर का भूकंप आदि) कहानियों का संग्रह । चार्ट पेपर पर ज्वालामुखी उद्‌गार का चित्र बनायें ।
3- वायुमंडल	वायुमंडल का संघटन वायुमंडल की संरचना, मौसम एवं जलवायु के तत्व, वायुदाब, आर्द्रता, पवन, तापमान एवं वर्षा ।	वायुमंडल के विभिन्न अवयवों एवं मानव पर उसके प्रभाव से अवगत कराना ।	अवलोकन,वाद-विवाद, (गर्मी एवं वर्षा के दिनों में आकाश की दशा का अवलोकन) सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय को अंकित कर रिकार्ड रखना एवं दिन की वास्तविक लंबाई एवं उसमें अंतर का पता करना ।

Scanned with CamScanner

4- जलमंडल	समुद्री जल एवं स्थलीय जल । प्रमुख सागर एवं महासागर । महासागरीय जल एवं उसकी गतियाँ-लहरें, तरंगें, धाराएँ एवं ज्वारभाटा, सुनामी, प्रमुख नदियाँ एवं मीठे जल का झील ।	जल एवं उसके स्रोत, आवश्यकता । भूमिगत एवं सागरीय जल के अंतर्सम्बन्ध से परिचित कराना ।	मानचित्र पर महासागरों एवं सागरों की स्थिति दर्शाना । मानचित्रावलोकन ।
5-पर्यावरण/ वातावरण	पर्यावरण क्या है ? पर्यावरण के तत्त्व एवं प्रकार । प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण एवं मनुष्य । पर्यावरण तथा समाज । अनुकूलन ।	पर्यावरण की अवधारणा स्पष्ट करना तथा पर्यावरण का मानव पर पड़ने वाले प्रभावों से अवगत कराना ।	प्रश्नोत्तर साक्षात्कार अवलोकन
6- मानव-पर्यावरण अंत:क्रिया	विभिन्न भागों में पर्यावरणीय विभिन्नता । मरूस्थल क्षेत्र में जन-जीवन (थार एवं लददाख) । उष्ण एवं उपोष्ण कटिबंध में जन-जीवन ।	विभिन्न परिस्थितियों में उत्पन्न असमानताओं एवं वहाँ के जन-जीवन से अवगत कराना ।	चित्र, यात्रा-वृत्तांत, अनुभवों का आदान-प्रदान । स्थानीय क्षेत्र के घरों के प्रकार, बस्तियाँ, परिवहन, संचार एवं वनस्पति का अवलोकन कर रिकार्ड करना एवं नोट्स लिखना ।

Scanned with CamScanner

7- ऋतु-मापक यंत्र	तापमापी, वायुदाबमापी, आर्द्रतामापी, पवन-दिशामाप, वर्षामापी । मौसम पूर्वानुमान से होने वाले लाभ की सूचना ।	मौसम एवं जलवायु की जानकारी देने में सहायक यंत्रों से परिचय एवं उपयोग से अवगत कराना ।	अवलोकन, मौसम पूर्वानुमान के स्थानीय तरीकों की जानकारी बड़े-बुजुर्गों से प्राप्त करना । प्रचलित उक्तियाँ, भड्डरी के दोहे ।

प्रोजेक्ट : पर्यावरण और समाज पर एक प्रोजक्ट रिपोर्ट तैयार करें ।

वर्ग - VIII

इकाई	Key Concept (मूल अवधारणा)	Learning Outcome(उद्देश्य)	Activities/Resources (गतिविधियाँ/संसाधन)
1- संसाधन	संसाधन क्या है ? संसाधन एवं उनके प्रकार । प्राकृतिक एवं मानव संसाधन प्राकृतिक संसाधन का वितरण, उपयोग एवं संरक्षण । भूमि एवं मिटट्री, जल, प्राकृतिक वनस्पति, वन्यजीव, खनिज एवं शक्ति के संसाधन (विश्व प्रतिरूप-भारत के विशेष संदर्भ में)।	संसाधन का महत्त्व, वितरण की विविधता एवं उनके संरक्षण की महत्ता से अवगत कराना ।	स्थानीय कृषि पद्धति, पैदा की जाने वाली फसलें, स्थानीय उद्योग एवं अन्य संसाधनों का स्थानीय अवलोकन एवं परिचर्चा ।

Scanned with CamScanner

इकाई	Key Concept (मूल अवधारणा)	Learning Outcome(उद्देश्य)	Activities/Resources (गतिविधियाँ/संसाधन)
2- भारतीय कृषि	कृषि के प्रकार (प्रमुख फसलें-खाद्य फसलें, रेशेदार फसलें, पेय फसलें, व्यापारिक/नगदी फसलें । कृषि को प्रभावित करने वाले कारक । उत्तर-पश्चिम भारत का खाद्यान्न प्रदेश । उत्तर-पूर्व भारत का चाय प्रदेश । बिहार के कृषि की विशेषताएँ ।	देश के विभिन्न भागों में पैदा की जाने वाली फसलों एवं भारतीय अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभाव की समझ बनाना ।	यात्रा अनुभव, चित्र, नक्शा, पत्राचार इत्यादि । स्थानीय कृषि पद्धति, पैदा की जाने वाली फसलों का अवलोकन, डाटा संकलन तथा रिपोर्ट तैयार करना ।
3- उद्योग	उद्योग की आवश्यकता । कच्चा माल एवं पूँजी निवेश के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण । प्रमुख उद्योग एवं उनका वितरण ।	उद्योग धंधों के महत्त्व से अवगत कराना ।	उद्योग-धंधों के केन्द्र का शैक्षिक भ्रमण ।
3(क)- लौह-इस्पात उद्योग	लौह-इस्पात उद्योग की स्थापना की पृष्ठभूमि । लौह इस्पात उद्योग की आवश्यकता । लौह-इस्पात उद्योग की स्थापना के सहायक कारक । जमशेदपुर एवं बोकारो का विशेष	उद्योग धंधों के रूप में लौह-इस्पात उद्योग की आवश्यकता, महत्ता एवं उसके प्रभाव से अवगत कराना ।	नक्शा, चित्र, अनुभव, भ्रमण, लौह-इस्पात उद्योग से जुड़े व्यक्तियों/संगठनों से साक्षात्कार ।

Scanned with CamScanner

	अध्ययन । अर्थव्यवस्था पर प्रभाव ।		
3(ख)- वस्त्र-उद्योग	वस्त्र-उद्योग स्थापना की पृष्ठभूमि एवं क्रमिक विकास । वस्त्र-उद्योग की स्थापना में सहायक कारक । वस्त्र-उद्योग की आवश्यकता/ विस्तार । वस्त्र उद्योग का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव । अहमदाबाद, भागलपुर, का विशेष अध्ययन ।	वस्त्र-उद्योग की महत्ता, आवश्यकता एवं मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव की समझ उत्पन्न करना ।	चित्र एवं नक्शा बनाकर वस्त्र-उद्योग के महत्त्वपूर्ण केन्द्रों का दिखाना तथा उन केन्द्रों का भ्रमण आयोजित करना ।
3(ग)- सूचना प्रौद्योगिकी	सूचना प्रौद्योगिकी का उद्योग के रूप में प्रार्दुभाव, आवश्यकता एवं जन-जीवन पर प्रभाव, संचार, चिकित्सा, सेवा, सुरक्षा के क्षेत्र में बंगलुरू के संदर्भ में चर्चा ।	सूचना प्रौद्योगिकी की महत्ता, जीवन के विभिन्न क्षेत्र में उसके प्रभाव से अवगत कराना ।	चित्र, कम्प्यूटर चार्ट पेपर पर चित्र बनाकर कम्प्यूटर के कार्यों को दर्शाएँ ।
3(घ)-मानव संसाधन	मानव संसाधन का महत्त्व, मानव संसाधन की संरचना, जनसंख्या परिवर्त्तन, वितरण, घनत्व ।	मानव संसाधन विश्व के विकास का महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है, इस समझ को विकसित करना ।	भारत के मानचित्र पर जनसंख्या घनत्व को दर्शाना । ग्राफ पेपर की मदद से चित्रांकन सांख्यिकी विधि का उपयोग ।
3(ड.)-एशिया : एक संक्षिप्त	एशिया का विस्तार ।	एशिया महादेश की विशेषताओं,	मानचित्र, ग्लोब, वाद-विवाद, अखबारी

Scanned with CamScanner

अध्ययन	सबसे बड़ा महादेश । निवासियों का रहन-सहन, जीवन-यापन का ढंग । जनसंख्या एवं इससे उत्पन्न समस्याएँ ।	समस्याओं रहन-सहन एवं संस्कृति से परिचित कराना ।	समाचार वृहत्तर भारत संदर्भित पुस्तकों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन । जीवन स्तर का अवलोकन, आँकड़ों का संकलन ।
4. मानचित्र कार्य	आरेखीय निरूपण की आवश्यकता एवं महत्त्व । दण्डारेख, वृत्तचार्ट	तथ्यों को गणितीय एवं सांख्यिकीय माध्यम से सुगमतापूर्वक विश्लेषण की समझ उत्पन्न करना ।	चार्ट पेपर, ग्राफ पेपर, जियोबोर्ड । आँकड़ा संकलन, रिकॉर्ड बनाना एवं विश्लेषण करना ।

प्रोजेक्ट : स्थानीय खेती के तरीके और फसल चक्र पर एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करें । निर्माण उद्योगों की सूची बनाकर इसकी आवश्यकता पर एक रिपोर्ट तैयार करें ।

VI

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1	–	09	–	6 घंटा
2	–	06	–	4 घंटा
3	–	13	–	8 घंटा 40 मिनट
4	–	12	–	8 घंटा
5	–	11	–	7 घंटा 20 मिनट
6	–	13	–	8 घंटा 40 मिनट
7	–	08	–	5 घंटा 20 मिनट
	योग :	72		48 घंटा

VII

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1	–	07	–	4 घंटा 40 मिनट
2	–	08	–	5 घंटा 20 मिनट
3	–	10	–	6 घंटा 40 मिनट
4	–	13	–	8 घंटा 40 मिनट
5	–	13	–	8 घंटा 40 मिनट
6	–	13	–	8 घंटा 40 मिनट
7	–	08	–	5 घंटा 20 मिनट
	योग :	72		48 घंटा

Scanned with CamScanner

VIII

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1(क)	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
(ख)	-	12	-	8 घंटा
2	-	10	-	6 घंटा 40 मिनट
3	-	04	-	2 घंटा 40 मिनट
3(क)	-	06	-	4 घंटा
(ख)	-	06	-	4 घंटा
(ग)	-	05	-	3 घंटा 20 मिनट
(घ)	-	07	-	4 घंटा 40 मिनट
(ड)	-	11	-	7 घंटा 20 मिनट
4	-	06	-	4 घंटा
	योग -	72		48 घंटा

Scanned with CamScanner

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन

प्रस्तावना

'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' माध्यमिक स्तर पर समाज विज्ञान में पूर्व से आ रहे विषय नागरिक शास्त्र की जगह लेने वाला एक नया विषय है । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ई॰ एवं बिहार पाठ्यचर्या-2008 में यह स्पष्ट है कि नागरिक शास्त्र को छोड़ और उसकी जगह लेने वाले विषय में सरकारी संस्थाओं एवं उनके कार्यों में दिये जाने वाले महत्व को संतुलित किया जाना चाहिए । अतएव नये पाठ्यक्रम में भारत के सामाजिक, राजनीतिक जीवन के मुद्दों को केन्द्र में रखा गया है । यह सर्वविदित है कि बच्चे अपनी समझ और अपने मन में बनने वाली अवधारणाओं को आसपास की वास्तविकताओं पर लागू करते हुए ही सबसे बेहतर सीखते हैं । अतएव शिक्षण-पद्धति में अवधारणाओं के लिए परिभाषाओं के उपयोग से बचने की कोशिश की गई है । इस हेतु वृत्तांतों एवं समस्या अध्ययनों (case study) का उपयोग बेहतर होगा ।

कक्षा 6 की प्रस्तावित पुस्तक 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' भाग-I में विविधताओं की समझ जीवन-यापन के विभिन्न स्वरूपों तक जाती है । साथ ही सरकार एवं स्थानीय स्वशासन की प्रारंभिक जानकारी दे जाती है ।

कक्षा 7 की प्रस्तावित पुस्तक 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' भाग-II में भारतीय लोकतंत्र में समानता के महत्त्व को गंभीरता से स्वीकार किया गया है । साथ ही, राज्य शासन, लैंगिक पूर्वाग्रह, मीडिया, विज्ञापन एवं बाजार जैसे जरूरी मुद्दों को शामिल किया गया है । समानता की समझ से प्रारंभ होकर यह समानता के लिए संघर्ष के आयाम तक पहुँचता है ।

कक्षा 8 में प्रस्तावित पुस्तक 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन भाग-III' में संविधान, संसदीय सरकार एवं न्यायिक व्यवस्था से रू-ब-रू कराने की कोशिश की गई है ।

Scanned with CamScanner

वर्ग - VI

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन भाग-I

इकाई/मुख्य प्रकरण	उप-प्रकरण	उद्देश्य	संसाधन
इकाई-1 विविधता	विविधता की समझ विविधता एवं भेदभाव एवं असमानता में अन्तर जाति,धर्म,भाषा आधारित विविधताएँ विविधता हमारे जीवन को कैसे समृद्ध करती हैं? विविधता के प्रति सम्मान भाव के प्रावधान ।	भारतीय समाज में विविधताओं का ज्ञान देना और यह समझ विकसित करना कि विविधता हमारी सम्पदा है । यही हमारी एकता का सूत्र है ।	विभिन्न प्रांतों के निवासियों के रहन-सहन और उनकी संस्कृति संबंधी चित्र ।
इकाई-2 जीवनयापन के स्वरूप	ग्रामीण जीवनयापन के विभिन्न स्वरूप- (1)ग्रामीण परिवेश में जीवनयापन के विभिन्न स्वरूप-कृषि, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, मुर्गी पालन, हस्तशिल्प कृषकों की श्रेणी- 1- बड़ा जोतदार 2- सीमान्त किसान 3- भूमिहीन कृषक मजदूर (2)शहरी जीवन-यापन के विभिन्न स्वरूप- 1- नौकरी 2- व्यवसाय 3- घरेलू सेवा	शहर एवं ग्रामीण स्तर पर पेशा, व्यवसाय एवं सेवा का संक्षिप्त परिचय तथा इस क्षेत्र में सरकार द्वारा किये गये प्रयास की जानकारी देना । उपलब्ध सामाजिक उदाहरणों से जीवन-यापन के स्वरूप को स्पष्ट करना ।	भ्रमण एवं विभिन्न जीविका वाले व्यक्तियों का साक्षात्कार ।
इकाई-3 सरकार	सरकार क्या है ? सरकार की आवश्यकता सरकार के प्रकार(वर्त्तमान समय में) सरकार एवं कानून लोकतांत्रिक सरकार लोकतांत्रिक सरकार के मुख्य तत्त्व :-	सरकार के बारे में सामान्य जानकारी देना । लोकतांत्रिक सरकार की विशेषताओं से परिचित कंराना ।	चार्ट एवं चित्र ।

Scanned with CamScanner

	भागीदारी विवादों का समाधान समानता और न्याय	लोकतंत्र में भागीदारी, विवादों के समाधान एवं सामाजिक न्याय की जानकारी से परिचित कराना ।	
इकाई-4 स्थानीय सरकार	1- पंचायती राज व्यवस्था गाँव का प्रशासन ग्राम पँचायत पँचायत के तीन स्तर 2- नगर प्रशासन - नगर निगम एवं नगर पालिकायें, कार्य, अधिकार एवं वित्तीय संसाधन । आरक्षण-व्यवस्था	सत्ता के विकेन्द्रीकरण एवं सामान्य जन की भागीदारी के संबंध में स्थानीय स्वशासन (ग्रामीण एवं शहरी) की संस्थाओं से परिचित कराना । स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं के विभिन्न सोपानों के बीच संबंध एवं ताल-मेल से परिचित कराना ।	भ्रमण / चार्ट

वर्ग - VII

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन - II

इकाई/मुख्य प्रकरण	उप-प्रकरण	उद्देश्य
इकाई I लोकतंत्र में समानता	लोकतंत्र क्यों ? भारतीय लोकतंत्र में समानता, मानव गरिमा, निर्णय की प्रक्रिया एवं विरोधी मूलों के बीच सामंजस्य लोकतंत्र की चुनौतियाँ	लोकतंत्र में खासतौर पर भारतवर्ष में समानता की अहम् भूमिका से विद्यार्थियों को परिचित कराना । भारतीय संविधान के प्रावधानों को दुहराना नहीं, अपितु लोगों के वास्तविक जीवन से तादात्मय स्थापित करने में होने वाली कठिनाइयों से विद्यार्थियों को परिचित कराना है ।

Scanned with CamScanner

इकाई/मुख्य प्रकरण	उप-प्रकरण	उद्देश्य
इकाई II राज्य सरकार	स्वास्थ्य एवं शिक्षा में सरकार की भूमिका राज्य सरकार की कार्यप्रणाली विधायक का निर्वाचन विधानसभा में एक बहस सरकार के प्रमुख उत्तरदायित्व	सरकार की कार्यप्रणाली, प्रतिनिधित्व, उत्तरदायित्व एवं सार्वजनिक हित जैसी अवधारणाओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना ।
इकाई -III लैंगिक पूर्वाग्रह	लड़के-लड़कियों का विकास परिवार एवं समाज में लैंगिक विभेद एवं उनके प्रति व्यवहार में असमानता । लैंगिक विभेद के कारण सामाजिक परिवर्त्तन में आधी आबादी, महिलाओं की भूमिका एवं आंदोलन ।	लड़के लड़कियाँ कैसे बड़े होते हैं और उनकी सामाजिक भिन्नता कैसे रूप लेती है । साथ ही समाज में कैसे स्त्री एवं पुरुष की अलग-अलग भूमिका देखी जाती है और कैसे उनके लिए अलग मूल्य निर्धारित किये जाते हैं । समानता के लिए महिलाओं द्वारा किये संघर्षों से विद्यार्थियों को परिचित कराना ।
इकाई-IV मीडिया एवं विज्ञापन	**मीडिया की समझ** मीडिया के प्रकार एवं तकनीक मीडिया एवं धन मीडिया एवं लोकतंत्र **विज्ञापन की समझ** विज्ञापन के प्रकार विज्ञापन एवं धन विज्ञापन एवं लोकतंत्र	मीडिया एवं विज्ञापन के व्यापक विस्तार एवं लोकतंत्र व आमजन पर इसके प्रभावों से विद्यार्थियों को परिचित कराना ।
इकाई - V हमारे आसपास के बाजार	(1)ग्रामीण एवं शहरी बाजार (2)बाजार एवं समानता वस्तुएँ किस प्रकार उपभोक्ता तक पहुँचती हैं ?	विद्यार्थियों को बाजार की समझ एवं प्रकार से परिचित कराना एवं बाजार के प्रभावों से अवगत कराना ।

Scanned with CamScanner

इकाई- VI समानता के लिए संघर्ष	ऐतिहासिक समसामयिक भारतीय संविधान : समानता का जीवंत दस्तावेज	समानता की समझ को अध्याय I के माध्यम से विकसित करते हुए समानता के लिए हुए संघर्षों से विद्यार्थियों को परिचित कराना ।

वर्ग - VIII

सामाजिक और राजनीतिक जीवन भाग - III

इकाई/मुख्य प्रकरण	उप-प्रकरण	उद्देश्य
इकाई- I संविधान	संविधान क्या एवं क्यों ? संविधान एवं विधि का शासन निर्माण । धर्मनिरपेक्ष समाज के निर्माण में संविधान की भूमिका । संविधान द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, राष्ट्रीय गौरव तथा सांस्कृतिक विरासत की रक्षा हेतु व्यवस्था । मौलिक अधिकार एवं कर्त्तव्य तथा संविधान द्वारा मौलिक अधिकार के संरक्षण के उपबन्ध । आमजनों तक अधिकारों की पहुँच ।	विधि का शासन और इस व्यवस्था में भागीदारी की समझ को विकसित करना ताकि यह समझदारी विकसित हो सके कि संविधान समस्त कानूनों का एकमात्र स्रोत है । इसके अतिरिक्त मौलिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों से शिक्षार्थियों को परिचित कराना ।
इकाई-II संसदीय सरकार	संसदीय सरकार का अर्थ भारत में संसदीय सरकार अपनाने के कारण । संसदीय सरकार की मूलभूत विशेषताएँ । सरकार का संसद के प्रति जवाबदेही । संसदीय सरकार में राष्ट्रपति। प्रधानमंत्री और मंत्रीपरिषद् की भूमिका ।	भारत संसदीय सरकार के औचित्य से परिचित कराना । संसदीय सरकार की विशेषताओं की संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध कराना । जनचेतना का कानून बनाने की प्रक्रिया में कार्यपालिका की भूमिका ।

Scanned with CamScanner

इकाई/मुख्य प्रकरण	उप-प्रकरण	उद्देश्य
इकाई-III न्यायिक व्यवस्था	न्यायिक व्यवस्था के औपचारिक स्वरूप का अध्ययन । निचली अदालत से उच्चतम तक की न्यायिक प्रक्रिया । दीवानी और फौजदारी मुकदमा तथा इस संबंध में न्यायालय द्वारा नियंत्रण । एफ० आई० आर० दर्ज करने की व्यवस्था । पुलिस द्वारा एफ० आई० आर० दर्ज करने से इन्कार करने पर वैकल्पिक व्यवस्था। हरिजन थाना की व्यवस्था।	न्यायिक व्यवस्था एवं उसकी व्यवाहारिक प्रक्रियाओं से परिचित कराना । दलितों के विरुद्ध शोषण एवं हिंसा की स्थिति में हरिजन थाना की व्यवस्था ।
इकाई-IV आर्थिक उत्थान में सरकार के प्रयास	आर्थिक उत्थान हेतु केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा किये गये प्रयासों की संक्षिप्त चर्चा ।	सामाजिक न्याय की दिशा में सरकार के आर्थिक प्रयासों से परिचित कराना ।

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन भाग-1 से III (VI से VIII)

VI

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1	-	04	-	2 घंटा 40 मिनट
2	-	04	-	2 घंटा 40 मिनट
3	-	07	-	4 घंटा 40 मिनट
4	-	09	-	6 घंटा
	योग :	**24**		**16 घंटा**

Scanned with CamScanner

VII

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1	–	03	–	2 घंटा
2	–	05	–	3 घंटा 20 मिनट
3	–	03	–	2 घंटा
4	–	04	–	2 घंटा 40 मिनट
5	–	04	–	2 घंटा 40 मिनट
6	–	05	–	3 घंटा 20 मिनट
	योग :	**24**		**16 घंटा**

VIII

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1	–	07	–	4 घंटा 40 मिनट
2	–	07	–	4 घंटा 40 मिनट
3	–	06	–	4 घंटा
4	–	04	–	2 घंटा 40 मिनट
	योग	**24**		16 घंटा

Scanned with CamScanner

IV - अर्थशास्त्र

प्रस्तावना :

हमारे जीवन में अर्थशास्त्र की भूमिका का महत्त्वपूर्ण स्थान है । वास्तविक रूप में घर से लेकर विश्व की अर्थव्यवस्था तक एवं जन्म से लेकर मृत्यु तक अर्थशास्त्र का महत्त्व स्वत: दृष्टिगोचर होता है ।

आर्थिक क्षेत्र की उपलब्धियों पर ही किसी क्षेत्र या देश के प्रजातांत्रिक मूल्य, सामाजिक एवं राजनैतिक स्थायित्व निर्भर करता है ।

आज भारत आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्त्तनों की एक नई कगार पर खड़ा है । आर्थिक विकास के परिणाम स्वरूप लोगों की धारणाओं एवं मूल्यों में परिवर्त्तन हुआ है । ऐसी स्थिति में अर्थशास्त्र की शिक्षा मूलभूत उद्देश्य शिक्षार्थियों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ ऐसी अभिवृत्ति का विकास करना है जो इन्हें आर्थिक समस्याओं को समझने तथा देश के आर्थिक पुनर्निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने में सहायक हो ।

जहाँ तक बिहार के आर्थिक विकास का सवाल है समीक्षकों के मुताबिक गतिहीनता का शिकार है । बिहार के शिक्षार्थियों का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि यहाँ के बच्चे राष्ट्रीय स्तर के शिक्षार्थियों के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चल सके और देश के समस्त विकास में अपनी अहम् भूमिका अदा कर सकें ।

विद्यालय का आज के विकासशील प्रजातांत्रिक और सामंतवादी समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका है । इस प्रकार की आर्थिक व्यवस्था में शिक्षार्थियों को आंतरिक गुणवत्ता पर ग्रहण (चाहे वह आर्थिक, जातिगत और सामाजिकता के आधार पर) न लग सके ।

शिक्षार्थियों में देशभक्ति की भावना, सहभागिता और उदात्त भावना के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय एकता और विचारधारा का महत्त्व होना चाहिए । शिक्षार्थियों में सामाजिक न्याय और एक दूसरे के प्रति सहयोग एवं मदद की भावना होनी चाहिए जिससे कि बच्चे सामाजिक नग्नता का शिकार न हो सकें ।

विद्यालय के अध्ययन अध्यापन के बाद शिक्षार्थियों को सामाजिक कार्यों में लगाना चाहिए । किसी प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक आपदा में उनका सहयोग लेना चाहिए । सामाजिक आपदा, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक भावना से परिचित कराना चाहिए । साथ ही शिक्षार्थियों की जाति, धर्म, लिंग, से निरपेक्ष रहते हुए स्वस्थ पोषण का स्कूली वातावरण तैयार होना चाहिए जिससे शिक्षा-ग्रहण करने में सहायता मिल सके ।

अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम के मुख्य बिंदु

- शिक्षार्थी को आम जीवन के आर्थिक क्रियाओं से जोड़ने का प्रयास, प्रस्तुत पाठ्यक्रम के प्रारूप में करने की कोशिश की गई है । प्रस्तुत पाठ्यक्रम के प्रारूप का मुख्य उद्देश्य 'अर्थशास्त्र' के प्रति रुचि उत्पन्न करना है । इसमें आम जीवन में आर्थिक क्रियाओं का प्रभाव कैसे पड़ता है तथा आम व्यक्ति के बचत

Scanned with CamScanner

और निवेश राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित करता है की जानकारी देने की कोशिश की गई है ।

- प्रस्तुत पाठ्यक्रम में शिक्षार्थियों को व्याख्यान-विधि के अलावा भ्रमण-क्रिया, नाटक जो विद्यालय के शिक्षार्थी ही करेंगे इत्यादि के क्रियाशीलन का उपयोग होगा ताकि ज्यादा आसानी से सीखेंगे और ज्ञान का सृजन करेंगे ।
- अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में बिहार को संदर्भित करते हुए यहाँ की लीची, मखाना, ईख इत्यादि के प्रसंस्करण के अलावे चीनी उद्योग आदि पर विशेष ध्यान दिया है ।
- मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत होनी चाहिए यानी जो भी बातें उनको (शिक्षार्थी) को संप्रेषित की जाती हैं, उनको प्रत्येक माह या तो अंक के रूप में या ग्रेड के रूप में शिक्षक के द्वारा प्रदान की जाए जिससे वार्षिक परीक्षा के समय उन पर अतिरिक्त बोझ का भूत न सवार हो ।
- टीचिंग लर्निंग मैटेरियल इस प्रकार तैयार हो कि उनमें ज्यादातर बिहार के ग्रामीण, कस्बाई एवं शहरी परिवेश के माध्यम से अर्थशास्त्र को समझा जा सके ।

उद्देश्य :

वर्ग VI से VIII तक के विद्यार्थियों को 'अर्थशास्त्र' विषय के अन्तर्गत शिक्षा देने का मुख्य उद्देश्य है -

- 'मानव के आर्थिक कार्यों' का समुचित ज्ञान अर्जित कराना ।
- मानव-व्यवहार के आर्थिक पहलुओं का ही अध्ययन करना जैसे- दैनिक जीवन में बाजार की सारी प्रक्रियाएँ, माँग-पूर्त्ति, अधिकतम सन्तुष्टि, क्रय-विक्रय, मूल्य निर्धारण आदि ।
- राज्य एवं देश की ज्वलन्त समस्याओं को अवगत कराना तथा
- इनकी समझ एवं चेतना उत्पन्न कराना ।

चूँकि भारत एक कृषि प्रधान देश है अतः कृषि से संबंधित समस्त जानकारी जैसे-सहकारिता क्या है संक्षेप में बताना, सहकारी बैंक के भूमिका जिसके कारण कृषक वर्ग महाजन के चंगुल से किस हद तक निकल रहा है और भविष्य में उनके रहन-सहन का स्तर, उनकी आर्थिक स्थिति, उनकी कार्य-शैली में हुए परिवर्त्तनों की जानकारी देना ।

जहाँ तक वर्त्तमान आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों से तात्पर्य यह है कि इनमें तीव्रगति से होते ह्रास को रोकना, इसके मूल कारण उस एवं निदान से विद्यार्थियों को परिचय कराना, ताकि तीव्रगति से बढ़ रहे सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्त्तनों की समझ, चेतना आदि उत्पन्न हो सके ।

शिक्षण विधि -

- द्विपक्षीय प्रश्नोत्तरी विधि (Learner-Teacher Question=Answer Technique)
- भ्रमण विधि
- व्याख्यान विधि/कथन रीति
- सतत अभ्यास रीति (Drill Technique)

Scanned with CamScanner

- उदाहरण रीति (Illustration Technique)
- सर्वेक्षण विधि
- प्रोजेक्ट पद्धति (Project Method)
- वृत्तचित्र (Documentary Film)
- मूक नाटक
- टीचिंग लर्निंग मैटेरियल

हमारे पाठ्यक्रम की विशेषताएँ

- शिक्षार्थी ज्ञान का सृजन करते हैं
- शिक्षार्थी केन्द्रित पाठ्यक्रम
- विषयवस्तु में निरन्तरता
- समसामयिक दृष्टान्तों पर बल
- वर्ग-कक्ष प्रक्रिया, गतिविधियों एवं संसाधनों पर बल
- निकट से दूर, मूर्त्त से अमूर्त्त के सिद्धांत पर पालन
- आम जन-जीवन से जुड़ाव वाली विषय-वस्तु
- प्रादेशिक अर्थशास्त्र को उचित स्थान
- आपदा-प्रबंधन जैसी विषय-वस्तुओं का समावेश
- उपलब्ध शैक्षिक ढाँचे का ध्यान
- पाठ्य-पुस्तक और वर्ग-कक्ष से बाहर जाकर परिवेश में/से अध्ययन
- सीखने पर बल ताकि सिर्फ जानकारी ही नहीं मिले बल्कि समझ का विकास हो ।

पाठ्यक्रम

वर्ग - VI

इकाई (थीम)	पाठ्यक्रम	उद्देश्य	पढ़ाने की विधि/क्रियाशीलन
इकाई I आजीविका का साधन ।	मजदूरी, खेत मजदूर, किसान, बढ़ईगिरी, लोहारगिरी, सोनारी, हस्तनिर्मित वस्तुएँ (बाँस, मिटट्री आदि) से निर्मित, जूता बनाने वाले आदि ।	अपने जीवन-यापन के लिए मानव विभिन्न प्रकार की क्रिया-कलाप करता है इसी के बारे में शिक्षार्थी/शिक्षार्थियों को अवगत कराना ।	समाज में विभिन्न व्यवसाय में संलग्न लोगों के संदर्भ में प्रश्न पूछकर व्यवसाय के बारे में जानकारी देना ।
इकाई II व्यवसायिक क्रिया	स्थानीय लोगों द्वारा किए जा रहे कृषि, बागवानी, दुग्ध उत्पादन, सुअर-पालन, बर्त्तन उत्पादन, खिलौना उत्पादन, खेल-सामग्री उत्पादन आदि कार्य ।	शिक्षार्थी/शिक्षार्थियों को व्यवसाय के बारे में समझ स्थापित करना ।	उत्पादन स्थान पर शिक्षार्थियों को ले जाकर कक्षा से बाहर भी क्रियाशील किया जा सकता है ।

Scanned with CamScanner

इकाई III मुद्रा एवं विनिमय	मुद्रा की परिचर्चा घर और बाजार, क्रेता, दुकानदार(विक्रेता), खरीद-बिक्री (कॉपी, किताब, पेंसिल, रबर, नमक, सब्जी आदि)	अपने दैनिक जीवन में शिक्षार्थियों को मुद्रा से खरीद-बिक्री, कीमत का निर्धारण आदि की समझ विकसित करना ।	शिक्षार्थियों द्वारा एक बाजार की पकिल्पना को आधार बनाकर अभिनय क्रियाशीलन के द्वारा ।

- अप्रैल से नवम्बर तक समाज और राजनीति विषय के पाठ पढ़ाए जाएँगे ।
- सितम्बर से फरवरी तक अर्थशास्त्र का अध्यापन होगा ।
- एक ही शिक्षक दोनों विषयों का अध्यापन कर लेंगे । या भूगोल और अर्थशास्त्र का अध्ययन समानांतर कराया जा सकता है । भूगोल के पाठ 6 से इसकी शुरुआत की जा सकती है ।

वर्ग - VII

इकाई (थीम)	पाठ्यक्रम	उद्देश्य	पढ़ाने की विधि/क्रियाशीलन
इकाई I जनसंख्या वृद्धि(बिहार के संदर्भ में)	जनसंख्या वृद्धि क्या है? यह क्यों बढ़ रही है ? समस्याएँ एवं समाधान ।	शिक्षार्थियों को बिहार की ज्वलन्त समस्या से अवगत कराना ।	प्रश्नावली एवं संप्रेषण विधि सर्वेक्षण द्वारा ।
इकाई II नियंत्रित मूल्य की दुकान(सार्वजनिक वितरण प्रणाली)	राशन कूपन व अन्य राशन कार्ड और इसके कार्य ।	शिक्षार्थियों को समाज के भिन्न-भिन्न तवके के लोगों (आर्थिक दृष्टिकोण से) के बारे में जानकारी प्रदान करना । गरीबी-रेखा के बारे में समझ स्थापित करना	भ्रमण एवं प्रश्नावली विधि द्वारा ।
इकाई III खाद्यान्न एवं व्यवसायिक फसलें	राज्य की खाद्यान्न फसलें, व्यवसायिक फसलें(धान, गेहूँ, गन्ना, केला, लीची एवं तंबाकू के संदर्भ में)	शिक्षार्थियों को खाद्यान्न एवं व्यवसायिक फसलों के बारे में समझ स्थापित करना ।	भिन्न-भिन्न मंडियों का भ्रमण कराकर शिक्षार्थियों को इससे अवगत कराना ।

- अप्रैल से नवम्बर तक समाज और राजनीति विषय से संबंधित पाठ पढ़ाया जाएगा ।
- दिसम्बर से फरवरी तक अर्थशास्त्र का अध्यापन होगा ।

Scanned with CamScanner

- एक ही शिक्षक दोनों विषयों का अध्यापन कर लेंगे या भूगोल एवं अर्थशास्त्र का अध्यापन समानांतर कराया जा सकता है । भूगोल के इकाई 5 से इसका अध्यापन शुरू किया जा सकता है ।

वर्ग - VIII

इकाई	पाठ्यक्रम	उद्देश्य	पढ़ाने की विधि/क्रियाशीलन
इकाई I बाजार	बाजार का अर्थ कृषि बाजार लीची, आम, केला, मखाना, दूध आदि का भंडारण । थोक व्यापार । खुदरा व्यापार । कृषि उत्पाद पर बिचौलिए का प्रभाव ।	कृषि बाजार का क्या महत्त्व है ? लीची, आम, केला, मखाना एवं हर्बल पौधों के संरक्षण एवं भंडारन को समझाना । खुदरा,थोक व्यापार का ज्ञान शिक्षार्थियों को देना तथा इसमें बिचौलिए की भूमिका का ज्ञान देना ।	शिक्षार्थियों को थोक एवं खुदरा व्यापार का प्रत्यक्ष दर्शन कराया जा सकता है ।
इकाई II आर्थिक जीवन में सहकारी बैंक का महत्त्व, सहकारिता क्या है ? संक्षेप में ।	सहकारी बैंक की अवधारणा, गाँव के महाजन के चंगुल से बचने के लिए सहकारी बैंक का योगदान, अकाल का मुकाबला करने एवं लघु-सिंचाई की व्यवस्था करने में भी सहकारी बैंकों का योगदान ।	गाँव के महाजन के चंगुल के लिए सहकारी बैंकों के कार्य से रू-ब-रू करवाना/अकाल का मुकाबला करने, लघु- सिंचाई की की व्यवस्था करने आदि भिन्न-भिन्न कामों में सहकारी बैंक किस तरह हमारी सहायता करता है, सब बिन्दुओं की जानकारी ।	प्रश्नावली विधि । प्रश्नावली या क्रियाशीलन आस-पास के कम-से-कम दो Co-operative societies का भ्रमण करके प्रतिवेदन तैयार करना चाहिए ।
सिंचाई	हमारे परिवार की आर्थिक उन्नति में भूमिका ।	परिवार की आर्थिक प्रगति में सहायक ।	किसान/इनसे जुड़े व्यक्तियों से बातचीत ।
इकाई III वर्तमान आर्थिक एवं सामाजिक मूल्य	वर्तमान समय में तेजी से आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों में गिरावट क्यों आ रही है, इसका मूल कारण एवं समाधान	तेजी से बढ़ रही सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्त्तनों से शिक्षार्थियों को परिचित कराना ।	प्रश्नावली एवं व्याख्यान विधि ।

Scanned with CamScanner

- माह अप्रैल से नवम्बर तक समाज और राजनीति विषय के पाठों का अध्ययन होगा ।
- दिसम्बर से फरवरी तक अर्थशास्त्र का अध्यापन होगा ।
- एक ही शिक्षक दोनों विषयों का अध्यापन कर लेंगे या भूगोल एवं अर्थशास्त्र का प्रस्थापन एक साथ कराया जा सकता है । भूगोल की इकाई IV साथ ही इसे शुरू किया जा सकता है ।

मूल्यांकन-प्रक्रिया

नवीन पाठ्यक्रम में संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं मनोक्रियात्मक तीनों पक्षों का मूल्यांकन सीखने के क्रम में सतत करने के साथ-साथ सावधिक मूल्यांकन करने की बात की गयी है क्योंकि मूल्यांकन सीखने एवं सिखाने का मापदण्ड है ।

मौखिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रश्न पूछना, शिक्षार्थियों के द्वारा विषय विशेष में प्रश्न पूछने की प्रवृति (विषयगत जानकारी), परियोजना कार्य, सामाजिक गतिविधियों में उनकी रुचि एवं संलिप्तता, कक्षा के सामूहिक कार्यों में शिक्षार्थियों की रुचि तथा उनकी सहभागिता, वाद-विवाद, वार्त्तालाप आदि को आधार बनाया जाएगा । शैक्षिक भ्रमण के दौरान उनकी रुचियों तथा उनके द्वारा इसकी लिखित रपट, पर्यावरणीय एवं राजनैतिक घटनाओं में उनकी रुचि आदि को भी आधार बनाया जा सकता है ।

(क)

वर्ग	मूल्यांकन (लिखित)	मौखिक
VI-VIII	70%	30%

(ख) मूल्यांकन के लिखित परीक्षा के लिए प्रश्नों के स्वरूप की अनुशंसा -

वर्ग	प्रश्नों के प्रकार			
	वस्तुनिष्ठ (बहुविकल्पीय सहित)	एक पंक्ति के उत्तर वाले प्रश्न	लघु प्रश्न दो/ तीन वाक्यों वाले प्रश्न	दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
VI-VIII	40%	25%	25%	10%

(ग) परीक्षा दो स्तरों पर आयोजित होगी ।
(अ) आन्तरिक/विद्यालय स्तरीय (ब) सार्वजनिक

(घ) सार्वजनिक परीक्षा केवल विद्यालीय (माध्यमिक तक की शिक्षा) शिक्षा के समाप्ति पर हो । जिसमें - समाज विज्ञान के अन्तर्गत लिखित परीक्षा 80% की होगी तथा विद्यालय 10% विषयगत । मौखिक मूल्यांकन करेगा जिसके अन्तर्गत कई प्रकार की ऊपरलिखित गतिविधियाँ आधारित शिक्षार्थियों की उपलब्धियों के आधार पर प्राप्तांक दिए जाएँगे । परीक्षाफल दोनों लिखित एवं मौखिक के योग पर कल्पित किया जाएगा ।

(ङ) विद्यालीय परीक्षा के अन्तर्गत तीन सावधिक परिक्षाएँ होंगी जिसमें प्रश्नों का प्रतिशत पढ़ाए गए पाठ से निम्नवत् होगा ।

परीक्षा		प्रश्नों का प्रतिशत
प्रथम सावधिक	-	पढ़ाए गए पाठ से शतप्रतिशत
द्वितीय सावधिक	-	प्रथम सावधिक परीक्षा से पूर्व पढ़ाए गए पाठ से 30% तथा बाद मे पढ़ाए गए पाठ से 70%
तृतीय सावधिक	-	प्रथम सावधिक परीक्षा तक पढ़ाए गए पाठ से

Scanned with CamScanner

10% + द्वितीय सावधिक परीक्षा तक पढ़ाए गए पाठ से 20% (प्रथम सावधिक परीक्षा तक को छोड़कर) + 70% वार्षिक परीक्षा तक पढ़ाए गए पाठ से ।

परीक्षाफल

परीक्षाफल की तैयारी में विद्यालय में आयोजित तीनों सावधिक परीक्षाएँ महत्त्व रखती हैं अत: परीक्षाफल में अन्तिम सावधिक परीक्षा में शिक्षार्थियों द्वारा अर्जित कुल प्राप्तांक का 60% तथा प्रथम एवं द्वितीय सावधिक परीक्षाओं में शिक्षार्थियों द्वारा अर्जित कुल प्राप्तांकों का अलग-अलग 20%-20% जोड़कर शिक्षार्थी के इस वर्ष की मेधा की गणना होगी ।

सत्र/परीक्षाएँ

अन्तिम परीक्षाएँ मार्च में आयोजित होंगी तथा परीक्षाफल मार्च माह में ही प्रकाशित कर दिया जाएगा ताकि अप्रैल के प्रथम सप्ताह में नामांकन की प्रक्रिया सम्पन्न कर लिया जाए तथा पठन-पाठन का कार्य अप्रैल के दूसरे/तीसरे सप्ताह से आरम्भ किया जा सके ।

सत्र अप्रैल से मार्च रखा जाना है ।

शिक्षक के लिए वह उपलब्ध संसाधन जहाँ वह पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यसामग्री तलाश सकते हैं -

विषय - समाज विज्ञान

क्षेत्र	प्रक्रिया
पुस्तकालय/संग्रहालय	अध्ययन कर
विद्यालय	अवलोकन/अन्तर्वीक्षा
अध्ययनरत शिक्षार्थी विद्यालीय शिक्षार्थी सेवानिवृत शिक्षक	अनुभवों का ध्यानपूर्वक अवलोकन एवं अन्तर्वीक्षा
अभिभावक स्थानीय स्वतंत्रता सेनानी स्थानीय शिक्षाविद् स्थानीय धार्मिक नेता स्थानीय राजनीतिक नेता	अन्तर्वीक्षा
समाज से	अनुभवों को सुनकर
समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ दूरदर्शन रेडियो	अखबार की कतरनें प्रकाशित लेख रिकॉर्ड किए गए समाचार एवं अन्य सामग्रियाँ
अन्य संस्थाएँ राजनैतिक दल चुनाव आयोग कार्यालय	चुनावी घोषणा-पत्र एवं बुलेटिन । अधिकारियों के अनुभव एवं उनके पास उपलब्ध दस्तावेजों का अध्ययन ।

Scanned with CamScanner

सरकारी कार्यालय/विभागों	
सांख्यिकी/पुरातत्व विभाग सरकारी रिकार्ड	तथ्य तथा आँकड़े
पाठ्य-पुस्तकें	विभिन्न प्रकाशकों की इस विषय की पुस्तकें तथा पुरानी पाठ्य-पुस्तक भी सरकार द्वारा उपलब्ध करायी गयी ।
स्थानीय स्वशासन से यथा ग्राम पंचायत, पंचायत समिति अथवा अन्य स्थानीय इकाइयों/निकाय	विभिन्न सूचनायुक्त पम्फलेट, किताबें आदि का अवलोकन एवं अध्ययन ।

पाठ्य-पुस्तक का स्वरूप

वर्ग VI-VIII तक के लिए समाज विज्ञान के अन्तर्गत विषय कुल 100 प्राप्तांक के लिए प्रस्तावित हैं किन्तु समाज और राजनीतिक, इतिहास, भूगोल तथा अर्थशास्त्र विषय के लिए अलग-अलग पुस्तक होगी । एक साथ सभी विषयों को रख कर एक पुस्तक बनाएँ जाने पर शिक्षार्थियों के पीठ पर बस्ते का बोझ बढ़ेगा, अलग-अलग विषय की पुस्तिका होने पर बच्चा वर्गतालिका के अनुरूप केवल विषय विशेष की पुस्तक लेकर आएगा जो अपेक्षाकृत हल्की होगी ।

100 अंकों का विभाजन वर्ग VI-VIII के लिए निम्नवत् होगा -

इतिहास - 30 भूगोल - 30

समाज और राजनीति-30 अर्थशास्त्र-10

उपर्युक्त चारों उपविषयों की समेकित समाज विज्ञान की पुस्तकें मानी जायेंगी । कक्षा VI-VIII तक के लिए ।

वर्ग	विषय	नाम
VI	इतिहास	समाज विज्ञान, अतीत से वर्त्तमान भाग-1
VII	इतिहास	" " भाग-11
VIII	इतिहास	" " भाग-111
VI	भूगोल	समाज विज्ञान हमारी दुनिया भाग-1
VII	भूगोल	" " भाग-11
VIII	भूगोल	" " भाग-111
VI	समाज और राजनीति	समाज विज्ञान,समाज और राजनीति भाग-1
VII	समाज और राजनीति	" " भाग-11
VIII	समाज और राजनीति	" " भाग-111
VI	अर्थशास्त्र	समाज विज्ञान,हमारी अर्थशास्त्र भाग-1
VII	अर्थशास्त्र	" " भाग-11
VIII	अर्थशास्त्र	" " भाग-111

शिक्षक से अपेक्षाएँ

1- पाठ्यक्रम का अध्ययन कर अपनी समझ विकसित करेंगे ।

2- दैनिक जीवन से जुड़ी घटनाओं, चुनौतियों एवं अनुभवों को अपने अध्यापन कार्य में

Scanned with CamScanner

शमिल करेंगे ।

3- शिक्षार्थियों की मानसिक क्षमता के अनुरूप पाठ की प्रस्तुति करेंगे ।

4- पाठ्यक्रम से चित्र, मॉडल, कहानी, कविता, प्रयोग, भ्रमण, मूक नाटक, वार्त्तालाप आदि गतिविधयों को देकर इसे लचीला बनाने का प्रयास किया गया है, जिसे शिक्षक अध्यापन के दौरान ध्यान में रखेंगे तथा गतिविधि आधारित शिक्षण-कार्य सम्पन्न करेंगे ।

5- शिक्षक अपने शिक्षण-कार्य के दौरान अन्य गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए स्वतंत्र होंगे ।

6- शिक्षार्थियों की कल्पनाशीलता एवं सृजनशीलता को शिक्षक प्राथमिकता देंगे तथा अध्यापन का कार्य बाल केन्द्रित करेंगे । रेखाचित्रों के निर्माण का कार्य बच्चे से कराना इस ओर एक बेहतर कदम हो सकता है।

7- स्थानीय संस्थाओं यथा ग्राम पँचायत, डाकघर, विद्यालय, महाविद्यालय, थाना, ब्लॉक, प्राचीन ऐतिहासिक स्थल आदि का शैक्षिक भ्रमण शिक्षार्थियों के साथ शिक्षक जरूर करें ताकि बच्चे इसका व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें तथा इससे संबंधित ज्ञान का सीधे साक्षात्कार कर सकें ।

8- समाज में कार्यरत विभिन्न पेशाधारी को, यथा कृषक, लुहार, दुग्ध उत्पादक, मुर्गीपालकों इत्यादि के क्रिया-कलापों तथा उनके पेशागत अनुभवों से बच्चों का प्रत्यक्षीकरण करा कर शिक्षार्थियों के ज्ञान में वृद्धि करेंगे ।

9- सामाजिक सद्भावना एवं सहयोग में वृद्धि के लिए शिक्षक शिक्षार्थियों को स्थानीय रीति-रिवाजों, कला, संस्कृति, पर्व-त्योहारों की जानकारी शिक्षार्थियों के अनुभवों को उनके द्वारा ही सुनवाकर कराएँगे । इस प्रकार एक साझी-समझ विकसित करेंगे ।

10- किसी भी महत्त्वपूर्ण घटना/व्यक्ति के संबंध में अद्यतन जानकरी रखेंगे ।

11- परियोजना-कार्य शिक्षार्थियों में सृजनशीलता को बढ़ाती है इसलिए शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे विषय-वस्तु देकर शिक्षार्थियों को निर्माण-कार्य हेतु स्वतंत्र छोड़ देंगे ताकि परियोजना-कार्य उनकी सोच का प्रतिनिधित्व कर सके ।

12- ज्यों-ज्यों विद्यार्थियों की कक्षाएँ बढ़ती जाती हैं शिक्षार्थियों में संवेदनात्मक विकास, क्षमता और कैशल का भी विकास होता जाता है, शिक्षक इनकी उन नयी संवेदनाओं को समझते हुए इनकी बढ़ती क्षमता एवं कौशल का लाभ लेते हुए अपने विवेक से इसे और अधिक बढ़ाने में अपनी शैक्षिक कुशलताओं का उपयोग करेंगे ।

13- शिक्षक अध्यापन मे पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होंगे तथा पाठ्य-पुस्तक को निरपेक्ष होकर शिक्षार्थियों को देंगे । सिद्धांतों के प्रति खुला दिमाग रखेंगे तथा तथ्य तोड़-मरोड़ कर नहीं रखेंगे ।

14- यथा संभव श्रव्य-दृश्य सामग्री व्यवस्था कर उसके माध्यम से शिक्षण-कार्य का किया जाना ज्यादा बेहतर होगा ।

15- अध्यापन के क्रम में विषय शिक्षक हमेशा ही पाठ का संबंध शिक्षार्थियों के सामाजिक राजनैतिक-आर्थिक एवं भौगोलिक परिवेश से दर्शाएँगे ताकि पाठ की प्रस्तुति सरल हो सके ।

Scanned with CamScanner

समाज विज्ञान के लिए प्रस्तावित पाठ्य-पुस्तक किन अपेक्षाओं के अनुरूप हो ?

1- स्पष्ट एवं साफ छपाई से बनी हो तथा मजबूत जिल्दयुक्त हो ।

2- कागज साफ हो तथा इतना मोटा जरूर हो ताकि एक ओर की छपाई दूसरी ओर नहीं दिखे।

3- पाठ्य-पुस्तक की छपाई में कई रंग जरूर प्रयोग में लाए जाएँ ।

4- पुस्तक के संदर्भ चित्र/मानचित्र अधिकाधिक दिए जाए तथा कहीं-कहीं अधूरे चित्र भी दिए जाएँ जिन्हें शिक्षार्थियों को पूरा करने का निर्देश अंकित हो ।

5- पुस्तक में शिक्षार्थियों के लिए निर्देश हो ।

6- पुस्तक में विषय शिक्षक/अभिभावक/प्राचार्य/शिक्षाधिकारी के लिए भी दिशा-निर्देश अंकित हो ।

7- पाठों के बीच मुख्य बिंदु मोटे अक्षरों/बॉक्स में छपे हों तथा शिक्षकों के लिए दिशा-निर्देश पाठ्यवार जरूर अंकित हों ।

8- उप पाठ/पाठ के एक हिस्से के बाद पुस्तक में वस्तुनिष्ठ प्रश्न हो ताकि शिक्षक अध्यापन के क्रम में इन प्रश्नों से अपना मूल्यांकन कर सकें।

9- पाठ्य-पुस्तक में पाठ के अन्त में संबंधित प्रश्नावली के अन्त में शिक्षार्थियों की प्रतिक्रिया जानने हेतु रिक्त स्थान दिया गया हो तथा इसे पढ़ने का निर्देश विषय शिक्षक को अवश्य हो ।

10- पाठ्य-पुस्तक में पाठ से जुड़े शिक्षार्थी क्रियाशीलन का स्पष्ट अंकन जरूर हो ।

11- पाठ्य-पुस्तक में अभ्यास-कार्य हेतु पर्याप्त स्थान हो ।

12- पाठ्य-पुस्तक में ऐसे अवसरों का संकेत हो जिसे शिक्षार्थियों में सृजनशीलता का भाव उत्पन्न हो ताकि बच्चे सृजन करने को अभिमुख हो ।

13- दिए गए चित्रों में लिंगीय विषमता नहीं हो इसका ध्यान जरूर रखा गया हो ।

14- दिए गए चित्रों की पृष्ठभूमि में यथासंभव पर्यावरण से जुड़े परिवेश छपे हों ।

15- पाठों को प्रस्तुत करने का माध्यम यथासंभव कथा, कहानी, नाटक, पहेली, घटना आदि के रूप में हो ।

16- पाठ्य-पुस्तक में प्रयुक्त भाषा शिक्षार्थियों के स्तर को ध्यान में रखकर हो तथा सुग्राह्य हो ।

17- पाठों का क्रमिक समायोजन हो ।

18- पाठ्य-पुस्तक का निर्माण शिक्षार्थियों को ध्यान केन्द्र में रखकर ही किया जाय न कि शिक्षक को ।

19- पाठ्य-पुस्तक में पर्याप्त गतिविधियाँ हों जिससे बच्चा विद्यालय के बाहर जाकर भी ज्ञान का सृजन कर सकें ।

20- पाठ्य-पुस्तक का मूल्य निम्नतम हो ताकि यह सभी शिक्षार्थियों को उपलब्ध हो सके या पाठ्य-पुस्तक के वितरण की निःशुल्क व्यवस्था हो ।

Scanned with CamScanner

विषय - अर्थशास्त्र

वर्ग - VI

इकाई	पाठ्यवस्तु
III- मुद्रा एवं विनिमय	-मुद्रा का परिचय -घर और बाजार, क्रेता, दुकानदार(विक्रेता), खरीद-बिक्री(कॉपी, किताब, पेंसिल, रबर, नमक,सब्जी आदि) कारण - मुद्रा के बारे में संक्षिप्त परिचय देने के बाद ही बच्चे इसे संबंधित क्रिया-कलापों को आसानीपूर्वक समझ सकते हैं ।

न्यूनतम संवाद अवधि - 20 घंटा

इकाई - I 3.30 घंटा

इकाई - II 6.30 घंटा

इकाई - III 10.0 घंटा

मूल्यांकन

- पढ़ाये गये पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछना एवं शिक्षार्थियों को सही उत्तर देने के लिए प्रेरित करना
- विभिन्न व्यवसायिक क्रियाओं को संपादित करने वाले स्थानों का भ्रमण कराया जाना चाहिए क्योंकि शिक्षार्थियों में देखकर एवं करके सीखने की समझ अधिक होती है ।
- प्रोजेक्ट पद्धति भी लागू की जानी चाहिए इससे शिक्षार्थियों का (internal assessment)आन्तिरक मूल्यांकन हो सकता है । शिक्षार्थियों को दिये गए प्रोजेक्ट अंक आधारित होने चाहिए ताकि बच्चे पूरी रुचि के साथ प्रोजेक्ट कार्य को कर सकें । प्रोजेक्ट-कार्य के मूल्यांकन में जो भी अंक दिए जाएँगे उसे तृतीय सावधिक परीक्षा में अंतिम रूप से जोड़ा जाएगा ।
- बहुवैकल्पिक प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें प्रश्नों की संख्या दो होगी । ये प्रश्न वस्तुनिष्ठ एवं रिक्त स्थानों की पूर्ति करने वाले हो सकते हैं । प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा ।
- तीन अंक का प्रोजेक्ट-कार्य दिया जायगा ।

Scanned with CamScanner

- दो प्रश्न '1½' अंक के पूछे जायेंगे जिसकी शब्द-सीमा 20 से 25 होगी ।
- एक प्रश्न 'दो अंक' का पूछा जाएगा जिसकी शब्द-सीमा 30 से 40 होगी।

उपर्युक्त बिन्दु कक्षा VI से VIII के लिए भी लागू होगी ।

विषय - अर्थशास्त्र

वर्ग - VII

इकाई		पाठ्यवस्तु/क्रियाशीलन विधि
1-	जनसंख्या वृद्धि (बिहार के संदर्भ में)	प्रश्नावली, संप्रेषण एवं सर्वेक्षण विधि कारण : बिहार की जनसंख्या वृद्धि के ज्वलंत समस्या से अवगत कराने हेतु सर्वेक्षण विधि का भी प्रयोग उपयुक्त हो सकता है ।

न्यूनतम संवाद अवधि : 27 घंटा

इकाई - I	20 x 40	=	13-30 घंटा
इकाई - II	8 x 40	=	5-30 घंटा
इकाई - III	12 x 40	=	08 घंटा

विषय - अर्थशास्त्र

वर्ग - VIII

इकाई		पाठ्यवस्तु
I- बाजार	-	बाजार का अर्थ (शामिल) कृषि बाजार लीची, आम, केला, मखाना, दूध आदि का भंडारण थोक व्यापार खुदरा व्यापार कृषि उत्पादन पर बिचौलिए का प्रभाव कारण - बाजार के अर्थ को समझने के बाद ही बच्चे कृषि बाजार को सहज रूप से समझ सकते हैं ।
II - सहकारिता क्या है?		-सहकारिता का अर्थ

Scanned with CamScanner

संक्षेप में ।

-सहकारिता के माध्यम से जीवन-यापन के हरेक क्षेत्र लाभान्वित हो सकते हैं ।

आर्थिक जीवन में सहकारी बैंकों का महत्त्व ।

-सहकारी बैंक की अवधारणा, गाँव के महाजन के चंगुल से बचने के लिए सहकारी बैंक का योगदान, अकाल का मुकाबला करने एवं लघु सिंचाई की व्यवस्था करने में सहकारी बैंक का योगदान।

-हमारे परिवार में आर्थिक उन्नति में भूमिका

कारण : सहकारिता का परिचय संक्षिप्त में देने के बाद ही सहकारी बैंक की अवधारणा को समझ सकते हैं ।

न्यूनतम संवाद की अवधि - 33.30 घंटा

इकाई I-	18 X 40=	12 घंटा
इकाई II-	18 X 40=	12 घंटा
इकाई III-	14 X 40=	9.20 घंटा

Scanned with CamScanner

योग एवं शारीरिक शिक्षा
वर्ग VI-VIII

परिचय/औचित्य

राष्ट्रीय पाठ्चर्या की रूपरेखा 2005 यद्यपि स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की अनिवार्यता तय करते हुए यह उल्लेख करती है कि स्वास्थ्य पर जैविक, आर्थिक-सांस्कृतिक और राजनैतिक ताकतों पर प्रभाव पड़ता है । बुनियादी आवश्यकताओं जैसे भोजन, साफ पानी, घर, सफाई और स्वास्थ्य सेवाओं तक जनता की पहुँच स्वास्थ्य को प्रभावित करती है । स्वास्थ्य शिक्षार्थियों के समग्र विकास का सूचक होता है और यह नामांकन, स्कूल में उपस्थिति और पढ़ाई पूरी करने को प्रभावित करता है ।

पुनः पाठचर्या 2005 के सार संक्षेप यह स्पष्ट करता है कि स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का ज्ञान, काम को अनुभव में रूपान्तरित कर देता है और सहयोग, सृजनात्मकता और आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों की उत्पत्ति करता है । स्कूलों में शिक्षार्थियों की कामयाबी उनके पोषण और सुनियोजित शारीरिक गतिविधि के कार्यक्रमों पर निर्भर करती है । स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों में पूर्व अवस्था से लेकर आगे तक लड़कों की तरह ही लड़कियों की ओर भी उतना ही ध्यान दिया जाए । इसके लिए विशेष प्रयासों की भी आवश्यकता इस राष्ट्रीय पाठचर्या की रूपरेखा 2005 से जतायी है ।

फिर भी राष्ट्रीय स्तर के पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा एवं योग विषय पर कहीं भी निर्मित पाठचर्या नहीं उपलब्ध है ।

जहाँ तक राज्य के वर्ग VI से VIII तक स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम का प्रश्न है यह पूर्व से निर्मित है तथा विद्यालयों में इसके अनुरूप कार्य सम्पादित हो रहे हैं ।

राष्ट्रीय स्तर के प्रस्ताव एवं राज्य की आवश्यकताओं के मद्देनजर वर्ग VI से VIII तक के शिक्षार्थियों के लिए स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा एवं योग से पाठ्यक्रम आज की आवश्यकता है ।

उद्देश्य

- स्वास्थ्य के प्रति अच्छी आदतों, प्रवृत्तियों का विकास करना ।
- शिक्षार्थियों को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से सुलभ बनाना तथा उनमें ऐसे सामाजिक एवं व्यक्तिगत गुणों को पैदा करना ताकि वे एक सफल नागरिक बन सकें ।
- स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा एवं योग के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास ।
- खेल के प्रति प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास करना ।
- शिक्षार्थियों को विभिन्न स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करना ।
- आकस्मिक दुर्घटनाओं के लिए प्राथमिक उपचार का ज्ञान देकर इनसे निपटने की क्षमता का विकास करना ।
- संक्रामक रोगों के कारण एवं बचाव के संबंध में जानकारी से अवगत कराना ।
- देशभक्ति, आत्मविश्वास, त्याग और अनुशासन एवं स्वैच्छिक सेवा-भावना को जागृत करना ।

Scanned with CamScanner

अधिगम प्रतिफल

- वैज्ञानिक पद्धति से शिक्षार्थियों में शरीर के अंगों की देखभाल करने की क्षमता विकसित होगी ।
- स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की प्रारंभिक ज्ञान शिक्षार्थियों को हो जाएगा ।
- अच्छी आदतों और संयमित जीवन जीने के गुणों का विकास होगा ।
- प्राथमिक चिकित्सा के ज्ञान का अर्जन कर वे स्वास्थ्य संबंधी आकस्मिक एवं तत्काल जरूरतों को पूरा कर सकेंगे ।
- वे भविष्य में इस ज्ञान का उपयोग समाज में प्रारंभिक स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करने में लगा सकेंगे ।
- योग के माध्यम से मानसिक विकास एवं तंतु-क्रिया पर नियंत्रण स्थापित करने में बच्चे सक्षम होंगे ।
- योग के द्वारा शिक्षार्थियों में एकाग्रता के गुणों का विकास हो सकेगा ।
- शिक्षार्थियों का व्यक्तित्व स्वस्थ, सबल, फुर्तीला और दीर्घजीवी हो सकेगा ।
- अच्छे खेलों के प्रति शिक्षार्थियों में रुझान उत्पन्न होगा तथा उनमें साकारात्मक प्रतिस्पर्धा के गुण विकसित होंगे ।
- देश-भक्ति, स्वउत्सर्ग, स्वअनुभूति जैसी भावनाओं का विकास शिक्षार्थियों में हो सकेगा ।

प्रकरण	सहप्रकरण	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1. साफ सफाई	व्यक्तिगत साफ-सफाई शरीर के इन्द्रियों की सफाई ।	स्वच्छता का ज्ञान अच्छी आदतों का विकास	मिट्टी साबुन तौलिया आदि स्वच्छ वस्त्र
2. भोजन/जल	पौष्टिक आहार कार्बोहाइड्रेट प्रोटीन विटामिन खनिज	पौष्टिक आहार के गुणों एवं वस्तुओं में उनकी उपलब्धता बताना ।	चार्ट एवं पोस्टर जिसमें फल एवं आहार के चित्र के साथ उनसे मिलने वाले पौष्टिक अवयवों की मात्रा हो ।
3. हमारा शरीर	हमारी इन्द्रियाँ इनके कार्य	इन्द्रियों के कार्यों का ज्ञान कराना ।	चित्र सहित व्याख्या एवं बच्चे को खड़ा कराकर प्रदर्शन
4. शारीरिक शिक्षा	प्रारंभिक क्रियाएँ उछलना, कूदना, दौड़ना शरीर के सभी जोड़ों का व्यायाम ।	शरीर के सभी अंगों का समुचित विकास एवं शारीरिक विकृतियों को दूर करना ।	दरी, मैदान ढीले वस्त्र शिक्षक जरूरत समझें तो प्रदर्शन कर सकते हैं ।

Scanned with CamScanner

प्रकरण	सहप्रकरण	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
5. खेल	छोटे खेल नेताजी कौन ? मूर्त्ति बनो चील झगड़ा खो-खो पंक्ति रिले स्थानीय स्तर के खेल	नेतृत्व की क्षमता का विकास खेल के प्रति अभिरुचि का विकास	खुली जगह, सीटी, रस्सी, झण्डा आदि ।
6. एथलेटिक्स	दौड़ 50 एवं 100 मीटर रिलेदौड़ 500 X 4 कूद ऊँची/लम्बी क्रिकेट-बॉल फेंकना रस्सी कूद 50 मीटर	विभिन्न खेलों के नियम की जानकारी बताना । सहयोग एवं मित्रता की भावना का विकास ।	झण्डे, रस्सी, गेंद आदि ।
7. योग का स्वरूप	योग के स्वरूप और प्रकारों के विषय में जानकारी प्रदान करना ।	योग के विभिन्न प्रकारों से अवगत करना जिससे आगे की कक्षाओं में योगाभ्यास के लिए छात्र/छात्रा तैयार हो सकें ।	योग की पुस्तक ।
8. योग का महत्त्व	योग का महत्त्व और उससे मिलने वाले लाभों से छात्रों को अवगत कराना ।	योग के महत्व को बताकर योगाभ्यास के लिए छात्र/छात्राओं को प्रेरित करना ।	
9. प्रमुख योगियों का जीवन-परिचय	कपिल, पतंजलि, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी योगानन्द, स्वामी शिवानन्द का संक्षिप्त जीवन-परिचय।	बच्चों को महान योगियों का जीवनी बताकर उन्हें योग के लिए प्रेरित करना ।	योगियों के चित्र ।

Scanned with CamScanner

प्रकरण	सहप्रकरण	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
10. यम एवं नियम का विस्तार से चर्चा	छात्र/छात्राओं को यम-नियम के सिद्धांतों को सरल भाषा में समझाना और उसके महत्त्व को बतलाना ।	बच्चों के अंदर सकारात्मक गुणों का विकास ।	
अभ्यास - पूर्व कक्षाओं में बताए गए अभ्यासों के साथ-साथ कुछ नए आसनों का भी अभ्यास करवाया जाएगा । पूर्व कक्षा में करवाए गए अभ्यास (क) सूर्य नमस्कार भाग-1, (ख) पवन मुक्तासन, (ग) भुजंगआसन, (घ) ताड़ासन , (ङ)सुखासन (च) शवासन ।			
11. योगासन	एक पाद उतान आसन उतान पाद आसन पद्मासन शवासन	विभिन्न आसनों के अभ्यास से मिलने वाले लाभ से बच्चों को अवगत कराना और उच्च योगाभ्यास के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार करना ।	शिक्षक सर्वप्रथम इन आसनों के चित्रों का प्रदर्शन करते हुए स्वयं कर के दिखाएँ फिर किसी बच्चे से करवाएँ तदुपरान्त सामुहिक रूप से कराएँ ।

Scanned with CamScanner

वर्ग - VII

प्रकरण	सहप्रकरण	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1. साफ-सफाई	विद्यालय की साफ-सफाई वर्ग की साफ-सफाई खेल के मैदान से कागज एवं अन्य ।	बच्चों में श्रम की महत्ता के भावना का विकास । समाज सेवा की भावना का विकास ।	झाड़ू, टोकरी, पोछा, फिनाइयल ।
2. भोजन/जल	जल का शुद्धिकरण जल शुद्ध करने की विधियाँ वाष्पीकरण, निथारन, छानना, अवसादन ।	शुद्धजल की पहचान तथा रोगमुक्त रहने में शुद्धजल की महत्ता बताना ।	कई आकार के बर्तन
3. हमारा शरीर	शरीर की बनावट संचारतंत्रों का संक्षिप्त परिचय ।	शरीर की बनावट एवं उनके कार्य का ज्ञान कराना ।	चार्ट, चित्र एवं कंकाल
4. शारीरिक शिक्षा	मुक्तहस्त व्यायाम (बैठकर)	शारीरिक चुस्ती एवं फुर्त्ती विकसित करना ।	टेबुल 1 से 10 तक की पुस्तक ।
5. खेल	कबड्डी, खो-खो, फुटबॉल, टेलीक्वायर एवं अन्य स्थानीय खेल ।	बच्चों को खेल संबंधी नियमों का ज्ञान कराना ।	फुटबॉल, रिंग स्टैण्ड फीता ।
6. एथलेटिक्स	दौड़ 100 मीटर एवं 200 मीटर बाधा दौड़ रिले दौड़ 50 X 4 कूद ऊँची/लम्बी रस्सी कूद 50 मीटर क्रिकेट बॉल फेंकना	सहयोग एवं मित्रता की भावना का विकास ।	डण्डा, रस्सी, चूना, बॉल आदि ।

Scanned with CamScanner

प्रकरण	सहप्रकरण	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
7. योग का संक्षिप्त इतिहास	योग का विकास किस तरह और क्यों हुआ इसकी संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना ।	भारत की प्राचीन महाविज्ञान अर्थात् योग विज्ञान के इतिहास को बताकर बच्चों को अपने प्राचीन संस्कृति के प्रति आदर और गौरव की भावना विकसित करना ।	
8. योग के प्रमुख भेद	योग के प्रमुख भेदों और उनके महत्त्व एवं लाभ से बच्चों को अवगत कराना हठ योग, राज योग, ज्ञान योग, कर्म योग ।	योग के प्रमुख भेदों के विषय में जानकर उसका अभ्यास कर छात्र भावी जीवन के लिए स्वयं को तैयार कर सकें ।	
9. आसन	आसनों का नामकरण, आसनों को करने का वैज्ञानिक सिद्धांत का परिचय, आसनों के क्रम का महत्त्व,कितना करें, कब करें तथा कैसे करें ।	आसनों के सैद्धांतिक पक्षों से बच्चों का परिचय होगा ।	योग पुस्तक ।
अभ्यास - पूर्व कक्षाओं में बताए गए अभ्यासों के साथ-साथ कुछ नए आसनों का भी अभ्यास करवाया जाएगा । पूर्व कक्षा में करवाए गए अभ्यास (क) सूर्य नमस्कार भाग-1, (ख) पवन मुक्तासन, (ग) भुजंगआसन, (घ) ताड़ासन , (ङ)सुखासन (च) एक पाद उतान आसन (छ) उतान पाद आसन (ज) पद्मासन (झ) शवासन ।			
10. योगासन	संतुलन आसन त्रिकोण आसन रेचक एवं पूरक प्राणायाम्	विभिन्न आसनों एवं प्राणायाम् के अभ्यास से मिलनेवाले लाभ से बच्चों को अवगत कराना और शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ एवं सुदृढ़ बनने के लिए उत्साहित एवं प्रेरित करना ।	दरी एवं ढीले वस्त्र शिक्षक सर्वप्रथम इन आसनों को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करते हुए स्वयं कर के दिखाएँ फिर किसी एक बच्चे से करवाएँ । तदुपरान्त सामुहिक रूप से कराएँ ।

Scanned with CamScanner

वर्ग - VIII

प्रकरण	सहप्रकरण	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1. साफ-सफाई	सामुदायिक साफ-सफाई विद्यालय/मुहल्ले की साफ-सफाई गाँव की गलियों की साफ-सफाई घर की साफ-सफाई	स्वच्छ वातावरण का निर्माण के लिए प्रेरित करना । सौंदर्यबोध का ज्ञान कराना ।	झाड़ू, टोकरी, कुदाल, चूना, फिनाइल आदि ।
2. भोजन/जल	संक्रामक रोगों के कारण एवं बचाव ।	संदूषित भोजन एवं जल के कारण होने वाली संक्रामक बीमारियों की जानकारी देना ।	चार्ट एवं चित्र ।
3. शारीरिक शिक्षा	उपस्कर के साथ व्यायाम लेजिम झण्डा	लयात्मक व्यायाम द्वारा शारीरिक क्रियाओं में निखार लाना ।	लेजियम, झंडा ।
4. खेल	बैडमिण्टन फुटबॉल वालीबॉल क्रिकेट	खेल के नियमों की जानकारी कराना ।	फुटबॉल, नेट वालीबॉल, क्रिकेट के सामान ।
5. एथलेटिक्स	दौड़ 200 मी. एवं 400 मी. बाधा दौड़ रिले दौड़ 100 x 4 कूद : ऊँची/लम्बी गोला : हल्के भार का गोला प्रक्षेपण	ट्रैक एवं फील्ड के नियमों का ज्ञान देना एवं इसके कौशल का विकास करना ।	घड़ी, रस्सी, ट्रैक का निर्माण, जम्पिंग पिच का निर्माण ।
6. राष्ट्रध्वज	राष्ट्रध्वज बाँधने की जानकारी राष्ट्रध्वज फहराने की जानकारी राष्ट्रगान का ज्ञान	राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रीयता के भावना का विकास ।	झण्डा, रस्सी एवं डंडा ।

Scanned with CamScanner

प्रकरण	सहप्रकरण	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
7. योगाभ्यास से रोग निवारण	योगाभ्यास का शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दो प्रकार के प्रभाव रोगों से बचाव रोगों से मुक्ति (चिकित्सात्मक योग) से संबंध में बच्चों को अवगत कराना । साधारण रोग जैसे पेट की गड़बड़ी सिर दर्द या अधकपारी साइनस/सर्दी-खाँसी दमा मोटापा शारीरिक विकास में कमी की यौगिक चिकित्सा से परिचित कराना ।	विद्यार्थी इन साधारण बीमारियों से मुक्त हो सके और साथ ही साथ अपने घर एवं परिवेश के लोगों में इन बीमारियों का यौगिक चिकित्सा के प्रति जागृति ला सके ।	
8. हमारा शरीर एवं इसकी क्रिया	विद्यार्थियों को मानव शरीर एवं इसके क्रियाओं से अवगत कराना । शरीर रचना विज्ञान एवं शरीर क्रिया विज्ञान से परिचित कराना तथा पाचन-तंत्र रक्त एवं रक्त संचार श्वसन तंत्र स्नायु तंत्र उत्सर्जन तंत्र पर योग के प्रभावों से अवगत कराना ।	योगाभ्यास के दौरान विभिन्न तंत्रों पर पड़ने वाले प्रभावों को छात्र अनुभव करें और मिलने वाले लाभों द्वारा आगे योगाभ्यास के लिए स्वप्रेरित हो सके । सामान्य बीमारियों से छात्र मुक्त होकर स्वस्थ्य एवं प्रसन्नचित रह सकें ।	
प्रकरण	सहप्रकरण	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन

Scanned with CamScanner

9. अभ्यास	पूर्व कक्षाओं में बताए गए अभ्यासों के साथ-साथ कुछ नए आसनों का भी अभ्यास करवाया जाएगा । पूर्व कक्षा में करवाए गए अभ्यास (क) सूर्य नमस्कार भाग-1, (ख) पवन मुक्तासन, (ग) भुजंगआसन, (घ) ताड़ासन , (ङ)सुखासन (च) एक पाद उतान आसन (छ) उतान पाद आसन (ज) पद्मासन (झ) शवासन (त) संतुलन आसन (थ) त्रिकोण आसन (द) रेचक एवं पूरक प्राणायाम् ।		
10. योगासन	पिछली कक्षाओं में कराए गए सभी अध्यायों के अतिरिक्त निम्नलिखित अभ्यास कराएँ जाएँगे अर्द्ध वक्रासन पश्चिमोतान आसन अनुलोम-विलोम प्राणायाम् (बिना कुमंक के)	मोटापा को कम करते हुए शारीरिक लोच बढ़ाना । अन्त:श्रावी ग्रंथियों पर सकारात्मक प्रभाव डालना । फेफड़ों की क्षमता बढ़ाना ।	सर्वप्रथम शिक्षक स्वयं करके दिखाएँगे । एक बच्चे के साथ अभ्यास । अब फिर सभी बच्चों के साथ अभ्यास ।

याद रखें : शिक्षक-निर्देश

- शारीरिक शिक्षक, शारीरिक क्रियाएँ करने से पहले, बीमार या असमर्थ शिक्षार्थी-शिक्षार्थियों को बाहर बैठा देंगे ।
- व्यायाम खुली छत या मैदान में ही करें ।

योग शिक्षक से

योग शिक्षक का योग प्रशिक्षण देने के क्रम में कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना पड़ता है वरना इसका कुपरिणाम विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षक को भी भुगतना पड़ सकता है । कारण कि इससे होने वाली शारीरिक क्षति तुरंत दृष्टिगोचर हो जाती है और इसकी सारी जिम्मेदारी योग-शिक्षक पर होती है । अत: निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना योग-शिक्षक के लिए अति आवश्यक है -

1- जहाँ खतरे की संभावना हो वहाँ योगाभ्यास न करवायें । यदि कमरे के अन्दर योगाभ्यास करवाते हैं तो खिड़कियाँ खुली हों ।

2- योग शिक्षक योग करवाते समय सरल शब्द का प्रयोग करें और अपनी बात को पूर्ण स्पष्टता से बतावें ।

3- जो जितना कर सकता है उससे उतनी की क्रिया करवायें ।

4- किसी को शारीरिक सहायता न दें ।

5- योग-शिक्षक यह ध्यान रखें कि अभ्यास के समय कोई शिक्षार्थी लौंग, इलायची, चॉकलेट या कोई अन्य वस्तुएँ मुख के रखकर योगाभ्यास न करें ।

6- यह भी ध्यान रखें कि किसी भी शिक्षार्थी के पॉकेट में गोली, कैंची, गोटी, पिन आदि न हो ।

Scanned with CamScanner

7- शिक्षार्थी और शिक्षार्थियों को अलग-अलग क्लास कराना ।

8- योग शिक्षक को चाहिए कि वह योग शिक्षा देते समय (व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक) प्रत्येक शिक्षार्थी एवं शिक्षार्थियों का ध्यान रखे ।

9- योगाभ्यास के बाद शवासन अवश्य करना चाहिए इससे शरीर और मन दोनों को शान्ति मिलती है ।

घंटियाँ

वर्ग VI, VII एवं VIII के लिए प्रत्येक वर्ग के लिए अलग-अलग तीन-तीन घंटियों प्रति सप्ताह का प्रस्ताव यह समिति करती है । शनिवार को अन्तिम घंटी सामुहिक व्यायाम एवं योग का हो । रूटीन तालिका में इन घंटियों को सामान्यत: चौथी अथवा सातवीं एवं आठवीं घंटी में किया जा सकता है ।

मूल्यांकन

1- स्कूल के आन्तरिक मूल्यांकन व्यवस्था में शिक्षार्थी विकास के सर्वांगीण पक्षों पर ध्यान ।

2- निर्दिष्ट मानकों का उपयोग और मूल्यांकन की विविध तकनीकों का उपयोग करते हुए अवधि के अन्तर में किये गये कार्यों का मूल्यांकन एवं ग्रेडेशन पद्धति में उनके प्रगति पत्र पर अंकित किया जाएगा ।

शिक्षकों से

शिक्षक सह-शैक्षिक क्षेत्र के क्रियाकलाप जैसे रेडक्रास, प्राथमिक चिकित्सा, बाउचर (गाईड एवं स्काउट), बागबानी एवं एन0 सी0 सी0 के द्वारा नैतिक मूल्य, देशभक्ति एवं व्यक्तिगत सामाजिक गुणों का विकास करेंगे ।

Scanned with CamScanner

संगीत

प्रस्तावना

मनुष्य अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति स्वरों, शब्दों (भाषाओं) एवं शारीरिक क्रिया-कलापों से करता है। प्रत्येक ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति कला के माध्यम से होती है। कला रूपी विशाल वृक्ष की विभिन्न शाखाओं यथा ललित-कला, हस्तशिल्प कला, वास्तु-कला इत्यादि के साथ-साथ संगीत एक महत्त्वपूर्ण शाखा संगीत है। संगीत अन्तर्मन को सीधे छूता है, मस्तिष्क को झकझोरता है, कुछ कर गुजरने को बाध्य करता है। संगीत के इस प्रभाव का उपयोग शिक्षार्थियों की सकारात्मक सोच एवं सृजनात्मक क्षमता के विकास में किया जाय तो हमारी शिक्षा काफी मजबूत हो सकेगी। शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय भावना, साम्प्रदायिक सौहार्द्र के साथ उनमें सौन्दर्यबोध एवं श्रेष्ठता पनपेगी। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखते हुए सांस्कृतिक विभिन्नताओं में एकता बनाने में भरपूर सफलता मिलेगी। जो अन्ततः एक अखण्ड एवं मजबूत राष्ट्र के निर्माण में अहम् भूमिका निभाएगी। इसी सोच के तहत एन०सी०एफ० 2005 ई० में दसवीं कक्षा तक संगीत शिक्षा को आवश्यक रूप से एक उपकरण एवं विषय के रूप में शिक्षा का हिस्सा बनाया गया है। इसके लिये विद्यालय में संबंधित सुविधाएँ उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया है।

संगीत अपने में गायन, वादन और नृत्य को समेटे हुए है। इसकी प्रस्तुति हेतु रंगमंच भी आवश्यक हो जाता है। रंगमंच अधिगम का एक शक्तिशाली माध्यम है। पाठों का नाटकीकरण रंगमंच का एक भाग है। संगीत उसमें सजीवता एवं सरसता लाता है। शिक्षार्थी रंगकर्मी के रूप में आनन्द लेते, आनन्द बाँटते हुए सीखते हैं। अधिगम की विधि ऐसी रुचिपूर्ण हो जाती है कि शिक्षार्थी तन-मन से उसमें लीन हो जाते हैं।

भारतीय संगीत संगीत की परम्पराओं मानव के शुरुआत से ही रही है, परन्तु सबसे पहले यह सामवेद में दिखाई देता है। शिव का ताण्डव नृत्य, पार्वती का लास्य नृत्य, कृष्ण के बाँसुरी वादन एवं रासलीला के साथ उत्तरोत्तर विकास करता हुआ संगीत मंदिरों एवं फिर राजदरबारों में आया। सूरदास, स्वामी हरिदास, मीराबाई, तानसेन, वैजूबावरा, राजा मान सिंह तोमर, अमीर खुसरो, त्यागराज इत्यादि महान हस्तियों के योगदान से संगीत ने ऊँचाइयों को प्राप्त किया। भारत में संगीत की मुख्यतः दो धाराएँ रही हैं हिन्दुस्तानी संगीत और कर्नाटकीय संगीत। इन सभी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित सर सी० बी० रमण के योगदान को संगीत-जगत् नहीं भुला सकता है।

भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित पारम्परिक लोकगीत, संस्कार गीत, त्योहार गीत भी कम महत्वपूर्ण नहीं है, हालाँकि इन सभी का संकलित रूप एक जगह नहीं मिलता है परन्तु समय-समय पर इनके पारस्परिक आदान-प्रदान होते रहे हैं, जो देश की अखण्डता और एकता को बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं।

बिहार में संगीत बिहार में संगीत के मुख्य चार घराने - बेतिया घराना, दरभंगा या आमता घराना, बड़हिया घराना तथा डुमराँव घराना (जो अब लुप्त हो गया) के साथ पटना, गया, भागलपुर के बनैली स्टेट इत्यादि में भी बड़े-बड़े जमींदारों के संरक्षण में संगीतज्ञ एवं संगीत फलते-फूलते रहे। इसके अलावा बिहार में बोली जानेवाली प्रमुख क्षेत्रीय भाषा मैथिली, भोजपुरी एवं मैथिली के पारम्परिक लोकगीतों में आज भी शास्त्रीय संगीत की झलक स्पष्ट मिलती है। विभिन्न अवसरों एवं त्योहारों तथा देवी-देवताओं के पूजन अवसरों पर गाये जाने वाले गीत बिहार की सांस्कृतिक धरोहरों के प्रतीक हैं ।

Scanned with CamScanner

विद्यालय कार्यः प्रारंभ और अन्त-संगीत, मानव मन-जो जीवन के हर्ष-विषाद, रागद्वेष, उत्थान-पतन और जटिल समस्याओं से उद्विग्न रहता है, को शांति और शीतलता प्रदान करता है। आगे के जीवन समय को आकर्षक एवं रंजक बनाता है। इसी उद्देश्य से विद्यालय-कार्य का आरंभ सर्व धर्म समभाव प्रार्थना गीत तू ही राम है, तू रहीम है ----- उद्‌बोधन गीत - तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो ------, राष्ट्रगीत-वंदे मातरम् तथा हम होंगे कामयाब------ और अन्त में राष्ट्रगान जन-गण-मन .....से किया जाय । ये गान सामूहिक होंगे ।

कक्षा VI VIII

उद्देश्य

(i) पूर्व कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान को आगे बढ़ाना।
(ii) स्वर एवं लय का स्पष्ट ज्ञान कराना।
(iii) विभिन्न कला संस्कृतियों से परिचय कराना।
(iv) शास्त्रीय संगीत के मानव-जीवन में महत्त्व को समझना।
(v) ताल एवं ठेकों का ज्ञान देना।

घंटिया 6 (2 + 4) साप्ताहिक

प्रकरण	उपप्रकरण	संसाधन	क्रियाशीलन
स्वर ज्ञान	सा रे ग म प ध नि सा आरोह, अवरोह	हारमोनियम, तबला, ढोलक, खंजड़ी, सितार, गिटार, बाँसुरी	छात्रों द्वारा विभिन्न गीतों को संग्रह कराना तथा उन्हें उचित राग में गवाना तथा शिक्षकों द्वारा उसमें सहयोग करना।
अलंकार	सा रे ग, रे ग म ..... आदि 05 विभिन्न संगीत, नाद अलंकारों का आरोह-अवरोह		
सांगीतिक परिभाषाएँ	स्वर, सप्तक, थाट, राग, ताल, वादी, संवादी, जाति, गायन समय		संसाधान में लिखित सभी वाद्य-यंत्रों का रेखाचित्र बनाकर उसके सभी अंगों को रेखांकित करके दर्शाना।
राग	विलावल, यमन, भैरव, काफी, भूपाली, भैरवी		उप-प्रकरण में वर्णित सभी रागों का आरोह-अवरोह, वादी, संवादी बताते हुए शास्त्रीय ज्ञान कराना। सभी रागों में एक-एक छोटा ख्याल या सरगम गीत कराना।

Scanned with CamScanner

ताल	कहरवा तथा दादरा हाथ पर अंकों (गिनती) के आधार पर ताली खाली दिखाना		
गीत	राष्ट्रगीत, स्वागत गीत, विदाई गीत, ऋतुगीत, भजन, विभिन्न लोकगीत, त्योहार गीत		
जीवनी	पं०विष्णु दिगंबर पलुष्कर और विष्णु नारायण भात खण्डे		

परीक्षा

सैद्धांतिक 40 अंक

व्यावहारिक 60 अंक

पाठ्यक्रम

पूर्णांक 40 + 60

गायन (संगीत)

कक्षा VI

घंटिया 6 (2 + 4) साप्ताहिक

उद्देश्य

(i) पूर्व कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान को आगे बढ़ाना।

(ii) स्वर एवं लय का स्पष्ट ज्ञान कराना।

(iii) विभिन्न कला संस्कृतियों से परिचय कराना।

(iv) शास्त्रीय संगीत का मानव-जीवन में महत्त्व को समझना।

(v) ताल एवं ठेका का ज्ञान देना।

प्रकरण	उपप्रकरण	संसाधन	क्रियाशीलन
स्वर ज्ञान	सा रे ग म प ध नि सा आरोह, अवरोह	हारमोनियम, तबला, ढोलक, खंजड़ी, सितार, गिटार, बाँसुरी	छात्रों द्वारा विभिन्न गीतों को संग्रह कराना तथा उन्हें उचित राग में गवाना तथा शिक्षकों द्वारा उसमें सहयोग करना।
अलंकार	5 अलंकारों का आरोह-अवरोह		
परिभाषा	संगीत, स्वर, सप्तक ताल	ताल-कहरवा तथा दादरा का परिचय	संसाधान में लिखित सभी वाद्य-यंत्रों का रेखाचित्र बनाकर उसके सभी अंगों को रेखांकित करके दर्शाना।

Scanned with CamScanner

राग	बिलावल एवं यमन का ज्ञान		पाठ्यक्रम के रागों का आरोह-अवरोह तथा पकड़ का अभ्यास कराना ।
गीत	राष्ट्रगान, स्वागत-गान, विदाई गीत		

पाठ्यक्रम पूर्णांक 40 + 60

गायन (संगीत)

कक्षा VII

उद्देश्य

(i) पूर्व कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान को आगे बढ़ाना।

(iI) संगीत का मानव जीवन में महत्त्व को समझना।

घंटिया 6 (2 + 4) साप्ताहिक

प्रकरण	उपप्रकरण	संसाधन	क्रियाशीलन
परिभाषा	संगीत, स्वर के प्रकार, सप्तक, काट, राग, ताल वादी, संवादी, अलंकार-5 अलंकारों का लिखने का ज्ञान	हारमोनियम, तबला, ढोलक, खंजड़ी, सितार, गिटार, बाँसुरी	पाठ्यक्रम के अलंकारों को आरोह-अवरोह सहित गाने का अभ्यास कराना
राग	भैरव, काफी का परिचय		पाठ्यक्रम के रागों की आरोह-अवरोह एवं पकड़ सहित गाने का अभ्यास
ताल	कहरवा तथा दादरा, तीन ताल के ठेका का ज्ञान		हाथ पर गिनती के आधार पर ताली खाली दिखाना।
गीत	राष्ट्रगान, राष्ट्रीय गीत (वन्दे मातरम) ऋतुगीत और भजन		उपप्रकरण में वर्णित गीतों को गाने का अभ्यास
जीवनी	पं०विष्णु दिगंबर पलुष्कर और विष्णु नारायण भात खण्डे		

Scanned with CamScanner

गायन (संगीत)

कक्षा VIII

उद्देश्य -

(i) पूर्व कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान को आगे बढ़ाना।

(iI) संगीत का मानव-जीवन में महत्त्व को समझाना।

घंटिया 6 (2 + 4) साप्ताहिक

प्रकरण	उपप्रकरण	संसाधन	क्रियाशीलन
स्वर ज्ञान	5 अलंकारों को आरोह-अवरोह सहित लिखने का ज्ञान	हारमोनियम, तबला, ढोलक, सितार, गिटार, बाँसुरी	अलंकारों को गाने का अभ्यास
परिभाषा	संगीत, स्वर, सप्तक, थाट, वादी, संवादी, जाति, गायन समय		संसाधन में वर्णित वाद्य यंत्रों का चित्र बनाकर अंगों को रेखांकित करना
राग	भूपाली एवं भैरव		पाठ्यक्रम के रागों आरोह-अवरोह एवं सरगम सहित गाना
ताल	कहरवा, दादरा, एकताल		पाठ्यक्रम के तालों को गिनती के आधार पर हाथ पर ताली, खाली प्रदर्शित करना
गीत	राष्ट्रगान, राष्ट्रीय गीत, उद्‌बोधन गीत, विदाई गीत, लोकगीत, त्योहार गीत		उप-प्रकरण में वर्णित गीतों का अभ्यास
ज़ीवनी	स्वामी हरिदास, तानसेन		

मूल्यांकन

शिक्षार्थियों के सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रदर्शन के आधार पर अलग-अलग मूल्यांकन का उसमें

ग्रेडिंग

प्रदान करना।

अधिगम प्रतिफल

(i) शिक्षार्थियों में संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न होगी ।

(ii) शिक्षार्थियों के बीच भाई-चारे का विकास होगा।

(iii) साम्प्रदायिक सौहार्द एवं सद्‌भाव बढ़ेगा ।

Scanned with CamScanner

(iv) राष्ट्रीय भावना विकसित होगी।

(v) अपनी प्राचीन संस्कृति का ज्ञान होगा और उस पर गर्व भी होगा।

(vi) सांस्कृतिक विरासत की समझ बढ़ेगी और उसे बनाये रखने में मदद मिलेगी।

शिक्षक का भूमिका

(i) व्याहारिक गीतों पर विशेष बल दिया जाएगा। सृजनात्मक, प्रेरणात्मक आह्वान गीतों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा ।

(ii) विद्यालय स्तर पर विभिन्न अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कराएँगे जिसमें शिक्षार्थियो की प्रमुख भूमिका होगी।

पाठ्यक्रम

वादन (तबला एवं पखावज)

कक्षा VI-VIII

उद्देश्य

(i) शिक्षार्थियों का धुपद जैसे शास्त्रीय संगीत गाने से लेकर सुगम संगीत के गानों के साथ संगत करने का रुझान उत्पन्न कराना ।

(ii) लय तथा ताल का व्यावहारिक ज्ञान अच्छी तरह से कराना।

(ii) पिछली कक्षाओं तक प्राप्त उपलब्धियों को आगे बढ़ाना।

घंटिया 6 (2 + 4) साप्ताहिक

प्रकरण	उपप्रकरण	संसाधन	क्रियाशीलन
(i) इन परिभाषाओं का ज्ञान ध्वनि के प्रकार, ध्वनि की उत्पत्ति, कम्पन, आन्दोलन, नाद, रेला और बाँट, परन, पराल, उठान, संगत तथा स्वतंत्र वादन। (ii) संगीत में ताल और लय एवं पखावज तथा तबले का महत्त्व। (iii)पंडित कण्ठे महाराज, पंडित बच्चाजी मिश्र तथा उस्ताद अल्लारखा खाँ की जीवनी। (iv)तीन ताल, एक ताल, चार ताल,कहरवा, दादरा तालों में दो रेला, दो मोहरे, दो उठान, दो टुकड़े, दो-दो	तबला, पखावज, डमरू, ढोलक और डफ।	तबला, पखावज, डमरू, ढोलक और डफ।	• बच्चों को स्वतंत्र वादन के लिए प्रेरित करना। • बोलों की सफाई ओर तैयारी के साथ निकासी तथा ताली देकर प्रदर्शन करने की क्षमता का विकास।

Scanned with CamScanner

परन तथा दो तिहाइयाँ बनाने का ज्ञान। (v)उपर्युक्त तालों को लिपिबद्ध करते हुए ठाह, में लिखने का ज्ञान।			

परीक्षा कुल 100 अंक

सैद्धांतिक 40 अंक

व्यावहारिक 60 अंक

मूल्यांकन

(i) सभी सैद्धांतिक परिभाषाएँ तथा तालों को लिखकर दिखलाने तथा ठीक-ठीक स्वतंत्र रूप से वादन के ज्ञान का मूल्यांकन करना।

(ii) स्वतंत्रवादन से विभिन्न प्रकार की लयकारियों के प्रदर्शन तथा बोल पढ़कर ताली द्वारा प्रदर्शन करने के आधार पर मूल्यांकन करना।

(iii) लय और ताल संबंधी मौखिक प्रश्न पूछकर मूल्यांकन करना।

अधिगम प्रतिफल

(i) शिक्षार्थियों में स्वतंत्र वादन की क्षमता का विकास होगा।

(ii) एक अच्छे कलाकार बनने को इच्छा प्रबल होगी।

(iii) अपनी संस्कृति पर गर्व होगा।

शिक्षक का भूमिका

वाद्यों का अच्छी तरह से तैयारीपूर्वक स्वतंत्रवादन तथा गायक तंत्रवादक एवं नृत्य के शिक्षार्थियों के साथ संगत करने का ज्ञान कराना तथा प्रदर्शन करना।

Scanned with CamScanner

नृत्य
वर्ग VI-VIII

घंटिया 6 साप्ताहिक

प्रकरण	उपप्रकरण	संसाधन	क्रियाशीलन
लोकनृत्य	चार क्षेत्रीय भाषा के पारंपरिक, फसल गीत, ऋतु गीत, देशभक्ति गीतों पर स्वतंत्र एवं भाव-नृत्य करना ।	हारमोनियम, तबला, नाल, घुँघरू मजीरा, टेपरिकॉर्डर, कैसेट, सी.डी. रूप सज्जा सामग्री।	वर्ग में लिखित एवं व्यवहारिक ढंग से ज्ञानर्जित कराना। ताल के ठेकों को अथवा नृत्य के बोलों को हाथ पर ताली देकर बोलने का अभ्यास करवाना।
शास्त्रीय नृत्य का प्रारंभिक ज्ञान	तीन ताल के बोलों को जानना तदुपरांत नृत्य में उन बोलों को ताथेई, थेई, तत में ज्ञान करवाना। कथक नृत्य का संक्षिप्त इतिहास। एकताल, झपताल का ज्ञान।		
परिभाषाएँ	तिहाई, टुकड़ा, परन, तत्कार, गत, ठाट, आमद, ध्वनि, नाद, तोड़े और तिहाइयाँ।		वर्ग में इन परिभाषाओं को बोलना।
जीवनी	पंडित बिरजू महाराज, सितारा देवी, शोभना नारायण।		

परीक्षा कुल 100 अंक

सैद्धांतिक 40 अंक

व्यावहारिक 60 अंक

मूल्यांकन

व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक आधार पर मूल्यांकन कर श्रेणी प्रदान करना।

अधिगम प्रतिफल

(i) सांस्कृतिक सौहार्द की प्राप्ति होगी।

(ii) कार्यक्रम द्वारा सांस्कृतिक चेतना का विकास।

(iii) शिक्षार्थियों में व्यवहारिक जागरण।

(iv) कला के द्वारा शिक्षार्थियों की एक अलग पहचान।

शिक्षक की भूमिका

विभिन्न तालों को लिखकर बोलकर नृत्य के अनुरूप बतलाना। भावों की सशक्त अभिव्यक्ति करवाना उचित वेशभूषा के साथ प्रस्तुतीकरण।

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन की अवधारणा

- अवधारणा के आधार पर विकास की जाँच मूल्यांकन है ।
- सीखने की प्रक्रिया में इसका उद्देश्य उत्तीर्ण करना न होकर उन बिंदुओं की पहचान करना है जहाँ प्रक्रिया, रवैये एवं प्राथमिकताओं में बदलाव या फिर से जोड़ (पुनर्बलन) देना आवश्यक हो ।
- इस प्रकार, प्रत्येक मूल्यांकन के बाद उपचारात्मक शिक्षण आवश्यक है । इसके तीन स्तर हैं - (1) कक्षा (2) समूह (आवश्यकता आधारित) (3) व्यक्ति
- सतत व्यापक मूल्यांकन और उपचारात्मक शिक्षा साथ-साथ चलने वाली प्रक्रिया है ।
- अन्य परीक्षाओं (सावधिक) के साथ भी उपचारात्मक शिक्षण को जोड़ना होगा । इसका एक तरीका अगली कुछ कक्षाओं का इसी प्रयोजन से उपयोग करना हो सकता है । फिर भी, व्यक्ति अर्थात् समूह के लिए अलग-से व्यवस्था करनी होगी । उपचारात्मक शिक्षण की सफलता ही मूल्यांकन को सही अर्थ दे सकती है ।
- मूल्यांकन में ज्ञान के जाँच से कम महत्त्व अभिरुचि, स्वाध्याय की प्रवृत्ति, किसी विशेष विषय के प्रति रुझान और भाषा के स्तर पर समझ में आने लायक बनावट की ठीक-ठीक पहचान का नहीं है । यदि इस आधार पर सीखने वालों का समूह बनाया जाए - उनका वर्गीकरण किया जाए तो विकास को एक दिशा दी जा सकती है । सह-शैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन करते समय इन बिंदुओं पर ध्यान रखा जाना चाहिए ।
- सीखने की प्रक्रिया में मूल्यांकन की जो भूमिका है, समाज की दृष्टि में इससे बिल्कुल अलग रूप और भूमिका के प्रति आग्रह हो सकता है । नौकरियों में चयन का आधार जब परीक्षाओं/स्पर्द्धाओं के प्राप्तांक को, तो वर्त्तमान परीक्षा-प्रणाली को एकदम से नकारा नहीं जा सकता है ।
- मूल्यांकन की ऐसी पद्धति विचार का विषय बनी हुई है, जिससे शिक्षार्थियों को तनाव या त्रास का अनुभव न हो, जो न्याय करने वाली और पारदर्शी हो । चूँकि किसी मूल्यांकन-पद्धति का एक पक्ष शिक्षक भी है, उसे भी ध्यान में रखा जाना चाहिए । ऐसा न हो कि तनाव और त्रास शिक्षार्थी से हठकर शिक्षक पर प्रभावकारी हो जाए ।
- सतत और व्यापक मूल्यांकन की पद्धति को इस ढंग से विश्लेषित और लागू करने की जरूरत है कि उसकी गुणवत्ता का पूरा लाभ मिल सके । इस मूल्यांकन में चाहे 20 प्रतिशत अंक ही देना हो, प्रभाव की दृष्टि से इसमें परखने और नतीजे निकालने का महत्त्व शिक्षार्थी की पूरी विकास-प्रक्रिया में उल्लेखनीय और निर्णायक है । इसलिए इसकी कार्य-विधि इतनी सरल होनी चाहिए जो शिक्षक के लिए सहज स्वीकार्य हो ।
- अंक और ग्रेड में मूल्यांकन की उपयोगिता का विचार करते समय बहुधा शिक्षक की बात - उसकी अभिरुचि और निष्पक्षता की बात भी होती है । उन्मुखीकरण-आयोजनों/प्रशिक्षण- कार्यक्रमों/ संकुल-प्रशिक्षण के क्रम में शिक्षकों की प्रवृत्ति मूल्यांकन के प्रति अनुकूल बनाने की कोशिश होनी चाहिए । यह ध्यान रखने की बात है, कि पद्धति कोई हो, उसके लाभ संबंधित पक्षों के सकारात्मक योगदान पर ही निर्भर करते हैं । यदि ज्ञान का क्षेत्र और स्वरूप इक्कीसवीं सदी के परिदृश्य के अनुकूल बनाया जा रहा है, तो सीखने की प्रक्रिया और उसके संचालक/सूत्रधार शिक्षकों का प्रशिक्षण भी उसके अनुसार ही बनाना होगा ।

Scanned with CamScanner

- जहाँ तक ग्रेड और अंक की बात है, ग्रेड देने में सुविधा भी है और निष्पक्ष दिखाई देने की सहुलियत भी । किसी शिक्षार्थी को 74 और किसी अन्य को 73 अंक देने पर औचित्य समझाने की सांसत् भी ग्रेड देने पर नहीं होती । फिर भी, अंक जितना साफ-साफ बोलते हैं, ग्रेड तो वैसा करने से रहे । इसके बावजूद एक शिक्षक की सुविधा के विचार से ग्रेड -पद्धति अपनाई जानी चाहिए । हाँ! कक्षा में स्थान का निश्चय तो अंक से ही संभव है ।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ है -

- स्कूल की आंतरिक मूल्यांकन व्यवस्था में शिक्षार्थी-विकास के सर्वांगीण पक्षों पर ध्यान ।
- मूल्यांकन की निरंतरता और नियतकालिकता ।
- निर्देशों के आरंभ में शिक्षार्थी का मूल्यांकन स्थापन मूल्यांकन ।
- निर्देश-प्रक्रियाओं में परीक्षण की विविध तकनीकों का उपयोग करते हुए अनौपचारिक मूल्यांकन ।
- निर्दिष्ट मानकों का उपयोग और मूल्यांकन के विविध तकनीकों का उपयोग करते हुए अवधि के अंत में किये गये कार्यों का मूल्यांकन ।
- शैक्षिक और सह-शैक्षिक विषयों से सम्बन्धित कार्यों और गतिविधियों का मूल्यांकन ।
- शैक्षिक क्षेत्र के अन्तर्गत पाठ्यक्रम के विषयक क्षेत्र और सह-शैक्षिक क्षेत्र के अन्तर्गत अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ, व्यक्तिगत और सामाजिक गुण, अभिरुचि, प्रवृत्ति और नैतिक मूल्यबोध आदि समाहित है । इसके अन्तर्गत सौंदर्यबोधात्मक मूल्यबोध भी आ जाते हैं ।
- शैक्षिक क्षेत्र की जाँच के दौरान औपचारिक एवं अनौपचारिक तथा नियतकालिक और निरंतर मूल्यांकन आ जाते हैं ।
- सह-शैक्षिक क्षेत्रों के अन्तर्गत मूल्यांकन के संकेतित मानकों के आधार पर विविध तकनीकों का उपयोग करते हुए मूल्यांकन किया जाता है ।
- शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक के अन्तर्गत आने वाले बिंदुओं का प्रपत्र इस प्रकार होगा :

(अ) शैक्षिक क्षेत्र

स्तर	कक्षाएँ	प्रक्रियाएँ/ तकनीक	साधन	आवर्त्तन एवं अभिलेखन	प्रतिवेदन
उच्च प्राथमिक	VI - VIII	- मौखिक - लिखित - प्रायोगिक	- मौखिक प्रश्न - प्रश्नपत्र - प्रदत्त कार्य - कार्य योजना - निदानात्मक जाँच - क्रियाकलाप प्रयोग	- इकाई अनुसार - मासिक - अवधि अनुसार - जाँच के बाद अभिलेखन	- पूर्ण श्रेणीकरण

Scanned with CamScanner

(ब) सह-शैक्षिक क्षेत्र

क्रम सं0	सह-पाठ्यक्रम क्रियाकलाप	नैतिक मूल्य एवं प्रवृत्ति समाहित व्यक्तिगत सामाजिक गुण
VI - VIII	विविध	
	1. प्राथमिक चिकित्सा / योग 2. रेड क्रॉस 3. बालचर कर्म (स्काउटिंग) 4. बागवानी 5. राष्ट्रीय कैडेट कोर 6. राष्ट्रीय सेवा योजना 7. साहसिक क्रिया-कलाप 8. अन्य अभिरुचियाँ	

मूल्यांकन की प्रक्रिया

(क) भाषा एवं साहित्य

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य भाषा के चारो कौशलों का समेकित विकास करना है किन्तु निश्चित समय-सीमा निर्धारित कर औपचारिक परीक्षा द्वारा चारो कौशलों एवं उप-कौशलों का मूल्यांकन व्यावहारिक रूप से अत्यंत दुरूह है । किन्तु वर्ग VIII में औपचारिक सत्रांत परीक्षा के साथ-साथ सतत व्यापक मूल्यांकन पर बल दिया जाएगा । इस वर्ग में मूल्यांकन की इस समेकित प्रक्रिया में इस प्रकार अंक-भार निश्चित किये गए हैं :

क्रम.	मूल्यांकन	अंक-भार
1.	**सतत मूल्यांकन**	**60 प्रतिशत**
	▫ अभिव्यक्ति/वार्त्तालाप कौशल	20 प्रतिशत
	▫ प्रयोजन कार्य	20 प्रतिशत
	▫ औपचारिक जाँच	20 प्रतिशत
2.	**सत्रांत परीक्षा**	**40 प्रतिशत**

सतत मूल्यांकन एवं सत्रांत परीक्षा में अलग-अलग उत्तीर्णांक प्राप्त करना वांछनीय होगा । सतत मूल्यांकन एवं सत्रांत परीक्षा - दोनों मिलाकर कम-से-कम 30 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले शिक्षार्थी को अगली कक्षा में प्रोन्नत किया जा सकता है ।

1. **सतत मूल्यांकन**

सतत मूल्यांकन में सर्वाधिक ध्यान 'श्रवण' (सुनने) और 'वाचन' (बोलने) पर दिया जाएगा, क्योंकि विविध व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण इनका समावेश अभी औपचारिक जाँच पद्धति में संभव नहीं है । किन्तु इन्हें उपेक्षित भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसा करने पर शिक्षार्थी की अभिव्यक्ति या सम्प्रेषण की दक्षता का समुचित विकास नहीं हो सकेगा । अतएव 'सुनने' एवं 'बोलने' की दक्षता का समुचित मूल्यांकन सुनिश्चित करने के लिए इसे सतत मूल्यांकन का सर्वप्रमुख अंग बनाने की आवश्यकता है ।

Scanned with CamScanner

सतत मूल्यांकन की दूसरी महत्त्वपूर्ण इकाई प्रयोजना कार्य-सहित अन्य वर्ग कार्य या गृह-कार्य होंगे जो शिक्षार्थी की स्वतंत्र एवं रचनात्मक चिंतन का विकास सुनिश्चित करेंगे ।

ध्यातव्य है कि शिक्षार्थी की उपलब्धि के सतत मूल्यांकन की प्रक्रिया वर्ग एवं विद्यालय की विविध गतिविधियों द्वारा पूरी सत्र में जारी रहेगी । ये गतिविधियाँ औपचारिक भी हो सकती है, किन्तु 'सुनने' एवं 'बोलने' के कौशलों के मूल्यांकन के लिए यह आवश्यक है कि अधिक अंकभार अनौपचारिक गतिविधियों का दिया जाए । सतत मूल्यांकन की सभी इकाइयों के लिए अंकों का विभाजन एवं अंकभार निम्नवत् होंगे :

संवाद-दक्षता, वाद-विवाद, समूह-चर्चा इत्यादि	20 प्रतिशत
प्रदत्त कार्य	20 प्रतिशित
औपचारिक कार्य	20 प्रतिशत
कुल -	60 प्रतिशत

2. **संवाद दक्षता (20 प्रतिशत)**

वार्त्तालाप संबंधी दोनों दक्षताओं अर्थात् 'श्रवण' एवं 'वाचन' का सम्पूर्ण मूल्यांकन अनौपचारिक रूप या औपचारिक रूप से (10 अंक) या दोनों के समेकित रूप में (10 अंक) किया जा सकता है ।

(अ) **अनौपचारिक मूल्यांकन** (20 प्रतिशत या 10 प्रतिशत) : पाठ अध्यापन के क्रम में जहाँ-जहाँ शिक्षार्थियों के लिए परिचर्चा, भूमिका निभाने (अभिनय), चर्चा करने या अपना-अपना दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता होगी, संबंधित शिक्षक इन गतिविधियों का संचालन करेंगे एवं प्रत्येक शिक्षार्थी की संहभागिता का ध्यान से अवलोकन करेंगे । यह प्रक्रिया पूरे सत्र तक चलती रहेगी । कौशलों के अन्तरण के मूल्यांकन के लिए नीचे दिये गए स्केल का प्रयोग करते हुए शिक्षार्थी को 0 से 10 तक अंक प्रदान किए जा सकते हैं । नीचे दिये गए स्केल में अंक 1, 3, 5, 7, 9 के लिए स्केल दिया गया है । इस आधार पर तीन एवं पाँच के बीच आने वाले शिक्षार्थी को चार अंक प्रदान किये जा सकते हैं । इसी प्रकार स्केल 0 से अधिक दक्षता वाले शिक्षार्थी को दक्षतानुसार अधिकतम 10 अंक तक प्रदान किये जा सकते हैं । मूल्यांकन के इस स्केल की जानकारी शिक्षार्थियों को सत्र के प्रारंभ में दे दी जानी चाहिए ।

कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन

श्रवण(सुनना)	वाचन(बोलना)
• शिक्षार्थी में परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता तो है, किन्तु आशय को संबंद्ध रूप में नहीं समझ पाता लघु-लघु संबद्धों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है । • लघु-लघु संबद्धों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है ।	• शिक्षार्थी में मात्र शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता तो है, किन्तु वह उन्हें सुसम्बद्ध रूप में बोल नहीं पाता । • परिचित संदर्भों में मात्र लघु-लघु संबद्ध कथनों को सीमित शुद्धता के साथ प्रयोग करता है ।

Scanned with CamScanner

श्रवण(सुनना)	वाचन(बोलना)
• परिचित या अपरिचित दोनों प्रकार के संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्टत: समझने की योग्यता तो है किन्तु भाषागत अशुद्धियाँ भी हैं, जो भावाभिव्यक्ति में अवरोध उपस्थित करती है । • दीर्घ कथनों की शृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझाता है और निष्कर्ष निकाल सकता है । • उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता के साथ जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं की समझ है ।	• लघु की अपेक्षा दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता लक्षित होती है किन्तु सम्प्रेषण या अभिव्यक्ति में अवरोधक कुछ अशुद्धियाँ पाई जाती हैं । • अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित का धाराप्रवाह प्रस्तुत कर सकता है । कुछ अशुद्धियों की बावजूद सम्प्रेषण निर्बाध रहता है । • नगण्य अशुद्धियों से युक्त प्रसंग और श्रोता-दोनों के अनुरूप भाषण शैली का प्रमाण देता है ।

(अ) **अनौपचारिक मूल्यांकन** (20 प्रतिशत या 10 प्रतिशत) : पाठ अध्यापन के क्रम में जहाँ-जहाँ शिक्षार्थियों के लिए परिचर्चा, भूमिका निभाने (अभिनय), चर्चा करने या अपना-अपना दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता होगी, संबंधित शिक्षक इन गतिविधियों का संचालन करेंगे एवं प्रत्येक शिक्षार्थी की सहभागिता का ध्यान से अवलोकन करेंगे । यह प्रक्रिया पूरे सत्र तक चलती रहेगी । कौशलों के अन्तरण के मूल्यांकन के लिए नीचे दिये गए स्केल का प्रयोग करते हुए शिक्षार्थी को 0 से 10 तक अंक प्रदान किए जा सकते हैं । नीचे दिये गए स्केल में अंक 1, 3, 5, 7, 9 के लिए स्केल दिया गया है । इस आधार पर तीन एवं पाँच के बीच आने वाले शिक्षार्थी को चार अंक प्रदान किये जा सकते हैं । इसी प्रकार स्केल 0 से अधिक दक्षता वाले शिक्षार्थी को दक्षतानुसार अधिकतम 10 अंक तक प्रदान किये जा सकते हैं । मूल्यांकन के इस स्केल की जानकारी शिक्षार्थियों को सत्र के प्रारंभ में दे दी जानी चाहिए ।

(ब) औपचारिक जाँच परीक्षा (10 प्रतिशत): संवाद दक्षता के लिए अनौपचारिक मूल्यांकन ही बेहतर है, किन्तु यदि किसी विद्यालय की ऐसी इच्छा है तो वह 10 अंकों की औपचारिक जाँच-व्यवस्था भी कर सकता है, किन्तु ऐसी औपचारिक जाँच केवल सत्रांत में ही ली जायेंगी । औपचारिक जाँच समूह-अंतर्वार्त्ता के रूप में ली जायेगी । 4-5 शिक्षार्थियों का एक समूह होगा । प्रत्येक समूह बारी-बारी से दिये गये विषय पर परिचर्चा करेगा । रटन्त शिक्षा को हतोत्साहित करने के लिए, परिचर्चा प्रारम्भ करने के सिर्फ 10 मिनट पूर्व परिचर्चा के विषय को बताया जायेगा । परिचर्चा के दौरान विषय-शिक्षक अपने किसी सहकर्मी शिक्षक के साथ प्रत्येक शिक्षार्थी की सहभागिता एवं प्रवीणता का अवलोकन करेंगे एवं कौशलों के अंतरण के मूल्यांकन स्केल के अनुसार प्रत्येक शिक्षार्थी को अंक प्रदान करेंगे । संबंधित विद्यालय को प्रत्येक शिक्षार्थी की अलग-अलग अन्तर्वार्त्ता लेने का भी विकल्प रहेगा, जिसके अंतर्गत वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिता करायी जा सकती है ।

(स) प्रदत्त कार्य (20 प्रतिशत) : पाठ्य सामग्रियों पर आधारित कई गतिविधियों को सतत मूल्यांकन के लिए उपयुक्त प्रदत्त कार्य के रूप में चिह्नित किया जा सकता है । ये प्रदत्त कार्य प्रयोजना (Project) कार्य के रूप में भी हो सकते हैं । इन प्रदत्त कार्यों में शिक्षार्थी के प्रदर्शन

Scanned with CamScanner

का अभिलेख रखा जायेगा एवं इस कार्य में उसके प्राप्तांक को स्त्रांत के कुल प्राप्तांक में जोड़ा जायेगा । इन प्रदत्त कार्यों के लिए 20 अंक निर्धारित किए गए हैं ।

चूँकि वाचन-दक्षता का मूल्यांकन लिखित कार्य द्वारा नहीं किया जा सकता है, अत: इस दक्षता की जाँच प्रमुख रूप से संवाद-दक्षता के अंतर्गत की जाती है । पठन दक्षता का मूल्यांकन पाठ से संबंधित ऐसी गतिविधियों से किया जा सकता है जिनमें लेखन-कार्य यथा नोट बनाने, टेबल बनाने या सारांश लिखने आदि की आवश्यकता पड़ती है । यह देखते हुए कि ये प्रदत्त कार्य श्रवण/पठन - दक्षता के मूल्यांकन के लिए है, शिक्षार्थी को इसी आधार पर अंक प्रदान किया जाना चाहिए कि वे सुनकर अथवा पढ़कर विषय-वस्तु को कितना समझ पाते हैं । ऐसे प्रदत्त कार्यों में शिक्षार्थी के अंकों में विराम चिह्नों, हिज्जे या व्याकरण संबंधी गलतियों के लिए कटौती नहीं की जानी चाहिए । बोधगम्यता निर्धारण के लिए मूल्यांकन स्केल की आवश्यकता नहीं ।

(द) लेखन-कौशल का मूल्यांकन : शिक्षार्थी की भाषिक दक्षता के समग्र मूल्यांकन का यह एक महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है । अतएव अधिकांश प्रदत्त लेखन-कौशल को ध्यान में रखकर दिये जायेंगे ।

प्रदत्त कार्यों में प्रत्येक वर्ष भिन्नता होनी चाहिए । शिक्षक पूरे वर्ष के प्रदत्त कार्यों / गृह-कार्यों / वर्ग-कार्यों का अभिलेख रखेंगे एवं शिक्षार्थी के प्राप्तांक को (20 अंकों में) स्त्रांत परीक्षा के अंक के साथ जोड़ेंगे । वर्ग नवम् की स्त्रांत परीक्षा का अंकभार 40 प्रतिशत होगा ।

(ख) अन्य अनिवार्य विषय : भाषा के अतिरिक्त गणित, विज्ञान एवं समाज विज्ञान में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अनिवार्यता अब विवादास्पद नहीं है । इसकी आवृत्ति से एक तरफ शिक्षार्थियों की उपलब्धि का कुछ काल के अंतराल पर पता चलता रहता है, नियमित अध्ययन की अभिप्रेरणा मिलती है, अधिगम के कमजोर बिन्दुओं की पहचान के साथ उनका निदान भी संभव हो पाता है । दूसरी तरफ इसमें सम्मिलित युक्तियाँ मूल्यांकन व्यावहारिक जीवन से निकट संबंध का बोध कराती हैं जिसकी परिणति के रूप में शिक्षार्थी अपने जीवन का निर्माण कर पाने में उपलब्ध ज्ञान का सहजता से उपयोग कर पाते हैं । ये युक्तियाँ निम्नांकित हो सकती हैं -

1. प्रयोजना कार्य
2. प्रायोगिक कार्य
3. गतिविधि द्वारा मूल्यांकन
4. प्रदत्त कार्य
5. जाँच
6. समूह-वार्त्ता
7. भाषण/ व्याख्यान

व्यावहारिक कठिनाई के कारण बोर्ड की परीक्षा में तात्कालिक तौर पर केवल विज्ञान में प्रयोग को सम्मिलित किया गया है, परन्तु विद्यालय स्तर पर मूल्यांकन की समेकित व्यवस्था में अंकभार निम्न रूप में निश्चित किये जा सकते हैं -

1. सतत मूल्यांकन-	60% (30% + 30%)
(क) प्रायोगिक/प्रयोजना	30%
(ख) गतिविधि द्वारा मूल्यांकन	20%
(ग) प्रदत्त कार्य	
(घ) औपचारिक जाँच	60%
2. स्त्रांत परीक्षा	40%

Scanned with CamScanner

विज्ञान के लिए प्रायोगिक कार्य होगा जबकि सामाजिक विज्ञान/ गणित के लिए प्रयोजना की युक्ति अपनायी जायेगी । गणित में गतिविधि आधारित मूल्यांकन अपनाया जाये जबकि समाज विज्ञान में प्रयोजना एवं प्रदत्त कार्य की युक्ति ज्यादा कारगर होगी । यदि विज्ञान विषय में केवल प्रायोगिक परीक्षा सम्मिलित की जाती है तो उसमें निर्धारित अंक का 50 प्रतिशत प्रयोग शिक्षार्थियों से प्रश्नों के लिए रखा जाये । ये प्रश्न लिखित हों या मौखिक पर वस्तुनिष्ठ हों ।

प्रयोगों का चयन / प्रयोजना कार्यों का चयन, प्रदत्त कार्य एवं आयोजित गतिविधि पाठ्यक्रम से संबंधित होनी चाहिए । इनके चयन में स्थान, काल एवं व्यावहारिक होने की संभावना का पूरा ध्यान रखा जायगा । लिखावट में त्रुटि या भाषायी अशुद्धि के लिए दण्डित नहीं किया जाये । प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए अलग अभिलेख संधारित किया जाये और अंतिम परीक्षा फल में अंकभार का समतुल्य अंक प्रदान किया जाये ।

5. **औपचारिक प्रश्नोत्तर प्रणाली:**

आज की तिथि में शिक्षार्थी की उपलब्धि के स्तर को ज्ञात करने के लिए औपचारिक लिखित परीक्षा की विधि सर्वाधिक प्रचलित है । यह पद्धति कितनी कारगर और कितनी उपयुक्त है, यह अलग मुद्दा है, परन्तु मूल्यांकन में पारदर्शिता एवं वस्तुनिष्ठता के कारण अधिक लोकप्रिय है । फिर भी, कुछ मौलिक प्रश्न हैं जिन पर शीघ्र ध्यान दिया जाना अति आवश्यक है । जैसे - प्रश्न का स्वरूप यानी प्रश्न कैसे पूछे जायें ? चूँकि विद्यालय और बोर्ड स्तर की सामान्य परीक्षाएँ अधिगम स्तर की जानकारी के लिए होती हैं न कि चयन के लिए, अतः प्रश्नों का स्वरूप विषय-वस्तु की ओर आमंत्रित करता हुआ हो अर्थात् प्रश्न में स्पष्ट झलक मिलनी चाहिए कि प्रश्न किस प्रकरण से और किस प्रसंग से है । प्रश्नों की रचना में भाषा और भाव की स्पष्टता हो एवं वे मानकीकृत हों । पुनः उनका स्पष्ट उत्तर हो ।

अतः यह अपेक्षा प्रासंगिक है कि विद्यालय की परीक्षा में प्रश्नों के चयन में उपर्युक्त तथ्यों पर ध्यान दिया जाये । यह जरूरी नहीं कि विद्यालय स्तर की परीक्षा के लिए केन्द्रीयकृत व्यवस्था के तहत प्रश्न-पत्र तैयार किया जाये । विद्यालय स्तर पर भी प्रश्न-बैंक विकसित किया जा सकता है । बेहतर तो यह होगा कि इकाई समाप्ति पर विषय शिक्षक शिक्षार्थियों को पुस्तकों की सहायता से प्रश्न तैयार करने को कहे और प्राप्त प्रश्नों का संकलन, संपादन और मानकीकरण के बाद प्रश्न-बैंक तैयार किया जाये ।

Scanned with CamScanner

"अगर पाठ्यपुस्तकों को शिक्षा का वाहक माना जाएगा तो शिक्षक के सजीव शब्दों का बहुत कम महत्त्व होगा। जो शिक्षक पाठ्यपुस्तकों से पढ़ाता है वह अपने शिष्यों को मौलिक ज्ञान नहीं देता। वह स्वयं पाठ्यपुस्तकों का दास बन जाता है और उसके पास मौलिक होने का कोई अवसर या मौका नहीं होता। इसलिए ऐसा लगता है कि जितनी कम पाठ्यपुस्तकें होंगी शिक्षक और उसके शिष्यों के लिए उतना ही अधिक अच्छा होगा।"

– महात्मा गाँधी, 'टेक्सट बुक्स'
'हरिजन' (सितम्बर 9, 1939)

Offset Press, Patna # 3202981

Scanned with CamScanner